এএজগদীশ্বার নমঃ।

সারকৌ মুদী।

वर्षा ।



চিকিৎসাদৰ্পণ নামক বৈভাশাত্ৰ।

গ্ৰীযুক্ত আনন্দচন্দ্ৰ বৰ্মণ কৰ্তৃক অনুবাদিত

কলিকাতা।

যোড়াসাঁকো বলরাম দে ফ্রীটে ৩০ নইর ভবনে শ্রীরামকানাই দানের শ্বধানিফু যঞ্জে মুজিত।

गम ऽ२१८ मान छोर ६ खार्यन।

সচীপত্ৰ ৷

গ্রন্থ	5	বায়ু পরম দেবতা স্বৰুৎ	152
निमान	2	পিত্ত লক্ষণ	66
রোগীর পরিচারকেরলম	8 P4	কফ লক্ষণ	30
উত্তম রোগীর লক্ষণ	"	সান্নিপাতিক লক্ষ্	66
বৈক্ত আনি বার টুতেরজা	€-	বায়ু দমন প্রকরণ	"
ভেদ এবং নিষিদ্ধ লক্ষণ	66	পিত্ত দমন প্রকরণ	28
रेवरमात्र निक्र छेशञ्चि	66	कक् ममन श्रकद्रव	"
দূতের নিবেদন প্রকার	66	শারীরিক মানসিক ব্য	† -
দিবারাত্রিতে কফ পিত্ত		ধির বিশেষ কথন	20
বায়ুর সময় নিৰূপণ	9	শারীরিক বিষয় কথন	66
শরীরে কফ পিত্ত বায়ুর		পুনঃ কফপিত লক্ষণ	>0
অধিকার প্রকরণ	"	বায়ুর বাহ্য লক্ষণ	66
পঞ্চ প্রাণের অবস্থান	٦	পিত্তম বাহ্য লক্ষ্	. 66
পঞ্চ প্রাণের কার্য্য	66	ক্ফশ্য বাহ্য লক্ষণ	•6
পিত্তশ্লেষ্মার স্থিতি কথন	<u>ھ</u>	বায়ু হৃদ্ধি প্রকংণ	28
শ্লেদ্মা প্রকরণ	"	পিত্ত রুদ্ধি প্রকরণ	46
পঞ্চনাম	"	রোগীর মূত্র পরিকা	36
পঞ্চ কাৰ্য্য	66	ভিহা প্রীক্ষা	75
অবলয়ক কফ শরীর নাশ	t	নাসিকা পরিকা	₹•
এবং রক্ষার কারণ	٥,	নাড়ী পরিকা	66
শরীর নাশের কারণ	"	বাতাত্মিকা নাড়ী গতি	
পিতৃক্ফ বায়ুর অধিকার		প্রকর্ণ	5.
ক্থন	>>	পিতাত্মিকা নাড়ী গতি	•
মধু শোধন বিধি	"	প্রকরণ	66
কক রন্ধি প্রকরণ	"	কফাত্মিকা ৰাঞ্চীগতি	
ৰাষ্রোগ প্রকরণ	66	क्षे क्रन	35

,	•		
चन्त्रक नाष्ट्री श्रकदन	२२	সংসর্গি জ্বর লক্ষণ	२१
জ্বয়যুক্ত নাড়ী প্রকার	"	আমজ্বর লক্ষ্	२५ '
লান্নিপাতিক রাড়ীপ্রকর	466	জর্ম দশ উপ দ্র	66
ৰাড়ী জ্ঞান ফুল প্ৰকার		না দাজ্বর লক্ষণ	"
সামান্য ৰূপ নাড়ীর মুখ	Į.	জ্বর ত্যাগ লকণ	"
শীতল কথন	•6	নৰজ্বর ত্যাগ বিষয়	₹৯
জ্বরে ংপত্তি কথন	C	জরে লংঘনে প্রকরণ	• •
শরীরে ছরোৎপত্তি		ষ্ডুঙ্গ পানীর	90
কারণ	23	লাজমণ্ড প্রকার	66
বাহুজ্বর প্রকাশ কথন	46	লাজমণ্ড গুণ	66
বাহিক জ্বর লক্ষণ	"	সাম'ন্য জর চিকিৎসা	46
পিতৃত্বর লক্ষ্	₹8	নাগরাদি পাচন	66
	66	ক্ষেত্ৰাদি পাচন	66.
ক্ষ জ্বর লক্ষণ বাত পৈত্তিক জ্বর লক্ষণ	२७	বাতজ্ব চিকিৎসা	৩১
	66	हरू शक्षयूजी शाहन	"
বা হা শ্বা জার লক্ষণ	66	বাভারি বটিকা	46
পিত্রশ্বৈক জর লক্ষ্	ri D rc	পিত্তজ্ব চিকিৎদা	46
সাগ্নিপাতিক জর লক্ষ	1-/0	যব পটে।ল	66
ত্রোদশ প্রকার সালি-	২৬	ক্ষেত্ৰ পৰ্পটী	64
शांতिक कथन .	ج» در	ধান্য শক্ষা	66
অভিযাত জর লক্ষ্ণ	66	घ्नहन्त्रां पि शीहन	66
অতিচার জর লকণ	66	धनगिष इर्ग	66
बीर्व बद कथन		ক্ষুত্র চিকিৎসা	V2,
বিষম করোৎপত্তিকর	66	जिक्ना नि शांहन	66
मस्य स्वाद म्या		পিপুলাদি পাঁচন	65
खिकानीन जर नकन	5.9	विश्वापि शांहन	. 66
একাহিক জর লক্ষ্ণ		इक्ट ख हुर्न	. 44
চাতুর্থিক জর লকণ	66		. 066
বিপর্যায় চাত্র্ধিক জর		মধু পিপুল	
লকণ	4.	পিত্ত শ্লমালর চিকিৎ	11, 1

66	সাগ্রিপাত জর চিকিসা	نون
ĠĠ	निर्छि तंन ९	ċ\$
७७	च वरल इ	66
"	অঞ্জন	66
".	নবাঙ্গ পাচন	46
61	ভৈরবেশ্বর	66
46	তিদোষ নিহার রস	७ञ
ন া	বেতাল রস	66
66	অমৃতেশ্বর বটিকা	66
98	স্বচ্ছন্দ ভৈরব	66
66	পঞ্পিত যথা	66
"	নান্নিপাত ভৈর্ ব	66
46	ঘোড়াচ ড়ি র ম	8.
46	দারুত্রহা রস	"
46	অ†নন্দ ভৈরব রস	66
20	জিকাগ নাম সাদিপাতি	
66	বিনাশক হয় মহৌষধি	66
	বেতাল রুম	66
. 46	কালানল রস	82
৩৩	মহাজরাস্কুশ বটিকা	66
व्रवद्ध	ক্রমোণেভিয়োলকণ	66
66	সিকুশোষক রস	66
9	রজান্ধি সান্নিপাতিক	
"	নাশিকৈয়^ বটিকা	66
66	প্রতাপ লক্ষেশ্বর রম	66
म्।	প্রলাপ নামিপাত নিয়	ন্ত নো
	হয় নৌষ্ধি	85
66	অভিন্নু সিংল র ন	60
	भा कि का	দিছিবনং তও অবলেহ শে অঞ্জন শে নবাক্ষ পাচন শৈ তৈরবেশ্বর শৈ তিলোব নিহার রস লা বেতাল রস শা মেতাল রস শা মেতাল রস শা মেতাল রস শা মেতাল রস শা মারিপাত তৈরব শা মারিপাত তৈরব শা মারিপাত তিরব শা মারিপাত শা

मृशिश्ह कानानन वरिका	66	প্লীহাজিত জীৰ্জ্ব	46
মৃত শাহিপাত	64	চিকিৎসা '	66
উলুন চিকিৎসা	46	िळकामि कीव्रक	66
দশ্মুল পিপুলনিকর্য	46	ভাযুক্তী জারক	66
ধান্যচতুনু থ	46	मक्बन्न स्त्रत्नोर	"
छन्त हर्षे थ श्रामा		মান গুড়িকা	8 b.
कड़िएवम	90	নস্থ গুড়িকা	66
ৱসমাণিক	. 6	ক্ষার অকাবক তৈল	•6
হিচ্চালেশ্বর	66	গুড পিপুল	82
চতুৰ্ফশান্ত পাচন	44	যমানী জারক	66
द्रमभिन्छु त्रम	"	षर् भेद्धवंत्रम	66
मिना खरत डेनुमाधि		মহাচিত্রক লবণ	66
কারে	88	মহাদ্রাবক	G.
হথা অফীদশাঙ্গ	"	জর কলীয়াবটি	66
পূর্ণ ড্রের রসায়ন	44	(सघन) म त्रम	66
জীবজর চিকিৎসা	8¢	শীতভ[ঞ্জত তৈল	46
নি দিখিক গ	66	জরকুলান্তক লৌহ	æ2
<u> थाजीरमां मक</u>	.66	ক্রোধজর সংপ্রসঙ্গাদ	66
ভাগ্যাদি পাচন	66	ভৌতিক জবে	16
ব্ৰাতিজ্বে বৃহন্নবাঞ্চ	"	ঐকাহিকজর চিকিৎসা	64
उ छकां नि शाहन	80	মন্ত্ৰ^	a 5
धनराषि भावन	66	জরতপণ মন্ত্রং	66
ভূমিনিয়াদি চুর্	• 6	সমূজভোত্তরে তীরে	66
की द्रकामि लोह हुनै	"	विविद्या नाम वानद	44
অটাক ধুম	"	চাতুর্থিক জর চিকিৎসা	66
মহেশ্বর মন্ত্ ং	66	সন্তত্ত্বর চিকিৎসা	46
গাতী মোদক	89	कम्भवत	¢Э
শঙ্গারকঃ তৈল	"	আগন্তক জর চিকিৎমা	. 66

ভৌতিক্য়াহিক জর	46	কানাচার লে।ছ	66
•প্রস্থা মন্ত্র	66	মাহেশ্বর ধূপা	64
कीर्वश्वाहिककत्र किकिৎमा	56	नाकानि टेंडन	65
কারব্যাদি পাচন	89	জর নাগময়ূর চূর্	46
ত্যাহিকাগন্তকলর চিকিৎ	मा॰	বঙ্গেশ্বর মোদক	•6
রুচন্নবাঙ্গ পাচন	66	জরাতিসার চিকিৎসা	@ >
করমুরারি চূর্	66	অ ভ্ৰবটিকা	66
চাতুর্থিগন্ত জর্জিকিৎসা	"	দ্বিবটিকা	"
ব্রমুরারি বটি	Ø	জরাতিমারবিশেষপথ	Too
मगश्नामि अधेनभाक		পিপুলাদি তৈল	6
পাচন	•	বিষম্ভর রশায়ন	68
মধু পাঠাদি পাচন	6	নব জরাক্ষুশ	4
বিষমজর চিকিৎসা	6	মহাজরাক্ষ,শ	6
क्षुनर्गन চূर्व	•	धाना छ थी	6
অঙ্গারক তৈল	৫১	शीरवंशिं शिंहन	6
सण्यनाकामि देखन	6	क्रीटवर्त्रापि हुर्न	৩৫
इञ्नाकामि रेजन	•	डेवितामि शाहन	٠ 6
मार्क्षां भाग्न	6	নাগরাদি পাচন	6
सुमर्गन हुर्व	69	মুথাদি পাচন	6
इहर सुमर्गन हुर्न	6	मगर्नामि शावन	6
শশ্বসন্ধা তৈল	6	खर्गानि भारत	6
কিরাভাদি ভৈল	GF	গুডুচ্যাদি পাচন	•
ज त्र रेखत्र व रूर्न	6	পঞ্মুলাদি পাচন	৬৩
ठन्मन पि लोक् -	6	शांश्रेगोपि शाहन	6
इश्लोकानि रेटन	65	ব্যোষাদি চুৰ	6
ব্ৰহৎজৱ সংহারিলী চূর্ব	•	গঙ্গাধর বটি	•
मारमञ्जी हुन	'.'	জ াতিফ গ্যান্তাবটি	6
शिश्रमानि देवन	۵.	कनक इन्स्त्र शांत्रक	č

यही शव ।

भौठीम हर्व	৬৭ কণ্টকাদি পাচন	٤
কাগরাদি চুর্	গোচরসাদি চুর্	6
ক্ষীরকল্যাণ গুড়িকা	' दिल्वामि	6
অভিসার চিকিৎসা	কুটজাদি	15
युक्टिंग .	৬৮ কুটৰাষ্টক	•
হ্রীবেরাদি পাচন	ণ নারঙ্গ ধর	•
इश्थण्डामि शांहन	• ধন্যাদি চূৰ্	,
রহ্ৎহুবেরাদি পাচন	' স্তরাজ বৃটিকা	, ,
त्यायामि ह्व	' দাভ্রিধার	9.9
७ श्रे मभद्रनी	• লবক্সচতুঃসম	,
कनकश्ननंत्र तम	লবঙ্গজাবক	,
সশোণিত জরাতিসার	১ মহাগদ্ধক	,
চিকিৎসা	७२ (मामक	,
মহাভ বটিকা	' গৃহিণী চিকিৎস্	98
ক্ৰক মুন্দর রুস	' कू हे स्वांद त्वर	6
ধান্যচতুষ্টয়	গঙ্গাধর চুর্ব	93
খান্য পঞ্চক	' शश्नी शरकत्र	,
ৰুঞ্টাদিপাচন	. ^५ - गृहिनी द्वारगत्न छङ्ग न	াক 🕆
দ্বিশীয় প্রকার	 দ্ৰব্য মাত্ৰেই পথা না 	
কুটজ পুটপাক	१० भागि छक्त वरिका	,
इर् कूछ मार्क शाहन	< মণ্ডুর প্রকার	10
কুটকাষ্টক পাচন	' নূপীবলভ	6
व्यानन रेख्यव	' মহাগক্ত	•
का िक मामि	, नवक ठजूश्याम	,
थाना शक्क	১৭ পঞামৃত পর্নতী	99
পথ্যাদি পাচন	 বিজয় পর্ণটী । 	*
কছকাদি পাচন	' পঞ্চামৃত লৌহ	96
इश्क्षेषां नि शाहन	· क्ष्णिवरल र	(42)
		,

•			
মদনমোক	•	গৰ্ৱ স্থতিকা চিকিৎসা	, «
নিজি শোধন	6	इरुग्रक्रोपि हुर्न	.4
রুহৎ শতাবরি মোদ		মেথি মোদক	6
মহাকামেশ্বর মোদ	ቀ ৮。	मनन (मानक	42
मदकामि हुर्व	63	.স্পামেথি মৌদক	6
জাতিকলাতা	6	জীলোকের গর্ভহইরা য	म या-
নায়িকাদ চূৰ্	•	দশ মাস পর্যান্ত প্রতিম	াসে
নাগরাদি চুর্ব 🗸	₩ ₹	গর্ত্তে বেদনাও স্থতিকা	হয়
इंश्कां खकार्गि हुन	4, 6	তাহার নিবারক ঔষধ প্র	थम
স্বন্ধাক্যভ্যাদি চুৰ্	6	মাসাবধিক্রমে লিখিভেছি	ই ৯০
ग्रहिनी गटज्ञवर्णिक	1 43	অশ্ধিকার	22
कीतकामि हुर्व -	6	প্রাপদাগুড়িকা	6
द्रश्वां कर्नाम वृ	र्व "	শূরণ মোদক	35
खल्ल नवनानि इर्न	6	বাহুদাল গুড়িকা	4
মাক্তেয় চুৰ	P-8	ভেলা শোধন	つい
ধারাধর চূর্	6	কুটলাবলেহ	6
বাল্য শক্ৰাশন মোদ	ক '	ছন্দ্রপ্রভারবটিকা	. 4
बद्रीकां पि भाषक	6	পিত্তৰারা রক্তগ্রুষ্ট হট্যা	ন†-
इश्लवाका पिरमहोक	Fa.	নিকা দন্ত গুহু নথ লিক	এই
পঞামৃত পর্বস	6	পঞ্ স্থান হইতে নি	ৰ্গত
অকালমৃত্যুহরণ বটি	季) *	হইয়া পঞ্চ প্রকার অর্শ	रुस '
মুভিকা চিকিৎসা	40	তার মন্ত্র	₽8
তিচামূলি চুৰ্	6	সমশর্করা চুব	6
शृहिंगी कथा है विकिश	6	প্ৰাণ্যগড়কা	6
নৃপ্বলভ রস	¢	হৃত্প শ্রণ মে দক	20
विलामि इन	b-1	इर् ग्रंग भागक	٠, د
নায়িকা চূৰ	6	वर्गवज् वर्षिका	€
যুতিকান্ধুণ রসায়ণ	6	প্রদেপ	৯৬

	श्रही	भृज ।	·
কুড়চি অবলেই		অঙ্গীৰ্ কন্টক	; 6
द्रकिरयां श	, 6	ভুক বিপাক বটি	٥٠ ૨.
পায়সাদি পাচন	•	মহোষ্থি রুস	8
অশহারি ছত	6	कांगावि मन्तीशन (म	पिक '
न किएगांग	6	কামেশ্বর মোদক	5.0
वर्गाद्व कोह	20	বিশ্বচিকা চিকিৎসা	6
व्यधिमानना हिकिथना	. 6	ষ্ড়ঙ্গ চূৰ্ব	6
हिन चरीक	6	র্হমবাক চূর্	2.8
অ্যিমুখ চূৰ্	76	হেমায়ত চূৰ	6
थाना खर्थी शाहन	6	नीतकामी वर्षि	6
ब्रिक्टिया ग	. •	অবিপাদিক চুৰ্	6
মেথিমোদক	6	সালসার বিশ্বস্থি চিবি	दम्।
ছুতাশন রস	6	इहर एथी थल	6
রামবান রস	•	মুষ্টিযোগ	204
অধিকুমার রস	かり	नांद्रिक्न नद्	6
কড়ি ভন্মের প্রকার	6	ভাকর লবণ	4
মহাশস্থ বটি	6	বলভ্জ ঘৃত	6
द्रश्यारहाधिष	. "	मोडांगा छठी थ	200
क्रियामि देन	>00	শতাবরি মোদক	4
স্থাপশস্থ বটি	6	नवकामि विष	4
हिन अधिक	6	छशीम् उ हुन	2.3
পুর্কিযোগ	202	সালসাচহারি মোদক	6
বাতা লী ৰ্	6 -	कामाधि मन्ती भन	
পিতাশীৰ্	6	মোদক	•
देशकार्वानि	6.	इस्ट भिभूमि थस	307
শুবিষ্ধ	6.	মুরাপি খণ্ড	Ģ
বৈশানর চুর্ব		क्रमि किकि भग	2.9
माराम्य हैन	4	मुक्तियां भ	

•			
বিডক ঘৃত	6	উদরারি বটি	`` '
. মুষ্টিযোগ	•	ধাতুউদরারি	246
মন্তকাদি পাচন	220	र्गीयक চিকिৎमा	
नाकामि ह्व	6	व्यधियूर्थ मधुद	•
विक्रमानि मधेक	,6	অমৃতাৰ্ব মন্তুর	>>0
পিপুল্যাদি চূর্ব	6	শুষ্মুল্যাদি তৈল	. 6
বিড়ঙ্গ ঘৃত	6	পঞ্চামতাদি লৌহ	
ধুস্ত,রাদি তৈল 🐇	v. 6	তকামৃত	559
পাওু কামলা হলীয	াকারি-	বারি শোষিক চুর্ব	6.
কার চিকিৎসা	222	তক্রমভূর	
ফলতিকাদি পাচন	6	বৈভানাথ রস	4
नवान जीर	٠, 6	কম্পতক্ল রসায়ন	774
प क्षन	6	विषय्। पि हुर्व	4
নশু	6	রজপিত্ত চিকিৎসা	•
পানন্বা মণ্ডুর	6	ভাবনা	222
वज्रवषू मध्र	558	ভেদ করাইবার প্রকার	4
তিকত্রাদি লৌহ	6	রুক্তপিত্ত রোগের পথ্য	\$20
শোথ শাদ্ধ ল তৈল	•	মুষ্টিযোগ	4
পাণ্ডু সুদন রস		धनामि विकिश	525
পুননীবা তৈল	220	বাশাস্ত	. 6
প্রাণ বলভ রস	6	কুমাও খণ্ড	6
পুনৰ্বা পাচন	•	যুথ হইতে রজস্রাবের	
পালুবজু ৰটি	<u>.</u> 6	मुकिरया ग	6
नवान लोह	228	শুভাৰলেহ	6
শোথারি মগুর	6	नौत्नादशनामि हुर्व	522
পঞামৃত পর্ণটী	6	বাসাতালিশ	4
जिक्जामि लोह	ď	বাসাদি	6
श्रन्तवा टेडन	220	नामिका रहरक ब्रक्त्या	বের
•		·	

		শ্বন্দ র সেন্দ্র গুড়িকা	522
इकि रबाग			44.0
मूर्थ इहर छत्र तक निवांतर	6	উক্তমত চিকিৎসা	٠.
उ ष्ध		কানড়াদি চুৰ	
শুঙ্গারাভ্র বটি	6	রুহত্তালিশাদি মোদক	•
की निर्मापि हुन	. 6	व्यथनकामि व्यवत्वर	> ७•़े
	११७	বাসাথগু	•
কুৰা ও খণ্ড	٠.,	কাস চিকিৎসা	> 55
যক্ষাধিকার	¥	शक्षयूनामि भोठम	6
ৰাসক লৌহ	5 28	मठापि हर्व	•
ठ न्मन मि टेडन	4	বালাদি পাচন	4
इस्वामादलर-	6	<u>ভাকান্তাবলেহ</u>	Č
व्रज्ञापि लोश	>20	পুষ্ণরাদি	6
শৃস্থাত	6	দশমূলাদি	6
মুঁ গান্ধর স	6	কট্ফলাদি পাচন	4
গুড়িকারপ্রকার	125	1 Marin	6
ज्ञामभाग शहन	6	কণ্টকারি মৃ চ	302
शक्षमभाक शांहन	6	वाञ्चामि लोश	4
		वानामि हुर्व	4
भ वत्वर	•	ক্ষ্যক্শব্লিরস	4
य प्राक्षां वर लह	6	কাদ দংহার বটি	
বাদাবলেক	759	*	305
হাগলাভ ঘৃত	J ~ 6	হিন্ধা চিকিৎসা	1.6
हत्स्मानि रेडन	1 6	मुखिर या श	303
কাস মাতের চিকিৎস	6	শ্বাদ রোগের চিকিৎ	
কল্টকারি পাচন	6	মুক্তি যাগ	ě
मूकिरयार्ग	6	পাচন	ž
रंशीडकी भारक .		পুদ্ধাবলেই	Ė
ममगर्द्र कि	724	শৃঞ্চান্তেন্থ শিশ্বিপুক্তন্ম করিবা	व दिशि
बाजी रही वरी	. • 6	ाना वर्षे किन्न म माध्रेती	N I NIN

ভাগীগুড়	303	মুক্টিযোগ	6
গুড় পাক করিবার		পাচন	28¢
বিধি	٠ د	গৃধিণি বায়র চিকিৎসা	6
স্থ্যাবর্জর স	6	जिएगयद्भी धग्छन	585
ষ্ত্ৰতক চিকিৎসা	300.	গুণ্ডল পাক প্রকার	6
বাতজে মুফিযোগ	6	ছাগলাদি স্ত	*6
কল্যাণ ঘুত	**	नकूना मि धुं छ	384
<u>ৰক্ষীয়ত</u>	6	স্বল্প বিষ্ণু তৈল	78F
बक्रि विकिथमा .	309	পদকর প্রকার	6
মুষ্টিষোগ	6	মহাবিষ্ণু তৈল	6
(मानक	•	মধ্যমনারায়ণ ভৈল	282
ছদি চিকিৎসা	304	বুক্ত প্রসারণী তৈল	
একাদি চূর্ব	6	ষ্পমাষ তৈল	>00
ছফা চিকিৎসা	202	বৃহৎমান তৈল	4
পদ্মকান্তাবলেহ	6	সপ্তথ্যসাস তৈল	42
মুচ্ছ বিধকার	.8•	বাতরক্ত চিকিৎসা	
দাহ চিকিৎসা	6	ৰম্পগুড়চি তৈন	. 6
উন্মাদাধিকার	85	গৃহৎশুড়চি তৈল	
कन्यान इंड		কৈশোর গুগ্তল	205
कौत्रकना। १ इंड	785	বজ্ওগ্ওল	,
মহাকল্যাণ সূত	,	छড়गामि लोश	۵
टि जन घुठ	,	ভানক	200
শিবামৃত	283	হরিতাল শোধন	. 6
অপসার চিকিৎসা	>88	উরুস্তম্ভাধিকার	248
म.किट यो श	6	প্রালপ	*
ৰক্ষীযুত	•	আমবাভাধিকার	
ছদিত বায় চিকিৎদা		রান্নানপ্তক	6
बाद्यानगायृष		প্রলেপ	4

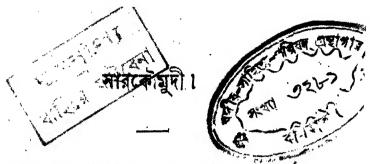
	यही	ia i
বোগরাজ গুগুগুগ	, , ,	উর্ত্রাহ রোগের লক্ষণ
শ্লঘুষাদি চুৰ	200	इकिरयाग
वांक मार्क्त अन्तर	. 6	इंखक्ष्म हिकिৎमा ১७७
इर् रेमकावानि रेजन	•	म्चित्यान ७ विकर्शामि
শামবাতারি গুড়িকা	366	. ঘুত
শ্ল চিকিৎসা	€,	হ্তাহাত চিকিৎসা
क्षियोग .	•	মুফিযোগ ও গোন্দরি
शांहब	6	মৃত ,
वारमभ	. 6	বহুৰুত চিকিৎসা ১৬৪
পাচন	6	মুক্তিযোগ ও ধাতিমৃত '
Б ष्ध्रम्भ लोह	509	ঃষ্টিযোগ '
পরিণাম শ্ল চিকিৎ	11 6	পার্থার চিকিৎসা ১৬৫
(वमना निवाद्ग उछि	•	मुर्कित्यां १
- যোগ	70F	কুল,খাদি ছত
नोतिरकन थश्च	•	বৰুণ গুড় ১৬৬
আ মলকী	6	প্রেমেই চিকিৎসা '
শতাবার মগুর	500	इकियांग ও माजिशानि
જાઈી થછ		ঘুত '
ंइरू बीद्रकारित्राप	क 6	मांखपुठ '
বিভাধরাত্র	>6.	हेट्य विधिवा ' १७१
प्रकिरगं भ	6	শরার হুর্গন্ধ চিকিৎসা '
গুলা চিকিৎস	385	विष्कामि लोह
मछिरदी ठकी	6	युक्तिरयां श
বিস্তাধর রস	€.	छपत्री हिकिथमा - ७७४
ছভোগ চিকিৎসা	. 6	মৃষ্টিযোগ ও সামজাদি
मुखि (बाश	302	र् ब
वर्क न घुठ	6	भूनर्नवाकेम '
উর্তাই (চকিৎ্স)	•	महौहरूर्व ७ इसिंद्याभ
	,	•

		☆	
যক্ত প্লীহা চিকিৎসা	200	क िंदगंश	•
্মান গুড়িকা	4		234
যক্তারি গৌহ	4	পঞ্চিক্ত গুণ্ডল	4
অভয়া লবণ	6	অমৃত ভলাতক	6
লোকনাথ রস	* 4	সিন্দুরা দি তৈল	•
'শেথ চিকিৎসা	290		290
কংস হরীতকী	4	কন্দর্পদার তৈল	4
শুক यूनामि रेजन	6	অমৃতাকুর লৌহ	399
কোষ রুদ্ধি চিকিৎসা.	515	শিতপিত চিকিৎসা	6
শতপুষ্পাত্ত	6	মুষ্টিযোগ	396
নিভ্যানন্দ রস	6	অম্পিত চিকিৎসা	6
গলগণ্ড চিকিৎসা	6	युक्तियोग ও नाद्रितक	77-
ভূকি তৈল	6	মূত	٤.
শিক্ষাৰ চিকিৎসা	392	অধিপিত চূর্ব	6
মুফি:যোগ	6	শিতামভার চুর	6
গৌরেশ্বর মূত	6		いらか
িজাবলাধিকার	6	বিষকোট চিকিৎসা	
ত্ৰণ চিকিৎ,সা	4	গুদত্ৰ চিকিৎসা	6
মুটি, যাগ	. 6	য় ফিযোগ	6
হণতৈল	390	টাক রোগের চিকিৎসা	•
व्यस्त विकिट्मा	6	মালতি তৈল	6
ভগন্দর চিকিৎসা	>98	বু ঠাভি তৈল	200
मृ खिर्या ग	•	দন্তরোগ চিকিৎসা	6
वश्वानम रेडम	4	मुखिरयां ने अमित्र वृद्धि	কা'
চ্গন্দর হর রস	6	কৰ্ণ চিকিৎসা	4
डे शप्रम हिक्टिमा	6	যুক্তিযোগ ও ক্ষার তৈল	6
য ফিংযাগ	6*	ममयून रेजन ७ जा	
হুঠাধিকার চিকিৎসা	6	- In-	5 63

यही शव।

নাগিকা চিকিৎসা	6	ষ্ড্বিন্ডু তৈল	P8
हिल इंद्रीक्की	4	প্রদর চিকিৎসা	6
इक्टियांग	১৮ २		6 '
शृह्धुमानि देवन		অনেক্ষ্ত	220
চকু রোগ চিকিৎসা	6	मूचिक रेडन	6
	•	ক্ল ঘৃত	4.
মুক্টিযোগ	6	মুতিকা চিকিৎসা	>>0
इंड्यानकामि शाहन	240	মুষ্টিযোগ,	6
हत्कामंत्र वि	6	বালকের চিকিৎসা	,
ত্রিক্সা ঘূত	6	ম্ফিযোগ	4
শিররোগ চিকিৎসা	6	ह ज्रुं क्या व्यवस्	3b -9
দশ্ল তৈল	6	অ্টমঙ্গল মৃত	6
दृह्द मणभून रिष्टन			

সূচী পত্র সমাপ্তঃ।



সংকৃত গ্রন্থ পণ্ডিলের বোধগম্য তাহা অত্যন্ত কুটার্থবুজ হয় সে গ্রন্থ বৃধিতে বিস্তর জ্ঞান অপেকা করে অত্তর
সারকৌমুদী নামক যে চিকিৎসা শাস্ত্র আছে তাহা অপ্পশ্রমে বোধ হইবার কারণ প্রাক্ত বাক্য দারায় লেখা যাইতেছে, অনায়াসে চিকিৎসা করণের বাসনা ঘাহার হর
তিনি গ্রহণ করিবেন।

নমো গণপতয়ে নমঃ।

পারমানন্দিত লোক সকলের পারমানন্দের মূল স্বরূপ।
এওরুদেব চরণে প্রণতি হইয়া মান্দ বুদ্ধি জনের উত্তম বুদ্ধি
হওনের নিমিত্ত সারকৌমুদী পুস্তকের ভাষা করিলাম।

শরীরের আরোগ্যতা ধর্মার্থ কাম মোক্ষ চতুবর্গ দাধ-নের মূল তাহার নউকারী এবং শরীরের মঙ্গলাপাহর্তা রোগ সকল হইয়াছে।

ভাষতে চিকিৎনা কর্ম অভ্যাবশ্যক ইইয়াছে চিকিৎ-নাতে কোথাও ধন লাভ কোন স্থানে পুণ্য কোথাও নথা-ভাব কোথাও অনুরাগ কোথাওবা কর্মাভ্যান হয় চিকিৎনা কর্ম কোন প্রকারে নিজ্জ হয় না।

ব্যাধিদিগের নির্যাদ এবং দমন বৈত্যের এই হুই কর্ম বৈজ্ঞ আয়ু দিবার কর্তা নহে। রোগীর কণাগত প্রাণ পর্যন্ত চিকিৎসা কর্ত্তব্য অর্থাৎ মৃত্যু না হইলে রোগীকে বৈস্তাত্যাগ করিবেন না।

রোগমুজ শরীর বৈভ্যের অধিকার প্রযুক্ত বৈদ্য রোগীর পিছা তুল্য হয়েন অতএব বৈদ্য স্থানে চিকিৎসিত শরীর ক্রয় করেবে তাহা না করিলে সেই শরীর দারা তিনি থত কর্ম করেন তাহার ফলভাগী বৈদ্য হয়েন।

অত্রে রোগ নিৰূপণ করিয়া পাশ্চাৎ নিৰূপিত রোগের উপযুক্ত শাম্মোক ঔষধ রোগীকে সেবন করাইবেন সহৈ-ত্যের চিকিৎসা ক্রম এই।

দর্শন স্পর্শন এবং প্রশ্ন ই হাতে রোগ জানা বায় অত-এব রোগীর শরীর মূত্র জিহ্ন দৃষ্টি করণ পরে নাড়ি ধরিয়া স্পর্শন এবং বৈভাকে যে লোক ডাকিতে যাইবে ও রোগীর নিকট পরিচারক যে সকল লোক থাকে ভাহাদের জি-ভাসা করণ এই তিন প্রকারে রোগ জানিবেন।

নিদান পূক্ষক ৰূপ উপশম এবং সংপ্রাপ্তি এই পাচ প্রকারে লোক সকলের আকার রোগের ফুল লক্ষণের নাম নিদান রোগের মানসিক প্রকাশ পূক্ষৰপ রোগেরৰূপ বাছ প্রকাশ এবং চিকিৎসা ছারার রোগ সাম্য হন্তন উপশন এবং সম্পূর্ব লক্ষণাক্রান্ত হন্তন সংপ্রাপ্তি এই পাঁচ প্রকার রোগের লক্ষ্ণ।

সকল রোগের মাদি কারণ মনদাণি তাহা মতিরিজা-হারেতেই হয়। আহারের যেমতশাস্ত্রে কহিয়াছেন ভক্রপ আহার করিলে মনদাণি হইতে পারে না।

कान जन दांग छे९ शत रहेश नामा हस এवং कान कान दांग खाँचसा निवांत्र हस ना जाशिन नमछादि था-किस जनार दांगां शत कद ति दांग काछ प्रष्ठे ति दांगक देवण वस नावधान हहेश हिकिश्ना कदिद्वन ति नामाना दांग नटह, तहे दांग कुछ नाथा खाँनिया॥

हिकि नात अकांत्र सारता निथिया देवछ अवर द्वान है.

হার মধ্যে রোগী যদি রোগানুগত হয় তবে বৈস্ত বড় ব্যা-মোহ পায় রোগের দমন করিতেও শীল্র পারেন না রোগী মুচ্চপি বৈদ্যের আজ্ঞানুবর্তী হয় তবে রোগের দমন করিতে পারিবেন। অতএব বৈচ্চা বিবেচনা করিবেন রোগীকে রোগান্তবর্তী কৃপথ্যাদি করিলে কি না করিলে আজ্ঞান্ন-বন্তী জানিতে পারিবেন।

রোগেরলক্ষণ এবং ঔষধের প্রমাণ কহিতে পারে এবং ঔষধ ও চিকিৎসা অনেক প্রকার দেখিয়াছে আর চিকিৎ-সাতে মুন্দরকপে পট্টা থাকে এবং আপনি গুচি এই চারি গুণ যুক্ত বৈভাকে উত্তম বৈভা বলা যায়।

ইহার মধ্যে শাস্ত্রজ্ঞ এবং বছদশী যে বৈতা তিনি সিদ্ধ বৈতা কি হ্ব এই ছই গুণা একেতে বহ্ছিত ছইলে তাহাতে এক পক্ষ হীন পক্ষির ন্যার কঁছা যায় অর্থাৎ এক পাক্ষা ভাবে পক্ষির গতি হয় না ভক্ষপ এক গুণ থাকিলে বৈতা চিকিৎসা করিতে পারে না।

এই চিকিৎসা শাস্ত্র গুরুপদেশ দ্বারা জ্ঞাত হইয়া যে বৈস্তাচিকিৎসা করে নেই শ্রেষ্ঠ ক্রন্তিয় চিকিৎসাকারি বৈস্ত সকলকে নফ্ট বৈস্তা চোরের সমান জানিবা।

আয়ুকোদ এবং চিকিৎসাশাস্ত্র জ্যোতিষ ধর্ম নির্বয় এই চারি শাস্ত্র অধ্যায়ন না করিয়া যে চিকিৎসাকরে তাহাকে ব্রহ্মঘাতক বলা যায়।

ি চিকিৎসা শাস্ত্র অধ্যয়ন করিয়াও তন্ত্র শাস্ত্রের যুক্তিনা জানিলে।চকিৎসার সম্পূর্ণ ফল ভাগী হইতে পারে না তাহার দৃষ্টান্ত পুরুষ যে কালে ছন্তাগ্য প্রাপ্ত হয় তৎকালে উপার্জিত অর্থের ফল ভাগী হইতে পারে না।

আর মনদ বস্ত্র পরিধান বাক্য কর্ষণ চতুরতাহীন কু-আমে বাস এবং আহ্বান না করিলে চিকিৎসা করিতে গ-মন এই পাঁচে বৈভার সমান হয় না তিনি ধনুস্থরি ভুল্য হইলেও মান্য হয়েন না। রোগ শরীরের সংহার কর্তা ভাহাকে ঔষধ দারা নিবা-রণ করিলে রোগী বৈস্তকে শরীর সমর্পণ করেন এই প্র-কারে চিকিৎসক রোগীর পিতা ছরূপ হয়েন। অতএব রোগীকে বৈস্তপুক্তের ন্যায় পালন করিবেন।

ষে বৈতা অবশ্য রোগ নিবারণ করিতে পারেন তিনি উত্তম বৈতা যে বৈতা কোন রোগ নিবারণ করিতে পারেন কোন রোগ পারেন না তিনি আংজাদর ভরণ নিমিত্ত চি-কিৎসক নামধারি মন্দ বৈতা অর্থাৎ সাধ্যাসাধ্য জ্ঞান বি-শিষ্ট হয়েন না চিকিৎসা বিষয়ে সাধ্যাসাধ্য জ্ঞানের আব-শ্যক আছে।

সকল বৈভারে অর্থ যে জ্ঞান্ত তাহার নাম বৈচ্চ শেই বৈচ্য আয়ুর্কেদ উপবিষ্ট হইলে তাহার দ্বিজ্ঞসংজ্ঞা হয় অ-র্থাৎ আয়ুর্কেদোপদেশ দ্বারা জন্মান্তর হয়।

ব্রাহ্মণ গুরুগণক নবগ্রহ এবং বৈতা ইছারা নমত ইহা-দিগকে রোগীরা নমকার না করিলে আপদ স্বরপ ব্যাধি স্ইতে ভর প্রাপ্ত হয়।

কালে ঔষধ আরম্ভ এবং সমাপন পালাৎ পারীক্ষা করিয়া প্রশস্ত কালে রোগীকে সেবন করাইলে সেই ঔষধকে
মহৌবধ বলা যায় এবং সেই ঔষধ অপপ মাত্র ধারণ করিলে
মহাবীধ্যবান হইয়া শীঘ্র ব্যাধির দমন করে।

রোগীর পরিচারকের লক্ষণ। ঔষধ করিবার প্রকারজ্ঞ বলবান প্রভূপ্রতি অন্মরাগ এবং শুচি এই চারি গুণযুক্ত ব্যক্তিকে পরিচয়া কর্মেনিযুক্ত করিবেক।

উত্তম রোগীর লক্ষণ। যে রোগী আপনার শরীরের ভাব এবং রোগ হইবার কারণ বৈতা জিজ্ঞানা করিলে ভাল বিস্তার করিয়া বৈভাের নিকট কয় এবং ভয়াকুল না হয় এ-সভ রোগী উত্তম।

বৈদ্য আনিবার হুতের জাতি ভেদ এবং নিসিদ্ধ লক্ষ্ণ। চণ্ডালাদি জাতি। শীত্র গমন আল্রিড কেশ পত্র এবং দশুধারণ মলিন বসন পরিধান করণ অক হীন এবং শক্ট গদিভ মহিষ্ উন্টুইহাতে আরোহণ রজবর্ণমাল্যধারণ গারে তৈল মদিন এক বস্ত্র পরিধান দিগদ্বর ইত্যাদি নিষেধ। এক প্রেধান দিগদ্বর ইত্যাদি নিষেধ। এক পদে দাশুটিবেন না এবং কেশ, মন্তক, পৃষ্ঠ, গলা এই সকল স্থান ম্পর্শ করিবে না একদৃষ্টে হেটমুগু হইয়া আপ্রান্ধ প্রান্ধ রোগীর বিষয় বৈতের দ্ফিন্পাম্থে দগুর্মান হইয়া নিবেদন করিবে এবং ভিষক যখন রোগী দেখিতে যাইবেন তথন ক্রেবে এবং ভিষক যখন রোগী দেখিতে যাইবেন তথন ক্রেবে এবং বিষয় নিন্দ গমন করিবেন। এই প্রকার শান্তে প্রস্থি বিধি।

যৎকালে রোগের প্রথম প্রমন্ত ইবেক সেই সময়ের লগুছির করিয়া দেথিবেন যদি পাপগ্রহের গৃহে প্রশ্ন হয় এবং সেই লগ্নে পাপগ্রহ থাকে সেই লগু সম্পূর্ণ দৃষ্ট হয় আর সেই লগ্নে অউন গৃহে যদি পাপগ্রহ থাকেন তবে নিশ্চয় সেই রুগু ব্যক্তির মৃত্যু হয়। অতএব চিকিৎসক যথ্যন রোগীর গৃহে গ্নম করিবেম তথ্য শুভাশুভ লক্ষণ ইন্ হাতে অমুমান করিবেম।

শুত হওনের প্রার্থনা যে ভিষকের আছে তিনি শুচি হ-ইয়া রোগ পরীক্ষা করিবেন। এবং যেমত চিকিৎসা ক-রিলে রোগীর খাতু মুস্ত থাকে তাহাই সদৈত্যের কর্ত্ব্য।

ইতি নারকৌনুতাং প্রথম পরিছেদ সমাপ্তঃ।

মনুষ্টিংগের শরীরে দোষধার মল এবং আধার সকল আছে। বায় পিতু কফ এই তিনের নাম দোষ। এবং বিঠা মূতীদির নাম মল এবং ধারু আর আধার শংকর, অর্থ প্রারে লিখিতেছি। মনুষ্যের বাল্য যুবা হন্ধ এই তিনকালে শরীরে স্থূল স্থানপে নাডি সকলের বিবরণ পরে লিখিব সংপ্রতি, আধারের কথা লিখি।

মনুষ্য আহার করিলে যে স্থানে গিয়া অঠরানল ছারা পাক হয় সেই স্থান নাভির উর্জে, তাহার নাম আমাশরঃ আধার অয়াদি পাক হইয়া যে স্থানে গিয়া থাকে সেই স্থান নাভির অধঃ তাহার নাম পাকাশয়ঃ এব১ তাহার অ-ধোতি মূআশয় তথা হইতে লিঙ্গ পথে মূর্ত্ত বাহির হয় এবং আমাশয়ের ছই দিগে পাঁজরার ভিতরে ছই আধার আছে তাহার নাম যত্ৎ ও প্লীহা। প্লীহা বামে যক্ত দলিশে, থাকে।

যক্ত ও প্লীহা ছই বজাশার অর্থাৎ বজ জানিয়া এই ছই স্থানে সঞ্চয় হইয়া সকল শরীরে ব্যাপিত হয়। আর নাজির উর্চ্চে এবং অধোতে যে ছই স্থান আছে দেই স্থানের মধ্যে নাভিমূলে পাকের এক স্থান অংছে তাহার অধোতে নলের স্থান তার নামউপুক। এবং লিঙ্গমূলে যে মুর্বের স্থান তার নাম কুন্দুন। এবং আমাশায় ও পাকাশায়ের মধ্যে যে স্থান তার নাম পুপ্পপ্ত আহার করিবা মাত্র নাগবায়্র ঘারা যে স্থানে গিয়া পাক হইয়া অন্য স্থানে যা ইবার যোগ্য হয় দেই স্থানের নাম গহিণী। এবং নাভির স্থানের উর্ব্চে পিতের স্থান কেই শরীরে ভেজের স্থান তিননিই শরীরে মূলস্থকপ হয় তাহার নাশ হইলেই দেহ নইট হয় অত্রব জ্ঞানী চিকিৎসকেরা ভাহার রক্ষার জন্য চেটা ক্রিবেন।

শরীর দূষণ হেতু বাত পিত্ত কফের দোষ সংজ্ঞাহয় এবং বিষ্ঠা মূতাদি শরীরকে মলিন করে অভএব তাহার নাম মল বলা যার।

্দিবা রাজিতে কফ পিত বায়ুর সময় নিৰূপণ। • • প্রথমতঃ। দিন্দান যত দণ্ড হইবেক তাহা অংশত্র করিয়া প্রাতঃকালে যত দণ্ড হইবে তত দণ্ড ককাধিকার মধ্যাত্রে পিত্তের শেষ বায়র অধিকার হয়। কিন্তু প্রাতঃ-কালে দক্ষিকাল ছই দণ্ড যে আছে তাহা ভ্যাগ করিয়া অংশ করিতে হইবে এই রূপ মধ্যাত্রকালের সন্ধিকাল এবং নায়-কালের দন্ধি সময় ভ্যাগ করিয়া কক বায়র অধিকার জানিবেন। এবং তিন দক্ষিকালে বায় এবং কফ উভর মিলিত হইয়া অধিকারী হয়েন এবং রাজিকালে ঐ প্রকার ককী পিণ্ড বায়র হয় তাহাতে সন্ধিকাল ভ্যাগ করি-বার বিষয় নাই।

শরীরে কফ পিত বায়ুর অধিকার প্রকরণ।

কটিদেশ পর্যান্ত অধোতাগ ককের উর্দ্ধে গলা পর্যান্ত পিত্তের এবং কেশ মল পর্যান্ত বায়র অধিকার এবং দক্ষিত্তানে বাতম্বোর অধিকার। কলিযুগের মন্বয়ের আয়র নিয়ম নাই অকাল মৃত্যু হইয়াছে তাহাতে বৎসরের মধ্যে ঐ তিনের কি ৰূপ অধিকার হইবেক তাহা বৈল্প বিবেচনা করিবেন শত বৎসর মন্বয়ের আয়ু তাহা ভিন অংশ ক্রিরা পুক্ষোক্ত ক্রমে ঐ তিনের অধিকার জানিবেন। কফ পিত্ত এই তুই অচল কিন্তু বায়ু সচল হয়েন কেবল বায়ুর শত্তিতে কক্ষ এবং পিত্ত গমন করে যেমন প্রবল বায়ু কর্শক মেঘু সর্বাক্ত ভ্রমণ করে তক্ষপ বায়ু কর্শক সোহা সর্বাক্ত হয়। অতএব কোন২ রোগে কক্ষ পিত্রক সাম্যারাধিয়া বায়ু দমন অগ্রে করিবেন।

নাভির অধোতে পাকাশয় আছে সেই স্থান বায়ুর এবং নাভির উর্চ্চে আমাশয় আছে পে কফের স্থান এই ছই স্থা-নের মধ্য স্থান অগ্নি ডুল্য পিড স্থান হয়।

পক্ষাশর কটিদেশ এবং গুছু কর্ব চক্ষ স্পর্শেন্ডির এই সকল বায়র হয় তত্তাপি পক্ষাশয় বায়র নিভাধান হয় ত-দারা শীতোফাদি বোধ হয় এবং কোমল ক্রটিন বোধ হয় ভাহাকে স্পর্শেন্ডির কছে।

পঞ্জ প্রাণের অবস্থান।

হৃদয়ে প্রাণ বায়, গুছে শাপন বায় নাভিতে সমান বায় কঠে উদানবায়, এবং ব্যানবায় নকালে ব্যাপিত জানিবেন।

পঞ্চ প্রাণের কাষ্য।

যিনি শরীরের রক্ত চালনা করেন তিনি প্রাণবায়, যিনি আরের আস গ্রহণান্তর স্ববলে প্রকাশয়ে লায়ে যানি এবং যাহার শক্তিতে প্রাণবায় কার্য্য করেন তিনি ম্পান বায় হয়েন এবং যাহার শক্তিরার গনা বমন উদ্পার ও শ্বাসাদি
হর তাহার নাম উদান। পক্তাশয় এবং আমাশয় এই তুই
স্থানের মধ্যে যে নাতি স্থান আছে তাহাতে অগ্নিরপ যে
পিত সেই পিতে কপ অগির সহায় যে বায় আছেন তাহার
নাম সমান তিনিই অলাদি পাক করিয়া ভিন্ন২ করেন।
এবং যিনি প্রশোলে থাকিয়া মল মূত্র ভাগে ও বদ্ধ করেন
ত হার নাম অপান। বিঠা মূত্র শুক্ত ক্ষরির এ সকলের অন্ত
গতি হইয়া আছেন এবং সকল শরীরে ব্যাপিত যিনি তাহার নাম ব্যান বায় এই প্রাণাদি পঞ্চ বায়র স্থান এবং
কর্মা কাহলাম।

পরে শ্লেমা এবং পিতের মাশ্র্যা যে পরমেশ্র নিশ্রিত স্থানে প্রমেশ্র কর্ত্ক স্থাপিত করণ। ইহাতে এই দ্বের বিচিত্র সম্বন্ধে যে স্থিতি তাহা পণ্ডিত বৈছেরা নানা শাস্ত্র মধ্যমন করিয়া উত্তমনপো বোধ করিতে পাবেন না কেবল স্থূল মাত্র বোধ করিয়া চিকিৎনাতে মধিকারী হ্রান। অতএব প্রাক্ত মনুষ্যের বোধগ্রা হয় না এবং শ-রীর মধ্যে পিত শ্লেমার স্থিতি মুনিগণেরা মন্ত্রুন্তিতে দেখিরাছেন ভাষা লারকোমুদী গ্রন্থে কিঞ্ছিৎ প্রকাশ আছে বিস্তার কপে প্রকাশ তন্ত্র শাস্ত্রে এবং শক্ষর ভাষ্যে আছে তাহাঁ সকল জানিয়া চিকিৎসা করা হুর্ঘট। মতএব বঙ্গতাষা

রচিত গ্রন্থ অপ্যায়ানে বোধগম্য হইলে শীঘ্র চিকিৎদাতে সক্ষম হইবেন।

পিত্ত শ্লেমার স্থিতি প্রকরণ।

যথা নাভিমূল এবং আমাশার এবং শারীরে জল স্থান ও রজাশার এই সকল পিত্তের স্থান তত্তাপি ইহার বিশেষ স্থান নাভিমূল সেই নাভিমূলস্থ যিনি শক্কাধান তিনি ভূতাত্তাক। কিন্তু দেই স্থানে পরমেশ্রের ভৈজস কোষের অধি তান অতএব তাহাকে বৈতা কহিতে হইবেক নতুবা তিনি কোন শাজির ঘারা অম পারিপাক করিয়া অসার ভাগ ত্যাগ পূক্ষক শার ভাগ এইল কার্য়া সপ্ত ধাতুতে ভিন্তু স্থান পূক্ষক শারীরকে বলবান করিয়া রক্ষা করেন। এবং শারীর মধ্যে যে ঈশ্বর কপাদি দর্শন হয় তাহাও তৈজস কোষের শাজি। এবং শারীর মধ্যে মূল স্থান নাভি মূল ইহাতে পালকাশার পরম দেবতা কপ আছেন ইহার বিষয় উত্তম কপ বোধ করিয়া চিকিৎসা করিবেক।

প্লেক্ষা প্রকরণ।

শ্রেষা এবং কক এই তুই শব্দের একার্থ স্বভাবে অর্থাৎ কল ৰূপে থাকিলে শ্রেষা এবং বিকার প্রাপ্ত ইইলে মল ৰূপ কক ইহার স্থান বক্ষ কণ্ঠ মন্তক উদরের উর্জ বক্ষের অধঃ অর্থাৎ যে স্থান কণ্ডা হয় সেই স্থান এবং শরীরের সলি দ্রান সকল ও আমাশয়রস মেদ নাসিকা জিহ্বা এই দকল থাকিলেও বক্ষঃস্থলে বিশেষ ৰূপে থাকেন ইহার মধ্যে আমাশয়স্থ কক্ষ পঞ্চ নাম গ্রহণ করিয়া পঞ্চ ক'য়া করেন।

পঞ্জ নাম যথা।

আয়লকঃ ক্লেদকঃ বোধকঃ তর্পকঃ শ্লেমকঃ। পঞ্চ কায্য যথা।

ক্লেদক নামা কফ আমাশার গত জব্যাদিকে কর্দন ন্যার করেন বোধ রসনেতে থাকিয়া রসবোধ করান তর্গক ম-স্তকে থাকিয়া অঞানির্গত করেন শ্লেমক শরীরের স্থিতিত থাকিয়া শিথিলীকরণ করিয়া গমনাদি করান আদি শব্দের অর্থ সমুদর সন্ধিস্থানের কার্য্য করান। কিন্তু শ্লেম্মক না থা কিলে হস্ত পদ পদাদির প্রসারণ আবুঞ্চন ইত্যাদি হইত না কেবল দণ্ডের ন্যায় থাকিত এবং কক ক্রুর হইলে সন্ধি স্থানে থাকিয়া অবশ্য পীড়াদায়ক হয়েন।

ষ্মবলম্বক কফ শরীর নাশ এবং রক্ষার কারণ।

শ্বলম্বক রুজৰপী কক জল ৰূপে আমাশয়ে থাকিয়া শরীর রক্ষা এবং নাশের কারণ হয়েন কিন্তু নাশের কারণ হইয়া রক্ষার কারণ কিন্তু নাশের কারণ হইয়া রক্ষার কারণ কিন্তুপে সম্ভব হয় ইংগার দৃষ্টান্ত হলাহল দর্প মুখে থাকিয়া সর্পেকে নট্ট করে না অথচ বলবান করে অর্থাৎ নির্বিষ দর্প হইতে বিষ বিশিষ্ট সর্পকে বলবান ক-রিয়া কহা যায় সেই প্রকার রুজনপী অবলম্বক কক আমাশয়ে অধিষ্ঠান করিয়া আমাশয় গত কক ও পিত্ত ইহারা পরম্পর নাশ হইতে রক্ষা করিয়া শরীর রক্ষা করিতেছেন অন্তর্পর শরীর রক্ষা কারণ অবলম্বক নামা কক।

শরীর নাশের কারণ।

প্রাপ্তকাল হইলে শরীর রক্ষক ঐ অবসম্বক কফ ইনি
শরীর রক্ষার মূল আমাশয় গত কফ পিছে বায় ইহার মধ্যে
কফ পিছকে গ্রান করিয়া বায়কে নই করিছে না পারিয়া
শরীরকে যে প্রকার নই করেন তাহা দুইান্ত পূর্বক লিখিভেছি। জল পাবকোদর নৌকা অনায়াদে সমুপ্র গমন করে
কিন্তু নৌকাল্থ অগ্নি এবং জল নৌকার নাশ কারণ তৎকালীন হয় না পরে কাল প্রাপ্ত হইলে বায়র ব্যতিক্রমে অথবা
অন্য কোন প্রকারে দেই সমুদ্র ঐ নৌকাকে আপন জলে
মগ করিয়া নৌকান্থিত অগ্নিএবং জলকে নই করতঃ নৌকা
কে যেমত নই কল্পে তাহার ন্যায় আমাশয় গত রুদ্র কপ ঐ অবলম্বক কফ আমাশয় গত অগ্নিকণী পিছে এবং জল
কপ শ্লেআকে বায় ব্যতিক্রমে নই করেণ হয়।

পিত কফ বায়ুর অধিকার কথন।

বর্ষা আর শরৎ এই ছই ঋতুতে যে চারি মান ইহাতে পিতের অধিকার। এবং শিশির ও শীত এই ছই ঋতুতে ককের অধিকার বসস্ত এবং গ্রীম্ম এই ছই ঋতুরত বায়ুর অধিকার। এই প্রকার বংসরের মধ্যে পিতি কক বায়ুর অধিকার হয় ইহার ঔষধ ঋতু অধিকারে দিতে হইবেক দেশ কাল পাতা বিবেচনা অত্যাবশুক জানিবে।

मधुरमाधन विधि।

নিজে মধু তৌল করিয়া তাছাতে উপযুক্ত কিঞ্চিৎ জল দিয়া নূতন পাতে চুলারউপর বসাইয়া মধ্যম জালে পাক করিলে ফেলা হইবে ও ক্রমে২ জল নিঃশেব হইবেক এই কপে মধু শোধন হইবেক।

কক রুদ্ধি প্রকরণ।

শিশির বুজ্কটিকা এবং প্রাভঃকালে ভোজন বসন্ত-কালে মিট অব্য ভোজন অভি শীতল একপান এবং ইক্রস পান তক্র দিবা নিজা লুচি হইতে উত্তম রূপে মৃত মিশেষ না হইলে সেই লুচি এবং পিইকাদি অব্য ভোজন এই সক লেতে শ্লেমা রাজ হয়।

বায়ুয়োগ প্রকরণ।

হঠাৎ পদাবশ হয় এবং মলদার বেদনা করে মৃচ্ছা অন্তর্ন দি অতি মৌন হইয়া ন্তন্তের ন্যায় থাকে আর পৃষ্ঠ জান্ত কপোল আ ইহাদের চালনা দন্ত কিড়িমিড়ি এবং দন্ত কপাটি এবং বাক্য উরুদেশ ছোয়ালি শুদ্ভিত ও চক্ষ্ স্থান গলদেশ মন্তক শুদ্ভিত শার ধুজ্ভক আ ও দন্তম্বানের অন্তর হয় উদরাধধান এবং নাড়ি আদির শুদ্ভন আর তৈল মর্দন করিলেও গাত্র রুক্ষ এবং চর্মান্ফোটন ও দলন এবং ভৌজন করিলেও পুনর্বার ভৌজন করিতেও ইচ্ছাহ্য় এবং কম্পে অরভক আর কর্মক্ষম হইলেও অলসপ্রযুক্ত কর্মেনা যাওন অকারণ অভিশায় পরিশ্রম করণ এবং গত বিষয় মুন্

(थेर निमिष्ड भूने १२ (थेम करिया लिक्स निक है कर्यन তাস ভুগ কোধ এবং যে কোন শব্দ হইলে কর্নে রোধ বোধ আর স্বন্ধরবপে যে বিষয় কর্মী করিয়াছে তাছার স্মর্প ক-রিতে পারে না এব হস্তাদির কর্ম হঠাৎ বোধ হওন ক্ষ-র্থাৎ ভোজনাদি করিতেই অবশ। আর অপরাধি না ইই-লেও লোকের উপার নর্মদা ভাড়ন আর হর্ষ বিষাদ পরি-শ্রম ইহার কোন কারণ উপস্থিত না থাকিলেও অন্তঃকরণ मर्था मक्तना উल्लाम कर्न এवः लामाक्ष । किन्तु कक कना লোমাঞ কাহয়াছ অতএব উভয়ের ভেদ আছে। লোমাঞ इहेग्रा भद्रीत ভाल इहेटल क्क जना এव लाघव इहेटल वांग्र জন্য আর পিত কফকে নানা স্থানে ক্ষেপণ এবং হস্তাদি ক্ষেপ্র ও টানিয়া লওন শরীরের রস শোষণ কোন ব্যক্তি কর্তৃক দৃঢ় আলিজনের ন্যায় ধারণ আর শরীর মধ্যে নূতন ছিছ জ্ঞান। এবং চন্দ্র শরীর মুস প্রভৃতি ক্লফবর্ণ অথবা রক্তবর্ণ আরে অভিশার ভূষণ হইলে জল পান করিতে ইচ্ছা না হওন এবং নথমধ্যে ক্ষায় বোধ ইত্যাদি বায় জানিবে বারু পারম দেবতা হবপ। শারীর মধ্যে রাজার ন্যায় তা-হাকে বোধ করিবেন। দুটান্ডঃ রাজা কোপা করিলে থ-জাকে অনায়ানে নট করিতে পাঙ্ন। এইৰপ বায় কোপ যুক্ত চইয়া পিতাধিকে । নটা করিয়া শরীরকে নটা করিছে পারেন অতএব বৈশ্র কফ পিত্তকে সাম্যুশ্বে রাখিয়া বা-মুর চিকিৎসা অতি সারধানে করিবেন কিন্তু বায়ু চিকিৎ-নাতে অপে ফলভাগী হয়। দৃটান্ত মহামহৈশ্বব্য দাতা এগুরুদের ভাহাকে দাতা না বলিয়া কর্ণাদিরালাকে দাতা वरलन এवर मरेइ अये। लांच क्रिय़ा कि खिर धन लांच क्रियन ভাহার ন্যায়।

পিত্ত হাক্ষণ।

মন্দ্রব্যুর গলামধ্যে জ্বালা করিয়া অম্বলের ন্যায় যে উল্লায় হয় এবং অকারণ অধিক বাক্য কহন ও অভিশয় ঘর্ম অর্থাৎ যে ধর্ম হইয়া ধারা বাহির হয় ও মূল্ছা হয় এবং চল্ছ জিল্ডা কিয়া শরীরের কোন জন্য স্থান জাগুলিখা যুক্ত তুল্য হইয়া যে দক্ষ হইতেছে। আর জন্সচি এবং জলপান করিতে ইচ্ছার্থে জল খাইতে পারে না এবং কোধ ও বাক্যের তুল মুখ বৈযাত্যের জন্যে ভোজন করিতে পারে না, কিন্তু পুনঃ পুনঃ ভাজন করিতে ইচ্ছা হয় আর গৃহে প্রবেশ করিয়া বোধ হয় এবং জিল্লাতিক অন্তল বাল রস আর পীতবর্ণ মল ভ্যাগ হয় আর জড়তা হইয়া মদোমতের ন্যায় বাক্যম্বলন হয়।

কফলকণ।

ভোজন-না করিয়া ভোজন করিয়া এমত বোধএবংততা অতিশয় মল তরল এবংঅধিক হয় এং শক্ষদা শীতল জব্য ভোজন করিতে ইচ্ছা এং শীতল জব্য গাতে মাথিতে ইচ্ছা আর স্থাওন পোছাইতে ইচ্ছা ও শরীর চুলকান শোথ অ-ধিক নিজা আর ঝাল রস জব্য খাইতে ইচ্ছা চক্ষ্ খেতবর্ণ ও মল মূক খেতবর্ণ আর অল্য হইলে দ্বন্দ্ জরোগ পিত্ত শ্রেমা পিত্রায় বায়পিত্ত ইত্যাদি।

সালিপাতিক লক্ষ্ম।

বায় পিত কফের যে যে প্রকার পূর্বে লিখিরাছি সেই
মত বিবেচনার যে স্থানে পিত এবং কফ এই হয়ের লক্ষণ
দেখিবেন। সেই স্থানে পিত প্লেম্মার রোগ জানিবেন এই
প্রকার বাতপ্লেমা এং বায় পিত পিতবায় এবং এই তিনের লক্ষণ প্রবল দেখিলে সাদ্মপাতিক বোধ করিবেন
বিন্তু ঐ প্রবল্ভিনের মধ্যে যিনি অধিকপ্রবল ইইবেন তাহার চিকিৎনা অত্যে করিবেন।

বায় দমন প্রকরণ।

শীতোক জল একত করিয়া স্থান যে সকল জব্যে শুক্র স্কি হয় তাহা ভোজন এংবলইজি যাহাতে হয় তাহা ভা- জন এবং হ্রাদ অয়ল সৈন্ধবের সহিতে ভোজন তিল তৈল এবং বায়ু নিবারক পাক তৈলমদিন করিয়া স্নান এবংছাগ মাৎস ভোজন করা মদিরা পান এবংনারিকেলোদক পান এবং পল্পতে শয়ন আতাফল ভোজন তপ্তায় জলধৌত করিয়া ভোজন এবং ভোজনান্তর স্নান এই সকল প্রকারে বায়ু দমন হয়েন।

পিত দমন প্রকরণ।

পটোল পারর রস এবং বট্কী চিরাতাই জ্রন্সব ইছা
দিগের রূথে আর হরীতকী আমলকী ইহার রস মিটারনে
পাক করিয়া ভোজন আর শীতল বায়ু ও নিয়ছাল নেবন
পোয়াজ ভোজন ইহাতে অবশ্য পিত্ত নটা হয় আর দার
দিয়া যে জ্যোৎসা গাতে সংলগু হয় ইন্টিজল পান স্ত্রী সঙ্গম
ছাগ মৃত ভোজন এবং ঔষধ দ্বারা ভেদ বমন হওন আর
স্বেদ করিয়া মর্মা নির্গতকরপ। রক্তমোধণ হরি আদি মৃদিন
গোমুত্র পুরাতন বুম্মাও ভোজন আর ছোলার জল হিঞান
রস গুলঞ্চের পালো কিয়া গুলঞ্চের রূথে সেফালিকা প্র
রস গুলঞ্চের পালো কিয়া গুলঞ্চের রূথে সেফালিকা প্র
রস ক্রেপাপড়ারস ধনিয়া মধুরপানা ভোজন ইন্ডাদিতে
পিত্ত নইট হয়।

कक प्रमम श्रकत्र।

মৃত বৃহত কটি এবং তগুল ভিপীটক মশ্রক রফ কলাই ভর্জন আগ ওল মানকচু কাঁচাকলা আদি ভালা এবা
মাত্র কিন্তু তৈল মৃতাদিতে ভালা ভিন্ন। আর ভগুলহাঁডিতে কিঞ্ছিৎ উষ্ণ করিয়া দেই তগুলের অন্ন উফ থাকিতে ঐ সকল রুক্ষ ভালার সহিত ভোলন এরং উফলল
পান আর রুক্ষ হরিদ্রাগাত্রে লেপন আর বিভূতি লেপন।
নিসিন্তাপত রস হলকসার রস ভালসাড়ার রস এই সকল
ডব্য পান। অগ্রিভাপ শুণ্ঠী পিপুল মরীচ মৃগনাভি কস্তুরী
পাশের রসে মাড়িয়া খাওন আর নির্দ্ধন আদার রসের
সহিত সৈক্ষবলবণ তিকটু চূর্ণ মুখ মধ্যে রাখিলে মুখ হইতে

(श्रम्म। निर्गण ह्य अवर जिक हुत मण नांत अवल श्रज राम्य वान् का शृष्ट्री कित्रिया मल्डाक निर्मण काश्रा कित्र कांत्र श्रम् कांत्र कांत्र श्रम् कांत्र श्रम् कांत्र श्रम् कांत्र श्रम् कांत्र श्रम् कांत्र श्रम् कांत्र वांत्र श्रम् वांत्र वांत्र श्रम् वांत्र वांत्र

শারীরিক মানসিক ব্যাধির বিশেষ কথন।

শরীর গীড়াদারক কফ পিত বায়ু এই তিনকে জানি বেন মন পীড়াদারক তমোরজঃ দত্ত্ব এইতিন গুণকে জানি বেন। কিঞ্ছিয়ক্ত কথনং। নানা প্রকার জ্বর এবং গহিণী কাদ শ্বাদ শল রুঠ প্রভৃতি রোগ বাতপিত্ত কফ দারা জ-আয় এবং বিষাদ তয় উৎসাহ হীন ইত্যাদি মানদ পী-ড়াকে দলুরজঃ তমোগুল জাত জানিবেন এই ছই পীড়ার মধ্যে শারীরিক পীড়ার চিকিৎসা এই প্রত্তে লিখিব। কিন্তু মানসিক পীড়ার চিকিৎসা লিখিব না কালে তাহা যোগ শাস্ত্রে পাল বিশেষে লিখিবাছেন এবং এই মনঃ পীড়ার কারণ মহামোহ অতএব মহামোহ জাত যে রোগ বিশেষ, ভাহার উষধ আন্তিক্য বৈরাগ্য। ধৈব্যুম্তি ধ্যান ধারণা কিন্তু ইহাতে উপদেন্টা প্রাপ্তরুদেব হইয়াছেন অতএব অন্য উপদেন্টা হইতে পারে না।

শারীরিক বিষয় কথন।

শরীর মধ্যে কফ পিত বায়ু যে আছেন তাঁহারা ষ-ভাব দারা কিয়া আহতাদি করণ দারা কলাচ কফ রজি ক-থন বা পিত রজি কদাচ বা বায়ুরজি করেন ইহাতে জ্ঞান বান বৈচ্চ এই ভিনের মধ্যে যে হর্মল তাহার রজি এবং বলবানের সাম্য ও সাম্যের পালন করিবেন ইহা করিলে উপ্তম বৈচ্ছা হয়েন।

পুনঃ কফ পিত লক্ষ্ণ।

কক পিত বার কে শরীরে বাহ্য লক্ষণ দৃষ্টি দারা এবং রোগী স্বংশ্ব যে প্রকারে দশন হয় তাহা জিজ্ঞাসা করিয়া ক্ফ পিত বায়ুর প্রবলতা বোধ করিতে পারিবেন ।

বারুর বাহ্ লক্ষ।

শরীরে কার্যতা এবং লাবণ্য রাহিত্য ও অপে কেশ এবং সর্বাদা মন চঞ্চল ও সর্বাদা মনের ভ্রম আর নিজাব-ছাতে বিস্তর বাক্য কথন এবং স্থপাবস্তৃতে অধিক ভ্রমণ এই সকল বাহ্য লক্ষণ ছারা বায়ুকে বোধ করিবেন।

পিত্ৰ বাহ লক্ষণ।

বয়ঃপ্রাপ্ত না ইইলে কেশের শুক্লবর্ণ প্রাপণ এবং রাই সূর্যপের ন্যায় শরীরের বর্ণ আর নীলগোকের মত মকল কর্মে ক্রোধবুজ হইয়া শব্দ কর্প এবং যুদ্ধির প্রথরতা আর নিজাবস্থাতে আলোকমল দর্শন এই নানা বাহ্য লক্ষণ দ্বারা পিত্তকে জ্ঞাত হইবেন।

কফ্ড বাছ লক্ষ্ণ।

বুদ্ধি ও শরীরের স্থূলতা এবং শরীর লাবণ্য আর সর্বা প্রশংসিত কেশ। এবং নিজাবস্থাতে জলদর্শন এই প্রকার বাছ লক্ষণ হেতু ককের বোধ করিবেন বায়ু পিত্ত ক্ষ দুন্দ যে সাবধান হইরা চিকিৎসা করিবেন। যে স্থানে পিত্ত এবং ক্ষ এই উভয়ের চিত্র দেখিবেন সে স্থানে উভয়ের যোগ বোধ করিয়া এবং বাতশ্রেঘার যোগ এই প্রকার জানিয়া পরম্পরের নিবারণ ঔবধ দিবেন। যক্তপি এমভ বোধ হয় যে ক্ষ পিত্তের যোগ কি প্রকারে হয়। ক্ষ জল স্থানপ পিত্ত অগ্রিষ্থানপ অত এব উভয়ের যোগে উভয়ের শ্বংস ক্রেননা হয় ইলার দৃটান্তপূকাক লিখিতেছি। পরনেশরের জনাধ্য সাধনে ক্ষমতা প্রযুক্ত সকুল বিষয় স্থাধ্য সম্ভব শ্ হুর দেখ বিষেব্ধ কীট বিষমধ্যে থাকিয়া যেকপ জীবনধারণ কৈরে তজপ অগ্নিশক জলকপ কফের সহিত পিত ক-পাণি মিলিত হইয়া জীবন ধারণ করেন। বায় রুদ্ধি প্রকরণ।

ধাবন দুর গমন উপবাস উচ্চঃ হইতে পত্ন অথবা কেবল পছন হস্তপদাদি ভঞ্জন মপ্রদোষরাত্তি জাগরণ মল মুত্র বেগধারণ অতিশয় শাতল ক্রিয়া ভয় প্রাপ্ত হওন রুক্ষ-দ্রুণ্য ভোজন স্থার্ভ হওন কটু ভিক্ত ক্ষায় দ্রুব্য ভোজন মেঘারস্ত কাল র্ফ্টি সময় ভোজনান্তর কাল ভোজন শেষ ইহাতে বায়ু কুপিত হইয়া রুদ্ধি হয়েন। কিন্তু ইহার মধ্যে কটু ভিক্ত ক্ষায় দ্রুব্যুণ্য কহিয়াছি ভাষা যদ্যপি পাচনে কিয়া উমধাদিতে থাকে ভবে ভাষাতে রুদ্ধি হয় না।

পিন্ত রুদ্ধি প্রকরণ।
লক্ষামরীচাদি কটজব্য অবল্ডব্য তাপাযুক্ত দক্ষজব্য
আর বিষাংশ যে সকল জব্য ও লাণ ক্রোধ উপাবাদ অগ্রহারণ স্ত্রীসঙ্গ তিল মদিনা দুধি এই তিন জব্য ভোজন এবং
স্থাপান শোকাকুল টক আমানি ভোজনান্তর ও ভোজন
শেষ ইহার মধ্যকাল ও শরৎকাল জনসমূহ গোলের
মধ্যে স্থিতি মধ্যাষ্ট্রকাল মধ্য রাত্রি ইত্যাদিতে পিন্ত কোপযুক্ত হইরার্দ্ধি হয়। ইহাতে যে রৌজ কহিয়াছি সে
পৃষ্ঠালগ্ন ভিন্ন জানিবেন। প্রাইশত পিত্ত নম্ট করে
জানিয়া মধুর বিষাংশ দূর না করিয়া ঔষধ সেবন করেন
তাহাতে ঔষধ উপাকারি না হইয়া অপাকারি হয়েন অতপ্র মধু শোধন কর্ত্রয়।

ইতি ভাষারচিত নারকৌমুদ্যাং শ্রীরাধিকারে। নাম দ্বিতীয় পরিছেদঃ।

--

রোগ বিশেষে অসাধ্য কৃচ্ছু সাধ্য স্থলাধ্য এবং কোন রোগ সাধ্য অতথ্য উপযুক্ত উবধ এবং গ্রহণান্তিও ছন্তা-য়ক ছারা রোগ মকলের অবস্থান্তর হয় অর্থাৎ অসাধ্য রোগ লাপ্য হইয়া থাকে কৃদ্ধু সাধ্যমুসাধ্য হয়। অতএই চিকিৎ সার আবভাকতা পরে পূর্বজন্ম কৃত কর্ম দোক আর ইহ জন্মের পাপেতে এবং অন্যক্তাহারাদিতে রোগ জন্ম ইহা জানিবার কারণ লিখিতেছি। যে সকল রোগের যে সকল উত্তথালাত্তে উজ আছে এবং যেসকল মৃত্যয়ন শান্তি আছে সে সকল করিলে যে২ রোগ ভাল না হয় সেই সব অদুট জাত লানিবা আর উষ্ধাদি দারায়ে সকল রোগ ভাল হয় সেই সমস্ত অন্যক্তাহারাদিতে জন্ম জানিবেন।

इंडि ভाषा मात्रको भूमगा दाग निकलना थ-

কার সমাশুঃ /

রোগীর মূত্র পরীকা।

নূতন সরাতে গোরীর মূত্র ধরিয়া তাহাতে একবিন্তু তৈল দিবে সেই তৈল যদি সরিয়া বেডায় তবে বায়ব্যাধি লানি বেন এবং বিল্ফু২ হইয়া তৈল যদ্যাপ ছাড়িয়া পড়ে ভবে পিত্তের চিহ্ন জানিবেন। আর ঐ তৈল বিন্দু যদ্যপি ঘন इत्र उद्य करकत्र नक्ष क्षांनित्वन । धादश रेडन विन्छ यापि मृत्व জ্বিয়া পড়ে ভানিয়া উঠে তবে দে নামিপাতিক রোগ জানিবেন, আর ঐ তৈলবিন্দু যতাপি পুর্বাদিগে সরে তবে সেরোগ অতিশীভ্রভাল হয়,এবংযদি দক্ষিণদিগে সরিয়া যায় তবে সে ব্লেগ ক্রমে, ক্রমে বিশেষ হইয়া ভাল হয়, যদি পশ্চিম্বিলে যায় ভবে অপ্প চিকিৎসাতে ভাল ইয়। আর যদি উত্তরে যায় তথাপিও রোগ হইতে মুক্ত হয়।আর যদি জ্শানকোনে যায় তৃবেদে রোগীর একমানের মধ্যে প্রাণ-ত্যাগ হয়। আর যদি মূতে তৈলবিন্দু দিবামাত নানাবর্ণ হুইরাছিল ভিল হর ভবে সে রোগীর মৃত্যু হয় জানিবে। আর যদি ভৈলবিন্দু পুনঃ পুনঃ ডোবে ভাগে কিছা মিশা-ইয়া যার তবে সেই রোগী মৃত্যুবঁৎ হইয়া কাঁচে।পিও রোগে মূত্ৰ পাঞ্বৰ কক রোগে মূত্ৰ কেশাযুক্ত ৰায়ুরোগে রক্তবর্ণ ইহাতে রোগ যদি ঘন্দুক হয় তাবে মূত্রমিশ্রবর্ণ হয় অতএব ঘন্দুক রোগেরমূত্র বিবেচনা উত্তম রূপে করিবেন সন্নিপাত রোগে মূত্র কালবর্ণ হয়।

> ইতি ভাষা সারকৌমুতাৎ মূত্র পারীক্ষা সমাপ্তঃ।

অথ জিহা পরীকা।

জিহ্বা যদি সরু কিয়া পাতলা হয় এবং তাহাতে এথারমত যদি ধার হয় অথচ ফোটকবুকু হয় তবে তাহাকে বাযুগ রোগ জানিবেন। এবং জিহ্বা হইতে রক্ত প্রাব হইলে
পিতৃত্ব বোধ করিবেন। আরু শুক্রবর্ণ এবং তাহাতে অপ্ররস্বাধি এবং তাহা হইতে জল নিঃসরুণ যদি হয়। তবে তাহাকে প্রেমাল রোগ কহিবেন। এবং কৃষ্ণবর্ধ অথচ কুঞ্চিত
হইয়া টাক্রাতে যায় ও শুক্ত হয় তারে সামিপাতিক জ্ঞান
করিবেন। আর দ্বন্দল রোগে মিশ্র লক্ষণ হয়। পুনন্দ সামিপাতিকে অতি হয়ানক লম্বনানা হইয়া মুথ হইতে যদি
বহির্গতা হয় কিয়া উল্টিয়া পড়ে এবং অন্যান্য বিক্তাকার
হয় তবে রোগীর মৃত্যু অতি নিক্ট জানিবেন।

অথ নাসিকা প্রীক্ষা।

নানিকা শুক্লবর্ণ কিছা রুক্ষবর্ণ শুক্ষ ও মোটা কিয়াকিপ্রিং হেলিয়া পড়ে অথবা বিসিয়া বায় কিয়া কোন অব্যের
আন না পায় এবং ক্ষুটিত হয় কিয়া অন্য পীড়া বুক্ত হয়
• অথবা নাসিকার অত্যে বিজ্ঞাতীয় ক্ষোটক হয় তবে মৃহ্য
লক্ষণ জানিবেন।

नाष्ट्री शत्रीका।

পুরুষের দক্ষিণ হল্ড জ্রী লোকের বামহন্ত স্পর্ম করিরা দেখিবেন। বৈন্ত রোগীর দক্ষিণ হচ্ছের মূল আপনার বাম - হন্ত ভালুকাতে রাখিয়া রোগীর দক্ষিণহন্তের হজাঙ্গু ঠের অংথা যে কর সন্ধিন্তান আছে ভাহার অংথাতে আপুনার তিন অস্ লির অগ্রন্থা যোগ করিবেন।পরেনিজ শরীরকে স্বং নমুভাব করিবেন এং তর্জনী উর্দ্ধে সংখ্যমা মধ্যে অনামিকা অধাতে রাখিবেন। এমত করিলে নাড়ীর শুভা-শুজকল বোধ হয়। আর ভোজনের পরক্ষণে এবং মান ক্রন্থা মাত্রপ্রাগীরজতান্তর্জ্বা এবং তৃকান্তলৈ নাড়ীউত্তম কপে বোধ করিতে পারেন না এবং দূর হইতে চলিরা আ-দিলে অথব। পরিশ্রম করিলে কিয়া অভিশয় তৈল মর্দ্ধনের পর এবং নিতা কাল এই সকল সময়ে নাড়ী পরীক্ষা হ্ন্যনা অভএব স্থান্তর হইলে কিঞ্জিৎকাল বিলয়ে পরীক্ষা করিবেন কিন্তু নাড়ী পরীক্ষা একবার হন্তপ্র্যার নাড়ী ধ্রিয়া অবশ্য দেখিনে । আর ক্ষেন মনুষ্যেরহন্তে নাড়ী ধ্রিয়া অবশ্য দেখিনে। আর ক্ষেন মনুষ্যেরহন্তে নাড়ী-বোধ হয় না এ নারণ পুর্ব্যান্ত বিধিজ্বমে পায়ে নাড়ীধ্রিয়া দেখিবেন।

অথ বাহাত্মিকা নাড়ী গতি প্রকার।

বাত পিত ককা আকা ক্রমে নাড়ীর গতিক উত্তম ৰূপে বিবেচনা করিবেন। নাড়ী পারণ করিবা নাজ যে নাড়ীর কুটিলা গতি বোধ হয় তাহাকে বাতা আকা পানিবেন পর্বাং
বায়ুর কুটিলা গতি ছারায় নাড়ীর কুটিলা গভি হয়। গতি
দুটান্ত ।তৃণকলোকা অন্যত্ণে গমন কালীন যাদৃশী গতি তাদুলী। এবং দর্প গম্ম কালীন যাদৃশ বক্র হইরা গমন করে
ভাদৃশ জানিবেন।

অথ পিড়া যিকা নাড়ী গতি প্রকার।

রোগীর স্থাক উত্তপ্ত করিয়া এ। হস্ত পানাদি অগ্নি জ্বালাযুক্ত প্রায় করিয়া ককে এবং তেকের ন্যায় বাংগর গতি হয় তাহাকে পিতাজ্বিকা জানিবেন। অর্থাৎ কাক এবং তেক যেনন লক্ষ্য কর্মজ্ব গমন করে ভাহার ন্যায় পিত্রের নাড়ী গমন করে।

অথ কফাত্মিকা নাড়ী গতি প্রকার।

হংসের ন্যায় ঈষৎ হেলায়মান অথচ মন্দ মন্দ হইয়া যাহার গতি এবং কপোডের ন্যায় মন্দ মন্দ হইয়া যাহার গত্তি এবং স্তন্তের ন্যায় যাহাকে শূন্য গতি প্রায়্রায় হয় তাহাকে কফাত্মিকা জানিবেন। কিন্তু সামান্য কফে হংস কপোতের ন্যায় মন্দ গতি।অতিশয় কফে স্তম্ত্রগতি অর্থাৎ স্থিয়া গতি, যেমন পূর্বগর্তা ক্রীলোক শীদ্র গমন করিতে না পারিয়া খীয়ে ধ্রীয়ে গমন করে তক্রপা কফের নাড়ীকে বোধ করিছে না

অথ ঘন্দজ নাড়ী প্রকার।

যে স্থানে কফ এবং পিত্তের লক্ষণ দেখিবেন তাহাকে
কফ পিত ঘন্দজ্ব বোধ করিবেন। এবং যে স্থানে কফ এবং
বায়ুর লক্ষণ দেখিবেন তাহাকে বাতশ্রেমা রোগ জানিবেন আর যে নাড়ীতে বায়ু এবং পিত্তের গতি দেখিবেন
ভাহাকে বাতপৈত্তিক রোগ জানিবেন। এবং যে স্থানে
তিনের লক্ষণ দেখিবেন তাহাকে কিলোষ রোগ জানিবেন

वर ब्हु क नां शे अकात !

মনুষ্যের জ্বর হইলে নাড়ী তাপযুক্ত এবং ধাবনান হয়। শাল্পিগতিক নাড়ী প্রকার।

মনদ মনদ গতি এবং কুটিলা ইহাতে যগুপি অতিশয় কুটিলা গভি এবং অত্যন্ত স্থিৱা গতি হয় তবে সে রোগকে অসাধ্য এবং রোগীর মৃহ্যু সপ্তাহের মধ্যে জানিবেন।

শায়িপাতিকে মন্দেগতি নাড়ীর দৃটান্ত। যেমন মনুষ্য অত্যন্ত প্রকাল হইলে এক প্রই পদ পরিমিত ভূমি কটেতে গমন করিয়া পুনর্কার দগুয়মান হয় ভাহার ন্যায় সায়ি-পাতিক নাড়ী গমন করিতেই স্থির হয় এবং দেই তিতি কালে কখন স্কাগতি হয় কখন বা স্কাগতি হয় না। পুন-র্বার তর্জ্জনী অঙ্গুলিতে গতি বোধ হইয়া যেন অংধাতে স্থালীত হইয়া পাড়ে এমত দেখিলে সে নাড়ীকে অসাধ্য

জানিবেন এ। শ্বভাব পারত্যাগী ও যথেষ্ঠাচারী উন্মত্তব্যক্তির ন্যায় নাড়ী যদ্যপি ঘভাব গতি ত্যাগ করিয়া যথে
ঠাচারিলী ইয়তবে রোগীরজীবন সংশয় জানিবেন ইহাতে
যদি তর্জ্জনী অসুলিতে নাড়ীরগতি কিছুই বোধ না হইয়া
কেবল মধ্যমা ও অনামিকাতে নাড়ীর গতি বোধ হয় পরে
একবার তর্জ্জনীতে বোধ হয় তবে অর্জ প্রহরের পর রোগীর মৃত্যু জানিবেন আর যদি ঐ শ্রকার হইয়া ভর্জনীর
অর্জ পর্যন্ত নাড়ী বোধ হয় পরে তর্জ্জনীতে সম্পূর্ণ বোধ
কিঞ্ছিং বিল্লেতে না হয় তবে দে রোগীর মৃত্যু এক প্রহ্ন

নাড়ীর জ্ঞান স্কুল প্রকার।

বারুতে বক্রগতি, পিত্তে অত্যস্ত চঞ্চলা কফে হিরা এঃ মন্দগতি জানিবেন।

শামান্যকণ নাড়ীর স্থানী চল কথন। গুরুপাক দ্রব্য ভোজন করিলে নাড়ী স্থান হয় এবং লক্ষামরী চাদি দ্রব্য ভোজন করিলে নাড়ী আঁত চঞ্চলা হয়। আর মিইটর্ল দ্রব্য ভোজন করিলে নাড়ী শীতল হয়।

ইতি নারকোমুদ্যাং নাড়ী পরীকা নমাপ্তঃ।

জ্বরোৎপত্তি কথন।

জ্বর দকল রোগ হইতে প্রধান হয়েন। কারণ দৃক্ষ প্রজান পতি রুদ্রকে অপমান করিরাছিলেন তাহাতে রুদ্র ক্রোধ করিরা নিশ্বাস ত্যাগ করিলে নেই নিশ্বাসে জ্বরের জন্ম হয়-অতএর অন্যং রোগ হইতে জ্বর বলবান এবং প্রাণিদের শারীর ওমনের তাপজনক হয়েন। সেইজ্বরকে প্রকারতেদে জ্বট প্রকার জানিবেন। এক জ্বরের অট প্রকার দৃটান্ত।

যেমন এক জন মনুষ্য গান করিলে গায়ক বাদ্য ক-রিলে বাদ্যকর নৃত্য করিলে নর্ভক কছে। ইত্যাদি কর্মণ বিশেষে যেমন এক ব্যক্তির নানা নাম হয় এইকপ বাতিক পৈত্ৰিক পিপ্তশ্ৰেষ্মিক বাতলোপ্তাক কক বা-তিক সংঘাতিক আগন্তুজ ইত্যাদি অই প্ৰকার হইয়া অই নাম ধারণ করেন।

শরীরে জ্ব:রাৎপত্তি করণ।

মিথ্যাহার অর্থাৎ ক্ষীরের নহিত মৎ্যা ভোজন ইত্যাদি
নিসিদ্ধ আহার যে সকল জার আছে তাহা ভোজন এবং
ভোজন পরিমাণ ভ্যাগ করণ ভোজন পরিমাণ যথা অল্লে
তে উদরের অর্দেক পুরণ করিবে। এ ৭ অল্ল পরিপাক
কারণ উদরের চতুর্থ ভাগের এক ভাগ জলপান করিবে।
আর এক ভাগ বালু গননাগননের নিমিতে রাথিবেক এই
উক্ত প্রকার আহার না করিয়া আকণ্ঠ প্রায় আহার করিলে ক্ঠরের অগ্ন মান্দ্য হয় ইহা হইলে ঐ ভুক্ত অ্যাদি
পাক হয় নাতজনা কোণ্ডে রদ সঞ্চয় হয় তাহাতে ঐ জঠ
রাগ্মি আমাশর হইতে বাছে নির্গত ইয়া সমূদর শ্রীরকে
তাপাযুক্ত করেন আর আমাশয় মথ্যে যে কফ পিতে বারু
আছে তাহারাও বিরুদ্ধ ভাব ইইয়া জ্বরের কারণ হয়েন।

বাহ্য হ্ব। প্রকাশ কথন।

জ্বরের উত্তবে শ্রম করিতে পারে না, শরীরের বর্ণ অন্যথা হর। হাই উঠে, শরীর নর্দন প্রায় হয়, জিহ্বা রন্দ্রন্য হর চক্ষ জাবর্ণ ন্যার হয়, ক্ষণের বায়ু সেবন ইচ্ছা করে এবং তৎক্রণে রৌজে যাইতে ইচ্ছা হয়, শরীর ভার হয়, রোম হর্ষ হয়, অলে অরুচি জলো, জ্রান্তি হয় শীত বোধ হয়, প্রথম জ্বরে এই প্রকার জানিবেন। অর্থাৎ জুরের স্বাভাবিক ধ-র্দ্দেতে এই সকল প্রকার হয়। ইহাতে যে হাই উঠে কহি-য়াছি তাহা বাতিক জুরে জ্বিশ্য জানিবেন। এবং পিত্ত জুরে চক্ষ পোড়ে আর কফ জুরে জ্বে জ্বন হয়।

বাতিক জুর লক্ষণ। কম্পা, এবং কথন নাড়ীর বেগ অতিশয় উষ্ণ এবং কণ্ঠা শুদ্ধ হয় নিদ্রা ২য় না, শত্নীর রুকভাব হয়, মহেক ও শরীর বেদনা করে আর মুখের ভিতর শুদ্ধ হয়, মল কটিন, উদরা-ধানি, হাই উঠে, বাতিক জুরে এং সকল লক্ষণ হয়।। অথ পিতু জুর লক্ষণ।

নাড়ীতে বেগের তীক্ষ্তা, তেদ হয়, বনন ও নিজা অংশ হয়, কণ্ঠ, ওঠ, মুখ, নাসিকা, দক্ষপ্রার হয় । প্রলাপ, মুখ তিক্তরন, মুছ্টা, শরীর দাহ, এবং বমন হয়, এমত বোধ পিপাসা, মলমূত চক্ষ্ পীতবন, গাত ঘূনায়মান। পিত-জবে এই সকল প্রকার হয় ।

व्यथ करा डाई लक्ना ।

জনযুক্ত বস্ত্র গাছে কেছ যেন বেন্টন করিয়াছে এমত বে: ধ্রুর, আরু নাড়ীর বেগ অপথ, অলস, মুখ সরষ, গুকুরুর মল ভান্তিত হয়, এবং ভোজন নাকরিয়া ভোজনের ভৃতিবোধ হয়, শলীরের ভার শীত, গাত্র বমন, রোমাঞ্চ, নিজা আধিক মুখ এং নাসিকা হইতে জল নির্গত হয় অ-ক্রি, কাশি চক্ষ্ শুক্রবর্ণ। কক জ্বরে এই সকল প্রকার হয় জানিবেন।

অথ বাতপৈত্তিক জ্বর নক্ষণ।

তৃকা মৃষ্ঠ ভাষ দাই হয়, নিজা হয় না, এবং মন্তক বেদনা করে, গলা এ বংহন্ত পাদাদির গ্রন্থিকল যন ভাতিয়া
বার এমত বোধ আর হাই উঠে, এই সকল লক্ষণ দারা
বাত পৈতিক জ্যা বোধ করিবেন।

অথ বাতশ্লেদ্মিক জ্বর লক্ষণ।

নাড়ীতে ক্ষপে বেগ বে: ধ হয়, পর্বে সকল ভালিয়া গেল এনত গে:ধ নিডা ক্ষিক্ মন্তক বেদনা করে, মুখ এবং নাসিকা হটকত জল পড়ে কাশি ও ঘর্ম অধি চহয় শরী-রের তাপ অধিক হয় না। এই সকল লগণ দারা বাত-প্রেক্সা জ্বর নিরপণ করিবেন।

্ অথ পিত্ত শ্লেমা জ্র কেন। মুখ তিজ বুস ভদ্রা নোহ,কাশি অক্লচি,নৃহ। ফাণে কানে শরীর দাহ, এবং শীত, আর কোনং ব্যক্তির নাড়ী স্তম্ভিতা হয় অথবা কৃষ পিতের পরিবর্ত্তন অর্থাৎ কোনসমঙ্গে শ্লেমা আধক বোধ হয়। এবং কোন সময়ে পিত অধিক বোধ হয় এই সকল পিতঃশ্লুমা জ্বরের লক্ষণ জানিবেন।

শামিপাতিক জুরের লক্ষ্

কৰেংদাহ এবং শীত, অন্তির ভিতরে জালা-এবং বেদনা মন্তক বেদনা, চহুর কোণু হইতে বুক্ত নির্গত হয়। এবং চকু হুস্ককায় হয়, কর্ণবৈদনা, এবং কর্নের ভিতরে নানা প্রকার गंक रुश, एक कार्छत्र नं। त बिख्ना क्रम्पदर्व रहा, धवर किखारि উখার ধারের ন্যায় কণ্টক হয়, অথচ জিহ্বা এন্থকায় হুইয়া টাক্রায় উঠে আর মুখ হইতে জল রক্ত এবং পিত নির্গত হয় শিরে! লুখন অতিশয় ভৃষ্ণা, দিজা রহিত বক্ষঃত্ল রেদনা ও ঘর্ম অতিশয় হয়। বিল্প নিব্রেণ ভূচ্চাধ্য আর প্রস্রাব পীড়া বোধ হইলে প্রস্রাব হয় না এবং মল ঐ প্রকার। **অনাহারে রুশ হয় না আ**র কোন২ ব্যক্তির গ্রীবা লঘা এবং কাহারো বা ছোট হয়। তলপেটে রাঙ্গা কিয়া কালো চক্রা ক্রতি দাগ হয়। বাক্য র[হতের ন্যার হয়। উদরের ভিতরে নাড়ী সকল পুটুলি মত হয়, এবং কাহারো পেট উচ্চ হর चांत्र मांग निर्वादक नाना धकांत्र छेवध घांता मान निवादन इय ना। এবং मस निवम कि एव नाव इस। बाव के हिटन मन मूर्नात मा **उ**ज्जान हा, अवः मान प्रदेश प्रदेश प्राप्त क ·শব্দ হয়-দিব**দে বাসকে**র ন্যায় ক্ষণে২ নিজা রাজিতে নিজা হয় না এবং কোন ব্যক্তির দিবা রাজিতে নিজা হয় না এবং কেহবা হাস্ত করে কেহবা রোদন করে কেহবা গান করে কেহবা নৃত্য করে আর কেহবা উন্মন্তের ন্যায় এবং ভূতে পাইবার মত নানা প্রকার বিক্ত্যাচরণ করে এই নমন্ত ্লক্ষণ এক ব্যক্তিতে হয় না কিন্তু সকলি সামিপাতিকের ল- अन्। हेकात इक्तकान १।२।२२।२४।२२ मितम शर्ग्छ। ध्वर धक् जुद्धत भीमा २२ मितम श्रोड खानिरदम।

অরোদশ প্রকার পারিপাতিক কথন।

বাতেলেন পিণ্ডোলন কফোলন বাতপৈতিকোলন বাতপ্রেমিকোলন পিড্রেমিমিকেলন, বায় প্রধান, বাত্ত-পৈতিকোল ন শ্লেমা প্রধান। বাতল্যেমিকোলন পিড্র প্র-ধান। পিড্রেমিকোলন বায়পিত সমান উলন পিড্রেমা সমান উলন বায় পিত সমান উলন, এই ত্রয়োদশ উলন কাল্যকপ হইলা প্রাণের সংহার কর্তা হয়েন। এই সালি-প্রাতিক জুর হইলে কর্নমূলে শোর্থ হইরা কেহবা রক্ষা

অভিঘাত জুর লক্ষণ।

লগুর কৈয়া কোন অস্ত্ররা আঘাতিত হইলে যে জুর হয় তাহার নাম অভিঘাত জ্র।

অভিচার জ্র লক্ষণ।

ছই ব্যক্তি কোন কারণে কোন ব্যক্তির উদ্দেশে মনদ স্বস্থারনাদি করিলে উদ্দেশ্য ব্যক্তির যে জুর হয় অথবা অভি শাণা এবং হুতাদি কর্তৃক প্রাপণ হয় বৈগুণ ইত্যাদি যে জুর হয় ভাহার নাম অভিচার জুর।

खीन जब कथन।

একবি শতি দিবস পর্যন্ত যদি জুর ত্যাগ না হয় এবং যে জুর প্রীহাদি দ্বারা জীব ভাব হইয়ে শরীরে থাঁকে তা-হাকে জীব জুর বোধ করিবেন।

বিষম জুরোৎপত্তি কারণ।

অপ্পরোগে রছৎ রোগের চিকিৎনা করণ এবং নারি-পাতিক জুরের ২২ দিনের পর স্থিতি কারণ। আর জুর इটলে বীয়া খলন জীগলঃ ষ্মদোব ইত্যাদি জুর বিবমতা প্রস্তুত্ব হয়েন। শন্তর জুর লক্ষণ।

ন্পু দির্দ অন্তরে যে জুর হয় এবং দশ দিব্দ অভার

य जुत इस कार्या दांपना पितन करतात स जुत इस अवर व-নিয়ন দিবসান্তর য়ে জর হয় তাছাকে সতত জর জানিবেন দ্বোকালীন জর লক্ষণ।

্যে জর হইয়া একবার সগনা হয় অথচ দিবা রাত্রি অফ প্রহরে সমান ভৌগ করে এবং দিবদে যে সময়ে জর হয় আর রাজিতে যে সময়ে জর হয় তাহাকে ছৌকালীন জর क्वानिद्यग।

্ একাহিক জর লক্ষণ।

य खत्र প्रथमं पिवरम इत्र वि छीत्र पिवरम इत्र ना शून-ব্বার তৃতীর দিবসে হয়, সেই জ্বকে একাহিক জানিবেন। চাতুর্থিক জর নক্ষণ।

- যে জর প্রথম দিবদে হয় দিভীয় ও তৃতীয় দিবদে হয় না পুনব্বার চতুর্থ দিবসে হয় দেই চাতুর্থিক জরে এবং পূ-কোজ ঐকাহিক জর চতুর্থ আর চাতুর্থিক জর মর্জাগত জর ইহাতে উৎপত্তি হয় জানিবেন।

বিপর্যার চার্ত্তিক জর লক্ষণ।

य जत श्रथम निवरम ना इहेशा विजीश निवरम इस । श्रन কার চতুর্থ দিবদে হয় না,তাহাকে বিশর্যায় চাতুর্থিক,জা-নিবেন এবং এই জরকেও মর্ক্সাগত জ্ঞাত হইবেন।

न भार्ति छात्र लक्षा।

শরীরের পিত্ত হুট এবং মন্তকে কফ হুষ্ট এই হুই ধ্য ब्दा इत भ बदा मंत्रीत उथ इत। इस भाम मौठन इत, পুনবার শরীরে কফ ছট মস্তকে পিত ছট এই ছই ফে জরে হর সে জরে শরীর শীতল হর। হন্ত পদ তপ্ত হয়, সং-শূর্গি জরের প্রকরণ এই রূপ বোধ করিবেন। এবং সংস্থি बरदात शृद्धि मोह इस शर्त जब श्रकांम इस बाद हेहोर द শুক্রধিকা জানিবেন অত্এব ইহার চিকিৎদা সাবধানে ক-ওবা,। আর যে জরে বায় কফ সমান থাকিয়া পিত্ত হবল थारक रम कर वार्र कक ममान था किया शिंड प्रवान श्रीरक

मि खत्र श्रीय त्रांकि एक इस अवे ये खाद वास शिख नमान शोकिया कर्क इस्तन शोक मि स्मा अप श्रीय क्रिया कर्क श्रीय वर्षाकाटन शिख श्रीय खत्र किया कर्क श्रीय खत्र यिन इस एट्टर मि इश्मीश ब्याद गत्र कोट्टन करू श्रीय खत्र किया वास श्रीय खत्र यिन इस एट्टर मि इश्मीश । वम्खकाटन शिख श्रीय किया वास श्रीय खत्र यिन इस एट्टर छोड़ोटक छूश-मुश्र खानिट्टर।

আমজর লকণ।

তদ্রা মুখভার এবং মুখ বিরস অভিশার অলস শারীর ভার ক্থাশ্ন্য প্রস্রাব অধিক এবং চক্ মুদ্রিত করিয়া ন্ত-কোর ন্যায় শাযাগিত হইয়া থাকে আমজরে এই সকল লক্ষণ জানিবেন।কিন্তু অফাছের মধ্যে আমজরে যদি বিকার প্রাপ্ত হয় ভরে রোগীকে শক্ত প্ররোগ করিবেন এবং আমজরে লক্ষণ সহিত বিকার লক্ষণ অভেদ কিন্তু ভদ্রা অলসাদি আ-মজরের স্বাভাবিক বাহ্ লক্ষণ অভএব উত্তম কপানাড়ী প-ব্লীক্ষা করিলে আমজরে বিকার জ্ঞাত হইবেন কেবল বাহ্ লক্ষণ দৃট্টি করিয়া বিকার জ্ঞানিতে পারিবেন।

জ্বরহা দশ উপাদ্রব।

काम मृष्ट्री अकृति ছर्षि ज्या अजिमात मनवल हिका-श्वाम গাত্ত अपित ज्वा कृत इरेल प्रगंडे পखर मकान इत धमन नहि छे शखर मकन कृत जन। जानित्वन चात कर्त्त विकात श्वाश इरेल्ड यिष छे शखर ना थात्क जत्व जाहात्क माथा त्वाथ क्तित्वन।

নাসাজ্য লক্ষণ।

বাতশ্রেষা রক্তের সহিত যোগ হইয়া নাসিকা কিঞিৎ স্ফীত হয় পরে জুর প্রকাশ হয় অতএব নাসিকা হইতে রজ নোক্ষণ করিলে জরের হুইতা স্থাকে না।

জর ভ্যাগ লক্ষণ।

-छश्खव नाम मही दिव छात्र ह्व रुवन आहात कतिरम

পরিপাক হইরা পূর্বাবৎ মলত্যাগ মৃথ প্রী জর জন্য মৃথ বৈ-জাত্য দূর হইরা পূর্বের ন্যায় অর্ব্ব্যের রসবোধ, ঘর্ম হাঁচি, মনের হচ্ছতা অন্নেরুচি মস্তক কণ্ডুয়ন। জুরত্যাগ এই সকল লক্ষণ জানিবেন।

रेखि गांद्रकोगू छः खुदं निर्मान शदिष्ट्रमः।

• নবজুর ত্যাগ বিষয়।

দিবানিতা স্থান তৈলমৰ্দন স্কুল তণ্ডুলের অন্ন ভোজন জ্রীসঙ্গ ক্রোধ অত্যন্ত বাছু সেবন এবংগমন ক্যায় ডব্য ভো-জন এই স্কুল বিষয় নবজুরে ত্যাগ কর্ত্ত্ব্য।

রুশ ব্যক্তিতে লংঘনকারণ অনুচিত আর বায় জন্য জুর ভয় जना खुत, कांधजना जुत कार्मास्य खुत, এই मकल জ্বরে লংঘন বিধি নাই কেবল কফ প্রধান জ্বর ও সাল্ল-পাতিক জুর ইহাতে লংঘন বিধি আছে অন্য রোগে লংঘন দোষমাত্র জানিবেন।কারণ চিকিৎদা পদের অর্থ যাহাতে রোগীর বল রদ্ধি হয় কিন্ত লংঘনে তাহা হইয়া কেবল বল্-হানি মাত্র হয় অতএব লংঘনের স্পাষ্ট দোষ লিখিতেছি, পিত সঞ্জর হুধামান্দ্য,অরুচি তৃষ্ণা হুজি চহুদ্দোর কণ্দোব মনের অন্থিরতা এবং বায় উর্ছগত শরীরে কক জন্য নানা পীড়া দেহ কাৰ্য্যতা হুধা নাহি, বল নাহি, লংঘনে এই স-कल প্রধান দোষ इয়। এবং শূল রোগী শ্বাস কাস রোগী ैवानक, इन्न शर्निनी खी वर्छ द्वांशी मृज्यमार्य छेन्द्र द्वारंश স্তিকাদি রোগে শরীর শীর্ণ ব্যক্তিদিগের বায় প্রধান রোগে এই সকলেতে উপবাদ করিবে না অত্যন্ত কফজরে এবং অতিশয় ভৃষ্ণাতে রোগীকে উষ্ণ জল পান করাইবেক কিন্তু পৈত্তিক এবং বাভিক-প্রধান জরে রোগীকে শীতল জল পান করাইবে, শীতলজল পান্ধারা অপক্ষত্র পাক इहेब्रा व्यागुद्रकि इस छाहा इहेरल नाष्ट्री खिकि, धव पन दकि হয়। অভএব রোগী মাতে শীতল জল পান অকর্ত্ব্য ইহা

বোধ করিবেন না। পুনশ্চ রোগীর অন্ন বারণ করিলে যাদুশ দোষ পূর্বে লিথিয়াছি জল বারণে ভাষা হইতে অ।ধক দোষ লিথিতেছি। উপবাদেতে মনুষ্যের দীর্ঘকাল
পার্যন্ত প্রাণ ধারণ হয় কিন্তু তৃফাতে কণ্ঠ রোধ হইয়া অপপ
কালেতে প্রাণত্যাগ সম্ভব হয়। আর জর এবং তৃফালতে
রোগীকে ষড়ঙ্গ পানীর দিবেন।

ষড়ক পানীয়।

মুথা রক্ত কন গলবেণারমূল ক্ষেত্রপাপড়া বালা শুণ্ঠী এরা প্রতি হব রতি জল ৩২ পল শেষ ১৬ পল। ষড়ঙ্গ জলে তৃষ্ণা নিবারণ হয় জানিবেন এবং নবজরে বিধি আছে। লংঘন এবং বমনের পার লাজ সিজ পথ্য দিবেন ইহাতে মন্দাগ্রি হইলে মগুর্পথ্য দিবেন।

্লাজমণ্ড প্রকার।

রক্তবর্শালীধান্য কাটখোলায় ভাজিয়া সেই খইতে একখান ভাট দিয়া পুটলীতে দিজ করিবে পারে মণ্ড ক-রিবে দেই মণ্ড উচ্চ থাকিতে কিঞ্ছিৎ মধু দিয়া রোগীকে দিবে।কিন্ত যদি রোগীর লিক্ষ্যলে ও পাশ্বে কিয়া মন্তকে বেদনা থাকে তবে পুরাতন ফুল তগুল চূর্নের মণ্ডলাজ মণ্ডের সহিত চূর্ন মিজিত করিয়া দিবেন।ইহা জিদোবেতে ও ব্যবস্থা জানিবেন।

नांक्रमध छन्।

অগি রজিকরে আর শরীর দাহ, তৃষ্ণ জ্বাতি দার। শ্লেমা দোষ, আমরোগে, এই সকল নিবারণ করে।

मामामा जुड़ हिकिश्मा।

নাগরাদি পাচনং। শুগী দেবদার ধন্যাকণ্টিকারিবাাকুড় এবাংপ্রতি ৩২ রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু।

শে আদি পাচনং। কণ্টিকারি গুলঞ্ শুণী কুড় চি-রাজ্য কটকী এবাংপ্রতি হুল ৪ পল শেব ১ পল প্রক্ষেপ্ নধু ৪০ রতি।

বাতদ্র চিকিৎসা।

রহৎপঞ্চমূলী পাচনং। বিলুছাল দোনাছাল গান্তারি ছাল পারুলিছাল। এবাংপ্রতি ৩২ রতি জ্বল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু ৪০ রতি। ঔষধ মৃত্যুঞ্জয় দধির মাতে দেবন করাইবেক।

দর্পণের মত।

বাতারি বটিকা। শোধিত পারা শোধিত গল্পক জিরা শুণী পিপুল মরীচ এষাৎ প্রতি সমভাগ আদীর রসে ম-দিনকরিয়া ছই রতি প্রমাণ বটি করিবে অনুপান পাণেররস পি.ভজুর চিকিৎসা।

জব পটোল। পটোল পত্ত ১ তোলা জবের চাউল ১ তোলা। জল ৪ পল শেষ ১ পল। প্রক্ষেপ মধু ৪০ রতি। ক্ষেত্র পর্পটি।

ক্ষেত্রপাপড়া ২ তোলা জল ৪ পল শেষ ১ পল। প্র-ক্ষেপ মধু ৪রতি ক্ষেত্রপাপড়া রক্তচন্দন বালা শুগু । এযাং প্রতি ৪০ রতি জব ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু।

ধন্যা শক্ষরা।

খন্যর চাউল ২ তোলা।জল ৪ পল শেব ১ পল। রা-ত্তিতে সিদ্ধ করিয়া প্রাতঃকালে ৪০ রতি চিনি দিয়া পান করিবেন। ইহাতে পিতুলর অন্তর্দাহ নষ্ট হয়।

घनठननामि शाहबर।

মুথা রক্তচন্দন ক্ষেত্রপাপড়া কটকী বেণামূল পটোল পাত বালা। এষা পপ্রতি ২৩ রতি জল ৪ পাল শেষ ১ পাল্ প্রক্ষোপ্তমূল দাড়িমছাল লোখ কান্ত। এষাং চূর্ণ প্রত্যেকে৪০ রুখাপ্তমূল দাড়িমছাল লোখ কান্ত। এষাং চূর্ণ প্রত্যেকে৪০ রুভি। পিপুল চূর্ণ ৪০ রতির সহিত মধু দিয়া অবলেহ ক্রিবে।ইহতেে হিক্কা এবং প্লীহা নিবারণ কিন্তু বালকদিগের প্রশেষ উপকার হয়।

. धनगामि हृत्य। धनगा जिकना जिंक हू अना हेह छ इक (ए-

জপত নাগেশ্বর বনাওল। এবাৎ প্রতি সমভাগ চূর্ণ মরুর সহিত অবলেহ করিয়া ৪ মাষা প্রমাণ ভক্ষণ করিবে।

কফলুর চিকিৎসা।

ত্তিফলাদি পাচনং। তিফলা পটোলপত বাকসমূল গু-লঞ্চ চিতামূল কটকী বচ। এষাংপ্রতি ১৮ রতি জল ৪•পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু ৮ মাসা।

शिशुन्गामि शाहनः।

পিপুল, পিপুলমূল, চঞি, চিতামূল, গুণ্ঠী মরীচ, বন-যমানী কট্কী হকামূল বামনহাটিমূল শ্বেতসরিষা এযাং প্রতি ১৯॥• রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ ম্যু ৮ মাসা। নিয়াদি পাচনং।

নিম্বছাল গুণ্ঠী গুল্ফ দেবদার গল্পামী চিরাতা বুড় বুহতী পিপুল। এষাংপ্রতি ১৮ রতি জল পাকশেব পূকাবৎ প্রক্ষেপ মধু ২০ রতি। চতুর্ভজচূর্ব।

কটফল কুড় কাকড়াশ্ঙ্গি পিপুল। সমভাগ চূর্। ঐ চূণ্ ৪ মাসা মধুর সহিত সেবন ক্রিবে।

মধু পিপুলী।

পি পুল ২ তোলা জল ৪ পল শেষ ১পল প্রফেপ মধু ২০ রতি অথবা পিপুল চূর্ব ৪ মাসা একত ভক্ষণ করিবে। াপত্তগ্লেঘাজুর চিকিৎসা।

বাদকপত্ত এবং পুষ্প। একত ছেচিয়া নিজ্জলিরেন ২ ভোলা৪০ রতি মধুর সহিত খাইলে রক্তপিত কাঁডলার সহিত পিত্তশ্লেমাজ্ব নাশ হয়।

ककेक।र्यापि भावनः।

কণ্টকারি গুলঞ্চ বামনহাটী শুণ্ঠী ইন্দ্রবৰ ছরালভা চি-রাভা রজ্চনদন মুখা পটোলপত্ত কটকী। এবাংপ্রতি ১৪০ রতি জন ৪ পল শেষ ১ পল প্রফ্রেপ মধু ৪০ রতি ইহাতে দাহ জ্ঞা অফ্রটি ছর্দ্দি কান হংশল পশ্ব শূল। এই সকল । নুষ্ঠ হয়। বি পটোলকং। পটোলপত ১ তোলা ধন্যার চাউল ১ ভোলা পূর্বের ন্যায় পাকশেষঃ এবং প্রক্ষেপ।

অনৃতাষ্টক পাচনং।

• গুলঞ্জ নিম্নছাল ইন্দ্রঘব পটোল পাত কটকী শুণ্ঠী রজ-চন্দন মুথা এষা প্রপ্রতি ২০ রতি। জল শেষারস্ত পূর্বাৎ প্র-ক্ষেপ মধু ৪ রতি এবংপিপুলের গুড়া ৪০ রতি ইহাতে অ-লস অফটি ছদ্দি পিপানা ইত্যাদি নই করে।

HOPP 1

ঘননিয়াদি পাঁচনং। মুথা নিয়ছাল কণ্টিবারি ওঠী ক্ষেত্রপাপড়া গুলঞ্চটকী রহতীইন্দ্রয়ব ওরালভাধন্যা প-টোল প্র পর্বাষ্ঠ চিরাতা গোহ্নরি। এবাংপ্রতি ১- রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু এবং পিপুলের গুড়া।

ব্হৎগুড় ছ্যাদি পাচনৎ।

গুলঞ্চ রক্তচন্দন পালক ছি শুণী ইন্দ্রয়ৰ ছুরালভা হর-তকী সালুকফল বালা আকনাদি মূল ধন্যা মুথা কটকি এষাংপ্রতি ১০ রতি পাক শেষ পূর্ববং।

মৃত সঞ্জীবনী বটিক

শৃঙ্গিবিষ ২ মাসা পিপুল রুরা ২ মাষা হিঙ্গুল ৩ মাসা বেগুনপত্রসে মর্দন মটারাক্তি বটি অনুপান আদাররস ইহাতে পিতুশ্বোজুর নৃষ্ট করে।

জরাশনির স।

পারা গলাক শ্রিকবিষ অত্তত্ত্বা শুট পিপুল মরীচ তামু ভিন্ম লৌহভন্ম এবাং পতি সমভাগঃ। আদাররসে মর্দন ম-টরাক্তি বটি অনুপান পাণের রস।

বাত পৈত্তিক জ্বর চিকিৎসা।

নবাঙ্গ পাচনং। শুণ্ঠী গুলঞ্চ চিরাতা মুথা শালপানী চাকুল্যা কণ্টিকারি গোহুরি ব্যাকুড়। এবাংপ্রতি ২৮ রতি জল্ ৪ পল শেষ এক পল প্রক্ষেপ মধু ৪০ রতি হলান অ-রুচি ছদ্দি পিপানা দাহ নই করে।

अड्डामि भारत।

গুলঞ্জ নিষ্ছাল ধন্যা পদাকাও চক্তচন্দন এবাংপ্রতি ৩২ রতি জল প্রথম এবং পাকশেষ ও প্রকেপ পূর্কবং।
যন্তপি ভূকা অধিক থাকে তবে পদ্মকাঠের পরিবর্তে জ্যোতমরু দিবেন। ইহাতে পিপাদা অক্লচি ছর্দ্দি দাহ দৌকল্য নট করে।

मर्श्वर ।

মধুকাদি চূর্ণ। জৈ ঠেমধু শামালতা ডাক্সা মহূলফল রক্তচন্দ্র নীলোৎপল গান্তারি ফল প্রকাঠ লোদছাল বিফলা প্রবীজ নাগেশ্বর ভূরুবাফল বেশানূল এঘাংপ্রতি ১ মাসা চূর্ণ করিয়া শক্তশালি তণ্ডুলোদকে ঐ চূর্ণ ৪ মাসা একত্র করিয়া কিঞ্জিজু ফ থাকিতে পান করিবে পারে মধু থৈ চিনি ভক্ষণ করিবে। ইহাতে বাতপিতজ্বর দাহ ভূফা মূর্জ্য বম্ন ভ্রমর জুপিত নট হয়।

নিয় পাচন।

নিয়ছাল ক্ষেত্রপাপড়া বেশামূর পটোলপত মুখা রজ চলনৈ চিয়াতা বালা পদ্মকার্থ এবাংপ্রতি ১৮ রতি জল ৪ প্রান শেষ ১ পল পরীক্ষা মণু চিনি।

রহৎ পঞ্চন পাচন। বিল্ছাল নোণাছাল গাড়ারি ছীল পারুলছাল গণিয়ারিছাল পাকশেষ পূর্ববং।

স্থাপ পঞ্চল। শালপানী চাবুলা। ক ণ্টকারি গো ক্রিব্যাকুড়। পাকশেষ পূর্ববং। এই এই একত্র করিলে দশনূল পাচন হয় ইহাতে কায খাদ তত্রা পার্শ শূল নট হয়। যদি গলদেশে কিয়া হৃদয়ে বেদনা থাকে তবে পিপু লের ওঁড়া ৪ রতি প্রক্ষেপ দিবেন।

অন্তাদশাক পাচন। চিরাতা দেবদার বিল্ছাল সোণা ছাল গান্তারিছাল পারুলছাল গণিরারিছাল শালপানী চাকুল্যা কণ্টিকারি গোড়ারি ব্যাকুল শুঠী মুগ্ধা কটকী ইন্দ্র যবধন্যা গলপিপুলী এষাংপ্রতি ৯ রতি জল ৪ পল শেষ া পল প্রক্ষেপ মধু । রতি ইহাতে তন্ত্রা প্রলাপ হন্তপাদাকর্যণ অক্লচি দাহ মোহ শালাদি উপত্রব সকল নট হর
তিদোৰ ঘর্মে ভর্জন কুল অকলাই মুল্ল চূর্নগাত্রে মর্দন এবং
উদ্যারে ঐ চুর্ন ভক্ষণ জিল্লা জড়তা হইতে লিদ্ধিওঁ ড়া কিয়া
কন্য ওলের ভাটা জিল্লাতে ঘর্ষণ, যন্তাপি, জিল্লা ছিল্লা ক্রিয়া জিল্লাতে
লেপন, তিদোৰ কম্পে এবং অভিশর বাক্য কথনে, শীতল
অব্যাদি দিবে না,কর্নাথে জলোকা দারা রক্ত মোক্ষণ।
কিয়া কুল্পকলাই কটকন শুগু কিফজিরা সম্ভাগ জলে
পেবণ করিয়া উফ প্রলেপ পুনহু দিবেন। অথবা দশমুলের
প্রলেপ দিবেন, গল্লাভাতি টাবালেবুর মূল শুগু দিবেন।
স্বাল্লা চিতামূল সমভাগ, গলায় উষ্ণ প্রলেপ দিবেন।
স্বাল্লা বিভান্ন সমভাগ, গলায় উষ্ণ প্রলেপ দিবেন।

শুণী পিপুল মরিচ প্রভ্যেকে চুর্ব ২৭ রতি কজলী ১ তোলা সোহাগা ১ তোলা জলে মর্দন বুল আঁটি প্রমাণ বিটি অনুপান কর্মচি নারিকেল জল পরে আদপোরা আনদাল ঐ নারিকেল জল পান করাইবেন। নিঃশেষ ভেদ্ হুইলে উফোদকে স্থান উঞ্চল্লব্যঞ্জন ভোজন করিলে পুন কার ভেদ হুইবেক না বিল্ক জর হুজে স্থানাদি কিয়া নিষেধ

জর কেশরী রসঃ। রসগন্ধক তথী পিশুল মরিচ ছার তকী বয়ড়া শামলকী। এষাংপ্রতি ২ তোলা শোধিত জয় পাল এব**ং বীজ ৯ তোলা জায় সকল চূর রস গন্ধকে ক-**জ্জানী নিজ্জল **আ**দা রসে মর্জন গঞ্জ প্রমাণ বটি বালক নি নিতু সর্বপায়তি বটিকা করিবেন।

রোগীর অপাক দোব নারিকেল জন। পিতাধিক্যে
কেবল মরু সাম্নিপাতে মরুতে মর্দ্দন করিয়া মরিচ চূর্দের
সহিত দেবন করিবেন, যদি দাহ থাকে তবে পিপুল এবং
শজরার গুঁড়া দিবেন রোগীর কোঠ বন্ধ থাকিলে এই উযথ সেবন করাইবেন। জন্নপাল রীজ শোধন ধীজ ভাঞ্জিয়া

বাজের মধ্যে বিষ্পত্ত ভ্যাগ করিয়া ছক্ষেদিজ-করিবে পরে। ধৌত করিয়া শুদ্ধ করিবে।

नीए छङ्गीतमः।

পারা গল্পক হিন্দূল এষা প্রতি ১ তোলা শুক করপাল বীজ ৩ তোলা দলীমূলের কাথে মর্দন ২গুলা বটি অনুপান মধু। ইহাতে দ্বি শক্রা শীতল জল সহ্থ হয়, কিন্তু ক্ফ পিত্ত বায় বিবেচনা করিয়া দিবেন। আঁর ঔষধ সকলকে পূর্ণমাতা দিবেন না বয়ো বিবেচনা করিয়া দিবেন।

কজনী করিবার প্রকরণ। তালটোঁচ হিন্দুল পাতি-লেবুর রসে চারিপ্রহর থলে মর্দন পরে ঐ নর্দিত হিন্দুল শুদ্ধ করিয়া পাগের উপর হাঁড়ির মধ্যে রাখিবেন, পরে ঐ হাঁড়িতে এক খান সরা ঢাকা দিয়া ঐ সরার চারিদিগে কর্দ্ধনাক্ত পাঢ় নাজাইবেন পরে বজুলেপ দিয়া এক দিবস রৌজে শুক্ক করিবেন যভাপি চুল প্রমাণ কাটে তবে পুনবার তাহাতে লেপ দিয়া শুক্ক হইলে সবার উপরে কি প্রিং শীতল জল দিরা হাঁড়ি চুলীর উপর রাখিরা অল্পেং জাল দিবেন দিতেং পুনঃ সরার জল পারিবর্জন করিয়া শীতল জল দিবেন এই প্রকার ২১ বার হইলে চুলী হইতে অবভারেশ করিবেন পরে শীতল জল হইতে সরার তলা হ-ইতে চুল দিয়া তম্ম ঝাড়িয়া প্রশুরের উপর লইবেন পরে সেই ভ্রম হয়ে মর্দন করিলে পারা নির্গত হইবেক।

কাঁচাপারা শোধন। পারা ১০ তোলা তাছাতে রম্নের
কোরার উপরে জক সমুদ্র ত্যাগ করিয়া ভিতরে যেশ কিঞ্জিংথাকে তাছার রস পারার মত পারাতে দিরা কো-মল হস্তে থলে মর্দন করিবেক লোড়া থলে স্পর্ল না ছর কেবল পারার উপর মর্দন করিবে পারে কিঞ্জিৎকালে পারা নির্দাল হইলে রম্বন ধৌত করিয়া পারা অতি সাব-ধানে লইবেন পারে আমলানার গল্লক স্ত্রচুর্ন তাছার উন্দ্রি সমাতাণ শোধিত পারাদিয়া কন্ঠা প্রস্তরের থঁলে ৪ প্রহর মর্দ্দন করিলে কজ্জনী হইবে ইহাতে যদি অধিককাল মর্দ্দন করেন নে উত্তম। এই ছুই প্রকার পারাতে কজ্জলী হয় জানিবেন।

ছিলুলেরঃ। পিপুল রোগ্না যুক্মচূর্ব ছিলুল বিষ এবাৎ প্রতি ১ তোলা জলে মর্দন ২ রতি প্রমাণ বটি। অনুপান নবজ্বরে মধু, বাতিকজ্বরে দ্ধির মাত, গৃহণী এবং রজাতি নারে জায়কল চূর্ব ১ মানা জয়ীররদে মর্দন বালকদিগের চতুর্থাংশের একাংশ মাতা ঔষধ বিধি স্ক্রত।

লক্ষীবিলাসরস। অজ ১ তোলা কজ্ঞানী ৮ তোলা ক-পূর জ্বিত্তী জায়কল বীরতাড়ক বীল নিজিবীজ ভূমিকুদ্বাপ্ত মূল শতমূলি বাঢ়ালা গৌখরি চাবুল্যানূল গোক্রী
বীজ হিলজবীল ধুস্তুরবীজ এষাংপ্রতি ২ তোলা। সাচিপালেররনে মর্দন ৩ রতি প্রমাণ বটি অনুপান মধু কিয়া
পাণের স্বত্ব।

দ্রাকা পঞ্চকং।

ডাক্ষণ জৈ তেমধু প্রভাবে ৪ মাধা শিলে পেবণ ক-রিয়া ছক্ষ মধু ইক্ষুর্সে গুলিয়া পান করিবেন, ইহাতে দাহ জর নিবারণ হয়।

বাংলা আর চিকিৎসা।

এরও পাতে এইটা বালুকা পুটুলি থোলায় তপ্ত করিয়া রোগীর মস্তকে মূহুমূহু তাপদিবে যে পর্যন্ত রোগীর ম-স্তক অগ্রিৎ উফ না হয় পারে পাচনাদি দিবে।

পঞ্চ কোল পাচনৎ।

পিপুল পিপুলমূল চঞি চিতা শুণ্ঠী এষা প্রতি ৩২ রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রকেপ মধু ৪০ রতি।

ি পিপুল ২.তোলা জল ৪ পাল শেষ ১ পাল মধু প্রক্রেপ ৪· রতি। স্বংগ্রাক্ত শঃ।

পারা গন্ধক শ্লিবিষ এষা ৭ প্রতি ও মাষা ধুস্তুর বীজ

৬ মাষা ভূঁট পিপুল মরীর্চ এষাংপ্রতি ৪ মাষা বিবাদি চূর্ব করিয়া গোঁড়ালেবুর রদে মর্দন করিবে, বটি ২ রতি প্রমাণ অনুপান মধু পিপুলি চুর্ব আদার রুদ। সারিপাতিক জ্বর চিকিৎসা।

সালিপাতিক জার, অর্থাৎ তিদোষ জার, উপবাদ বালু কাষেদ, নহা, নিষ্ঠাবন অবলেহ অঞ্জন, এই ষট কর্মা অবশ্য কারতে হয় কারণ এই জারে কফ প্রধান অত্তর অত্যে ষে প্রকারে কফ নই তাছাই কর্ত্তব্য, পশ্চাৎ-পিত্ত এবং বা-ভিকের চিকিৎসা করিবেন নহা টাবালেবুর রম আর্দ্র করম বিটলবণ, সৈদ্ধবলবণ, তপ্ত জালে মর্দ্রন করিয়া নহা দিবেন ইছাতে সন্তাকের জল নিঃসরণ করিয়া মন্তক এবং সকল শ্রীরের বেদনা দূর হয়।

অবদেহ। কটকল কুড় কাঁকড়াশৃঙ্গী শুণী পিপুল মরিচ তুরালভা রুফজীরা এই ৮ জ্বা সমান ভাগ স্ব্লাচুর্ব মধ্
অথবা অতি ক রস সহিত অবলেহ, ইহাতে সালিপাতিক
ভার এবং হিক্লাবা খাস কাস কণ্ঠরোগ উর্জগ কফ হরণ করে
এবং রোগীর শ্রীর ভপ্ত থাকে, যভাপি ঘর্ম হয় ওথাচ অবলেভ দিবে।

অঞ্জন। শিরীষ্বীক পিপুল মরীচ সৈত্রবলবণ রম্ম সমঃশিলা বচ এই সকল জ্বা সমভাগ গোমুতে পেষণ পরে অঞ্জন করিয়া চক্ষে দিবেন।

নবাল পাচন। বিলু সোণা গান্তারী পালল গণিয়ারি ইহাদিগের ছাল চিরাতা গুলগ শুগী মুখা এবং এতি ১৮ ব্লভ জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রাক্ষণ পিতাধিক্যে ৪০ বৃতি মধু কফাধিক্যে ৪০রতি পিপুলচুর্ব, জীলোকের বিকারে দের

ভৈরবেশ্বর। সরীচ ২ তোলা বিষ ১ জোলা কড়ি আর্ক তোলা জলে মর্দন ১ গুঞা প্রমাণ বটি শিরঃমূলে নম্ভ দিবে ক্রিদোষ পিপুলচুর্ব অনুপান বিষ শোধন বিধি লৌহপাতে গোমূতের সহিত্তপ্রক রাজি রাখিলে বিষ শোধন হয়।

जिल्हाय निर्देश दम।

পার। ১ তোলা গল্পক ৩ তোলা উভয়ে কজুলী করিয়া সেই কজলী চিতার মূলের রুগে ৮ দিবলে ৮ বার রৌদ্রে শুক্ষ করিবে পরে শোধিত বিষ স্থাচুর্ন তাহাতে দিয়া পুন কার চিতামূলের রসে মর্দন করিবে তৎপরে মৎশুর পিত্ত দিয়া কিঞ্ছিৎকাল মর্দন করিয়া ১ গুঞ্জা প্রমান বটি করিবে, অনুপান আদার রস ঔষধ সেবনের পর কিঞ্ছিৎ আদার রস পান করাইবেন ইহাতে সাগ্নিপাতিক জর ন্ট করে।

বেভাল রপ। পারা গন্ধক সমান ভাগে কজ্জলী শুদ্ধ হরিতাল শুদ্ধ বিষ মরীচ পারার সমান হরিতাল বিষ ম-রীচ চুর্ব হইলে নির্দ্ধল আদার রুদে কজ্জলী প্রায় মর্দ্দন করিবে ঘুই রুতি প্রমাণ বৃটি অন্তপান আদার রুস নাগ্নি-পাতিক বিকারে মহৌষধি জানিবেন।

मर्शन।

অমৃতেশ্বর বটিকা। শৃঙ্গী বিষ পার। গল্পক জায়ফল তালভম পিপুল রোয়া শুজকাল সর্গবিশ্ব এযা প্রতি সম-তাগ আদার রুমে মর্দন ২ রতি প্রমাণ বটি অনুপান আ-দার রুম পিপুল রোয়া এই উব্ধ সালিপাতিক জর, তন্দা শাস ও কাশ এই সকলকে নট করে।

ষ্ট্দ ভৈরব। পারা শৃদী বিষ, গন্ধক এবাংপ্রতি ই মাষা হরিতাল তামু ভন্ম এবাংপ্রতি ৪ মাষা দকল শো-ধন চুব। আদার রদে মর্দন পারে পঞ্চপিত্তের ভাবনা দি-বেন মটরাক্তি বটি।

পঞ্চিপত যথা। মংখ্য, ময় র মহিষ, ছাগ, বরাহ সামিপাত তৈরব পারা কালসর্প বিষ শৃক্ষি বিষ, হরিতাল গোদত গন্ধক, মনংশিলা সোহাগা জায়কল লবক এবাং-প্রতি গমতাগ ইহার মধ্যে শোধ্যত্তব্য শোধন করিয়া সাঁচি পাণের রসে মর্দন ২ রতি প্রমান বটি অন্তপান আদা তুল-নীপ্রের রস, ইহাতে মদ, মোহ, ভ্রম, তাপ, হাগ্য গীত প্রলাপনৃত্য মৈকদ্পিকা পীড়া বিকটাক্ষ পরিভ্রম এই ল ক্ষণ হইলে চিত্ত বিভ্রম নামক নাগ্নিপাতিক কহা যায়। ইহাকে নট করে।

ষোড়াচড়ি রসং। পারা, গল্পক, মনংশিলা হরিতাল মুরিচ অভ্রতম শ্লিবিষং এষাংপ্রতি ২ মাষা শশুবিষ গা। মাষা শিলাজতু ৩।। মাষা, এই দকল শোধন করিষে রেভি ক্তি মংশু পিত্তে ভাবনা তুলসীপত্র ইনে মন্ত্রাকৃতি বটি করিবে অনুপান সজিনাছালের রস ইহাতে কণ্ঠকুক্ত দায়ি-পাত নাশ করে।

কণ্ঠকুজ লক্ষ্ণ।

কণ্ঠগ্রহ জ্বর মূর্জ্বা, দাহ, কম্পা, বিলাপ মোহ, তাপ শীতও বাতর্ভ প্রলাপ।

দারুত্রকারন। শশুবিষ ধুস্ত,রবীক পিপুল রোয়াহিক্ল এবাংপুতি সমভাগঃ বিষ হিঙ্গুল শোধন জ্মীর রসে
মর্দ্দিন ২ রতি প্রমাণ বটি অনুপান তুলসীপত্র রস। এই ওব্য বর্ণিক সন্নিপাত নাশক হয়। অস্তলক্ষণ।

জর কর্ণান্ত শোথ, খাদ, কম্প, প্রকাপ, খেত, কণ্ঠগ্রহ তাপ মোহ ভ্রমঃ।

আনন্দ তৈরৰ রস। হিন্দু ল শৃঙ্গিবিষ, তিকটু সোহাগা গন্ধকঃ পৃস্তার বীজ পারা অভ্যত্ম এষাংপ্রতি সমভাগ নি-বিদ্ধা পত্র রসে ভারনা ১ গুঞ্জা পুনান বটি। অন্মপান আ-দার রস সান্ধিপাতাতিসারে লবস জায়কল।

জিলগনাম নারিপাত বিনাশক হর মহৌষষি। জিল্পগ লক্ষণ। জিহ্বা কঠিন কাশঃ শ্বাস অতি বেদনা মুথ ববির হা ভাপ বলহানি। বেতাল রস।

পারা গল্পক শ্লিবিষ শন্তাবিষ সোহাগা এষাংপ্রতিসমভাগ যত হরিতাল তত শোধন করিবে অয়ীর রনে মর্জন
২ রতি প্রমাণ বটিকা অনুপান পাণের রস রুল্গাহ সামিপাত নাশক হয়।
মহৌব্যি কুল্গাহ লক্ষ্ণ।

মোহ, তাপ, ব্যথা, কণ্ঠদ্রম, শ্রম, বেদনা, অতিসার-ভার, আর শ্রাস প্রসাপ। কালানল রস।

শৃঞ্চিবিয় কালসর্পবিষ এত্যোংপ্রতি ২ মাবা শশুবিষ্
হরিতাল, পূর্ব্ব দ্বিগুণ শোধনান্তর করবীর রসে মর্দন চানকাকৃতি বটি মাবক সান্নিপাত নাশকের হয়। মহৌষধি
মারক নক্ষণ। দাহ, মোহ; শির, ও অঙ্গ কম্পা, হিকা কাশ
সন্তাপ শ্রম।

মহা**জরাস্কুশ** বটিকা।

পারা ২ মাষা গদ্ধক সোহাগা জীরা এষা প্রতিষ্ঠি মাষা শৃঙ্গীবেষ ২ মাষা মরীচ কটফল দন্তিবীজ্ঞ এষাংপ্রতি ১০ মাষা এই সকল শোধন পারে স্থলচুর্ন জনীর এবং আ-জ করসে ভাবনা মরীচাক্তি বটিকা অন্থপান আদার রস্প্রতিই উষধ ভূগ্নেজ সায়ি শাতিক এবং ভূগ্নেজ জরকে দুরী, করণ করে।

ক্রমেণোভরোলক্ষণং।

শোষণ লোচনম্বর ভক্ষ স্বরণ শূন্য অধিক জর, মোহ,
প্রলাপ কম্প, ভ্রম, নিজা মুহুমুহু পৌনঃ পুন্য শীত, বার
বার মোহ, প্রলাপ ঐকাহিক দ্যহিক ত্যাহক চাতুর্থিক
ইত্যাদির বিষ মাক্ষ জর সকল। সিলুশোষক রস।
রমসিলু গলকঃ কালসর্প বিষ শৃক্ষি বিষ, হরিভাল এবাং
প্রতি সমভাগ শোধন করিবেক পশ্চাৎ চুর্ল করিয়া মৃৎপাতে নিষিদ্ধাপত্রেসে ভাবনা ২ রতি প্রমাণ বটি অনুপান
লবঙ্গাদি চতুষ্টা তগুলোদক ছাগথকে পারাণ।

রক্তারি সামিপাতিক নাশিকেরং বটিকা। অশুলক্ষণ রক্তনিষ্ঠীবন মূর্ছা জর মোহ তৃঞা ভ্রম, বসন িক্কা অতি-সার জ্ঞান নাশ ব্যথা বোষণ রক্তের মণ্ডলাক্ষতি দেহেছে চিক্ল। প্রতাপলক্ষের রস। কন্তুরী কজ্ঞানী ষ্টান্ মাক্ষি, তামু, হরিতাল, দারুমোচ দ্বিমক্ষারন শ্লিবিষ্ এষাংপ্রতি সমভাগ, শাধন করিয়া চুল করিবেক ভাবনা রোহিত মংশুপিত করবীর মূল রস বামনহাটি মূলের রস ২ রতি প্রমাণ বটিকা। প্রকাপ দায়িপাত নির্ভনোছ মহৌষধি। প্রকাপশু লক্ষণ। প্রকাপ তাপ অতিশয় কম্প প্রজ্ঞানাশ পাদ শোফ কুপীড়া বৈকম্প প্রতিপাদন।

শভর নৃদিংহ রস। হিঙ্গুল শৃঞ্চিবিষ তিকটু জীরা গো-হাগা গজক অভভন্ম পারা এবা প্রতি যত অকিঙ্গ তত শোধন করিরা চুণ করিবে জয়ীররসে মর্দন মটরাকৃতি বটি অনুপান জিরা মধু শীতাঙ্গ সালিপাত নিই শের বটিকা শীতাঙ্গ লক্ষণ স্ববেণর ন্যায় শরীরের বন্ত্রণচ দীই অতি-লার কম্প প্রনাপ অঙ্গতাপ হিল্পা শ্বাস ভ্রম স্বাঞ্গ শীতল

নুদিংহ কালামল বট্টিকা। কালস্প বিষ্ণ গন্ধক শন্থ বিষ শ্লিবিষ তিকুট সোহাগা পারা তামু ভন্ম লৌহভন্ম . এষা প্রতি সমভাগ শোধনানন্তর চুল করিবে পরে পঞ পিত্ত ভাবনা। ধৃস্ত্যুরমূল রসে পর্দ্ধরতি প্রমাণ বটি বান্ধিবে অনুপান শেত আকনদমূল রস দ্ধিপ্থ্য তৈল হরিডা ম-দ্দন স্নানকিরা করাইবেন। অভিন্যাস সামিপাতিক নাশ-কোহরমোষ্ধি অভিন্যান লক্ষণ্ জিদো্য মুখ্পোষ, বি-কল্প নিজা নট বাক্য চেতনা শূন্য অতিশ্বাস মনদাগ্রি বল হানি। মৃত সালিপাতে। চূড়ামাণ গুড়িকা পুরোজ্যা গারাগুড়ি হরিতাল শহাবিষ, গোমস্ত হিঙ্গুল ধুন্তর বীজ তিকটু বেখম্যাবিষ ভূঁতে শিলাজটু কম্তরী পীরা গন্ধক স্বণ মাক্ষি বিষতাড়ক বীজ এবাংপুতি সমভাগ শোধন করিবে পরে ভাবনা। নিষিক্ষাপত রস আকনদ মূল রস চিভামূল, রস নাগদানাপত্রস করবীগুল রস লাজ্লের মূলরস গল ষ্মপত্র রুম এবাংপ্রত্যেকে > বার রৌত্রে পাক অতি মুক্স চুণ ভক্ষণ ২ ব্লতি অনুপান ধাতু বিশেষ।

অথ উলুন চিকিৎসা।

দশমূল পিপুল নিকর, এবাংপ্রতি ১। শাষা পাকার্থ, জল ১ সের শেষ ১ ছটাক পারীক্ষা চতুর্ম্মুখ।

'ধাতু চতুর্ন্ধুখ, প্রবর্তকা, তানুতকা লৌহতকা অভ্ৰতকা

এরা প্রতি সমাভাগ চূর্বিছা আদাররদে গুঞ্জা প্রমাণ বটি
•ক্রিবেন।

व्यथवा डेल्टन हरूमु थ व्यक्षांश कदिदक।

রসমানিক,গঙ্গাজনি ফটকারি ৮ ভোলা, তবকী হরিতাল ২৪ তোলা উভর চূর্ণ করিয়া আলোকতর রসে ভাবনা
দিয়া শুক্ত হইলে চূর্ণ করিবে নেই চূর্ণ উর্দ্ধ কলেবর ছই অজুলি প্রমাণ করিয়া লৌহলাতে অদ্রের উপর রাখিবে, তত্ত্ব
পরি অভ্র আছাদন পরে লৌহ পাজোপরি লৌহপাত্র
আছাদন,তাহাতে দৃঢ় করিয়া মৃত্তিকালেপ পরে অই প্রহর
লাল দিলে নাজ হইবে,ভক্ষণ ২ রতি প্রমান, এই উষধ সাদ্মিপাত জার, কফাধিক উল্ব অই।দেশ প্রকার বুর্ত্ত, বাতরক্ত, এই সকলেতে যোগ করিবেন, বিশেষত উল্বন।

অথ হিলুলেশ্বর, হিলুল শশুবিষ, সমভাগ শাধন বে-লের আটাতে নর্দন করিয়া শুর্দ্ধ হইলে সমান ভাগ মরীচ দিয়া পুনংমর্দন করিয়া মরীচাক্তি বটি বালিবেন অনুপান উল্নেটিনি মধু লবঙ্গ, সামিপাতে ত্রোদশাঙ্গ পাচন, ক্ফ পিতের খালরের মধু, খাস কাদে পঞ্কোল মধু।

চতুর্দিশাক পাচন, দশমূল শুণ্ঠী চিরাতা, এষাংপ্রতি ১'। মাষা, পাক শেষ পূব্ববং, প্রক্ষেপ রসাদিন্তুর্রস। কোণ্ঠ বন্ধে তেউড়ি চুর্ন।

রুদদিন্ত্রদ, দীনে ৮ তোলা অদ্য শোধন, সর্বপতিল তক্র গোমূত, কাঞ্জি, কুলোথ কলায়ের রাথ, প্রত্যেক তিনবার, গল্পক ১৬ তোলা, অদ্য শোধন, মৃত ১৬ তোলা লাতে গালাইরা ওক্ষে নিঃক্লেপ করিবে পারা ২৪ তোলা অদ্য শোধন, পক্ষপর্গটি ২৪ তোলা হরিডাচুন ২৪ তোলা ইটকচূন ২৪ তোলা, ঝুল ২ তোলা এই সকলে প্রত্যেক ১ প্রহর মর্দন করিয়া কর্জ্জলী করিবেক অদ্য ভাবনা, সপ্ত কুঞ্চিকারদ, ভুল্বাজ্রদ, মৃতকুমারীরদ, অপারাজ্বভা রদ, তুলদীপ্র রুদ, নাচিপাণের রুদ, নাঞ্চে রুদ, এষাৎপ্রভ্যেক ১ বার দিয়া শুক্ষ করিবে পরে বোতোলের গায় মৃত্তিকার দৃঢ় লেপন শুক্ষ তাহাতে কজলী পুরিত করিবে, সীদার পাত খণ্ড২ করিয়া প্রথম রাখিবে, পরে দিন্দুরবর্গ ২ অক্সালি পুরু হাঁডির অর্জ ভাগ বালুকা পূর্ণ করিয়া তাহাতে বোতোল বসাইবে বোতোল মুখে ঢাকাদিয়া বোতোলের ২ অঙ্গুলী প্রমাণ জাতত রাখিয়া বালিপূর্ণ করিবে পরে বোতোলের ঢাকাখুলে ২৪ প্রহর জালাদিলে মীদা থাপার হইবে ক্রমে২ লোহের গঙ্গে আটিবে, বিধুম হইলে ত্যাগ করিবেন, ২৪ প্রহর জালাদিলে বালি ক্রফবর্ণ হইবেক।

অথ দিনান্তরে উল্নাধিকার, অউদশাঙ্গ পাচন, রস-সিন্তুর সহিত প্রয়োগ করিয়াছেন দপ্র মতে হেমামৃত রস সিন্তুর ক্কাথ শোধিত সোণা পাত করিবেক শোধিত দীসাপাত করিবেক, শোধিত গঞ্জক শোধিত পারা কজলী করিবেক, এয়াং ভাগ, সোণা ১ তোলা দীসা ১৫ ভোলা, গঞ্জক ১৬ ভোলা পারা ১ ভোলা,মৃত্তিকা লেপযুক্ত বোতলে পূরিরা বাল্কাযন্ত্রে পাক করিবে, বোতল মুথে অগুউটিলে গোণা শিষার পাত খাপরে ২৭প্রহর পাক নিজি হয়, অ-মুপান ভুনিয়াদি, অউদেশাঙ্গ নানা প্রকার উল্ন, এবং সালিপাতিক জ্বর নট করে।

মুথা, অন্টাদশাল, মুথা লবপর্গনি বেণামূলে দেবদারু
শুণ তি জিললা হরালভা নিম্ন, গুণু হোহিণী তেউড়িমূল চিরাতা আকনাদিমূল বাট্যালাসমূল কটকী জৈলীসপু পিপুল
এনাংপ্রতি ৯ রতি পাকশেন পুর্ববৎ প্রক্ষেপ মধু ৪ মাধা
পুর্ন চন্দ্র, রসায়ণ ইহাতে উল্ন সাগ্নিপাত, পিতজ্বর মন্যাশুদ্র উরুস্তান্ত, উরুঃ পৃষ্ঠ, শির্থাহ্ন সকল রোগ দূর হয়, পূর্ন
চন্দ্র রসায়ন,প্রােল্লভ্রা মুর্ন ১ ভোলা, রৌপ্য হতোলা
কাংশ ও তোলা কাজিলোহ ৪ তোলা, তামু ৫ ভোলা, মুন্
য়াক্ষি ৬ ভোলা, অত্র ৭ ভোলা, হরিতাল ৮ ভোলা, হিন্দু ল
ক ভোলা, শন্ধবিষ ১ ভোলা থাপার ১১ ভোলা রাভ ১২

ভোলা, দীসা ১৩ ভোলা, গঞ্জক ১৪ ভোলা, পারা ১৫ ভোলা এই দকল চূর্ন করিবেক সপ্তকুঞ্চিকা কজ্জলী,বোভোল পূ-রিষ্ণা বালুকা যত্ত্বে ৩২ প্রহর জাল দিবেন অমুপান বিশেষ নানা প্রকার গুণ করিবে কফ পিত্তে আদার রস মধ্য, খাস কালে পঞ্চকোল মধু।

व्यथ जीर्न ज्वद्र हिकिएना।

ক্ষকীণ জীপ জার ওকাপথ্য অতি উপকারী হয়,কক-স্বতে এবং নবজ্বরে ওকাপথ্য অতি করিলে প্রাণ সংশয় হয়

নিদিকিকা পাঁচন, কাঁতিকারী গুল্ঞ, শুণী এষাং প্রতি ৫৩ রতি জল ৪০ পল শেষ ১পল অনুপান মধু ৪রতি রাজিভোগ জ্বরে পিপুল চূর্ণ ৪০ রতি।

শালপানী চাকুল্যা কণ্টিকারী গোক্তরী ব্যাকুড় এষাং প্রতি ৩২ রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ পিপুল চূর্ন ৪০ রতি, পিপুল ৪০ রতি পুরাতন গুড় ৪০ রতি উভয়ে অবলেহ দিবেন।

অথ ধাতী মোদক। আনলকী হরীতকী শুণ্ঠী পিপুল এই সকলের ফুল চূর্ণ যত গুলঞ্জের পাল তত একত ললে পাক করিবেন চুলীইইতে অবতারণ করিয়া তাহাতে সকল অব্যের সমান চিনি দিয়া মর্জনকরিবেন পারে মধু দিয়া মোদক করিবেন, ২০ রভি প্রিমাণ প্রভাহ সেবন করিবেন ইহাতে শ্লীহা কাম অগ্নিমান্যাদি নই করে।

অথ ভাগ্যাদি পাচন। বামনহাটী মুথা বুড় শুণ্ঠী হরীতকী পিপুল দশমুল এষা প্রাতি ১০ রতি জল ৪ পল শেষ
১ পল প্রেকেপ মধু ৪০ রতি পিপুল চূর্ণ ৪০ রতি, ইহাতে
অগ্রিজি হয় এবং জীর্ণজ্বর বিষমজ্বর সালিপাতিকজ্বর
নিবারণ হয়।

রাত্তিজ্বরের রহমবাঙ্গ,বিলু সোণা গান্তারি পারুল গণি-মারি এই সকলের ছাল চিরাতা গুলঞ্চ শুণ্ঠী মুথা এষাং প্রতি ১৭ রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ পিপুল চূণ ৪° রাত ক্ষীরারীমূল লাজুনস্যামূল রবিবারে অথবা অ-ইমী তিথিতে রক্ত হতে বদ্ধ করিয়া মন্তকে ধারণ করিলে । রাজিজ্বর নই হয়।

मर्थनः ।

মুস্তকাদি পাচন। মুখা আমলকী গুলঞ্চ শুণ্ঠী কণ্টি-কারি এবাংপ্রতি ৪ মাধা।

ধান্যাদি পাচন,ধন্যা মুখা তিফলা গুলঞ্চ পটোলপত নিষ্ঠাল এবাংপ্রতি ২ মাষা পাকশেষ পুরুবৎ প্রক্রেপ মধু শকর', রহৎ পঞ্চমুলি ৪ মাষা পাক শেষ পূর্ববৎ প্র-ক্ষেপ পিপুল চূন ৪ ।

ভূনিষাদি চূল, চিরাভা কটকী মুথা পটোলপত খেতচলন পিপুল মূল জিরা শুণ্ডী গুলঞ্চ বালা ধন্যা অভ্ৰতন্য
লোইভন্ম এলাইচ আকানাদি মূল মরিচ গুড়ত্বক তেজপত্ত জেঠমধু এযাংপ্রতি সমভাগ চূর্ণ করিবে ভন্মন্ত মাধা অমুপান মধু এবং সেফালিকাপত্ত রস,ইহাতে জীল জ্বর অবন্ধ নাশ করে এবং একাহিক ঘ্যহিক ত্যাহিক চাতুর্থিক বাতিক পৈত্তিক শ্লেজিক সামিপাভিকাদি জ্বর সকলকে নট করে।

জিরা তিফলা মুথা আন নাগেশ্বর এলাইচ গুড়ত্বক ল-বঙ্গ লৌহত্ব এবা প্রতি সমান চুর্ব করিবে ভক্ষণ ২ মাধা অনুপান মরু শ্বেতকুলিপারস লৌহপাতে লৌহদণ্ডে মর্দিন করিয়া ভক্ষণ করিবে, ইহাতে জীর্ব জ্বর ক্ষরকাশ শিরঃশূল পাশ্ব শ্ল অঙ্কচি শম্পিত্ত নট্টকরে।

অটাক ধুন, গুণ্ঠল নিষ্পত বচ কুড় হরীতকী শ্বেত সরিয়া থব তপুল এবাং প্রতি সমান চুণ গ্রাহতে মদন ১ তোলা পরিমাণ বটি কুলকার্ছের অলিপুর্ণ স্রাতে ভাকিয়া উলক শরীরে কৃষ্ণবর্ণ ক্ষলাচ্ছাদন করিয়া ধুম লইবে ই-হাতে জীর্জার নই করে।

অথ মহেশ্বর মন্ত্র। নমো ভগবতে ক্রডায়া নমো নমো

হথিল প্রাকশিয় কপাল মালিনে স্কটিলায় নির্গন্ধিনে নথট বিকট ধারিশে জর ঐকাহিক, দ্যহিক আহিক চাতুর্থিক, দি-নজার সন্ধ্যাজ্বর রাজিজার সক্ষেমাৎ জ্বরাশাং উচ্ছাদয় উচ্ছা-দর আরোগ্য কর ভগণতে স্কোদেবেতি স্বাহা, ইমং মন্ত্রং পিঞ্বিৎশতি বারান্ শৃণুরাৎ।

অথ ধাত্ৰ মোদক

প্রাতুকী হরীতকী শুণ্ঠী গুলঞ্চের পাল পিপুল এষাৎ প্রতি ৪ ভোলা চুর্ব চিনি ৪ তোলা দিয়া মোদক পাক ক-রিবেক ১ তোলা পঢ়িমাণ বটি অনুপান জল ৪ মাধা।

অঞ্যারক তৈল লাক্ষ্যা ত্র্কামূল হরিতা দাক্রহরিতা মঞ্জি রাথালসসারমূল ব্যাকুড়বীজ সৈন্ধব বুড় রামা জটা মাৎদী শতমূলী এবাংপ্রতি ১২ মাথা চুর্ব করিয়া বল্ক দিবে সার্থপতৈল ৪ সের মূচ্ছার্থ মঞ্জি ছা ২ তোলা কাঞ্জি ৪ সের এই সকল জীর্জার নন্ট করে।

অথ প্লীহাত্তিত জীণজ্ঞর চিকিৎসা।

চিত্রকাদি জারক। চিতামূল দৈন্দ্রবিকটু হিঙ্গ জীরা মুদকার যবকার বনজমানী চিরাতা বিটলবন কঞ্জীরা এবাংপ্রতি সমচুন করিবে জয়ীর রদে মর্দন ভক্ষণ ২ মাধা। অনুপান জয়ীর রস।

ভাত্রকুণী জারক। মৃততাত্র মৃত্রতাত্র কোইত্রম শুদ্ধ জরপাল বীজ সমুত্র ফেণা চিতামূল জীরা হিন্দ যককার সা-চিক্ষার দৈলাব বিড়ঙ্গ নীলবড়ি চিরাতা বিটলবণ ফটিকিরী নুদক্রর এবাং চুর্ণ সমভাগ জ্বার রসে মর্দন ভক্ষণ ২ মাধা অনুপান জ্বার রক্ষ, ইহাতে গ্রীংজ্বর শোথপাঞ্ উদর-রোগ গুল্ম শুল নট্ট করে।।

নক্ষত্রহ্র লৌ। চিতারমূল ত্রিফলা ত্রিকটু বিড়ঙ্গ মূথা হরীতকী পিপুলমূল বেণামূল দেবদারু চিরাতা গুলঞ্চ কালা কট্কী কণ্টিকারী মূল নাজনাবীজ বীরুছা জ্যেষ্ঠ্যপু বুরুচি বীজ এবাংপ্রতি সমভাগে চুর্ব যত লৌহ তত একত্রে মধু ঘৃত দিয়া মদ্দন বদরান্তি পরিমান বটি অনুপান কুলি-খারস, ইহাতে বাতিক পোত্রক শ্লেমিক সামিপাতিক দ্ব-নদজ বিষয় ঘোর খাতৃস্ত কম্প এই সকল জ্বর দাহ বমন হিক্কা খাল অরুচি কাল প্রীহা গুলা ক্রমিরোগ রক্তপিত ম-নদাগ্রিক করে,।

মান গুঁড়িকা। মানদাটা সুকামুল অভাবে অপাক গুণলঞ্চ বাকস মূল সালপানি মূল চিতা মুল সৈক্ষব শুণ্ঠী তালক্ষ্য এবাৎ প্রতি ৮ তোলা এক ত্রক্টিবে পাকার্থ গোলমুত্র ১৬ মের ইহা ছাঁকিয়া গুড়ের ন্যার্থ পাক করিবে পরে মধু ২৪ তে'লা বিটলবণ সচল লবণ যুরক্ষার এবাংপ্রতি চুণ ২ তোলা ভাহাতে দিবেন ভক্ষণ ৮ মাবা প্রক্ষেপ গোমুত্র ইহাতে যক্ষৎ প্রীহা পাঞ্জ অগ্নিমান্ত্য গৃহিণী নই করে।।

মস্কুশ গুড়িকা। স্বন্ধুল আলকুনিগাছ ৪ দের পুরাতন কাঞ্জি ১৬ সের ৪ দের ছেকে পাক গুড়ের ন্যায় ত্রুপরি শুগু যবকার ছিল্ল নৈম্ব বিটলবন করকচ লবণ সচলল-বণ স্থায়ন্তর লবণ নমুদ্র কোণা মরীচ যমানী জীরা রুক্জীরা নোহাগা চিতামুল চই আপাক্ষকার তালসাঁড়াক্ষার বিরুদ্ধ পিপুল এলাইচ গুড় ছক ভেলপত্র এ্বাংপ্রতি ১ ভোলা চুর্ল দিবে মধু ১৬ তোলা প্রক্রেপদিয়া উত্তারণ করিবেন ভন্মণ ৪ মাধা অনুপান আলকুনি রুম, ইহাতে যক্ত গুলা সকল প্রীহাল্কর কান্ল্য শোথরল নম্ট করে।

ক্ষার অসারক তৈল। পিপুল পিপুলমুল চঁই চিতামুল শুণ্ঠী তালিনপত্র মিজিণ্ঠা দেবদার এবাংপ্রতিং তোলা
তিলতৈল অথবা নার্যপাতৈল ৪ সের কাঞ্জি ৪ সের জ্বীর
রস ৪ সের ওক্ষ ৮ সের জল ৪ সের এই নকল আঃ তৈল
পাক হইনা নির্দান ইইলে পাক্ষাদির ইইবেগ্রুজ্বা বীরজা
লথী কপু । ইভাতে বাতিক পৈতিক দ্বন্দ্র সামিপাতিক
সন্তত্ত নতত ভিরহার গায়ীরাদি জীনজার গ্রীহা পাও কামনা
নাশ হর।

ওড় পিপুলী। বিড়ক ত্রিকটু কুড় বিট দৈল্পন করকচ সকল স্বায়ন্তর হিন্দ যবক্ষার সাচিক্ষার সমুদ্রকেণা চিতামূল
চিরাতা জীরা ক্ষজীরা চঁই বংশলোচন তামুভ্যম অভ্যন্ম
লোহভ্যম ভিলক্ষার বুমুড়াক্ষার লালম্যেচক্ষার আপাকক্ষার তেতৃপক্ষার এযাংপ্রতি সমভাগে যত পিপুল ভত উভয়ের তুল্য পুরাতন গুড় চূর্নেমিজ্রিত করিয়া মর্দ্রন করিবে
ভক্ষণ ৪ মাযা অনুপান লেবুরস এই উষধ সেবন মাত্রে দাক্লণ প্রীহা কামলা পাজুরোগ জীবজ্বর নাশহর বিত্ত বালক
দিগের বিশেষ কপে।

যমানী জারক।

বিট সৈন্ধব যবকার সাচিক্ষার ফট্কিরী বনজ্যানী পি পুল ক্ষজীরা এযাং প্রত্যেক ৮ ভোলার যত যমানী তত দকল চুর্ব ৪ সের লেবুরুসে গুলিয়া হাঁড়ির মধ্যে সরা ঢাকা দিয়া রাখিবে ভক্ষণ কেবিংশতি দিবস ১ ভোলা পরিমান জল, ইছাতে শ্বাস কাস কোউবদ্ধ গ্রীহা উদর্বা বায়ু অগ্নিনান বান্দা বাতাজীর্ব এ সকল নই করে। অই গুরির স।

শোধিত পারা শোধিত গল্পক শোধিত জয়পাল অভ্র ভন্ম তামুভন্ম শোধিত গুণ্ডল লোইভন্ম কাংশুভন্ম এয়াং প্রতি ১ তোলা চিরাতা জীরা রুঞ্জীরা যমানী বিলয়মানী সোহাগা ত্রিকটু ত্রিকলা ত্রিমদ ত্রিজাতক এবাংপ্রতি ৭ মাবা সকল স্মাচ্ন করিবেক মধ্ স্থত চিনি এবাংপ্রতি ৪ তোলা লোইমণ্ডুর ৮ তোলা লকল একত্রে মর্দ্দন করিবেক বটি ১ মাবা পরিমাণ অন্ধ পান কেয়ুত্যের রস। ইহাতে জীন্ত্রর আইবিধ প্রীহা অই প্রকার জর শোথ শূল খাল গুলা পাণ্ডু নানা প্রকার কামলা রুজপিত্র হলীমক এই সকল রোগ নই করে অগিও বল রুদ্ধি হয়। শ

মহাচিত্রক লবণ। চিতাগুল ভেউড়িমূল মান্তাটা দবি-গাছ আলকুশিগাছ বুয়াড়িগাছ ঘাটুমূল সোণাছাল তাল-মোচ এযাংপ্রতি ১৮ তোলা পাকার্থ পুরাতনকাঞ্জি ১৬ সের শেষ ৪ দের হরীতকী ১ দের পাকার্থ জল ৮ দের শেষ ২ দের লেবুরদ ১ দের বৈদ্ধার ২ দের এই ৮ দের একত করিয়া ইহাতে ত্রিকটু ত্রিফলা ত্রিমদ ত্রিজাভক যবক্ষার মাচিক্ষার নাগেশ্বর জীরা হিন্দ রামা সমুদ্রফেণা সোহাগা জাতিফল আভইচ বিট দৈল্পর করকচ হায়ন্তর সচল দন্তিবীল মঞ্জিঠা লৌহন্তম তালুভম্ম বুড় রসাঞ্জন যমানী শিলাজভু জাক্ষা শল্পতম বিড়ল এষা প্রভি ১ ভোলা চূর্ণ করিয়া দিবে ভক্ষণ ৪ মাষা অনুপান লেবুররস ইহাতে নানা প্রকার গ্রীহাজর উদরান্যশোথ পাণ্ডু কামলা শ্বাস কাস অমুশূল নন্ট হয় এবং অগ্রহজি হয়।

তৃতে শহাবিষ নিশাদল গোদন্ত এবাংপ্রতি ২ তোলা নৈদ্ধব বিটলবেশ ফট্কিরী এবাংপ্রতি ৮ তোলা যবক্ষার ৩২ তোলা এই সকল অব্য চুণ করিয়া গলামৃত্তিকার কোপাতে পারে বক্যন্তে পাক করিবে কাঁচের পাতে ঘর্ম্ম চুয়াইয়া প-ডিবে ভক্ষণ ২ মাঘা ধ্বমুপান আদার রস এই ঔষধ দেবনে যক্ত প্রীচা সাধ্যাশাধ্য জর পঞ্চবিধ কান এবং শ্বান, অফ প্রকার শ্ল শোথ উদরী পান্তু এই সকল বিনষ্ট হর।

জরকলীয়াবটি। শোপিত পারা শোধিত গল্পক শো-থিত শৃলিবিব এষাংপ্রতি ৮ মাবা হরিতাল পুটে তামাত্র্য ১৬ মাবা তালক ১৬ মাবা সকল একত চূর্ব করিয়া কাগুচি লেবুরসে ২ দিবস ভাবনা মটরাক্ষতি বটি অনুপান লেবুরস

মেঘনাদ রস। রৌপ্যভন্ম কাংশুভন্ম স্থানিত্য এয় ংপ্রতি যত শুদ্ধ গল্পক ভত কাঁটানটেরসে মর্দন করিয়া যোড়াবি-নুকে পুরিয়া মৃত্তিকা লেপনানন্তর গলপুটে ৪ প্রহর পাক করিবে ভক্ষণ ১ রতি অনুশান সাচিপানের রস এই ঔষধ সাধ্যাসাধ্য জর খীলা গুলা নাশ করে।

শীতভাঞ্জত তৈল। তিল তৈল ৪ দের নালুকা মাঞ্চি:-ছয়োঃ প্রতি ৪ তোলা মূচ্ছবিং ভীমরান্তরন কেবৃত্যের রস কুলিথাপত রস হিঞারস এয়াংপ্রতি ১দের কল্কার্থংলাকা . হরিতা বিরুজা ত্রিকটু ত্রিকলা মুথা চিরাতা মেথি চিতায়ূল বিড্জ এলাইচ গুড়্বক তেজপত্র তেউড়িছুল এবা প্রতি ২ তোলা এই সকল চুর্ব করিয়া তৈলে পাক করিবেক।

ত্বী ধন্যা কৃষ্ণীরা ত্রালভা পিপুলমূল বেণামূল বালা চিরাতা সজিবা আঠা রজচন্দন আকনাদিমূল ত্রিকলা বচ জ্যেষ্ঠ মধু সৈন্ধব এলাইচ গুড়বক ভেজ ত্র নাগেশ্ব রহতী বীজ ত্রনদ ভালিশপত্র যমানী ক্ষত্রমানী অভ্রভন্ম বান্সকছাল ভীমরাজমূল কড়িভন্ম এযাংপ্রতি যত লোই মগুর ভ্রম তত্র এ সকল চুর্ল ভক্ম ১ মাযা অনুপান মৃত মধু লোই খলে লোইদণ্ড দ্বারা মর্দ্দন করিয়া ঔষধ সেবন করিবে ইহাতে জীর্জার প্লীহা পাপ্ত কাম শ্বাম শ্বতেদ অক্তি তৃষ্ণা দাহ শোথ ভাল হয়।

অভিযাত এবং অভিচার জ্বরে স্নিক্ষত্রব্যাদি ও স্পান্ত তব্য দিবেন স্থান করাইবে না ইহাতে বিশেষ অভিচার জর স্বস্ত্যয়নাদি এবং গ্রহাদি দেবতাদিগের পূজা করাইবেন।

ক্রোধন্সর নংপ্রসঙ্গাদি। এবং মনোছর বাক্য কহিবেক কঠোর বাক্যাভ্যর করিবেক না এবং কামজ্বরে এ প্রকার মাধুর্যাদি ক্রিঃ। করিবেক কঠোরক্রিয়া করিবে না। শোক জরে এবং ভয় জরে যাহাতে রোগীর মন হর্ষযুক্ত হয় তাহা করিবেন।

ভৌতি জারে ভৌতিক বিস্তাবদ্যাক্তি দ্বারা চিকিৎসা করা-ইবেন কিন্তু রোগীকে তাড়ন পীড়নাদি করিবে না ষাহাতে ব্যোগীর মন হুস্থ থাকে তাহা করিবেন।

• একাহিক জর চিকিৎদা।

রবিবারে জলস্পর্শনের পূর্বের আপাঙ্গেরমূল তুলিয়া সাত থেই রজবর্ণ হত্তে বন্ধন করিবে পারে রোগীর পৃষ্ঠে পাদা-পূর্ণ পূর্বেক মত্র পাঠ করিয়া বামহস্তে বান্ধিবেন। শন্ত। অন্স বন্ধ কলিকের দৌরাই মগধের চ। বারা-প্রাঞ্জ বন্ধতং তল্পার্গনির জর।

জর তর্পণ মন্ত। গলারা উত্তরে কুলে অপুপ্রস্তাপদোমৃতঃ তথ্য তিলোদক দন্তা মুঞ্চ প্রকাহিক জর তর্পণ
বৈধি। অরাত জরের পালাদিবদে ক ক শব্দের পূর্বর প্রশ্ন
ভুরের গাত্রোপান করিয়া এক রক্ষ ও পুষ্করিদীর পল অনা
ব্যক্তিকে স্পর্শের পূর্বে বাম হস্ত দ্বারা নৃতন ঘটে উত্তোলন করিয়া দক্ষিণ হস্তে অশ্ব্যপাত্রোপার কুশ তিল যব
রক্তপুষ্প এবং উত্তোলিত দলদারা পূর্বাম্য হইয়া মন্ত্র পাঠ।
পূর্বক একবার তর্পণ করিয়া ঝটিতি তথা হইতে গমন করিবে পশ্যাক্ষর্শন করিবে না।

সমুদ্রফোত্ত। তীরে দিবিদোনাম বানর। জরমৈকাহিকং হতি লিখনং যঃ প্রপাতত।।

এই মন্ত্র অশ্বত্যপত্রে আলতায় লিখিয়া পালার দিনে রোগীকে দেখাইবেক। চাতুর্থিক জর চিকিৎসা।

গুল্ঞ আমল্কী মুথা এবাংপ্রতি ৫৩ রতি জল ৪ পাল শ্বে ১ পল প্রক্ষেপ মধু পিপুল চুর্ব ৪° রতি ব্রফুল পা-তার রম নশ্য করিলে পালাজর ভাল হয়।

শিরিষপুপ্পের রস হরিজা দারহিরিজা স্তএকত্রে এই চারি জব্যের নশ্য করিবে রহস্পতিবার রাজিতে চাঁপানটি-মার মূল উত্তোলন করিয়া রক্তমন্ত্রীরা কর্ণে বন্ধন করলে পালাজর ভাল হয়। গুণ্ডল এবং পেরামূল বস্ত্রখণ্ডে বন্ধন করিয়া রোগীর গাত্রে ভাহার ধুম অবশ্য দিবে।

সন্তভার চিকিৎসা।

্ ইন্দ্ৰয়ৰ পটোলপত্ৰ কট্কী এষা ১প্ৰতি ৫৭॥ - রতি দল ৪ পল শেষ ১ পল মধু পিপুল চুৰ্ণ ৪০ রতি।

পটোলপত্ৰ অনন্তমূল মুথা আকনাদি মূল কট্কী এবাংপ্ৰতি ২৬॥• রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু পিপুল চুর্ব ৪• রতি। গুণ্ঠল নিম্নপত্র বচ কুড় হরীতকী সরিবা যব মৃত এই সকল অব্য একত্র করিয়া রোগীর গাত্রে ধুম দিবে।

কম্পালর। মার্ক্রার বিঠার ধুম রোগীর গাত্রে দিবেন এবং স্থদর্শন চুল ঔষধ প্রয়োগ করিবেন অতএব নানা প্র-কার চিকিৎসা করিয়া যে জর ত্যাগ না হর সেই জরেতে স্থদর্শন চুণ মহৌষধ জানিবেন।

দর্পণং। 'আগন্তুক জর'চিকিৎদা।

াতপিত কফ ক্রুর হইয়া যদি অকস্মাৎ ধাের জ্বর হর তাহার নাম দ্যহিকাগন্তক জর চিরাভা জীরা চিনি এবাং প্রতি ৪ মাধা জল দিয়া পেয়ণ করিয়া মধুর সহিত পান ক-রিবে। ভৌতিক্ষ্যহিক জর।

স্বন্দপঞ্চমূলী শুণ্ঠী চিরাতা গুলঞ্চ মুথা এযাংপ্রতি ২ মাষা পাক শেষ গুর্ববৎ পিতাথিক্যে মধু ৪ মাষা কফা-বিক্যে পিপুল চুণ। অশু মন্ত্রং।

বাাদ বশিষ্ঠ গৌতম এই তিন ঋষি তপ করি আদে আচ্ছিতে দেখা কালপুরুষা নৌজন্ধা হাতে রক্তদরা ক্ষমে নরমাংল ভার তিন ঋষি বোল'ন্ত মারই পানি ঋষি বলে কি উপায় মারিব ওয়ো তিন ঋষি নাম যাঁহা শুনিবুঁ তাহ্র অকরেঁ না খবুঁ যেবে অঙ্গরে স্থিব তৈবে ঈশর জোহি ইইবুঁ সেই কথা দঙ্গরি ছাড় পুরুষা ছাড় কার আজ্ঞায় ব্যাদ বশিষ্ঠ গৌতম ঋষির আজ্ঞায় নাঞি অমুকার অঙ্গে নাঞি ৩।১ কালিকলাই কয়োকান গড়্যা খর্পর মুশুমাল যে জানে কলাই কলিকা বাণে না রহেঁ পানে ছাড় কার আজ্ঞায় ব্যাদ বশিষ্ঠ গৌতন ঋষির আজ্ঞায় নাঞি অমুকার কার আজ্ঞায় ব্যাদ বশিষ্ঠ গৌতন ঋষির আজ্ঞায় নাঞি অমুকার অঙ্গে নাঞি ৩।

জীর্বাহিক জর চিকিৎসা।

কফ পিত্যুক্ত এবং কফ কাস জার হইতে উদর যে জ্বর গীহা পান্ত,শোথ তাহার নাম জীব্দ্যহিক। কারব্যাদি পাচন। ক্ষজীরা কুড় গাবমূল ভেউড়ি-মূল শুঠা গুলঞ্চ দশমূল গল্পাঠি কাকড়াশাঙ্গ ছুরালভা বাল-মনহাসী মূল খেত পুনন্বা এষাংপ্রতি ১ মাধা পাকার্থ গোমূত্র ১ সের শেষ ১ ছটাক প্রক্ষেপ মধু।

ত্রাহিকাগন্তক অব চিকিৎসা।

ইহাতে দ্যাহিক অভিন্যাস ভয়ানক এই সকল জর এবৎ গ্লীহা শোথ পাণ্ড নম্ট হয়।

কফ বাত কান শোথ স্কাঙ্গ বেদনা অরুচি বলহানি ইহার নাম ত্রাহিকাগন্তক।

দশনূল প্রত্যেক ২ মাধা পাক শেষ পুর্বেবৎ প্রক্রেপ লক্ষিনারল ৪ মাধা আদারল ৪ মাধা।

রহন্নবাঙ্গ পাঁচন। হহৎ পঞ্মূল শুণী চিরাভা গুলঞ্ মুথা এষা প্রতি ২ মাধা পাক শেব পূর্ববং প্রক্রেপ জর মুরারী চুণ মধু।

জর মুরারী চুণ। শিকুট ত্রিফলা মুথা চিতামূল বি-ড়ঙ্গ এলাইচ গুড়ৰক তেজপত্র রজ্চলনে পদাকার্থ নাগে-শ্বর চিরাতা জীরা এষা পতি সমভাগ চুণ অনুপান মুথা কালি রস মধু ইহাতে ত্রাহিক জর নাশ হয়।

চাতুর্থিকাগন্তক জর চিকিৎসা।

অন্তলকণং। জরাতিসারে শোথ অক্লচি ভ্রম শ্লীহা মন্দাগ্নি। : জরমুরারি বটি। .

শোধিত পারা শোধিত গলক চিরাতা জীরা ত্রিকুট ত্রেকনা ত্রিজাতক ত্রিনদ অভত্য লোহত্য এবাংপ্রতি সমতাগ চুণ দক্ষ যব পর্পটি রসে ১ মাধা পরিমাণ বটি বালিবেক অনুপান শ্বেত কুলেণাড়া রস এই ঔষধ চাতু-ধিক জর কাসতত্রা অক্লচিছদি পিপাসা দাই নাশ করে।

দশমুলাদি অভীদশাস পাচন। দশমূল গন্ধশঠি কা-কড়াশ্সি কুড় ছুরালভা ভাগীমূল কুড়াচবীস পটোলপত্র কুট্কী এবাংপ্রতি ১ মাবঃ পাক শেব পূর্ববং প্রক্রেপ সর মুরারি বটি। ইহাতে দারিপাতিক জর কার ছদয় খাস হিকা বমি বিশেষতঃ অতিসারাগন্তক জর ভাল হয়।

মধু পাঠাদি পাচন। গল্পতি কুশমূল কণিকারী কা-কড়াশ্লি ছরালভা গুলঞ্ছ শুগী আকনাদিমূল চিরাতা কট্কী এষাংপ্রতি ২ মাষা পাক শেষ পূর্বেৎ প্রক্ষেপ জরমুরারী বটি ইহাতে আগন্তক জর বাতল্পেমা বিকার খাদ
কাল নট করে। বিষম জর চিকিৎসা।

মুখা আমলকী গুলঞ্ শুগুী কণ্টিকারী এবাংপ্রতি ৩২ বুতি জল ৪ পল শেষ > পল প্রক্ষেপ মধু পিপুল চুর্ব ৪০ রতি।

ক্ষেত্রপাপড়া ২ তোলা পাক শেষ পূর্ব্বৎ প্রক্ষেপ মধু ৪০ রতি।

সুর্য্যেদয়ের পুর্বে বাক্সপত ছেচিয়া ভাহার রস ২ ভোলা একতে দেবন করাইবেন।

গুলঞ্চের এবং সেফালিকা পত্তের রস পূর্ব্বোজ প্রকারে ২ তোলা লইয়া ২ তোলা মধুর সহিত দিবন।

অর্পে ভর্জন কৃষ্ণজীয়ক চুর এবং পুরাতন গুড় একজে লাড়ু করিয়া অধিক দিবস খাওয়াইবেন এই সকল মুর্ফি-যোগে বিষম জর নফী করে।

এব৭ উক্ত লাডুতে খেত জীরাও মরিচ চূর্ণ দিলে ঐ কাহিক জার নাশ করে।

হৃদশনি চুব। ক্ষাগোর চন্দন ছরিতা দেবদারু বচ
যথা হরীতকী দুরালভা কাকড়াশ্রি কৃণ্টিকারী শুঠী ভাছুদ্যা ক্ষেত্পাপড়া নিম্নছাল পিপুল বালাশুঠী কুড় পিপুল মুঝামূদ কুড়চীছাল জ্যৈন্তমধু সন্ধিনাবীক নিছি ইক্র
যব নোরা সানিবচ দারুহরিতা রুজ্চন্দন পল্লভাঠ শ্বেতবাট্যালা বেণামূল গুড়ত্বক প্রস্পর্কী শালপানী যমানী
আতইচ বেল শুঠী মরিচ তেজপ্র আমলকী চিতামূল
প্রেটালপ্র ধনিয়া বয়ড়া মরামাংশী গ্রাপপুল চাকুল্যা

হংতী গুলঞ্চ কট্কী এষাংপ্রতি সমতাগে সুত্র চুৰ্য যত চি রাতার স্ত্রচ্ব তত একতে মিশ্রিত করিয়া বাঁশের চোলের ভিতর অথবা কাঁচপাতে অথবা মহিষের শৃঙ্গে রাখিবেন প্রতি দিন ১০ রতি পরিমাণ চুর্ব মুখে দিয়া জল দারা গি-লিয়া খাইবেন। ইহাতে সাল্পিতিক ঐকাহিক দ্যুহিক লন্তত বিষমান্ত্রীর্ব ধাতুন্থ ইত্যাদি অসাধ্য জর নই হয়।

অঙ্গার তৈল। ভিলতৈল ৪ সের মূচ্ছার্থ মঞ্জিপা ১৬ তোলা হাছিছা লোধ লালুকা মথা হরীতকা আমলকী বমড়া কেরারনামনা বালা এবা প্রতি ৪ তোলা এব পকলা
তৈল মূচ্ছার্থ এই সকল জব্য জানিবেন। কল্কার্থ কাঁজি
ছক্ষামূল লাহা হরিজা দারুহরিজা মঞ্জিপা রাখালসনার মূল
রহতী সৈত্ত্বব কুড় রামা জটামাংশী শতমূলী এষা প্রতা
ও তোলা ৬।। রতি এই তৈল মদিনে জীন বিষম ধাতুত্ব
অভিগত এবং মজ্জাগত ইত্যাদি জর সকল নট করে।

হ্বপাকাদি তৈল। তিলতৈল ৪ সের পূর্ব্বাক্ত মুচ্ছা ভব্য কাজি ৪ সের কল্কার্থ লাক্ষা হরিডা মার্ক্ষি এবাৎ প্রতি ২১ তোলা ২১॥• রতি।

রহলাদি তৈল। তিলতৈল ৪ সের লাকা ১৬ সের ২
মোন ৪৬ সের জলে সিজ করিয়া ক্রাথ ১৬ সের লইবেন
অথবা ৮ সের লাকা ১৮ সের জলে সিজ করিয়া শেষ ১৬
সের লইবেন দধির মাত ১৬ সের কল্কার্থ শুলফা হরিজা
অ্রাকুড় বেণুক কটকী জ্যেন্ডমন্ত রালা রশ্বগল্পা দারুহরিজা
ম্থা রক্তচন্দন এবাংপ্রতি ২ তোলা এই তৈল মর্দন করিলে
বায় উপশ্য বিষম জর মাতেই ভাল হয় চোয়ালিধরা রোগ
থাকে না আর হৃৎ শূল পৃষ্ঠশ্ল মেহ শ্রীর ক্যেটকাদি
মন্ট হয়।

দারুহরিতা দেবদারু বুড়চিবীল মঞ্জি ভামালত।
শাঠায়ল শঠি পিপুল বেণায়ল চিরীতা গজপিপুল গজভাদালী পালকঠি কাকড়াণ্লী ধনা ভঠী মুথা সরলকঠি

সজিনাছাল বালা কফল হরীতকী কণ্টিকারী যব পর্পটী
দশমূল কটকী বিড়ঙ্গ গুলঞ্চ কুড় এবাংপ্রতি ১ সায়। পাকার্থ জল ১ সের শেষ ১ ছটাক প্রক্ষেপ স্থাইহাতে ধাতুম্ভ বিষম তিলোয জনিত একাহিক দ্যাহিক ত্যাহিক চাতৃথিক কামজ শোকজ সন্তত এই সকল জর নতী হয়।

এবং এই দ্রগাদি চুর্ব কিঞ্ছিৎ জলে গুলিয়া উষ্থা-কিতে মধুর সহিত পান করিবেন।

স্দান চুর। কালাকাড় মূল হরিতা কটকী গুলঞ্চ মূথা হরীতকী ধন্যা হরালভা কাকড়াশ্লি কণিটকারা মূল ক্ষলীরা কুড় কটফল তিকটু তিফলা গন্ধভাদালীমূল যব পর্নতী নিম্নছাল পিপুল মূল বালা গন্ধশালী মুর্বামূল কুরতি ছাল জ্যেষ্ঠমধু সজিনাছাল স্থাজি সালুক ইত্রেয়ব বচ দারু-হরিতা রক্তচন্দন পালকার্ছ শেওচন্দন বেণামূল গুড়বক গেরিমাটি শালপানি চাকুল্যা মুগাইমূল বিরানচইমূল আতইচ চিতামূল পটোলপতে এযাংপ্রতি সমভাগে যত তাহার অক্রেক শুদ্ধ চিরাভা সকলচুর্ব করিবে ভঙ্কার যায়া অনুপান উঞ্জল ইহাতে অন্ট বির জর এবং অসাধ্য জর ও নানা দোশোন্তব বারিজ জর ইত্যাদি দোষ সকল উপশম হয়।

রহৎ স্থদর্শন চূর্ব। পুর্বোক্ত স্থদন চূর্বের অব্যাস-কল এবং তেউড়িমল চিন্ধুড়মল জীরা ইশরমল পাঠামল হিন্দ বিড়ন জায়ফল শুলালিশাশ ধাতকীপুল্প ভাগীমল বাকসমল জটা মাংদী সরলকাঠ ক্ষুত্র এলাইচ জায়িত্বী লৌ-হত্তম অভ্রতম মনানী নাগেশ্বর তালিশপত রেণুক গঙ্গা-মৃত্তিকা এবাৎ পুর্বোজ ভাগ।

অশ্বসন্ধা তৈল। তিলতৈল ৪ সের অশ্বসন্ধাছাল ১৬ পাল পাকার্থ জল ১৬ সের শেষ ৪ সের শতমালরস ৪ সের গবছক্ষ ১৬ সের লাহাজল ৪ সের জীবন্তি জ্যেষ্ঠ মধু রামা রক্তচন্দ্র গমানি মাসানি মঞ্জি কিফলা জীরা ক্রক্জীরা হরিছা দারুহরিছা কুড়ম্থা বচ লোধক। ঠ বিড়ক্স শালপানি এষাংপ্রতি ২ তোলা চূর্ন করির। তৈলে দিবেন পাক নিদ্ধে গন্ধ দ্য়ে লখি কপুর বিরুজা ইহাতে জীর্ন ও তিনোষ জর বাত মুক্তদোষ শূল কামলা হলীমক বিষম জর এই সকল নট্ট করে এবং দেহ পুট হয়।

কিরাতাদি তৈল। কটু তৈল ১৬ দের চিরাতা ৩২ পল পাকার্থ জল ১।৪ দের শেষ ১৬ দের পুরাতন কাঞ্জি ১৬ দের দ্ধিরমাত ১৬ দের লাহার জল ১৬ দের মুক্ষামূল লাহা হর্জা দারুহরিজা মঞ্জিরা রাখালসসার মূল রায়া গজ্পপুলী বালা তিকটু গুড়ত্বক খেত আকন্দ ভামালতা বাকসমূল ইল্রেয়ব মহাকাল কল এযাংপ্রতি ২ তোলা পে-বল করিয়া দিবেন পূর্বোক্ত গল্পব্য ইহাতে লিপ্তভুক্ত সাং-ঘাতিক বিষম ধাহুত্ব এই সকল জর এবং পাঞ্ কানলা প্রীহা গৃহিনী অভিষার নাশ হয়।

জরতৈরব চূর্। শুণী গল্পভার্লী নিষ্টাল দুরালভা হরীতকী মুথা বচ দেবদার কণ্টিকারীমূল কাক্ডাশ্লী শত মূলী ক্ষেতপাপড়া পিপুল কুড় বালা শঠি মুর্গামূল পিপুল হরিদ্রা দারহরিদ্রা লোধছাল রক্তনন্দন ধাতুকী পুষ্প কুর্রচ বীজ জ্যেত্বসমূর চিতামূল সজিনাটাল মহাবার বচ ভালিশ-পত্র আতইচ কট্কী বাট্যালমূল পালকার্চ ক্ষেত্বামনী শালপানি মূল গুলপ্রের পাল বেলশুঠা পঞ্চাই পাটীমাটী তেলপত্র গুতুক এলাইচ আমলা চাকুল্যা পটোলপত্র গল্পক অদ্র লৌহ সমানী শিলাজতু এষাংপ্রতি যত শো-ধিত চিরাতা চুর্গ তত ভক্ষণ ৪ মাষা এই ঔষধ বিষম প্র-ভূতি জ্বর স্কল প্রীহা নাট করে।

চন্দনাদি লৌহ। রজ্চন্দন বালা পাঠায়ল বেনায়ল পি-পুল হরীতকী শুঠী যুদ্ধি শালুকমল আমলা মুথা চিতা বি-ড্লা এবাং সম্দায়ে চর্ব যত লোহতম্ম তত সকল একত্র ক-বিষা মৃত মধুষারা এক মাধা পরিমাণ বাটি বাহ্মিবে শন্ত পান সূত মধ্লোহখলে লোচদণ্ড ছারা মর্দন, ইহাতে স-কল বিষয় জার ও ধাতুত জার গুরীকরণ হয়।।

রহলাকাদি তৈল। তিল তৈল ৪ দের লাহাজল ৮ সের শুলকা দার হরিদা মুর্গানুল কুড়রেশ ক কট্কী জে, ই নধুরারা অশ্বগল্ধানুল দেবদার মুখা রক্তন্দন এবাৎপ্রতি ২ তোলা চূর্ল করিয়া তৈলে দিবেন পাক্ষিদ্ধ গল্পব্য এই তৈল স্ক্রের।

রহৎ জর সংহারিশী চুর্। ধন্যা তিকটু হরীতকী বচ দেব
দারু হুরাল্ডা কাকড়াশ্ কি ভুগী হরিদ্রা দারুহুরিদ্রা লোধ
ছাল রক্তচন্দন খেতচন্দন কুরুচিবীজ ও ছাল গল্পাঠি বালা
ল্যেষ্ঠ মধু আত্রুচ যমানী বেলশুঠা এলাইচ গুড়ু হক তেজ
পত্র নাগেশ্বর ত্রিকলা মুখা চিতা বিড়ুক্স গল্পক পারা লৌছল্ম অভ্রুম তালমূল শালপানিমূল গুলঞ্জের পাল চাদুল্যা পটোলপত্র গল্পভাদালীমূল নিম্নছাল ক্ষেত্রপাড়া
শত্মলীচুর্ব মুগামূল পত্রকার্ছ সাজনাছাল প্রস্থানিটি
রাখালসমামূল এই সকল চর্ব এবং এই সকলের ত্রিগুণ
শোধিত চিতাচুর্ব। ভক্ষণ ও মাধা অমুপান মধু হুলিখা রস
ট্রাতে ধান্ত বিষ্কা দন্দ কফকীর্ব জীর্ণ সাগ্যসাধ্য এই
নকল জুর পান্তুলোথ উদ্বাময় নাশ হয়।।

নহেশ্বরী চূর্ব । লবক আত্ইচ ত্রিকটু সৈন্ধব হবুব বুরুবাক্ষণ ধন্যা কর্ফল কুড় জ্বিত্রী জীরা রসাঞ্জন জ্বার্কল
ধাতকীপুষ্প তালিশপাত এলাইচ গুড়স্বক তেজপাত বিটনবণ বেলগুটা বন্যামনী নাগেশ্বর্যমানীয়বক্ষার সমুদ্রফেশ্
সোহাগা হরিত্রা দারুহরিত্রা ইন্দ্রেষ্ব কটকী অমুবেতস চিনাতা অশ্বগল্ধানূল মুখা চিতা তালমূল অভ্রত্ম লৌহভ্রম
রক্তস্ম স্বর্বভ্রম এবাং সমচূর্ব ভ্রমণ ৪ মাধা অনুপান চিনি
নির্ম ইহাতে দ্বোকালীন ঐকাহিক ন্যাহ্ক চাতুর্থিক সভত
দেশু ত এবং প্রবলম্বন হয় কার গন্তীর মানিক পাক্ষিক
ও নাড়ী হইতে অপগত হয় আর গন্তীর মানিক পাক্ষিক

धादुन्द तियम जीन व्यात श्रिक मिन এक ममरा छोग करत उ जिल्लायजत हो को लीम এव मन्ता कि तकनी कि मि-वार्ट्ड खोग करत এই मकण श्रकात जत बात श्री हा छन्। कामला नसे हत।

পেপুল্যানি তৈল। ভিলতে ল ৪ সের দ্ধিরমাত ৪ সের
পূরাতন কাজি ৪ সের জমীর রস ৪ সের কল্কার্থ পিপুল্মুল
ধন্যা গজপিপুল মুখা দৈল্লব তিফলা যমানী বিলযমানী
রক্তক্ষনন কফল কুড্ডাকা শঠি গোরক চাকুল্যা বচ মালপানি এলাইচ গুড়্ত্বক তেজপাত চিতামল নিম্নছাল মহানিম্নছাল ব্যাক্ড কণ্টিকারি গলঞ্চ দত্তী চিরাভা দেবদার
আলকুশি ফেতপাপড়া হরিডা দারুহরিডা কটকী বীরুদ্ধা
জ্যেতিমগু এযাংপ্রতি হতোলা সকল চুর্ল করিয়া তৈলেদিবে
১২ সের জল দিয়া পাক করিবেক সমাপ্ত ইইলে গ্রুডার
দিবেন। ইহাতে সকল প্রকার বিল্ম জুর ধাতৃত্ব প্লীহা
শোথ জীর্ম জর কামলা পান্ত্রকপিত্রর কাম শাস কল্পু
হলীমক নাশ হয়।

কামাচার লৌহ। তিকটু তিফলা তিজাতক জীরা ২ প্রকার ধন্যা পাঠায়ল পিপুল্মল দন্তিরীজ দাড়িয়ছাল গজ
পিপুল শতমূলী শুল্ফা পটোলপাতা বেনায়ল বচ কান্তিলৌহতম্ম রক্তম গৈল্লব অভ্রতমপল্লকাঠ রক্তচন্দন কটকী
চিঙ্গুড্যুল্যনানী বিলয়মানী যবকার পানমৌর জ্যেষ্ঠ মধু
ভালিনপাত চিরাভা বালা শঠী এবাং প্রতি সমভাগ হর্ণ
সক্তল্য মঞ্ভুজ্য। লৌহদগু ছারা লৌহপাতে স্থত মধুর
সহিত মদ্দন ভক্ষণ ২ মাধা অনুপান কেন্ডভ্যের রম পথ্য
ভক্রত্যা। এই উষধ বিষম্ভার কামলা পাঞ্ লাহা শোথ
শুল গুল্ম কান শ্বাম অক্লচি নাশ করে।

মাহেশরধুপ। গুণ্গল খেতুমরিবা নিম্ন্তাল ঘব লালুকা বচ কুড় শটি তহ্নুল কালামবীজ ছাগ্রিষ্ঠ। মলখোলস সা -সন্থার নেদাড়ি ঝুল হস্তিদন্ত বিরানচ্ঞি গোঘাদি গোপুছ গোকর গোশ্ব । এষা পথতি ব্নতাগ তুর্ণ গর্য মতে মর্কন
ত তোলা পরিমাণ বটি কুলকাটের অগ্নিবুজ নরাতে দিয়া
ক্ষেত্র কয়ল গায়ে আছোদন করিয়া ধূম লইবে এই প্রকার
সপ্ত দিবদ লইতে হয় ইহাতে এককালীন দ্বিলীন তৃতীয়
কালীন জর নই করে।

লাকাদি তৈল। তিল তৈল ৪ সের দধিরমাত ১৬ সের লাহার কাথ ১৬ সের কফ শুল্কা অশ্বগন্ধামূল হারডা দেব-দারু কট্কী রেণুক মুর্গমূল কুড় জ্যেষ্ঠমধু রক্তচন্দন মুথা রায়া। এযাৎপ্রতি ১৬ মাঘা সকল চুর্করিয়া তৈলেদিবে পাকসিজে গন্ধজব্য দিবেক।

জরনাগময়র চূর্ব। জীরা রক্তচন্দন খেতচন্দন খন্যা বালা রেণুক তালিশপত তিলাতকলবঙ্গ নাগেশ্বর সর্ল্কার্ছ কুড় কাকড়াশৃলি কাকুলি ক্ষীরকাকুলি রুফজীরা কপুরদেবদারু দারুহরিতা জায়ফল জয়িতী তিমদ বচ হিল্ল অভাবে আল্-কুসি তিফলা তিকট বেলশুঠা শিমূল আটা মেথি সোহাগা যমানী বিলযমানী মৌরি কট্কী ইন্দ্রয়ব বেণামূল গৃহধুন আফিল পায়ামূল অভ্রত্ম লৌহত্ম শুল্ফা হরিডা এষাং প্রতি ৪ মাষা শুজ চিরাতা শুজ বিজয়া শুজ শুলী এবাং প্রতি ৫ তোলা দকল শুল্ল চূর্ব লক্ষণ ৪ মাষা অনুপান উফ্ জল ইহাতে বৈষম্যজ্বর নানাপ্রকার অভিসারকামলাপান্ত কাস শাস দাহ শীত ছ দি অমুপিত শূল সংগ্রহণ্ডিনী এই দকল নই করে, এবং খাহু ও কাম রিজ করে। আর বলবর্ণ অগি এই সকলকে প্রকাশ করে।

বজেশ্বর মদক। ধন্যা জরিতী লবজ জীরা সোহাগা মুরা মাংনী মুথা স্থাজারল গুলপ্রের পাল জারকল তিকলাতিকট কেম্বর প্রৌল্পত পাননৌরি জটামাংনী চিমুড্মল জ্যেষ্ঠ মর্ অভ্যত্ম লৌহত্ম চিতা্মুল এলাইচ গুড়্ছক ভেলপত নাগেশ্বর ধাত্কীপুষ্প তালগুল মুর্গই বিরামচকী ভালিশ পাত রক্তানন খেতচন্দন দ্রাক্ষা বিজ্ঞা কাবাবচিনি কুজ্
এষাংপ্রভিষ্ঠ বঙ্গতান উত্ত সকলের দ্বিগুণ চিনি দ্বিগুণ ক্রে
চিনি দুক্রের সমান শতমুলী রন এই সকল একতেপাক করিবে, বদরান্তি পরিমাণ বটি অনুপান কাঁচা হল্ধ ইহাতে
ধাতৃত্ত জ্রে সংগ্রহ গৃহিণী মত্ল অলীন অতি ক্ষীলমন্দগতি
দেহকাবিতা মূতাঘাত মূত্র জ্ব প্রমেহ শোধ নানাপ্রকার
কাস নানা প্রকার শূলজ্মতি এই সকল নই করে আর বল
ও কামর্জি করে।

অথ জ্বরাতিশার চিকিৎসা।

পৈতিকাতিসারজ্বরে। চাকুল্যা পাট্যালা বেলশুটা মুদ্ধিমূল ধন্যা এবাংপ্রতি ৩০ রভি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু ৪০ রভি দিয়া পান করাইবেন। পথ্য লাজমণ্ড।
বাভিক জ্বরাতি সারে। ত্রীবেরাদিপাচন। বালা আতইচ বেলশুটা মুখা শুণ্ডী ধন্যা এবাৎ প্রতি ২৮-রভি জল ৪ পাল শেষ ১ পাল অনুপান টক দাড়িষের রস পথ্য যব চুর্ণ মপ্ত।

রজাতিসারে। বেণার মূল বালা মুখা ধন্যা শুণ্ঠী বরাক্রান্ডা ধাতকীপুষ্পালে:ধছাল বেলশুটা এবাৎ প্রতি ১৮ রতিজল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু ৪০ রতি পথ্য মস্কুর যুস।

সামিপা,তক জ্বাতিসারে। পঞ্চনুল্যাদি পাচন। নাল-পানি চাকুল্যা কিটেকারি গোস্থার ব্যাকুড় বাটেলামুল বেলশুটা গুলঞ্জ মুখা শুণ্ঠী আকনাদিমুল চিরাতা বালা বুক্রচিছাল ইন্দ্রবৰ এষাংপ্রতি১০০র ভিজ্বন্তপল শেষ১পল প্রক্রেপ মধু ৪০ রতি ইহাতে পথ্য দিবেন না।

অভ্রবটিকা। পারা ২ তোলা গন্ধক ২ তোলা উভয়ে ক-জ্ঞালী অভ্ৰত্ম হ তালা শুণ্ডী পিপুল মরীচ এবাংপ্রতি সম্ম চুর্ব ২ তোলা এই সকল একত্ত্ করিয়া ভাবনা দিবেন, যথ। প্রথম, কেশুভেরেরস ভীমরাজ্বস নিষিদ্ধা প্রাভ রস চিতা ২ প্রেরস স্বেজ্মপুরাজিতা পাতাররস জয়ন্তীপ্র রস পূল- কুঁড়িপত্র রুল পাঁচিপানের রুল। এই সকল প্রকার পত্র রুদের ভাবনা পর হ ক্রমে অট দিবসের সমাপন করিকে। পরে মরীচের ফুল্লচুর্ততোলা সোহাগার এই ১ ভোলা উ-হার সহিত মর্দন করিয়া গুঞ্জা প্রারিমান বটি করিবেন, অমুপানমর্ কেণ্ডরিয়ার রুল, ইহাতে অধিক গমন স্ত্রীনক্র রান নাগর দোলাদিতে দোলা যে পার্যন্ত করাতিসার রোগ হইতে মুক্ত না হয় সে পর্যন্ত এই সকল করিবে না। দ্বিরটি পোরা সন্ধাক বিষ হরিতাল স্বর্গাক্তি তুতে আ-কিঙ্গ এই সকল অব্যু সমভাগে যত গোদন্ত তত সকল অব্যু গুদ্ধ পারা গন্ধকে কর্জ্নলী তুলনী পাতা রুদে মর্দন করে নিষ্ক্রাপিক রুদে সপ্ত বার এবং ভীমরাজ রুদে সপ্তবার ভা-ব্লাসর্বপালারবটি ইহার এক বিংশ্ভি বটিতে এক মাত্রা হয়, অনুপান পিপুল চুর্ব ৪০ রুভি উঞ্জল, উষ্ধ ক্রেনের পরক্ষণে নির্জ্জন দ্বি খাওয়াইবেন। ইহাতে জরাভিসার নাশ হয়।

জরাতিদার বিশেষ পথ্য। নামিপাতিক ও প্লেম্মিকে নি রাহার। পৈতিকে লাজমণ্ড। বাতিকে ঘব চুর্ন মন্ডারজা-তিসারে মন্তর যুষ।

পিপুল্যাদি তৈল। কটুতৈল ৪ সের টাবালেবুর রম ৪ সের তক্র ৪ সের বিবলাপত্র রমঃসের পিপুল পিপুলমুল চিতা– মূল গছাপিপুল বিড়ক সৈত্রব জীরা অম্লবেড্র যবক্ষার কুড় গাঠ্যালা শুণ্ঠী তালিষ পত্র জ্যেন্তর্ম ধু গুলগু শুণ্ঠী চা– কুল্যা বাট্যালা নিম্বছাল বাকসমূল পুনর্বা গোক্ষরি রামা শোদাল দেবদার মুখা এযা প্রতি-২ তোলা, এই সকল ডাব্য ছেচিয়া দিবেন, চুর্ব দিবেন না, কারণ দিলে খুলিতে ধরিবেক,তৈল প্রথমে খুলিতে দিয়া মধ্যমরপ জাল দিতে ধরিবেক,তৈল প্রথমে খুলিতে দিয়া মধ্যমরপ জাল দিতে দিত্রে যখন ফেশা থাকিবে না তখন প্র লেবুর রম অম্পে২ দিবেন তৈলের সহিত কিঞ্ছিৎ শেষ থাকিতে ভক্লদিনে এই রপা পার্থ জ্বেয়র কিঞ্ছিৎ শেষ থাকিতে পর্য পার জবা দিবেন কার্ণ জব জব্য দিবার এই বপ ব্যবস্থা এবং জলাদি জব জব্যের পরস্পার সংযোগে তৈল গুণকারী হয়. নতুবা হয় না।

অর্থ বিষমজ্বর রসায়ন। তিপুর ভৈরবরম, শুদ্ধ বিষহ ।
মাবা সোহাগার এই ৪ মাবা গলক ১ তোলা দান্তবীক্ষ ১
মাবা দন্তি মুলের রসে মর্দন করিয়া গুপ্পা পরিমাণ বটি
করিবেন অনুপান ককাধিক্যে তিকটু চুর্ন ৪ র র তি ও সধু
কিয়া তিকটু চুর্নের পরিবর্তে আদার র্স পিতাধিক্যে
শক্রা।
নবভ্ররা কুশা।

শুদারস ১ তোলা শুদা গন্ধক ২ তোলা শুদা হিন্দু ল ও তোলা দন্ডিমূলের রবে অই প্রহর মর্দন করিবেন,এক গুঞা পরিমাণ বটি তন্মপান কফাধিকা আদার রস মধু,পুর্কোজ শীতভুঞ্জি রস প্রয়োগ করিবেন, কিন্তু মল বদ্ধ থাকিলেন-ভুবা নহে। মহাজ্বাংরুশ।

রসগন্ধক তামু হিন্দুল শুদ্ধ হরিতাল বন্ধ লোই স্থানাকি শুদ্ধণাপর মনছাল অভ গেরিসোহাগার থই দন্তিবীকা। সকল সমভাগ হল চুর্ন করিয়া ভাবনা দিবেন, পাতিলেবুর রসে একবার সিদ্ধির কাথে ঐ তুলসীপত্র রসে ও ঐ পরে শুলে মর্দন করিবেন গুলা পারিমাণ বটি অনুপান কফা-থিক্যে আদার রস মধু অথবা তুলসীপত্র রস কিয়া কেশু-ত্যের রস কি নিষিদ্ধাপত্র রস পিতাধিক্যে ভর্জিত জীরক চুর্ন ১ রতি আর মধু।

ইতি সারকৌমুভাং জ্বাতিনার চিকিৎনা।

मर्जन ।

ধান্য শুণী। ধন্যা শুণী। এত যোগপ্রতি প্রমাধা পেষণ করিয়া উষ্ণ থাকিছে খাইবে,ইহাতে আমবাতে শ্লুমাজ্জর শুল অতিদার নট করে এবং আগু রুদ্ধি হয়। শ্রীবেরাদি পাচন। বালা আতইচ মুধা বেলশুঠা শুণী ধন্যা: এবাংপ্রতি ও মার্বা পাকার্থ জন, ১ নের পেব ১ ছ-টাক, ইহার গুণ, শূল অভিনার রক্তাতিনার বাতস্থোমা জ্বর নটকরে। স্থীবেরাদি চূর্ণ।

বালা আতইচ মুথা বেলশুটা ধন্যা কুলচিবীক বরাক্ষা-মূল ধাতকীপুষ্পা মোচরস শুঠী, এষাংপ্রতি সমভাগ চুর্ণ, ভক্ষণ ৪ শাষা অন্ত্রপান আতবতঞ্জোদক, ইহাতে অ-ক্লচি পিচ্ছাম বি্ধর্জ দেহাদির বেদনা নইটিয়ে।

উবিরাদি পাচন। বেণারমূল বালা মূখা ধন্যা শুণী বরাক্রান্তামূল ধাতকীপুষ্প লোদছাল বেলশুঠা, এবাংপ্রতি মাবা পাকশেষ পূর্ববং প্রকেপ মধু, ইহাতে অরুচি পিছাম বিবর্ত্ত দেহাদিবেদনা রক্তাতিসার বাত শ্লুমা জ্বর নাশ হয়।

নাগরাদি পাচন।

চিরাতা মুথা গুলঞ্চ বালা ভত্তমুথা রক্তচন্দন ধন্যা এয়াং-প্রতি২মাবা৫রতি পাকশেব পূর্বাবৎ প্রক্রেপ মৃথু, ইহাতে নোম অতিসার হালাস অন্তর্গাহ জ্বর ভাল হয়।

মুথাদি পাচন। মুথা আতইচ শুণ্ঠী কুড়চিবীজ হরীতকী চিরাতা এষাংপ্রতিতমাবা পাকশেষ পূর্ববং প্রক্ষেপ স্থু, ইহাতে সকল অতিসার হিন্ধ। সকল প্রকার শোথ ও জ্বর দূর হয়। দশমুলাদি।

পুর্ঝোক্ত দশমূল প্রত্যেকে ২ মাধা প্রক্রেপ শুণ্ঠী চূর্
৪ মাধা ইহাতে জ্বর অতিসার শোথ গৃহিণী নাশ হয়।

শুণ্ঠাদি পাচন।শুণী ধন্যা গুলঞ্চ ভাজমুখা বালা বেল-শুঠা রন্ধুনিছাল বুড়চিছাল, এষাংপ্রতি,২ মাষা পাকশেষ পূক্ষবং প্রক্ষেপ শুণ্ঠী মধু চিনী এষাংপ্রতি ২মাষা।

ত ড্চ্যাদি পাচন। গুলফ আতইচ শুণী ধন্যা বেলশুঠা মুখা বালা পাঠামূল চিরতা কুড়চিছাল রক্তচন্দন বেণামূল • পান্ধকার্থ এবাংপ্রতিও মাবা ৫রতি পাকশেষ পূর্ববং প্র-ক্ষেপ মধু, ইহাতে জরাতিনার ছলাল অফুচি পিপানা ছর্মি দাহ এই দকল নই হয়। পঞ্জ মুনাদি পাচন। স্বৰ্ণ পঞ্জ মুলি বাট্যালামল বেল শুটা গুলুঞ্ছ মুখা শুঠা পাঠামুল চিরাভা বালা কুড় চিছাল ইন্দ্রেয়ব এয়া প্রতি গাক শেষ পূর্বেব এ প্রকেপ শুঠী চুর্ন, ইছাতে সর্ব্বাতিসার হুরে দোষ বমি স্থান কাল দুর হয়।

কীর রক্তদনন মুখা বেলগুঠা আক্রাদি মূল দাড়িয় ছাল ধন্য আতইচ শুঠী বাতকী পুষ্পাইন্দ্রযব এবাংপ্রাভি ২ মাবা পাকশেষ পূর্ববং প্রাক্ষেপ মধু, ইহাতে অভিসার জ্বর দাহ শুল রক্ত এই সকল নটা হয়।

ব্যোশাদি চুব। তিকটু ইন্দ্রয়ৰ নিম্নছাল চিরাভা ভীমরামল চিতামুল কটকী আকনাদী মূল দায়হরিদ্রা আভইচ
এরাংপ্রতিসমচ্বদকলের সমানকুড় চিমুলচ্ব মিন্দ্রিতকরিয়া
ভক্ষণ ৫ মাযা অনুপান আতবতগুলোদক অথবা মধুর
সহিত অবলেহ করিয়া ভক্ষণ, ইহাতে অতিসার জ্বরাতিসার কমলা গহিণী গুলা গ্লীহা প্রনেহ পাপ্তু শোথ কাস
নাশ হয়। গঙ্গাধর বটি।

জায়ফল আফিঙ্গ লবঙ্গ জীয়া সোচাগা সকল শোধন ক-রিয়া চূর্বকরিবে পরে পোত্তকাথেমদন করিয়া মটরাকৃতি বটি, ইহাতে আমর্ক্ত জ্বর দাহ শূল ভূফা অক্লচি নাশ হয়

জাতিফলাতা বৃটি। জায়কল জীরা জয়িতী যুমানী তিকটু আতইচ ধন্যা আফিঙ্গ কট্কী খেতধুনা থদির অজ্ঞ লাহতম ত্রিকলা চতুজাত বেলগুঠা মুথা মোচরস সোহাগা গলাঠী এয়াংপ্রতি সম মুল্ল চুর্ণ সিজিপত রুদে মদিন, সাধা পারমাণ বৃটি অমুপান হাগহল্প,এই ঔষধ সেরুল মাত্র অমুপিতি বৃদ্দি দাহ পিছা শূল এই সকল রোগ
নাশ হয়।
কনক মুন্দরধারক।

শোধিত পারা শোধিত গল্পক এতরোঃ প্রতি ২ মাবা -হিন্দুল ৪ মাধা শোধিত কনক ধুস্তুর বীজ ৮ মাবা সকল চুৰ ক্রিৱে পরে রুড়চিমুকের রুণেণ্বার ভাবনা দিয়া মট-

বাক্তি বটি বালিবে, অনুপান ছাগ্রন্ধ, ইহাতে জ্বাভি-সার রজাতিসার শক্তচি নম্ট ২য়।

পাঠাদি চুন। আকনাদি মূল জীৱা ধাতকীপুষ্প মুখা আঁতইচ ধন্যা জায়ফল তথী লোহাগা বেলতা কুড়চির বীজ মোনছাল বালা লবক 'মোচরল এবাংপ্রতি সম চূর্ব, ভক্ষণ ৪ মাষা অনুপান কিঞ্ছিৎ উষ্ণ জল আভশতত লো-मक मधु हेशाट आमख्दत नाना (मरणोखवाजिनांत अक्रिक बुक्त (मायनाष्य रश्न)

মাগরাদি চুর্। শুগু ী আতইচ মুখা ধাতকীপুলা কুছাচ यून हान हेन्यव (वनक्षेत्र) व्याकनामि कर्षेत्रे, ध्वारश्राक मम हूर्व कि कि. डिक उछ त्नां हक, এই उवध खदां छिमांत পৈত্তিক গৃহিণী অশ শোথ অরুচি নানা প্রকার অভিসার नाम करता

ক্ষীরকল্যাণ গুড়িকা। হিঙ্গুল শৃঙ্গীবিষ লৌহভন্ম ধুস্তুর বীজ শহাবিষ সোহাগা এষাংপ্রতি ২মাযা আফিঙ্গ ৬মাযা শোখিত করিয়া চুর্ব করিবে বেগুল্পত রদে ভাবনা পরে ছাগতুষে মৰ্দ্দন করিয়া তিন দরিয়া পরিমাণ বটি বান্ধি-বেক, অনুপান ছাগছজা সর্বদা ছজা পথ্য করিবে লবন जल निरवध, इंश्रांक ভ्यानक <u>ज्यताविमात</u> शॅश्गी পां धुत-ক্তাতিসার শোধ তৃষ্ণা অরুচি দাহ অগ্রিমান্দ্য অম্লাপত काम এই मकन (तांग नमें करत्र।

ইতে দর্পণে জুরাতিনার সমাপ্তঃ।

অথাতিসার চিকিৎসা।

. এই জুরাতি দার রোগ অভি বলবান অতএব ভক্ষণাস্ত প্রমাণার্কারে জ্ঞানবান ভাষা পরা পরদেবভার সভোষ -নিমিতি অবশ্য বলি প্রদান করাইবেন কিন্তু এই জুরেই বিধি এমত নহে অসাধ্য জুর মাজেই বিধি জানিবেন বি-শেষ ভোড়ল ভৱে জ্ঞাত হইবেন।

मुख्टियाथ। अकि अव- वन्ता अहे छहे खवा हूर्न कड़िया। लाज मध्यत महिरु थाखताहेर्यन।

হুবেরাদি পাচন। বালা আতইচ বেলশুঠা মুখা শুণী ধন্যা এবাৎ প্রতি ২৬॥• রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রা-ক্ষেপ মধু ২০ রতি ও মোচরস ২০ রতি স্বন্ধ চুর্ব দিবেন। ক্ষেপ মধু ২০ রতি ও মোচরস ২০ রতি স্বন্ধ চুর্ব দিবেন। ক্ষেপ মধু ২০ রতি পাচন। গুলঞ্চ আতইচ বেলশুঠা শুণী ধন্যা মুখা বালা আকনাদি মল চিরাতা কুড়িচিছাল রক্ষ্ণ চন্দন বেলামল পল্লকার্চ এবাৎ প্রতি ১২॥•রতি জল৪পল শেষ ১ পল প্রকেপ মধু ২০ রতি কুল্ল চুর্ব ২০ রতি।

রহৎহীবেরাদি পাচন। বালা আতইচ বেলগুঠা মথা ধন্যা কুড়চিছাল বরাক্রান্তা ধাইফুল লোধ শুঠী এবাং প্রতি ১৬ রক্তি জল ৪পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু ২০রতি মোচরুস ২০ রক্তি।

ব্যোশাদি চুব। শুণী পোপুল মরীচ ইন্দ্রথব নিম্বছাল চিরাভাভীমরাজ চিতার মুল কট্কী আকনাদি মুল দারু হরিদ্রা আতইচ এযাং প্রতি ১ তোলা এই সকল জব্যের সমভাগে স্কাচুর্ব যভ কুড্চি ছালের চুব্ তত একল করিয়া অধিককাল প্রেশ্ করিবে। অনুপান আত্বতগুলের জল ও মধ্।

শুণ্ঠী দশমুলী। বিলুছাল সোণাছাল গাস্তারিছাল পাকলছাল গণিয়ারি ছাল শালপানি চাকুলাদি কণ্টিকারী
গোকুরী ব্যাকৃতি ।এঘাং প্রতি সমভাগে স্মূচ্ণ যত শুণ্ঠী
স্ম চুণ ভক্ত পরে,পুর্ববং পেষণ করিবেন ২০ রতি পারমাণ চুণ পুরু অনুপানে সেবন করিবেন।

কনক মুক্তর। হিঙ্গুল মরীচ সোহাগার ধই অভাবিষ পুন্ত ব্রীক্ষ গলক পিপুল এই সকল জব্য সমভাগে হক্ষাত্র করিয়া শিক্ষাভার রসে ৪ প্রহর খলে মর্দন করিবেন, চলকার্যনি বৃটি অনুপান পূক্রিৎ এবং ইহার হুর্ব ২ র্ছে দিবেন। তাথ সশোধিত জুরাতিদার চিকিৎদা।

মহাত্রবৃত্তিকা। রস ২ তোলা গল্পক ২ তোলা অভ ২ তোলা শুণ্ঠী পি পুল মরীচ এষাং প্রতিংতোলা এই সকল চুণ করিয়া যথাক্রমে ভাবনা দিবেন, যথা। কেশুরিয়ার রশ ভীমরাজ রস নিবিন্ধা রস খেত অপরাজিতা রস অয়ন্তী রস থুলকুড়ি রস কাঁচা সিদ্ধির রস রম্ভযুক্ত পানের রসএই সকল অব্য এক এক ক্রমে দিন দিবেন গুঞা পরিমান বটি অনুপান আত্রতগুলের জল মধু। পথ্য দ্ধি।

কনক স্থলর রস। হিন্দুল মরীচ গল্পক পিপুল অত্র বিষ ধুস্তুর বীজ নিদ্ধি এই সকল তাব্য সমান চুর্ণ করিয়া সিদ্ধি পাভার রসে মদিন ২ গুলা পরিমান বটি অনুপান পুর্বাবৎ এই ঔষধ গৃহিনীতে ও আগন্তক জুরে সেবন করান যার।

ধান্যচতুষ্টয়। ধন্যা মূথা বালা বেলশ্ঠা, জল ৪পল শেষ ১ পল।

ধান্যপঞ্জ। ধন্যা শুণ্ঠী মুখা বালা বেলশুটা, জনঃ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু। অভিনার পিপানা হছে। মুখা ১ ভোলা ৪ দের জলে সিজ করিয়া ১ সের থাকিত রোগীকে দিবেন অনুপান মধু।

কণ্ণটাদি পাচন। কানছি ছারপত দাজিরপত জয় পত বেলশুঠা বালা মুখা শুণ্ঠী পানিকল পত্ত এষাংপ্রতি.২. গুঞ্জা জল ৪ পল্ শেব ১ পল প্রক্ষেপ মধু। নাভিমুলের বেদনা নিবারক মুফ্টিযোগ। আমলকী কোমলছাল জলে উত্তম ৰূপ পেষণ করিয়া নাভির চতুর্দিগে মন্তলাকার প্র-। লেপ দিবেন পুরে নাভিকুপ পূর্ব করিয়া নিজ্জাল আদার রুষ্ দিবেন।

. দিতীয় প্রকার। শুমুছাল কাঞ্জির সহিত পেরণ করিয়া প্রকেপ দিবেদ ক্ডচিছাল মুথা ইন্দেয়র। এয়াং প্রতি ৩৫ রভি জলঃপল শেষ ১পল প্রক্ষেপ মুধু ২০ রভি চিনি ২০ রতি। এবং বেলগুঠা ২ তোলা ছাগছক ৮ তোলা জল ৩২ ভোলা। একতে সিদ্ধ করিয়া জল নিঃশেষ হইলে তাহাতে. প্রক্রেপ চিনি মোচরস ইত্রেষৰ চুর্ণ এষাং প্রতি ১১ রতি দিয়া খাওয়াইবেন।

কৃটক পুটপাক। অতিকোমল কৃড্চিছাল ২ তোলা আঠ-বছণ্ড লের জলে কিঞ্ছিৎ ছে চিয়া জয় পত্রেকৃশবদ্ধ পুটুলি করিবেক এই পুটুলি কর্দ্ধিম লেপন করিয়া ঘূটিয়ার অগিতে দক্ষ করিবেক কিন্তু ঐ কূড্চিছাল সরস থাকিতে অগ্নিহইতে পুটুলি উজোলন করিবেন ভদন্তর ঐ ছাল উত্ত-মন্ধাপে পেষণ করিয়া মধুর সহিত রোগীকে থাইতে দি-দ্বেন ইহাতে রজাতিসার নির্ভি হয়।

রহ্ৎকুট জাইক। কুড়চিছাল ১০০ পল ৬৪ দের জলে দিজি.
করিয়া শেষ ১৬ দের যে থাকিবে ভাহাকে পুনর্বার ঘন
করিয়া দিজ করিবেন এবং ভাহাতে মোচরস আকনাদি
মূল বরাক্রান্তা আভইচমুখা বেল্ডুটা ধাইফুন এবাং প্রতি৮
জোলা চুর্গ চুলী হইতে উত্তরিত উক্ত ঘন উফজলে দিয়া
ভাজ্দারায় মন্তার পাকের বীজ মারিবার মত করিয়া জ্ডাইলে ১ ভোলা প্রিমাণ বটি করিবেন উবধ মেবনেরপর
বানিজ্ল কিঞ্ছিৎ পান করিবেন।

কৃটলাইক পাচন। কুডচিছাল নাডিয় কলেরছাল রুথা বেলহাল বালা লোধ রুজ্চন্দন আক্নাদি মূল এষাং প্রতি ২০ রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধ্ ১০ রতি।

আননদ ভৈরব। হিন্দুল বিষ গল্পক আফিন্স শিম্লকার মরীচ সোহাগার খই পিপুল। এষাং প্রতি সমভাল স্থন্দর রূপে জন্দারা ৪ প্রহর খলে মর্দ্দন করিবেক ২ রভি পরি-মাণ বটি অনুপান জীরাভাজার চুর্ণ এই উষ্ধ। জিদোষা-ভিনার ও রক্ষাভিগার নাশ করে। ইহাতে দ্ধিপথা।

জাতিফলাদি। জায়কল সোহাগার থই অভ ধৃন্ত র বীজ এই চারি দুব্য পুতি পর্কতোলা আফিল ২ ভোলা গ্রভা- দালীপাতার রুসে ৪প্রহর থল করিয়া ২ রতি পরিম'ণ বটি করিবেন অনুপান আত্রতগুলের জল ও মধু।

ইতি সারকৌমুভাং ব্লুতিসার পরিচ্ছেদঃ সম, श्रঃ।

व्यथ मर्जनः।

খানাপঞ্জ। ধন্যা হুগুটী মুখা বালা বেলাশ্চা এয়। প্রতি ৪মাবা পাক শেষ পূর্ব্বৎ প্রক্ষেপ হুগুটী চুর্ন ইহাতে অতিসার আমশুল নাশ হর্,এবং অগ্নির্ছিদ্ধ হয়।

পথাদি পাঁচন। হরাতকী দেবদার বচ মুথা শুগ্রী আতইচ এযাণ্প্রতি ২ মাষা পাক শেষ পুরুবৎ প্রক্রেপ শুগ্রী চুর্ব ইহাতে আমাতিসার নফী করে।

কচ্ছকাদি পাচন। কুছাচবীজ কুডচিয়লের ছাল আত ইচ বেল ঠো মথা ধন্যা এষা প্রাছত মাষা পাক শেষ পুর্বাহৎ প্রক্ষেপ তিশীটুর্ন ইছাতে আমাভিসার নইট করে। আর অগ্রিজি হয়।

পিতাতিসারে। ইহং বৃটন্ধাদি পাচন। কুড়চি মূল ছাল দাডিয়ছান মুথা ধাতকীপুষ্প বেলহঠা বালা লোধ-ছাল রক্তচন্দন আকনাদি মূল এষাংপ্রতি ২ মাষা পাক শেষ পূর্বেবং প্রক্ষেপ মধু ইহাতে আমশুল পিত্তাতিসার নাশ হর। কঞ্টাদি পাচন।

কাচিড়ান দাড়িমহাল জামছাল পানিফলেরপাতা বেলম্টা বালা মথা শগী এষা প্রতি ২ মাষা পাক শেষ প্রকাব প্রকোশ শুগী চুর্ন ৮ মাষা ইহাতে বেগবতী নদীর ন্যায় যে অতিসার তাহাকেও নাশ করে।

মোচরসাদি চূর্ব। মোচরস মথা শুণ্ডী আক্রনাদি স্লালে ল শুঠা ধাতকীপুল্প এবাংপ্রতি সমতাগ মধুর সহিত অবলেহ করিয়া ভক্ষণ করিবে। অথবা অধিকারোক নকা পাচনে এই চূর্ব অনুপান কানিবেন।

ে বিল্যাদ। বেলশুঠা ৮ মাধা-পোষণ কভিয়া এক প্রোরা

ছাগ ছঞ্চে নিজ করিয়া সুক্ষ বজ্রে ছাঁকিবে পরে সেই গুঞ্চে প্রক্ষেপ চিনি এবং মোচরস ইন্দ্রয়র সমচুর্ণ ৪ মাষা ছক্ষণ করিবে। ইহাতে রক্তাতিসার নাশ হয়।

কুটবাদি। কুড়চিছাল ২ তোলা পাচনের ন্যায় পাক শেষ করিয়া তাহাতে আতইচ শুগী উভয়োঃ প্রতি ৪ মাষা চুর্ণ দিয়া ভক্ষণ করিবে ইহাতে রজাতিসার নাশ হয়।

কুটলাটক। কাঁচা কুড়চুছাল ১০০ পাল পাকার্থ জল ৬৪ সের শেষ ১৬সের ইছাকে পুনর্কার ঘন করিবে পরে প্র ক্ষেপ মোচরঙ্গ পাঠামূল বরাক্রান্তামূল আতইচ মুখা বেল শুঠা খাতকীপুল্প ধন্য। এষাংপ্রতি ৮ ভোলা চুর্ণ ভক্ষণ ৪ মাষা অনুপান ছাগংখ্য অথবা আত্বতগুলোদক ইছাতে ক্রম্ম লোহিত ইত্যাদি ভয়ানক অতিসার নকল আর নানা প্রকার গৃহিনী ও সশোণিত অর্শরোগ এই সকল নাই হয়।

সারঙ্গর। জায়কল আফিঙ্গ এযাংপ্রতি সমভাগ পে-ষণ করিয়া ধৃন্ড, ফুফলে গুরে গোময় লেপন করিয়া দক্ষ ক-রিবে মটরাক্ষতি বটি অনুপান আমরক্তে ছাগংক্ষ দক্ষাতি সারে দাড়িয়পাতের রস ইহাতে রজাতিনার ও স্কাতি-নার নাশ হয়।

ধন্যাদি চূর্ব। ঘন্যা জিরা তিকটু সিদ্ধিপাতা ত্রিফলা বিটলবন দৈল্পব যুক্ষার ফটু কিরী নোচরস মুখা গুল্ফা চিতা এয়া প্রতি সমন্তাগ চূর্ব করিয়া ভক্ষণ ৪ মায়া অন্ত্র-পান জল ইহাতে অতিসার অমুপিও অগ্নিমান্য অজীর্ব কণ্ঠদাত জ্লাহ এই সকল রোগ নট হয়।

মৃতরাজ বটিকা। পারা ১ মাঘা গল্লক ২ মাঘা সো-হাগা ২ মাঘা শৃঙ্গিবিষ ১ মাঘা মরীচ ৫ মাঘা আকিল ৫ মাঘা এ দকল শোধিত করিরা চূর্ব করিবে কুড়চি রসে পে-যুণ করিরা মটরাক্তি বটি অ্রপান কেম্বরিরার রস। এই উষ্ধ দেবন মাতে নানা প্রকার অভিসার নাশ হয় আর পৃঞ্জি শোধ কাদ স্বাস দূর হয় ও কাম এবং অগ্নি র্দ্ধি হয়। দাড়ীয়াধার। করিত্রী ইন্দ্রথার খাতকীপুন্স বেলগুঠা বালা আতইচ মোচরস মুখা লবক জীরা জার্কস সো-হাগা এষাংপ্রতি ২ মাকা আক্ষিক ৬ মাঝা শোধিত চুর্ব ব্র-রিবে দাড়িয়পরের সে মর্দন পরে দাড়িয় কলের মধ্যে পু-রিয়া দক্ষকরিবে মটরাক্রতি বটি অন্ধুপান ছাগ হক্ষ, ই-হাতে নানাবর্ণ অতিসার অনাধ্য গহিণী অক্লচি অগ্নিমান্দ্য অজীর্ণশোথ নাশ হয়।

লবক্চ ডুঃসমা। লবক জীরা জায়ফল নোহাগা শোধিত করিয়া সমতাগে চুর্ন করিবে ভক্ষণ ১ মাধা অনুপান ত-ভুলোদক আমরভে ছাগছল্প, ইহাতে হিক্কা ছদি অতিসার রজাতিসার নাশ হয়।

লবঙ্গাবক। লবজ আ হইচ বেলশুঠা মুথা পাঠামূল দৈলব রসাঞ্জন মোচরস আফিঙ্গ জীরা ধাতকীপুষ্প স্বর্ণভন্ম
অভতন্ম বঙ্গভন্ম লোধছাল ধন্যা শ্বেতধনা থদির যবক্ষার
বুড়চি মূল ইন্দ্রযব শুল্কা ত্রিকটু এলাইচ গুড়ত্বক তেজপত্র নাগেশ্বর, এবাংপ্রতি সমভাগ চুর্ণ সকলের সমান
পোস্ত দানার রাথ, পাকার্য জল অইগুন্ন শেষ রাথ ঘন
করিবে তাহাতে চুর্ণ সকল দিরা ১ মাধা পরিমাণ বৃটি করিবে অনুপান ছাগ্র ইহাতে অসাধ্য অতিসার রজশূল
অজীর্ণ শোথ পাঞ্জুজর নাশ হয়।

মহাগন্ধক। গন্ধক পারা ঘিষপাতালবঙ্গ জয়িতী জায়-কন জীরা আফিঙ্গ সোহাগা এবাংপ্রতি সমচূর্ব করিবে শোশুকাথে মর্দ্দন জোড়া বিদ্যুকে পূরিয়া সৃত্তিকা লেপদ করিবে পরে সামান্য গজপুটে পাক পোশুকাথে বটি বা-ক্রিয়ে অনুপান ছাগছক্ষ, ইংগতে নানাবর্ণ অভিসার গ্রহিনী শোখনাশ হয়।
মাদক।

তিকটু তিফলা কাঁকড়াশ্সী কুড় সৈত্তাৰ কট্ফল ওঠী নাগেশ্বর বন্যমানী মেথি ধন্যায়মানী ভাল্থীল জীৱা ক্ল- কলীরা তালিশপাতা মুখা বচ এবাংপ্রতি ১ তোলাত শোধিত দিছিপাতা ১১ তোলা সকল চুর্ণ করিবে চিনি ১ সেরের মহিত মোদক পাক বদরান্তি পরিমাণ বটি করি-বেক, অনুপান হক্ষ জল, ইহাতে অম্লপিত অজীর্ণ অগি-মান্দ্য অরুচি অসাধ্যাতিসার নানাবর্ণাতিসার গৃহিনী শোধ পাণ্ড জ্বর এই সকল রোগ দূর হয়।

ইতি দপণের অতিনার চিকিৎনা সমাপ্তঃ।

भृहिनी 6िकि शा।

গৃহিনী রোণের কারণ অতসার রোগ নিঃশেষ না হইয়া
ছটাতার হয় তাহাতে অগ্নান্দ্য হইলে বায় ছটি-হইয়া
গৃহিনী রোগ জন্মে, অভএব ইহাতে তক্ত অতি উপকারী
জানিবেন, কারণ তক্রধারা ছট বায় নাশ হইয়া অগি প্রবল
হয় তাহা হইলেই গৃহিনী রোগের শান্তনা হয়।

শুঠী আহেইচ মূথা। এযাৎপ্রতি ৫০ রতি জল ৪ পল

শেষ ১পল প্রক্ষেপ মধু ৪ রতি।

ি বেল্ডা কুম্চুর্থ তোলা শুণ্ঠী চুর্থ মাবা পুরাতন গুড় > তোলা মথিত করিরা ধাইবেন পরে কিঞ্ছিৎ ভক্ত গুণ্য করিবেন।

ম্রীচ চুৰ ১ তোলা ছগী চুৰ ২ তোলা কুড়চিছাল ৪ তোলা পুরাতন গুড ১:তোলা মথিত করিয়া খাইবেন পরে

কিলিং ভক্ত পথ্য।
কুটলাবলেই। কুড়চিছাল ১০০ পল ৬৪নের জলে পাক
কার্যা শেষ ১৬নের থাকিবে ভাইাতে ২০পল চিনি দিয়া
শুনকার গুডের ন্যায় পাক সমাপন করিয়া ভাইাতে আকনাদিমূল বরাকান্তা বেলপ্রঠা শুগী ধাতকী পুস্প মথা দাছিত্ত জলের ছাল আতইচ লোধ মোচরস রুসাঞ্জন ধন্যা
বেণামূল বালা, এই লকল অব্য স্থাচুন করিয়া প্রত্যেক ১
প্রা চুণ দিখা নাড়িতে নাড়িতে শীকল ইইলে ১ পল মানু

कियों स्वर्ण क्रियेन शर्त एक ना स्य अग्र अक शास्त्र वाश्रियन श्रेटार ५ (जांका शहरनन स्वर्शन वागीसन, स्रोटिक गृहिनी भाष्टिस स्त्र स्या

াগলাধরমূর্ব। বিল্টাল মোচরস আকনাদিমূল থ'ত-কীপুলা ধন্যা গলভাদালীমূল শুণ্ঠী মুখা আতইচ আকিল লোধকান্ঠ দাড়িয়কলের ছাল কুড়চিছাল পুনা গল্পক এই সকল অব্যু সমভাগে স্কাচ্ব বুজিক্রমে পারা গল্পকে ক-জ্জনী সকল একতা ২০ গুলা পারমাণে প্রত্যেহ তত্তের স-ছিড মিল্লিভ করিয়া গাইবেন, ইহাতে সকল গৃহিণী ও জ্বর সকল নম্ট হয়।

गृहिगी गरज्ञ ।

পারা গল্পক লোহ দক্ষণভা সোহাগার এই হিন্দ শুণ্ডী তালিশপাতা মুথা ধন্য জীরা দৈল্ধবলবণ ধাতকীপুপ্প আ-তইচ শুণ্ডী ঝুল হরীতকী ভেলা তেজপাতা জায়ফল লবক্ষ দারুচিনি এলাইচ বিলুছাল বালা বেলশুঠা মেথি দিলিপাতা, এই দকল জব্য সমভাগে স্ব্ল্লাচূর্ণ করিয়া ছাগ্যক্ষের সহিত খলে পেষণ পূর্বক ২ রতি পরিমাণ বটি করিবেন, অমুপান ছাগঃক্ষা, এই ঔষধ স্মৃতিকাদিউদরাময় এবং গু-ল্যাদি নাশ করে।

গৃহিণী রোগের গুরুপাক জব্য মাত্রেই পথ্য নহে।পথ্য স্কাপুরাতন তগুলের আর ক্তা মৎস্যের ধ্যতক পটোল ভূষুর মানকচু পল্তা শুক্তল পাতিলেবু কাঁচাতেতুল পুরাতন তেতুল ইতি।

পাণিতত বটিকা। ক্ষণাত্র গুদ্ধ বিজ্ঞুচুর এবাং-প্রতি ৮ তোলা চঞি শুণ্ঠী পিপুল মরীচ হরীতকী বয়ড়া আসলা কেন্ডারিয়ার মূল দতীমূল মুথা পিপুল মূল চিতামূল তাটীমূল মান মূল বন্য ওলারহতী মূল তেউড়ি মূল ভড়ছ-ভিয়ারমূল পুননবামূল, এবাংগ্রান্ডি হতোলা গন্ধক হতোলা এই শুক্ল ভব্য আদার রূপে ৪ প্রহর মর্দন করিয়া ৪ প্রতি. প্রিমাণ বটি করিবেন, অনুপান স্নাদার রস কিয়া কাঞ্জি অথবা দ্ধিরমাত পথা যথা কচি।

मख्र श्रेकां । कर्मकार इत स्माकार न लोह পোড़ा-ইতে कैंकि रतत में जिल्हा में वा यिक एड लोह ना से इत इत जो होते मख्र श्री श्री होते श्री श्री श्री श्री है इत है हो के विस्त मिख्र के स्वाहित के स्वाहित मुद्र है है है के से इस का निर्देग।

নৃপবলভ। জায়ফল লবক মুখা দারু চিনি একাইচ গোহাগার থই হিল জীরা যমানী শুণ্ঠী সৈজব তেজপাতা
লৌইজন্র পারা গল্পক তামু এবাংপ্রতি > পল মরীচ চুর্ন
৩ পল ছাগুরক্ষে অথবা আমলকীর রসে ৪ প্রহর খলে ম
দিন কার্য়া ৪ গুঞ্জা পরিমান বটি জনুপান ছাগুরুক্ষ কিয়া
পানের মুন, এই উবধ দীঘকাল সেবনে গৃহিনী ঘটিত লমুদ্য রোগ নইট হ্য়,পথ্য মৎদ্যের যুব পুরাতন স্ক্ল তন্তু,লের জন্ম ভক্ত।

মহাগলক।

পারা ১ ভোলা গন্ধক ১:ভোলা পর্পটি ২ ভোলা জায়কল ২ ভোলা নিম্নপাতা আত্বতগুলোদকে উত্তন্ধপে
খলে সর্দন করিয়া যুগা বিনুকে পুরণ করিয়া পরে বাল্যকদলিপাতা বেন্টন দিয়া কোঠা দারা বন্ধ করিবে তাছাতে
কর্দন লেপন করিয়া মূত আগতে পাক করিবে বটি করিবার ন্যায় ইইলে উন্তারণ করিয়া ১ রভি প্রিমাণ বটি করিবে অন্থ পান আ্তবতগুলোদক ও মধু এই ঔষধ দকলের উপ্রকারী হয় বিশেষ বালকের অধিক।

লবক-চতুঃসোম। জীয়া সোহাগার এই জায়কল লবক সোহাগার এই উত্তমরপে করিবেন যে কাঁচা না থাকে কাঁচা থাকিলে বিপরীত হয় নিশ্য জানিবেন আর তিন জব্য খোলার ভর্জন করিয়া লইবেন ৪ এব্য সমানাংশ ল-ইয়া চুর্ণ একওঁ করিলে, চতুঃসোম হয়, শুরুপান আভবস্থ- खुरैनाएक ख मधु उष्ध २० द्रांड পादिमान रमयन कदिरवन, चेहा उ गृहिनी द्रांग निइंडि इत्।

পঞ্চামৃত পর্লটি। শুদ্ধ গদ্ধক ৮ তোলা শুদ্ধ পারা ৪ ভোলা লোহ ২ তোলা অত্ৰ ১ তোলা তামু ২ মাষা, এই म कुल खरा श्रेटन ८ व्यव्य स्कृत कतिया প्रभित्र नाम कित्र उपध्निष्कि इश, এই उपध्य शाहा शक्तक माधरनत विधि, পারাশুদ্ধি অত্যে মৃতকুমারির রসে শোধন তৎপুরে তিফ-লার রসে শেষে চিতায়লের রস, গলক শুদ্ধি, আমলাসা গল্পক চূর্ব করিয়া ভীমরাজের র'ম এক ভাবনা দিয়া পরে ঐ গল্পক গলাইরা ভীমরাজের রুদে নিঃক্ষেপ করিবেন ১ গুঞ্জা পরিমাণ বটি অনুপান মধু, এই ঔষধ নানা রোগের সহিত গৃছিণী রোগকে নম্ট করে বালক যুবা হুদ্ধ সকলের উপকারী হয়, এবং যদি অতিশয় শোথ থাকে তবে রো-शीरक नंतर जन फिरवन मा, मिर्ज्जन देश फिरवन बाद दांश विः रमय थात्रं रहेल नवन सन करम, महाहेरवन चात्र यपि শোথ গৃহিণী বিষম জুরাদি প্রভৃতি অত্যন্ত অসাধ্যরোগ द्रांगी **जा**ष्ट्रम इत उद्य डेक शर्नीं डेक अनुशास क्षम দিবন্সরতি দিবীর দিবন ২ রতি এই ৰূপ দিন প্রতি এক এক রাভরন্ধি মপ্তাহ পর্যান্ত দেবন করাইবেন, কিয়া পুন-বার প্রথমক্রমে আরো এক সপ্তাহ সেবন করাইবেন,পথ্য क्वित निर्क्तन द्रक अव अव, इंहाटि द्वांशी यिन द्वांश হইতে মুক্ত নাহয় তবে জানিবেন যে রোগীর আয়ুঃ শেষ হইয়াছে, আর মহাস্বস্তায়ন আরম্ভ করিবেন না মহাম-স্ত্যায়ন কলিযুগে তোড়াল ভন্তমতে করিবেন ঝটিভি কল-দায়ক হয় যদি সে মতেনা করিতে পারে তবে মহায়ন্ত্য-য়ন তুলদী প্রদান এবংহুগানাম তাহা ভক্তিমান তাল্ফন প্-. ভিত बादा कड़ाईरलई नकल कार्या निकि इस खानिरदम, धवर देवता श्रुकंतिन इविद्यानी इहेश राखागदतर छेवस मात्रस कतिरचन आहे द्वागी अस्टायन बाह्य करारेया. শুলাচারে উমধ সেবন করিবেন আর এই উম্ম গৃহিনী অ-ধিকারে লিখিত আছে বলিয়া যে কেবল গাঁহণী রোগ হ-ইতে রোগীকে মুজ করে এমত নহে কুটাদি সহারোগ হ-ইতে রোগিকে মুজ করে পর্লটী করিবার প্রকরণ ভোতল-ভত্তে এবং রনাসিল্ধ চিন্তামণি এন্থ লিখিয়াছেন ভদমুলারে পাক করিবেন এবং গৃহিন্যাধিকারে লিখিডব্য আছে ভাছা দৃষ্টি করিয়া পাক করিবেন কিন্তু এই স্থানে গ্রন্থকার লিখেন নাই একারণ এই স্থানে লিখিছত পারিলাম না।

বিশয় পর্গটি। পারা হীরাজারার অভাবেবৈকান্ত মণি
পোণা মক্তা তামু রূপা অভ্র এবাংপ্রতি ১ ভোলা গল্পক ৭
ভোলা এই সকল ভব্য ভিন্ন২ খলে মর্দন করিয়া রম গল্পক
কক্তালী পরে লকল ভব্য একত্র করিবেক তৎপরে দ্বাদশ
প্রহর খলে মর্দন করিয়া পর্লটি পাক করিবেন ইহাতেরোগ
মাত্রেই বিমাশ হয়, আর পূর্ব্বোক্ত পঞ্চামৃত পর্লটি ১ রতি
সেবন প্রথম দিবসে পরে ক্রমেন সপ্তদিবলে এক এক রতি
করিয়া ইন্দি করিবেন যে লিখিতে হইয়াছে ভাহার ন্যায়
বিশ্বয় পর্লটি সেবন ১ খান্য পরিমাণে আরম্ভ করিয়া
ক্রমেন রন্দি করিবেন।

পঞ্চামৃত লোক। লোক তামু অভ্যান গঞ্জক, এবাং প্রতি ১ তোলা হরীতকী বয়ড়া আমলকী ভণ্ডী পিপুল ম-রীচ মুখা বিড়ল চিতাহল পিপুলহল চিরাতা দেবলার হরিতা দারহরিতা কুড় যমানী জীরা রুকজীরা শচিধনা। চঞি, এবাংপ্রতি ১ তোলা শুজ মণ্ডুর সকলের অর্জিক স-কল অব্য হুজচুর্ব করিবেন, সগন্ধকে কজ্ঞলী পরে নির্দ্ধনা মধু পাক করিয়া চুলী হইতে উত্তারণ করিবেন, পরে এই লকল অব্যের স্কর্ব ঐ মবুতে দিয়া কর্দমের ন্যায় হইলে. ১০ রতি অনুমান, ভক্ষা অনুপান মধ্য পথ্য মংবার যুদ্ধ ল্লাতন তণ্ডুলের শন্ন তক্ষ্ক, শুভদিনে মুর্যবেদ্বভার পূকা এবং বহুম্পতির পূজা শভান্তনারে করিয়া ঔষধ সেবন শোরস্ত করিবেন।

কঞ্চীবলেহ। কানছিড়া ১৬ সের তালমূল ১৬ পাল পাকার্য জ্বল ১৬ সের শেষ ৪ সের ঐ শেষজ্বলে ৮ পাল চিনি দিয়া পুনকার পাক করিবেন অবলেহের ন্যায় পাক হইলে তাহাতে বরাক্রান্তা থাতকীপুষ্পা আকনাদিমূল বেল শুঠা মুথা পিপুল ইন্দ্র যব আতইচ যবক্রার সচল লবণ রসা জন মোচরস এবাং প্রত্যেকে ২ তোলা মুক্রচুর্ব দিয়া সন্দেশের বীচ মাড়িবার মত ভাড় দ্বারা নাড়িবেন পরে কিঞি, হুফ থাকিতে মধু ৪ শাল ইহাতে দিয়া কর্দমের ন্যায় করি-বেন ১০ রতি পরিমাণ রোগীকে সেবন করাইবেন অনুপান বাসি জল পাণ্য পূর্ববিক।

মদনমোদক। হরীতকী বর্ড়া আমলকী শুণ্ডী পিপুল মরীচ কাকড়াশ্লী কুড দৈহব ধন্যা শঠি ডালিশপত কট কল নাগেশ্বর মেথি জীরা কৃষ জীরা যফিমধুর যমানী বন্যানী এবাংপ্রতি ২ তোলা শুল সবীজ সিজিপত্র ঈষৎ ভর্জন করিয়া ৪০ ভোলা এই সকল অব্য স্বল্পচুর্ণ করিয়া স্থলার ছাঁকিবে পরে এই সকল অব্য পাক হয় এমত জার মান মৃত চিনি মধু এই তিন অব্য সমভাগে থুলিতে পাক চড়াইবে পরে কিঞ্চিৎ পাক হইলে চুলা হইতে নামাইবে কিঞ্চিত্বক থাকিতে ঐ স্বল্পচুর্ণ সকল একত্র উহাতে দিয়া তাড় দারা পুর্বের ন্যায় নাড়িবেন কিঞ্চিৎ উক্ত থাকিতে দার্লটিনি ভেলপত্র বড় এলাইচবীজ কপুর এই সকল অব্য ক্রাচুর্ণ প্রত্যেক ২ ভোলা ইহাতে দিয়া ১ ভোলা অথবা ৪০ রতি পরিমান মোদক করিবেন পুর্বের অন্ধ্রমানে মেবন করিবেন ইহাতে সংগ্রহণ্টিনী আদি সকলগ্রিণী নাশহয়।

নিজি শোধন হজের-সহিত পাক করিলেই শুক হয়। বৃহৎ শতাবরীমোদক। শভাবরী ভূমিকুমাও বাটাল্যা গোহুর চকুল্যা গোহুরবীল কুল্যাথাড়ারবীল আলকুণীর বীজ এবাংপ্রতি ৮ তোলা মুক্সর্ন সিদ্ধিপত মুক্ষর্ন ৮পল এই সকল চূর্ন একত করিয়া ইছাতে শতাবরীর রস ভূমি-বুমাণ্ড রস এবং ছক্ষ দিয়া মুক্ষণ করিবেন পরে ১।। সের চিনি খোলায় পাক করিবেন ঐ পাকের সহিত ঐ মুক্ষিত জ্ব্য দিবেন কিঞ্চিৎ বিলয়ে মোদকের উপযুক্ত পাক হইতে কিঞ্চিৎ কৃষ্ণতিল চূর্ন উছাতে দিয়া চুলা হইতে নামাইনেন পরে শুগু শিপুল মরীচ দারুচিনি তেজপাতা এলাইচ কৈন্ধ্রব ধনা জরিত্রী জায়কল বালা জীরা কৃষ্ণজীরা বন্দর কুট মুখা মন্ত্রি পুরামাংশী তালিশপাতা নাগদানাপাতা গাঠ্যালা হরীতকী শুল্কা চ্ঞি দেবদারু প্রিয়ঙ্গু লবঙ্গ শৈ লজ কুড় যজ্ঞজুর কল অগুরু এষাংপ্রতি ২ তোলা এই সন্ কল জব্য স্ক্লচ্ব ঐ পাকে দিয়া তাড় দ্বারা নাডিতেই মো দকের যোগ্য হইলে তাছাতে জিকচ্ চুর্ন ও কিঞ্চিৎ ক-পুর দিয়া অর্দ্ধতোলা পরিমাণে মোদক করিবেন ইছাতে অসাধ্য গহিনী ও বিষমজ্বর নই হয়।

মহাকানেশ্বর সোদক। অদ্র কুড কটকল অশ্বণকা গুলঞ্চ গেথি মোচরদ ভূমিকুমাণ্ড তালমূলী গোলুরী নিজ শতমূলী কেণ্ডরিয়া যমানী ভালাল্ডরী ধন্যা গোরক চাকুল্যা তিল মন্ত্রির জায়ফল গৈল্পর বামনগাটী কাকড়াশূলী শুণ্ঠী পিপুলমরীচ জীয়া ক্লজারা চিতামূল গুড়বক তেজ পত্র এলাইচ নাগেশ্বর পুননবাস্থন গলপিপুল জাক্ষা শটি বাসতমূল সিমুলমূল হরীতকী বয়ড়া আগলকী আলকুশীবীজ এবাংপ্রতি ১ তোলা এই দকল জব্যের চুর্নেতে মত ইইবে সিজিপত্র চুর্ন তত্ত লইবে সকলের সমান চিনি তাহাতে মত ইইবে তালার দ্বিগুণ চিনি পাক করিয়া চুলী হ্রতে উন্তারণ করিয়া পুর্বোক্ত প্রকারে ভাড, দ্বারায় মিলিত, করিবেন পরে ১ তোলা কিয়া ২ তোলা পরিমাণে লোদক করিয়া রোগীকে লেবন করাইবেন শার ভোলনের পুর্বে

উষ্ণ দেবনের বিধি আছে এ উষ্ধ যদি সহ্য না হয় তবে ভোজনের পরেতে দেবনের বিধি আছে আর অন্যং গ্রন্থে কহেন হহৎ কামেশ্বর মোদক কটফলাদি সকল অব্যেতে। যত হইবে তাহার যোডশাংশের একাংশ অন্র দিবেন এবং অন্তের অর্দ্ধেক কজ্ঞলী অার যথালাভ্যতে মৃত ও মধু দিয়া মোদক কর্ত্ব্য আর জীলোকের এবং বালকের এই উষ্ধ করণের আবেশ্যক আহে জ্যাত হইবেন।

লবকাদি চুৰ্। লবক্ষাতইচ মুখা বেলকঠা আকন্যাদি যুল মোচরুস জীরা ধাতকীপুষ্প লোধ ইন্দ্রয়ব বালা ধন্যা শ্বেতপুনা কাকড়াশৃঙ্গী পিপুল বরাক্রান্তা যবক্ষার সৈন্ধব রুসাঞ্জন এই সকল সমভাগে স্মাচূর্ব একত করিয়া সেবন ২০ রভি অথবা ১০ রতি অনুপান তণ্ডুলোদক এই ঔষধ বালক রন্ধ আর জ্রী লোকের অতিশয় উপকারী জানিবেন এবং এই উব্ধে আত্তইচ শৌধন করিবেন, ভাহার প্রকরণ গোময়ের সহিত সিদ্ধ করিয়া শুদ্ধ করিবে পারে চূণ করিবে জাতিফলাতা। শুদ্ধরুম ৪ মাধা ওজ গন্ধক ৪ মাধা জায়-কল মোচরদ মুখা দোগাগার থই আতইচ জীরামরীচ এষাংপ্রতি ৪ মাৰা শৃঙ্গীবেষ ১ মাষা এই সকল জব্য স্থল-চুৰ্কিরিয়া তাহাতে ভাবনা আমুপতে রল ৪ মাধা বংশপত রস ৪ সাবা কেত্রিয়ার রস দাভ্রপাতার রস আকনাদি পাতার রস ভীমরাজপাতার রস এই সকল প্রকার রস ঐ একত্রিক চূর্ণ সকলেতে দিয়া ৪ প্রছর ব্লৌডেরাপিবেন এবং ৪ প্রচর শিশিরে রাখিবেন তাহার পর খলে মর্দন করিয়া ৪ রতি পরিমাণ বটি করিবেন অনুপান আতপভগুলো-मक अ मधु हेर्शट इश्माधा शृहिंभी द्वांश निहां हा अवर .ওলাউঠা রোগ নাশ হয়।

্নাহিকাচ্ব। চিতাহল হ্রীতকী ব্রজা আমলকী শুঠী পিপুল মারীচ বিজ্ঞা হরিলা দায়াহ্রিলা তেলা বমানী বিজ विष्ठेनव स्वित्तवन्य मञ्जलव महनन्य भीकानव सून वह कुण्या गन्न जा या कार्या माहिकां माहिकां माहिकां यह विवयमानी भारत गन्न जा यह भिण्या अहे मकल खरा ममान हुन मम मारा यह हुन हहेर जा हां अमान मिलि भ खहून मकल हुन मकल हुन सिला कार्या केरित भारत भारत हां यह हुन हुन केरित जा कार्या कार्य कार्या का

ইতি সারকৌমুদ্যাং সংগ্রহ গৃহিণ্যাধিকার সমাপ্তঃ।

मर्भवः ।

নাগরাদি চূর্ব। শুগুট অতইচ মুখা ধাতকীপুষ্পা রুমা জন কুড্চিয়ন ও ছাল ইত্রেয়ব বেল ঠো আকনাদিয়ল কটকী এবাংপ্রতি সমূর্ব ভজন ৪ মাষা অনুপান তত্তু লোদক ১ ছটাক মধু ৪ মাষা ইহাতে গৃহিনী রক্তদোষ পিত্র ছাট অর্মণোথ গুহুশূল নাশ হয়।

রহজাট্ক্যাদি চুর্। ধাতকীপুষ্পা আতইচ মুখা বরাক্রান্তামূল বেলস্ট্রা ইন্দ্রয়ব পাঠ যুল জায়ফল লোধছাল বালা
খন্যা জীয়া বহেড়া মোচরস ক্রফজীরা খেতধুনা এষাংশ্রতি
সকলচ্র্নজন ৪ মাঘা অনুপান ছাগঃগ্রু উফ লইবে আর
মধু ২ মাঘা।

ষশ্পণাতৃক্যাদি চুর্। থাতকীপুষ্প বালা বেলং ঠা ইন্দ্রযব লোথ ধন্যা সমভাগে চুর্গ অনুপান পূর্ফোজ লবঙ্গাদি চুর্গ লবঙ্গ জীরা গল্পক দৈল্পব এলাইচ গুড়্ত্বক তেজপত্র বনষ-মানী মুখা ত্রিকটু ত্রিকলা শুল্কা আক্নাদি হল চিরাতা গোন্ধরি জয়িত্রী জায়কল দারুহারতা বিড়ঙ্গ রক্তচন্দন মুর্গা-মূল যবক্ষার শুগু নিথি সোগাগা রুফ্জীরা এঘা প্রতি স্মাচু ভিক্ষণ ই মাধা অনুপান উফোদক ইহাতে আমবাত থাত ভয়ানক গৃহিণা শুল বিশুচিকা কামলা পাঞ্কঠোর গ্লীহা মন্দাগ্রি ঐ সকল নউ করে।

গৃহিণী গভেত্রবা কা। শোধিত পারা শোধিত অন্ত গক্রক লোইভন্ম অন্তভ্যম বঙ্গভন্ম জান্ফল জায়িত্রী লবঙ্গ
চি ভাত্রল জারা মুখা সৈজাব বেলক টা মেথি মোচরদ ধাতকীপুলা ক্রলফান্ডা গিডছাক রজ্জনান আফিঙ্গ আছইচ
ধন্যা ইত্রেয়ব বরাক্রান্তা দাভিয়পুল্প পাঠালল সোহাগা
কট্কী শ্বেত্রনা জৈলাইত পানমৌরি জটামাংদী লোধছাল
বালা রসাঞ্জন। এষাংপ্রান্ত সমচ্ব বুডটিছালের রসে ভাবনা পঞ্জঞা পরিমাব বাঁত অনুপান ভাগন্ক ইহাতে
নানাপ্রকার গৃহিণী রক্তাতিসার ও নানা প্রকার অভিনার
শূল দাহ নাশ হয়।

জীরকাদি চুব। জীরা সোহাগা মুপা পাঠানল বেলশঠা ধন্যা ব'লা শল্ফা দাডিয়ছাল কটকা বরাক্রান্তানূল ধা-তকী পুষ্প তিব চূ ত্রিঙ্গাতক মোচরস ইন্দ্রব শুণ্ঠী গল্পক অভ্রন্থ শাধিত পাবা এধাংপ্রতি সমতাগে যত জাবকল তত সকল স্থাচুব একত্র করিয়া ভ্রমণ ৪ মাধা অনুপান ভঙ্গুলোদক। এই ঔবধ সেবন মাত্রে তুলাধা গহিনী নানা প্রকার অতিসার ও রক্তাতিসার কামলা পাঞ্ আগমান্দ্য নাশ হয়।

্রহজ্জাতিফলাদি চুণ। জাতিফল লবক জীরা লোহাগা ধন্যা শধী শ্বেতধুনা কেন্দু শঠি লোগছাল ইন্দ্রয়ব মথা বালা অজ্জ্ম থাতকীপুষ্প বরাক্রান্তান্তান্তল শতন্ত্রী হুল্কা মোচরস থবির সৈক্ষব কুড় আভহচ রাথালস্পান্তল তাল-ন্ত্রী কুডচিন্ল ছাল এযাংপ্রতি সমতাগ চুণ করিবে ছক্ষণ ৪ নাষা অনুপান মধু ইহাতে সকল রোগ নই হয় অতি ভ্রানক গহিণী নানাব্রাতিসার শোথ জ্বর পৃথক সান্তি-পাত সকলসান্ত্রিপাত রক্তশ্ল নাশ্হর।

बन्भगवकामि हुन । नवक बास्टहें मुशा विकार है। भौता

হল তালহলী জীৱা ধাতকীপুলা লোধছাল ইন্দ্রয়ৰ বালা ধন্যা শেতধুনা কাঁকড়াশ্লি পিপুল শুণ্ঠী বরাকান্তাহল লোচরস আফিল দৈল্পৰ রসাঞ্জন ত্বাং প্রতি সমভাগ চুর্ণ ভক্ষণ ৪ মাষা অনুপান ধাত্বিশেষ এই উষধ গৃহিণী অতি-নার মন্দাগ্রি অরুচি শোথ নই হয়।

মার্কণ্ডের চুর্ব। শোধিত পারা শোধিত গল্পক শোধিত হিন্দুল নোহাগা তিকটু জায়কন লবন্ধ তেজপত এলাইচ বীজ মুখা চিতায়ল গজপিপুল শুণ্ঠী বালা অভ্রতন্ম ধাত-কীপুষ্প আতইচ সজিনাজাটা তালয়নি আফিন্ধ পলাশ বীজ এবাংপ্রতি সমচুর্ব ভল্প ৪ মাধা অনুপান চিনিরজল অতিমার ছাগছক ইহাতে সংগ্রহ গহিণী নাশ করে এবং ধাতু ও বলর্জি করে আর অগ্নির্জি হয়।

ধারাধুর চুব। শোধিত হিঙ্গুল দেবদার শুণ্ঠী বালা জায় ফন আতইচ লবজ পাঠায়ল ধাতকীণুষ্প বেলশুঠা কেন্দু শঠি থদিরপত্র মুথা হরিদ্রা দারুহরিদ্র। ইন্দ্রেয়ব পিপুল এষাংপ্রতি সম চুব সিদ্ধিপত্র রসে ভাবনা সপ্তবার দিবে ভাকব ৪ মাধা অনুপান জল ইহাতে গৃহিনী রোগ নিবারন হয়।

বাল্যশক্ষাসন নোদক।

চিতাহল তিফলা তিকটু এলাইচ নাগেশ্বর জীরা বছ-ভলা বৈণুক মুথা যামানী বিলয়মানী দৈলব মেথি কুড ধন্যা শুল্কা নোহাগা এবাংপ্রতি দম চুর্ণ শোধিত।লজি-পুত্র চুর্ব লকলের অর্ছিক সর্বাদ্ধিওণ চিনি মোদক ৮ মাবা পার নাণ ভক্ষণ প্রাভঃকালে এবং দায়ৎকালে অনুপান কল ইহাতে সংগ্রহ গৃহিণী জ্বরাতিদার এবং স্বাভিসার জ্বিমান্দ্য নট করে।

লী কাদি মোদক। জীরা ত্রিক্না মুখা গুলক্ষের পাল অভ্রত্য নাগেশ্বর তেলপত গুড়াক এলাইচ লবসংক্ষত-শাপ্তা বেশায়ল- ধন্যা বালা পিশুল শুষ্ঠী চিভায়ল। এষাংপ্রতি সমভাগ সকলের সমান জীরা এই সকল চূর্ণ করিবে সকল চূর্ণের দ্বিগুণ চিনি মোদক ৮ মাধা মৃত মধু দ্বারা বান্ধিবে অনুপান জল ইহাতে সংগ্রহ গৃহিণী ও জীর্ণ জ্বর নফ করে আর বল এবং বর্ণ রুদ্ধি করে।

রহৎ লবকাদি মোদক। লবক পিপুল শুণী জীরামরীচ গলপিপুল রজচনদন বালা লটা মাংশী সরলকার্গ শৈলক্ষ নাশেশ্বর আতইচ কুজ শেতচনদন বিরুপা শুল্ফা ত্রিফলা ভুরুজাফল ভালিশপত বুশমূল তিলাতক ভূমিবু আণ্ড
তালমূল পাঠামল ব্রাক্রান্তান্তামূল লৌহভন্ম অভ্রভন্ম লয়িত্রী
লায়ফল মুথা অগৌর কৃষ্ণদ্বীরা শ্বেতধুনা ফৈরুব রান্না ধন্যা
পালকার্গ গাঠালো মূল পিপুলমূল হরিদ্রা বংশলোচন ধাতুকীপূপ্প মোচর্ম শামলতা মহুলফল ইন্দ্র্যব কর্ফ্রা।
এবাংপ্রতি সমভাগে যত তালার চতুর্থ শের একাংশ জীরা
সর্বাহিণ্ডল শকরা মোদক ৮ মাযা পার্মাণ ভারপান ধাতু
বিশেষ ইহাতে নানাবর্ণ অভিসার সংগ্রহ গৃহিণী রজপিন্ত
শ্বেভপিত্র বমি দাহ অরুচি অগ্নান্দ্য অলীর্ণ বিষমজ্বর
প্রক্রেহ কামলা পাঞ্জু অম্লাপিত্র শূল তিদোষ্পর গৃহিণী
রক্তাতিসার শূল এই সকল নম্ট করে।

পঞ্চায়ত প্রপটি। শোধিত পাশ্লা শোধিত গল্পক অভ্ৰত্তন্ম লৌহভস্ম আফিঙ্গ এষাংপ্রতি সমভাগে পর্গটি করিবেন অ-নুপান ধাতৃথিশেষ ইহাতে সংগ্রহ গৃহিণী নাশ হয়।

শকাল মৃত্যুহরণ বটিকা। হিন্দুল শৃন্ধী বিষ শ্বৰ্ভন্ম লৌহ ভন্ম হরিতালভন্ম বঙ্গভন্ম গোহাগা দারুমোচ আকিঙ্গজীরা এই সকল জব্য শোধিত করিয়া সমভাগে চুর্ করিয়া জা-বনা দিবেন ভাবনা যথা – বেগুণপত্র রুস ভীমরাজ্বস ক্ষেপ্ত রিয়ার রুস ছাগৃহক্ষে মর্দ্ধন অথবা কেবল ছাগৃহক্ষে ভাবনা দিবেন যবার্দ্ধ পরিশাণ বটি অনুপান ছাগৃহক্ষে পথ্য হুকায় ইহাতে অগ্নিমান্য শোথ গুলা শূল স্থ্যহ গৃহিনী জ্বরাতি- সার কামলা পাণ্ডু এই সকল রোগ মন্ত হয় এবং শুক্র ও বল রন্ধি করে।

ইতি দর্পণে সংগ্রহ গৃহিণ্দাধিকার সমাপ্তঃ।

স্থতিকা গৃহিণী চিকিৎসা।

. চিভামূলি চ্ব। ধন্যা বালা সোমরাজ জৈয়েপ্তমধ্ সৈত্বব প্রাকৃষ্ঠি দেবদ। জু শঠি নাগেশ্বর প্রিভাতক কাক্ড়াশৃঙ্গী জটামংশী জিমদ হয়িজা দাক্লহায়জাল লাক্ত্রা দাক্ল-চিনি অগৌর রেণুক বিক্লপা লাল্ক্ া মুক্তচন্দন পানমৌরী জীলা ক্রম্মজীলা কাবুলি কপুর শুল্কা তিক ।। গোল্ডবীজ জীবন্তা জাম্কল সোহাগা বেল্ডিয়া দাড়িয়ভাল আফঙ্গ চিমুড্মূল শ্বন্ধি সালুক লবক পাঠামূল মোচর্ম আলবুশি বিজ্য়াবীজ খেতবুনা খদির মুখা এষাংপ্রতি সমূহ ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান জল ইছাতে শ্বিকাগহিণী শৃত্র নানাবন আত্রমার সংগ্রহণ্ডিগী শোথ অগ্রিমানলা অক্লচি এই দকল নটি করে।

শোধিত পারা শোধিত গল্পক শোধিত হরিতাল দোগিত হিল্পল শোধিত শৃন্ধ যি অভ্যন্তম লোই দ্যা বন্ধতম
কড়িত্য শোধিত সোহাগা জারিতী জায়কল লবন্ধ জীরা থ
দির মোচরস তিকটু তিফল। এযাংপ্রতি যত আফিন্স তত
সকল চূর্ব করিবে পারে ভাবনা কাকডাশৃন্ধী রস্ আকনাদি
মূলরস ধৃস্তুরামূল রস গল্পাদালী রস এবাং প্রত্যেকে
একবার ভাবনা দিবে মটরাক্ষতি বটি অরপান এলাইচের
থোলা পন্যা শুণ্ডী আমকেশি লবন্ধ স্থায়কল ইহাতে নানা
প্রকার মৃতিকাগহিণী ও দ্যুজগৃহণী সালিপাতগৃহিণী নট
হয় আর যসের বাঞ্জিত নাশজ্বরে ও বাহ্য দ্যাপ নাশ
করে এবং স্থালোকের সন্তানের চিরজীবিতা হদেন।

নৃপাৰ্লভারস। হিজ্ঞান্ত পারা গগণগন্ধক অভ্রভন্ম তা-বিশ্পত নৌহভন্ম সৈত্ত্বন হথা ধন্যা ধাতকীপুষ্পা বেলগুঠা আত্ইচ শুণী ত্রিক না রক্তচননৈ খেতচনান তেল্পত্র জায় কল লবক এলাইচ গুড়বক বালা মেথি ভালবীল চিতামূল কড়িত্য সোহাগাত্য মোচরস পিপুলতুল হরীতকী চিড়-জুমূল মরীচ পাঠায়ল কেন্দু শঠি ইন্দ্রেষব এবা পপ্রতি সম ভাগ সকলের সমান আফিল সকল শোধিত চুর্ব করিবে পোন্তর্মে মর্দন করিয়া ১ গুলা পরিমাণ বটি করিবে অন্থ পান ধারু বিশেষ এই উবধ সেবন মাত্রে তুন্তর স্থতিকা নানাবর্ব অতিসার সংগ্রহ গৃহিনী অমুপিত গৃহিনী শুল রক্ত বেগ লাধ্যাসাধ্য ক্রর শোথ পাণ্ডু কামলা প্রীহা নাশ হয় আর এই উবধ ক্ষীণেতে পৃষ্টিকর হয় ও জীলোকের ন্তমে

विनामि ह्व।

বেলন্ডঠা লবঙ্গ জীরা রেণুক সৈত্রাব চ বুজাতী যমানী শঠি ত্রিকরা শুল্ফা মৌরী মুখা ত্রিকটু হিন্দু লফুলহরী তকী কজলী আফিঙ্গ জারত্রী জারকল হরিত্রা দাঙ্গহরিতা বেণা- মূল জাটামাংসী শ্বেতচনদন রক্তচনদন জ্যেপ্তমধু ভূষু রক্তর অভ্যন্ম মুখা লৌহতন্ম চিতামূল তালিশপত্র থদির পোশুর বীজ তালমূলী পাঠামূল মোচরন কেন্দু শঠি ইন্দ্রয়ব শ্বেত ধুনা এবাংপ্রতি যত নিজিপত্র শুণী তত সকলত্র্ব করিবে ভক্ষণ মমাধা অনুপান উঞ্জল ইহাতে,নানাপ্রকার স্কৃতিকা নানাপ্রকার অজীর্ব নানাপ্রকার অভ্যান ক্রিকা নানাপ্রকার অজীর্ব নানাপ্রকার অভ্যান হিন্দু নাশ হয়।

নায়িকা চুন। চিতানূল তিকলা তিকটু বিড়ঙ্গ হরিজা দারু হরিজা ভেলা যমানী হিন্দু বিটলবন সৈন্ধবলবন সচললবন গৃহধূম বচ কুড় মুখা অভ্ৰত্য গৃন্ধক যবক্ষার লাচিক্ষার বন যবানী পারণ গঞ্জপিপুল হল এবাৎপ্রতি সমভাগে যত শোধিত বিজয়াপত তত সকল চুন করিবে ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপ্রান জল ইহাতে মন্দান্তি কাম গ্রীহা পাণ্ডু প্রমেহ শোথ বিউত্ত সংগ্রহ গৃহিনী নানাতিমার সর্বা প্রকার শূল শামবাত গদ ছিদি স্থাতকাবুল নট হয় ইহাতে পথ্য কালি দধি অম্ল হক।

স্তিকাক শরসায়ন। ছার্ভসা বক্ষত্র পাগা গলাক জীরা ক্রিতাল হিল্ল শ্লিবিষ লোহভন্ম ধুরুরাবীজ শল্প বিষ লোহাগা এষাংপ্রতি সমভাগ শোধন করিবে সকলের অ-ক্রেক আফিল সকল চুর্ব করিয়া ধুতুর ছিলরসে পোষণ ক-রিবে পরে শুদ্ধ করিয়া সরিষা পরিমাণ বটি বালিবে ভল্কণ ২ রতি অনুপান তথ্য পথ্য হুঝার উহাতে ভয়ানক স্তিকা গর্ভস্তিকা প্রস্তা সংগ্রহ গৃহিণী জ্বরণতিসার অতিসার শোথ অগ্নিমান্য অমুশূল কাস খাস নই হয়। ইতি দর্পণে স্তিকাতিসার সমাপ্তঃ।

গৰ্ভ স্থতিকা 1

রহলবঙ্গাদি চূর্ব। ধন্যা আতইচ জিক টু নৈশ্বর হবুষ
কুড় ককস জীরা জ্বিজা জায়কল জিকলা সচললবন বিটলবণ ধাতকীপুষ্পা রসাজন জিজাতক তালিশপ্ত নাগেশ্বর
বেলহুঠা পিপুল্মল বন্যমানী মোচরস সোহাগা যবক্ষার
মুখা বালা কুড়চিবীজ কুড়চিছাল কটকী নাটাফল জ্বামাংসী লেমূবীজ দাড়েম্বীজ চিতামল বিড়ল কেন্দু শঠি
পাঠামূল অভ্রত্ম লোহ্ডাম মুর্নভ্যম ব্যাৎপ্রতি সমন্তাগেশ্ব, ক্রেল্ড তত সকল চূর্ন ক্রিবে ভক্ষণ ৪ মাফা অনুপান
জ্বা ইহাতে গরিনীর স্থিকা নানাবর্ণ আত্সার অনুপাহ
জ্বামান্য অনুচি অমুশ্ল কুক্ষিশ্বল জীলোকের এই সকল
নম্ব করে।

মেথিমোদক।

ত্বিক ট ত্রিকলা মুখা জীরা রক্জীরা ধন্যা কর্মল কুড় কাঁকড়াশ্লী ষমানী সৈন্ধার বচ তালিশপত্র মাশেশর তেজ পত্র গুড়বক জায়কল এলাইচ এঘাংপ্রতি সমতাগে যতঃ শোধিত মেথি তত সকল সমতাগে চুল করিবে পুয়াতন গুড়ঘারা ৮ মাধা পরিমান মোদক বান্ধিবে উষ্ধ সেবন কেবল প্রাতঃকালে অনুপান হুগা ছারা করিলে আমবাত নই করে আর মৃত মধু সমুপানে ঔষধ দেবন করিলে আগদীপ্তি করে গর্ভিণীর মৃতিকানই হয় এবং বল ও বর্ণ রুদ্ধি করে আর গর্ভে দন্তান রক্ষা-হয়।

মদনমোদক। তিকটু তিফলা কাঁকডাশুলি কুড সৈজ্ব ধন্যা শঠি তালিশ পতি কর্ফল নাগেশ্বর বন্ধমানী মমানী মন্তিমধু মেথি জীরা ক্লফজীরা তিজাতক তিমদ একাংপ্রতি দমভাগে যত শোধিত বিজ্ঞাপত তত সকল চুর্ণ করিবে দকলের দ্বিগুণ চিনি মোদক ৮ মাবা পরিমাণে বান্ধিবেন ইহার পুরের কপুর এলাইচ গুড়বক তেজপাতা এবাংপ্রতি ১ তোলা চুর্ণ দিবেন ব্লিঞ্চাণ্ডে মোদক রাখিবেন ঔষধ দেবন এক সন্ত্যা অথবা হুই সন্ত্যা অনুপান জল। ইহাতে গর্ত্তিবীর সতিকা নাশ হয় এবং সর্ব্ধ রোগ নাশক ইহাতে জানিবেন আর অগ্নমান্দ্য কাস সকল প্রকার শূল এই স-কল রোগের নিঃশেষ হয় এবং এই ঔষ্ধ সেবন করিলে বৃদ্ধ যুবার ন্যায় হয়।

ষ্পামেথিমোদক। তিকটু তিফলা কাঁকডাশৃলি ধন্যা জানিত্বী লৈন্ধব তালিশপএ নাগেশ্বর কুড কটকল এলাইচ গুড় বক তেলপাতা এযাংপ্রতি যত শোধিত মেথি তত সকল চুর্ব করিবে সকলের সমান চিনি স্থত মধু দিয়া মোদক পাকাইবে ৮ মাঘা পারিমাণ সেবন একসন্ধ্যা অথবা ছুই সন্ধ্যা অন্মপান উষণ ছুগ্ধ ইহাতে অতিসার স্থতিকা গৃছিণী মনদাগ্রিল্বর শূল এিদোব অমুপিতে এই সকল নাশহয় এবং এই ঔষধ ক্ষীণেতে পুক্তি কর হয়।

স্ত্রীলোকের গর্ত্ত হইয়া যদি দ্বাদশমাস পর্য্যন্ত প্রতি-মাসে গর্ত্তে বেদনা এবং স্থতিকা হয় তাহার নিবারক ঔষধ প্রথম মাসাবধি ক্রমে লিখিতেছি।

ু প্রকার্ত রক্তচন্দন চঞি ব্যেতিমধু স্থলি শাল্ক একা প্রতি ২ নাধা ছব্দে পেষ্ণ করিয়া চিনি মধু প্রক্রেপ দিয়া দেবৰ করাইবে এই যুক্তিয়োগে প্রথম মানের গর্ত্ত বে দুনা শূল অমু কামলা যুতিকা অণিমান্ত্য নাশ করে।

২ থুলকুঁ জিরহল ছপ্তে পেবন করিয়া অগিতে উফ করিয়া খাইবে ইহাতে ঘিতীয় মানের গর্ত্ত বেদনী এবং প্রথম মা-নোজ ঔষধ নিবারিত ব্যাধি সকলের নাশ হয়।

় ৩ অনুষ্টোর ছাল কথবেবের ছা**লি**এই ছয়ের রন চিনি মধু ছয়ের সহিত উষ্ণ করিয়া খাইবে ইহাতে তিন মাসের গুরুবেদনা নাশ হয় আর পূর্যোজ রোগ নির্ভি হয়।

৪ ইম্বস নারিকেলোদক একত করিয়া উফ করিয়া পরে: পান করিবে ইছাতে ভর্ত্তরোগ নাশ হয়।

৫ পদ্মহল স্বীজ্কদ্লী ছুপ্নে পেষ্ণ করিয়া কিঞ্ছিৎ উষ্ট্র্যাকিতে স্বেন করিবে ইহাতে পূর্বোজ রোগ বিনাশ হয়।

্ভ তালমূল পাত্ময়ল চন্দন ছকো পোষণ করিয়া খাইরে এই মুফিযোগে ষঠ মানীয় গর্ত্তরোগ নিঃশেষ হয়।

৭ এরগুমূল রস ভূমিকুমাগুমূল রস এই ছই প্রকার রস এ-করে পান করিলে সপ্তম মাসীয় গর্ভরোগ নির্ভি হয় এবং সঞ্জল হয়।

৮ কেরুক রম নাধু চিনির সহিত পান করিলে গর্ভরোগ নির্ভি হইয়া মুখ প্রাপ্তি হয়।

ন অনস্কর্ল রজি। দারুক রুসে পেষণ করিয়া সেবন ক-বিলে নবন মানীয় গর্ভরোগ ন্য হয়।

- ১০ দাভিম এিকলা মৃত ছঞ্চশর্করা একতে পেষ্ণ করিয়া খাইলে দশম মানীয় গর্ভরোগ বিনাশ হয়।

১১ অশ্বগন্ধামূল ভক্তের সহিত পান করিলে একাদশ মা-লীয় গর্ভরোগ বিমুজা হইয়া মুপ্রস্বা হয়েন।

১২ স্থতের সহিত চম্পক মিশ্রিত করিয়া গ্রা দুঞ্রের সমতাগে পান করিলে স্থান্বা হয়েন এবং গর্ভরোগ মা-তেই থাকে না।

🗀 ৣ ইতি দপণে গুহিণ্যাধিকার চিকিৎসা সুমান্ত।

नाइरको मूर्नी 🗗

অশাধিকার।

অন্বোগ মলঘারে তিন প্রকার বলি হয়, অন্তবলি মধ্য বলি বাছবলি তাহার মধ্যে যাহার বাছবলি হইয়া থাকে তাহার প্রলেপ, গেঁঠে হরিদ্রা হক্ষচ্র করিয়া ফুল বস্ত্রে ছাকিয়া সেই চুর্বে মনসাসিজের আঠা দিয়া মলঘারে প্র লেপ দিবে এবং মলঘারে অগ্রির তাপ দিবেন এক সপ্তাহ কিয়া ছই সপ্তাহ এই প্রকার চিকিৎসা করিলে নিঃশেষ রোগ হইতে মুক্ত হট্বেন, অর্গরোগের পথ্য, মবনীত মৃত কৃষ্ঠিল পানীকলের আটার রুটী পুরাতন ফুল ভগুলের অয় ফুড মৎস্যের বৃষ ভরকারি ওল মানকচু মুলা পটোল ডুম্ব তক ইত্যাদি পথ্য লানিবেন তগুল মট্রাদি ভর্জন এবং প্রাম্বা ক্লাচ থাইবেন না ইহাতে অভ্যন্ত রোগ রুদ্ধি হয় জানিবেন।

যোষালফল স্থা চূর্ব করিয়া স্থাব্তে ছাঁকিয়া পুঁ-টুলি করিবেন পরে বলিতে লাগে এই প্রকারে মলছারে ঘুর্বণ্ করিবেন।

পুনকার ঐ ঘোষাল স্থক্ষ চূর্ব কিঞ্ছিৎ গুড় দিয়া বস্ত্র খণ্ডে মাথাইয়া বাতি করিবে সেই বাতি মলদারে প্রবেশ করাইয়া রাথিবে ভাছাতে তিন প্রকার বলির প্রতিকার হয়।

নকট্কীর মূলের ছাল ঘোল দিয়া অথবা কাঞ্জি দিয়া পেষণ করিয়া মলদারে প্রলেপ দিলেন, এবং নকটকীর মূলের ছাল আর বিটলবন তক্রদারা পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে প্রতিকার হয়,এবং পুর্বোজ অব্যে বনষমানী পেষণ করিয়াও প্রলেপ দিবেন।

আর নকট্কীর মূলের ছাল ফুল চুর্ণ হরীতকী ফুল চুর্ন গুড় দিয়া খাইবেন, অথবা কেবল হরীতকী চুর্ন গুড় দিয়া খাইবেন এবং বলিতে প্রলেপ দিবেন।

প্রীণদাগুড়িকা। ওঠী ও পল মরীচ ৪ পল পিপুর ২

পল চঞি ১ পল তালিশপাতা ১ পল নাগেশ্বর ৪ ভোলা পিপুলমূল ২ পল তেলপাতা ১ ভোলা গুলরাটি এলাইচ্ বীল ২ ভোলা দারুচিনি ১:তালা বেণামূল ২ তোলা পুরতন গুড় ৩ পল, যদি পিতাধিক্য থাকে তবে গুণী হানে হরী-ভকী দিবেন, এই সকল অব্য চূর্ব করিবে ভাষাতে যত হ-ইবে তাহার চত্ত্রণ চিনি পাক করিয়া চুলা হইতে নামা-ইয়া তাহাতে ঐ চূর্ব দিয়া তাড় ঘারা নাড়িতে২ যখন কিঞ্জিৎ উফ থাকিবে তথন ২০ রতি প্রিমাণ গুড়িকা বা-দ্বিবে, এই উবধ প্রাতঃকালে দেবন করিয়া কিঞ্জিৎ কাল বিলয়ে বাদি শীতল জল পান করিবে, ইহাতে অশ সংযুক্ত গ্রীহা পাণ্ড শ্বাস এই রোগ নির্ভি হয়।

শূরণমোদক। মরীচ ২ পল শুঠী ২ পল চিতাগুল ৪ প্রন্তিক্ত ৪পল এই সকল অব্যের চুর্ণ যত হইবে তা-হার সমান পুরাতন গুড় এই সকল অব্য একজে পাক ক-রিয়া চুলা হুইতে নামাইয়া ভাজু দারায় বীল মারিবার মত ক্রিয়া ১ ভোলা পরিমাণ মোদক ক্রিবেন।

বাহুসালগুড়িকা। তেউড়ি চঞি দন্তি গোহুরী চিতামূল রাথালনার মূল মুথা শুণ্ঠী বিড়ঙ্গ হরীতকী এবাংপ্রতি
১ পল ভেলা ৮ পল বিভীতকী ৬ পল বনজ্ঞল ১৬ পল
পাকার্য জল ১২৮ নের শেষ ৩২নের পরাতন গুড় ১২২ পল
পাকের নিয়ন, ১২৮ নের জ্ল পাকপাত্রে চড়াইয়া ভাহাতে তেউড়ি প্রভৃতি অয়োদশ অব্যাদিয়া পাক করিলে
যখন ৩২ সের জল থাকিবে তথন ঐ জলকে ছাঁকিয়া তাহাতে ঐ পুরাতন শুড় দিয়া পুনকার গুড়বৎ করিবে পাক
সিদ্ধি হইলে ভাহাতে ভেউড়ি হুর্গ ২পল বন্যওল হুর্গ ২পল
চিতামূল হুর্গ ২পল এলাইচ বীজ হুর্গ ৬ পল দারুচিনি হুর্গ
৬ পল মরীচ হুর্গ ৬ পল নাগেশ্বর হুর্গ ৬ পল এই সকল
হুর্গ প্রজেপ দিয়া ভাতু দিয়া নাড়িতে২ সার গুড়ের মত
ভ্রত্বে প্রত্যেহ ১ তোলা অরপান প্রাতঃকালে থান্ট্রন,

ইহাতে নানা প্রকার অর্শ এবং প্রীহা অগ্রমান কড়া গুলা নামান্য শূল এই নকল রোগ নই হয়।

ভেলা শোধন। গোময়ের জলে সিদ্ধ করিয়া নির্মাল জলে থাত করিবেন, পারে রৌজে শুদ্ধ করিয়া ভেলা ভা-কিয়া তাহার আঠা লইবেন।

কুটলাবলেহ। কুড্চিছাল ১০০ পল পাকার্থ লল ৬৪
সের শেষ ৮সের পুরাতন গুড় ৩০ পল মৃত ৮ পল প্রকেপ
বচ শুণী পিপুল মরীচ বিড়ল হরীতকী বয়ডা আমলকী
ইক্রেষব চিতামূল রালাঞ্জন ভেলা আতইচ বেলশুঠা এইসকল
তব্য চূর্ব করিয়া প্রত্যেক ১ পল লইবেন, আর মধু ৮পল,
পাকের প্রকার পাকপাত্তে ৪৬ সের জল দিয়া তাহাতে ১০০
পল কুড্চিছাল ছেঁচিয়া দিবেন পাক শেষ হইলে ৮ সের
শেষ জল ছাঁকিয়া লইবেন ঐ ৮সের জল আর পুরাতন গুড়
৩০ পল এবং ৮ পল মৃত একত্তে পাক করিবেন, পরে মখন অবলেহ ন্যার হইবে তখন বচ প্রভৃতি ভব্যের চুর্ব তাহাতে দিয়া তাড় র দ্বারা নাড়িতেই শীতল হইলে মধু ৮
পল ছাহাতে দিয়া অবলেহ যোগ্য হইলে শুফ্র না হয় এমত এক পাত্রে রাখিবেন প্রভৃত তেলো পরিমাণে
সেবন করিবেন।

চন্দ্রপ্রাতন বাটকা। বিড়ঙ্গ চিতামূল শুণ্ঠী পিপুল মরীচ হরীতকী বয়ড়া আমলকী দেবদাক্ষ চঞি চিরাত। পিপুল মূল মুথা শঠী বচ শুদ্ধ স্বৰ্ণমাক্ষিক সৈন্ধৰ সচল যবক্ষার মাচিকার হরিজা আক্ষহরিজা ধন্যা গজপিপুল আতইচ, এষাংপ্রতি ২ তোলা শুদ্ধ গুণ্ঠল ২ পল চিনি ৪ পল বংশ-লোচন তেউড়ি দন্তি দাক্ষচিনি তেজপাতা এলাইচ বীজ, এষাংপ্রতি ১ পল এই সকল অব্য স্থল চুৰ্ণ করিয়া ৮ প্রহর জল দ্বারা খলে মর্দ্দন করিয়া ৪ গুল্লা পরিমাণ বটি করিবেন অনুপূর্ণন পুরাতন শুড় ২০রতি এবং বন্যওল মুল্লচুর্ণ ২০রতি কোন মতে এই উষ্ধিতৈ কজ্জনী ১ পল দিতে হয় লিখি-য়াছেন, ইহাতে অশবোগ নিয়ন্তি হয়।

मर्भेष्र ।

পিতে দারা রক্ত তুটি হইরা নাসিকা দন্ত গুহু নথ লিঞ্চি এই পঞ্জ ভান হইতে নিগত হইরা পঞ্জ প্রকার অসৌ হয়।

ইহার মন্ত্র। শাকার কোরে শক্ষর চরিতা যে জানন্তি।
ক্রচহ চরিতা, তারক অঙ্গেনা হয় আরিশা, হুভিন্তভাৎ
ইমাং বিজ্ঞাং চত্ঃগ্রামে যোন প্রকাশন্তি রস্য ব্রহ্মহত্যা
পাতকা ভবতি,বিজ্ঞান দিজন্তি অগস্ত্যমুনি ব্রহ্মহত্যা পান্
তকী ভবন্তি অমুকার অঙ্গে হারিশা নাই, অকল কলিকা ২
ইহ কলিকা যে সানন্তি যে শুনন্তি তাকর অঙ্গে ভাকর বংশে
না হয় হারিশা লিজই রিমিবি সবি অমুকার অঙ্গে,নাসিকা
হারিশা দন্ত হারিশা গুলু হারিশা শুক্র হারিশা লিজ হারিশা ক্রতিভ্রতাং বিজ্ঞাৎ চতুঃগ্রামে যোন প্রকাশন্তি সভা
সত্য ব্রহ্মহত্যা পাতকাভবন্তি,কালি কালি কাত্যায়নী বতরম হঃস্বহা পানিছন্দ পানিবন্দ পানি যে উপজিল ধরল
যোকল্প একনালে বারে সহস্র নালে পুরে কার আজ্ঞাশিকা
যোগা গোরভের আজ্ঞার অমুকার অঙ্গে হারিশা নাই।

সমশর্করা চূর্ব। শুণ্ঠী পিপুল ৫ তোলা মরীচ ৫ তোলা নাগেশ্বর ৪ তোলা তেজপাতা ৩ তোলা গুড়্মক ২ তোলা এলাইচ বীজ ১:তোলা,এই সকল ডব্যের চুর্ব যত চিনি তত্ত সকল একতে মার্দিত করিয়া ভাপ্তে রাখিবে, ভক্ষণ ৮ মাথা অনুপান উঞ্জল, ইহাতে গুড় অর্শ কান শ্বাস এই সকল নট্ট করে।

প্রাণদাগুড়িকা। ৪৩ টি চুর্গ ও পল মরীচ ১পল পিপুল ২ পল চঞি ১ পল তালিশপাতা ১ পল নাগেশ্বর ২ কর্ষ পিপুলমূল ২ পল পিপুলপাতা চুর্গ তোলা এলাইচ বীজ ১ কর্ষ গুড়ুহক ১ তোলা বেণারমূল ১ তালা, এই সক্ল জব্য শুক্ষ চুর্গ ক্রিবে, পুরাত্তন গুড় ৩০ পল সকল একটেই ম- দিত করিয়া বদরি পরিমাণ বটি বাদ্ধিবে অনুপান শুঠী হরীতকী ছেঁচিয়া জলে ভিজাইবে, দেই জলে এবং ভোজনাস্তেও ভোজনের পর ঐ জল পান করিবেন, পিও অর্শে
অনুপান চিনির জল এবংভোজনের পুরের ও পরে চিনির
জল পান করিবেন, এই উব্ধি সকল প্রকার অন্ট ও বাত
পিত্ত কফ জন্য যে যে নানা প্রকার অর্শ মুক্তান্ত বাতরোগ
গলগ্রহ বিষমজ্বর মন্দাগ্নি পাণ্ড ক্রমি হুডোগ গুলা শূল
ছদি অতিমার কামলা কাল স্থান এই সকল রোগের নাশক হয়।

ষশ্প শূরণমোদক। মরীত ২তোলা শুণ্ঠী ৪তোলা চিতামূল ওতোলা বন্যওল চূর্ব ৮ তোলা, এই সকল জব্যের
চূর্ব অন্ধিরে পুরাতন গুড়ের সহিত মর্দন করিয়া ৮ মাযা
পারিমাণে মোদক করিবে অনুপান ওলসিজ জন এক
মন্ত্রা অথবা দ্বিসন্থ্যা এই উব্ধ সেবন কন্তব্য ইহাতে নানা
প্রকার অক্শূল গোদ গুলু শ্লীপদ এই সকল রোগন নী করে

রহৎ শুরণমোদক। বন্যওল চুর্ন ৩২ তোলা চিতায়্ল ১৬ তোলা গুণ্ঠী ৮:তালা ভূমিকুম্বাণ্ড চুর্ন ৩২তোলা গুড়-মকল জব্য মর্দন কারণ পুরান্তন গুড় ৬ সের একতে মর্দিত করিয়া ৮মাষা পরিমাণ মোদক করিবে অনুপান পুরাতন বিরিকলাইরের বুষ, ইহাতে অল ল্লীপদ হিক্কা শ্বান কাম ইত্যাদি রোগ সকল অপন্য হয়।

অশীবজবটিকা। তিকটু তিফলা তিজাতক খুস্তুরাবীক রাম্নলবল লায়ফল জীরা মোহাগা শুল্কা হালিম আফিঙ্গ কড়িভাম শস্থভাম কজলী ইত্রেষব বিটলবণ সৈক্ষব, এযাং প্রতি সমভাগ চুর্ব করিয়া ভাবনা দিবেম যথা কুড়চিখুল ছালের রস ওদিবস দিবেম কুটিলামূল ছালের রস ২ দিন দিবেম পরে মর্দ্দন করিয়া ওরতি পরিমানে বটি বাজিবেম ক্ষুণ্নি কেশুরিয়ার রস,ইহাতে নানা প্রকার অশী গৃহিনী গুলা শূল অম্লাপিত অগ্নিমানতা সংগ্রহ গৃহিণী এই সকল বোগ নাশ হয়।

প্রলেপ। চিতারমূল হরিজা, পেষণ করিষা ও দিন প্র-লেপ দিবেম।

ে মেদির্ল ছাল গুণ্ঠী পেষ্ণ করিয়া ৪ দিন প্রলেপ দিবেন।

পাকার্থ প্রলেপ। তিল তগুল কাঁচা হরিছা পূচা কলা সভা দ্ধি দ্বারার পেষণ করিয়া গ্রাদন প্রলেপ দিবেন,পা-কিলে মুক্ত হইবে।

কুড় চি অবলেহ। কুড় চিছাল ১০০ পাল পাকার্থ জল ৬৪ সের শেষ ৮ সের বত্ত্বে ছাঁকিয়া পুনর্বার ঘন করিয়া পাক করিরে,পরে ভেলা ৬ ঠ বিড়ক তিকটু তিফলা রসাজন চিতায়ল ইন্দ্রয়ব বচ আতইচ বেলশুঠা, এযা প্রথিতাকে ৮ তোলা চুর্গ ইহাতে দিবে চিনি আও সের মধু ১ সের মৃত ১ সের একত্তে পাক করিবে ভক্ষণ ১ ভোলা ছই সন্মা সেবন করিবে, অনুপান আমর্ভে ছাগ থক্ত অলৌ জল ইহাতে গুছু শূল আমর্ভ্ত শোগ এই সকল রোগ নই হয়।

্ মুষ্টিযোগ। সভাজাত নবনীত তিল তণ্ডূল, একএ পে ষণ করিয়া খাইবে।

মুফিযোগ। নাগেশ্বর পুষ্প চুর্ণ সন্ত নবনীত চিনি এ-কএ মর্দ্দন করিয়া খাইবেন।

য় যি যোগ। নাগেশ্বর চূর্ণ সন্তা নবনীত চিনি তিল ভণ্ডুল পোষণ করিয়া যোলের সহিত গুলিয়া খাইবেন।

পায়সাদি পাচন। বরাক্রান্তান্থল স্থাদিন্তল মোচরস
মুথা লোগছাল তিল তগুলরজচনন এয়াংপ্রতি ৫মানা এই
নকল তব্য চেঁচিয়া বস্ত্রে পুঁটুলি করিয়া দোলা যন্ত্রে পাক
করিবে পাকার্থ ছাগহুল অন্ধিনের জল ১ সের শেষ ১পোরা
প্রক্ষেপ চিনি।

অশহারি মৃত। সৃত ৪ সের ছাগঞ্জ ১৬ সের তঞ্চলা

দক ৪ সের বেশাস্থল জল ৪ সর কেণ্ডরিরার রম ৪ সের জ্
মূর জল ৪ সের কল্ক লৌহমপ্তুর রক্তচন্দন পাল্কান্ঠ না
গোশ্বর বয়ড়া বরাক্রান্ডান্তল মোচরস মুখা বালা বেল্ডুঠা

পাঠামূল তালমূলী ধাতকীপুষ্পা রমাঞ্জন এষাংপ্রতি ৮
তোলা চূর্ব চিনি ১মের মধ্ ১ সের ভক্ষন ১ তোলা অন্মপান

১ কা ইহাতে অর্শ বিস্পাদাহ ক্রীনতা কলিশূল গুরুশূল এই

সকল রোগ নই হয় আর অগ্রিয়াজ কান্তিপুর্বি ও কামরাজি

হয় ।

য়বিযোগ।

বয়ড়ার সাঁশ ষেত পুনর্ন বা মূল শুণ্ঠী চিনি এবাংপ্রতি ২ মাধা পেবন করিয়া খাইবে।

অর্শাদিলোই।। কাঁচা কদলীরক্ষের রস ৪ সের দাড়িম্ব পাতার রস ৪ সের কাঁচা পানীফল ৪ সের সিম্মলচালের রস ৪ সের ছাগছেক্ষ ২ সের চিনি ২ সের এই সকল দ্রব্য বস্ত্রে চাঁকিয়া ঘন করিয়া পাক করিবে পরে লোহভন্ম তালমূলী কিফলা শ্বেত পুনর্নবা মূল জায়ফল জ্বাত্রী তালমাখলা এলা ইচ বীজ এষাংপ্রতি ২ তোলা চুর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া উ্থাব করি বেন ভক্ষণ ১ ভোলা অনুপান কেন্ট্রত্যের রস ও অশোক পত্র রস একত্র করিয়া লইবেন ইফাতে অর্শ প্রমেহ গুলুদাহ অতিসার এই সকল রোগ নস্ট ২য় ।

অগিনান্তা চিকিৎমা।

হিল্লছাক। শুণী পিশুল মগীচ বন্যমানী সৈক্ষাৰ জীৱা কৃষ্ণজীৱা হিল্প। এষা প্ৰতি নম ভাগ হৃত্য ক্রিয়া মুক্ষা ব'স্তা ছাঁকিয়া পাতিলেবুর রুসে চারি প্রহর মর্দ্দন ক-রিয়া ৪রতি পরিমাণ বটি প্রতাহ প্রাতঃকালে পাতিলেবুর রুষে মর্দ্দন করিয়া দেবন করিবেন। ইহাতে অজ্ঞীন রোগ নাগ হয়, পথা পুরাতন তণ্ডুলের অয় ক্ষ্ মৎস্যের যুষ। কিন্তু হিল্প শোধন করিয়া দিবেন, শোধন যথা, স্থলতানি হিল্প মৃত্যে ভালিয়া লইবেন।

অগিমুখ চুর্ ইন্দ হিন্দ ১ ভোলা বচ ২ ভোলা পিপুল ও ভোলা ইপ্তী ৪ ভোলা যমানী ৫ ভোলা হরীভকী ৬ ভোলা, চিতামূল ৭ ভোলা কুড় ৮ ভোলা এই সকল জ্বা স্লচ্র করিয়া ১০ রতি অনুমানে প্রত্যুহ সেবন করিবেন সেববের কিঞ্ছিৎকাল বিলয়ে নিজ্জল তেঁতুলপাভার রন আদছটাক অনুপান পথ্য পাভিলেবুর রন ও চিনি একত করিয়া খা-ইবেন আর পুরাভন ভঞ্জালর অন্ন প্রভৃতি লঘুপাক জব্য। পাভিলেবুর রনে হিন্দ মর্দিন করিয়া লইবেন।

ধান্য শুগু ী পাচন। ধন্যা ১ তোলা শুগু ী ১ তোলা। জল ৪ পল শেষ প্ৰক্ষেপ মধু মনীল চুৰ্ণ ৪০ রভি।

ভূকিবোগ। যব সূত্রত্ব ঘোলে পাক করিয়া নোরার চুৰ ২।৪রতি তাহাতে দিয়া কিঞ্িং উফ খাইলে অজীর্ ও ভ্রের নাশ হয়।

মেথি মোদক। শুণী পিপুল মরীচ হরীতকী বহেড়া আমলকী মুথা জীবক খাবভক ধন্যা কটকল কুড় কাঁকড়াশুলি যমানী লৈশ্বৰ বচ নাগেশ্বরকুল ভেল্পাতা গুড়ুত্বক
এলাইচ অন্ত রক্তচলন মুঝা লবক তালিশপাতা বিড়ক্ত কপূর্ব এই লকল অব্য সমভাগে চুর্ব যত হইবে ঈর্থ ভাজা
মেথিচুর্ব তত পুনর্বার মেথির সহিত যত হইবে ভাষার দ্বিগুণ পুরাতনগুড় পাকের প্রকার, গুড়পাক পাত্রে চড়াইয়া
মোদকের উপযুক্ত পাক হইলে চুলা হইতে নামাইবেন,
পারে ঐ চুর্ব সকল উহাতে দিয়া ভাড় ছারায় নাড়িতেই
মোদক পাকাইবার মত হইলে ১ ভোলা পরিমাণে লাড়
পাকাইবেন লেবন প্রাত্তক কুড মৎশ্বের যুষ কুল্প পুরাতন
তঞ্লের অন্ধ জলপানীয় চিনি মিছরির পানা মরীচ চুরের লহিত অথবা পাতিলেব্র রস সহিত।

হুতাশন রস। শোষিত গলক ১ তোলা শোধিত পারা ১ ভোলা লোহাগার থইও তোলা শুদ্ধবিষ ৩ তোলা মরীচ ৮ তোলা। রস গন্ধকে কজনী পাতিলেবুর রসে ৮ প্রহর থলে মর্দ্রন করিয়া ১ গুলা পরিমাণ বটি করিবেন অনুপান চিনি ২০ রতি আর মরীচের গুঁড়া ২০ রতি পথ্য পূর্ববং। রামবান্রস। রস গন্ধক বিষ লবক এষাংপ্রতি ১তোলা মরীচ ২ তোলা জায়ফল অর্দ্ধ তোলা এই সকল অব্যের চুর্ন কাঁচাতেভুলের রসের সহিত খলে ৪ প্রহর মর্দ্রন করিবেন ১ গুলা পরিমান বটি অনুপান পাতিলেবুর রস ও চিনি অ-থবা মুথার রস ও মরীচের ওঁড়া পথ্য পূর্ববং।

অপি মার রম। সোহাগার খই রম গজক এবা পথতি ১ তোলা বিষ কড়িভন্ম শহাভন্ম এবা পপ্রতি ও তোলা মরী চ ৮ তোলা এই সকল জব্য স্ফার্চ করিয়া বজে ছাঁকিবে পরে পাতিলেবুর রমে ৪ প্রহর খলে মর্দন করিয়া ১ রতি পরিমান বটি করিবেন অনুপান পাতিলেবুর রম। ইহাতে অগি প্রব্ হইয়া অজীন দুর করে।

কড়িভন্ম প্রকার। শুক্লবর্ণ গেঠেকড়ি পাতিলেবুর রদের সহিত অনলে সিদ্ধ করিলেই শোধন হয়।

মহাশত্ম বটি। গৈল্পবলবণ বিটলবণ সামরলবণ সচল লবণ পাঙ্গালবণ হিন্দু শত্মভন্ম তেহুলের ছাল ভন্ম শুণ্ডী পিপুল মরীচ রসগল্পক বিব। এষা প্রতি ১ তোলা এই স-কল জব্য স্থাছণ করিয়া আপাঙ্গপজের রসে এক ভাবনা দিয়া পরে চিতারমূলের রস দিয়া এক ভাবনা তৎপরে গোড়ালেবুররসে ভাবনা ৪রতি প্রমাণ বটি অনুপান গোড়া লেবুর রস এই ঔষধ ভোজনের পর সৈবন করিলে অজীন রোগ মিঃশেষ হয় ভোজনের পূর্বে সেবন করিলে অজুপিত রোগ জন্মে পথ্য পূর্ববৎ।

রহমহোত্র থি। লবন্ধ চিতায়ল শুণ্ঠী জয়পাল নোহা-গার থই বীল ভাড়কয়ল এযাংপ্রতি ২ ভোলা এই স্কল্ দ্রব্য ফুলচুর্ন করিয়া দন্তিরসে চতুর্দশবার ভাবনা পরে গো-ডালের রসে ও ভাবনা বীলভাড়ক রনে পঞ্চ ভাবনঃ এই লকদ ভাবনা দিয়া তাহার পার রদগন্ধক মিঠা বিব এবাং প্রতি ২ তোলা কিন্তু রদগন্ধকে কজ্জলী করিক্লা দিবেন আর বিষ শোধন পূর্বক চূর্ব করিয়া দিবেন তৎপরে দন্তির দ এবং আদার রদ হুই রদ মিলিভ করিয়া ভাবনা দিবেন অথবা চিতামূলের রদে ভাবনা দিবেন তদনন্তর খল করিয়া ১ গুলা পারিমাণ বটি করিবেন অনুপান মুখাররদ নির্দ্ধল ও মরীচ চূর্ব।

পারা ১ পল গন্ধক ২ পল তামু ৪ তোলা এই তিন জব্য কজলীর মত করিয়া লৌহপাত্রে পর্পটির মত পাক করিয়া ১০০ পল পাতিলেবুর রসে লৌহপাত্রে পাক কিরয়া পাতিলেবুর রস শুক্ত হইলে পিপুল চঞি চিভায়ল এই তিন জব্য সমভাগে লইয়া তাহার ৮ গুল জল দিয়া তার চতুর্বাংশের একাংশ থাকিলে সেই ক্লাথে ঐ পর্পটিবৎ ও বার ভাবনা দিবেন ভাহার পরে বন্যওলের রসে ও ভাবনা দিবেন ভংপরে ৩৪ ভোলা সোহাগার খই স্ক্লচুর্ব আর ১৭ ভোলা বিটলবে তাহাতে দিবেন ইহাতে যত হই বেক তাহার সমান মরীচের স্ক্লচুর্ব ভাহাতে দিবেন তৎ-পরে ভাহাত ক্লথ্য কালাইয়ের জলে ৭ বার ভাবনা দিবেন শেষে থলে মর্দন করিবেন ১ রতি পরিমাণ বটি প্র-ভাহ প্রাত্থকালে সেন্ন করিয়া কিঞ্ছিৎকাল বিলয়ে শিল্বে দেওয়া ছোলার জল জন্মপান করিবেন।

্ষপশশ্বটি। বিষ ২ ভোলা কড়িজন্ম ৬ তোলা মরীচ ১ তোলা জল দিয়া ৪ প্রহর খলে মর্দন করিয়া ৪ রতি পরি মান বটি করিবেন অনুপান পাতিলেবুর রস এবং ঔষধ দেবনের পরে কিঞ্চিৎ লেবুররস পান করিবেন।

मर्भार ।

হিন্দু অইক। ত্রিকটু বন্যমানী সৈত্ব জীরা রক্জীরা। হিন্দু এষা প্রতি সমান চুর্ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান উষ্ট্র ছড় ইহাতে মন্দাগু অমুশূল নত্ত করে। মুক্তিযোগ। হরতকী ৬ মাধা শুণ্ঠী ৬ মাধা চিনি ৬
মাধা পোষণ করিয়া সেবন ক্রিবেন ইহা কফ জন্য মন্দাগ্নিতে জানিবেন।

[े] বাতাজীৰ। হ্রীতকী ৪ মাধা পুরাতন গুড় ৪ মাধা দৈল্পবলবন ৪ মাধা।

় পিভাজীন। হরীতকী ৪ মাষা সৈত্বর ৪ মাষা চিনি ৪ মাষা পেষণ করিয়া ভক্ষণ করিবে।

দৈশ্ববাদি। দৈশ্বৰ হ্রীতকী পিপুল মথা চিভায়ন এষাংপ্রতি সমচূর্ব ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান উষ্ণল ইহাতে অতিশয় অনল দীপ্তি হয়।

অনল মথ চুর্। হিঙ্গ ১ তোলা বচ ২ তোলা পিপুল ৩ তোলা শুগু । ৪ তোলা যমানী ৫ তোলা এই দকল চুর্ক-রিয়া ৮ মাধা পরিমান ভক্ষণ করিবে অনুপান বাতে উফ জল পিতে দ্ধিরমাত ইহাতে অজীর্গী হা উদ্রী অর্শনূল গুলা এই দকল রোণ নট হয় ও অগ্ন রাজি করে।

বৈশানর চুর্। ত্রিকটু এলাইচ হিন্দ বামনহাটীয়ল বিট লবণ যবক্ষার পাঠায়ন যশিনী তেতুল কাচলিতক্ম কৃষ্ণ জীরা চঞি চিতায়ল গজপিপুল গুড়স্বক কটকী গাঠ্যালা শ্বেত বাট্যালায়ল এষাংপ্রতি সমচ্ন করিবেক ভক্ষণ ৮ মাষা অনুপান উষ্ণ মৃত ইহাতে নারাপ্রকার অজীর্নাশ্ হয় কিন্তু এই উষ্ধ দিসন্ধ্যা সেবন কর্ত্ব্য।

দাবানল চুণ। জারকল জারিত্রী শখ্তম কটকিরী সো হাগাতম এবাংপ্রতি ১ তোলা যবকার ৫ তোলা পঞ্চনবণ প্রত্যেকে ১ তোলা পঞ্চম প্রত্যেকে ১ তোলা এই সকল জার্য চুর্ব করিয়া স্থন্ম বজ্রে ছাকিয়া পরে মর্দন করিয়া এ-কত্রে রাখিবৈ অনুপান লেবুর রস ইহাতে আমবাত ম্ম-পিত্ত শূল মন্দাগ্নি গহিণী গ্রীহা গুলা এই সকল রোগ নউ করে।

्यं काकम्पूल कनकहां शांकुल धारिकुल नार्श्यंब्रकूल

গোঞ্জাকুল ব্রিফলা জায়কল অমুন্বতস সাচিকার যবকার নোহাগা শহাতম কড়িভন্ম হাওী ব্রিজাতক মরীচ জ্যৈ ঠ-মধু এযাংপ্রতি সমচুর্গ করিয়া ভাবনা বিজয়া পত্রেস ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান জল ইহাতে সকল প্রকার মন্দাগ্নি নউ হয়, আর শরীরের শোভা হয়।

ভুজবিপাক বটি। লবক ত্রিকলা ত্রিকটু যমানী বিল যমানী জীরা কৃষ্ণজীরা ত্রিজাতক ত্রিমদ শৌধিত হিল্লল জ্বায়কল সোহাগা অভ্রত্ম নাগেশ্বর বল্পত্ম কভিত্ম আ-কিন্দ এবাংপ্রতি সমচুর্ব সিজিপাতার ইলে মর্দন করিয়া ১ মাধা পরিমাণ বটি বালিবে জল অন্তপানে গেবন করি বেন ইহাতে সম্পিত শূল অজীর্ব গাঁহণা গুলা এই সকল রোগ ভাল করে।

মহোষ্ধি রস।

শোধিত পারা শোধিত গল্পক শোধিত শৃঙ্গিবিষ লোহ ভাষা অভ্ৰত্ম সোহাগা জীরা ত্রিকটু জায়কল শন্ত্রম ল-বঙ্গ কডিভাষ এষা প্রতি সমচুর্ব কারবে পরে সেই চুর্ব স-কল দ্বিতে মর্দন করিয়া মুদা পরিমাণ বটি করিবেন অন্ধ পান অগ্নিমান্দো পাণের রস গৃহিণী রোগে লবঙ্গ জায়-ফল অমুপত্তে পানমোরী ক্পুর জল ইহাতে অগ্নিমন্দা অমু অজীর্ব গৃহিণী নাশ হয়।

কামাগিদানিদ্বানি

ক্লরিবেন) ইহাতে চতুর্বিধ শূল নট করে আর কাম ও অগ্নিরন্ধি করে।

কামেশ্বর মোদক। বরাক্রন্তো হল মরীচ অভ্রত্ম কফাল রুম্ম্মীরা অশ্বগন্ধা হল গুলপ্তের পাল মেথি মোচরস
ভূমিকুমাণ্ড চূর্ন কেন্ডর গোহ্নরী বীজবুমাণ্ড শন্ত বিচাকলা
শতহলী বন্যমানী পুরাতন বিব্রিকলাই তিল তণ্ডুল ধন্যা
জ্যেত্মপু নাগেশ্বর বাট্যালাহল লোহভ্রম চিভামূল আয়ফল সৈন্ধব বাম্মহাটিহল রাখাল কাঁকুড়হল কাঁকড়াশ্লি
কিকটু জীরা রুম্মীরা যুমানী চতুঃজাত খেত সেয়াকুলহল
গলপিপুল আকা সোনাছাল বাসকহল ভালহলি কিফলা
পানিকল, এবাংপ্রতি সমচূর্নে যত শোধিত বিজ্ঞাপাতা
চূর্ন তত এই সহুদায়ে যত তত চিনি মোদক পাক করিবে
কর্ম পরিমাণ বটি অনুপান হক্ষা, ইহাতে অজীন অগ্নিমান্য
কাল খাল অভিনার গহিনী প্রমেহ অম্ল ইড্যাদি নানা
রোগ নট করে আর রুজ যুবার ন্যায় হয় ও রুজের কাম
রুজি করে আর রুশাক্ষহূল হয়।

ইতি অগ্রিমান্দ্যাধিকার সমাপ্তঃ।

বিশুটিকা চিকিৎনা। যে রোগার কেবল বমন হয় তাহার রোগ সাধ্য, যাহার কেবল রোচন হয় তাহার রোগ
দাপ্য এবং যে রোগার বমন ও তেদ এক কালীন হয় তাহার রোগ অসাধ্য, আর যদি ইহাতে জ্বর তৃষ্ণা অক্লচি
ছদ্দি কাল খাল কটিগ্রহ অঙ্গদাহ যেদ এই সকল থাকে
জ্বরাতিলার করিয়া বলা যায়, আর এই বিশুচিকা পীড়াকে
অত্যন্ত ভ্যানকা জানিবেন, ইনি যদের জ্যেন্ঠ ভগ্নী অতএব
এই পীড়া যাহার পূর্ণৰূপে হয় তাহার মৃত্যু হয়।।

যড়ক চূর্ব। পান্ধবীক পান্ধকার্চ পান্ধল বেশায়ল যবত-শুল, এবাংপ্রতি সমভাগ চূর্ব ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান জল ইহাতে বিশুচিকা রোগ নট হয়। র্থমবাক চুর্ন ভূমিকুআও তালমূলি শুণ্ঠী বদরি অন্টি শশু শতমূলি জায়ফল জীরা রজ্চনদন চিনি, এষাংপ্রভি সমচুর্ব ভক্ষণ ৪ মাযা অনুপান লাজমণ্ড, বিশুচিকা নাশ-কোহয়ং চুর্বঃ।

হেমামৃত চূর্। কনকটাপা কুল মুখা রুক্তন্দন তিকুট ধারী পিয়ালবীল আলকুশি বদরি অফিশন্ড তিমুগন্ধ, এযাং প্রতি সমচূর্ব ভক্ষণ ৪ মায়া অনুপান বাসিজ্ঞল।

জীরকাদি বটি। সোহাগা শুণ্ঠী জায়কল লবক্ষ, এই লকল জব্যের লমান শোধিত আফিঙ্গ, দাড়িয়পাতা রসে মর্দন করিয়া বটি বাজিবে শুনুপান ধাতুবিশেষ, ইংাতে সকল বিশুচিকা নম্ভ হয়।

অবিপাদিক চূর্। ত্রিকটু ত্রিকলা মুথা বিড়ঙ্গ এলাইচ তেজপত্র গুড়স্থক যমানী, এষাংপ্রতি যত কাঁচালবঙ্গ তত এই সকলের ডুল্য ভেউড়ি চূর্ণ পুনর্যার এই সকলের যত চিনি ভত সকল একত্রে মর্দন করিয়া এক ভাণ্ডে রাখিবে ভক্ষণ ৮ মাধা অনুপান জল এই ঔষধ ভোজনাদি অথবা ভোজনান্তে সেবন করিবে পথ্য নারিকেলোদক এবং দ্ধি ইহতে অম্লপিত মলমুত্রের বদ্ধতা অগ্নিমান্টে সর্ব প্রকার বিশ্রচিকা শূল এই সকল রোগ নই হয় এবং বল ও দেহ পৃষ্টি করে।

ইতি বিশুটিকা চিকিৎসা সমাপ্তঃ।'

व्यथ मानमात्र विनिध क्रिक्मा।

রহ্থপ্ত ী খণ্ড। শোধিত শুণ্ঠ ী চূর্ব ১ সের চিনি ৪ সের গব্যম্ত ১৬ তোলা হক্ষ ৮ সেরু এই সকল অব্য ঘনীভূত পাক হইলে, ধাত্তী ধন্যা মুখা বন্যমানী পিশুল বংশলো-চন ব্রিজ্ঞাবক রক্ষজীরা হরীতকী অম্লবেতস মরীচ লাগে-শ্বর, এষা প্রভি ৪৮০ তোলা স্কাচ্ব ১ সের হুণ্ঠী চুর্বের স্থিত মিশ্রিত করিয়া উহাতে দিবে পরে ২৪ ভোলা মধু- দিয়া তাড় দারায় উত্যৰপে মিশ্রত করিবে, ভক্ষণ চ মাধা অন্তপান প্রাতঃকালে হক্ষ সায়হে জল, ইহাতে সম্-লপিত শূল আমবাত হুলাহ কণ্ঠদাহ ছদ্দি দাহ নানা বর্ণ অতিযার অজীন গৃহিনী এই সকল রোগ নই হয় আর ধাতু হৃদ্ধি ও কাশ রুদ্ধি হয়।

े মুফিযোগ। তেলাকুচা হল মরীচ ১ টি চিনি ১ তোলা কাঁচা ছক্ষের সহিত পোষণ করিয়া সেবন করিবেন। ইহাতে সালসার রোগ ক্ষী হয়।

অথবা লেবু লবণের সহিত যোগ করিয়া প্রত্যাহ ভক্ষণ করিবে, সপ্তাহ ভক্ষণ করিলে উক্ত রোগ নিবারণ হয়।

নারিকেল লবণ। নারিকেল জল ৪ তোলা সৈন্ধব ৪ তোলা খোরাশনি বচ ৪ তোলা, এই সকল জন্য নারিকেল জলে পেষণ করিয়া নারিকেলের ভিতর পুরিয়া পরে মৃ-ত্তিকা লেপন করিয়া গজপুটে পাক করিবে এক প্রহর পাক করিলেই ঔষধ হইবে, ভক্ষণ ৪ মাধা অন্মপান জ্বল, ইহাতে বিলম্বি রোগ নির্ভি হয়।

ভাকর লবণ। ধন্যা বন্য মানী থরাশনি যমানী জিলাতক নাগেশ্বর লবক মৌরি, এবাংপ্রতি ১তোলা অম্ল বেতদ জিফলা পিপুল ক্ষজীরা মরীচ শুণ্ঠী জীরা শুল্ফা
এবাংপ্রতি ২ ভোলা বিটলবণ সৈল্পবল্বন করকচলবন দ্চললবন সম্ভারিনী লবণ, এবাংপ্রতি ২ ভোলা। এই সকল
জব্য স্ক্রচ্ব করিয়া লেবুর রসে পেষণ করিয়া ঐ রসে দাতবার ভাবনা দিবে বিল্প এক দিবসে নহে সপ্ত দিবসে দিবেন,ইহাতে সালসার বিলম্বি অম্লাপিউ চুর্নাম শূল হুজাহ
কর্পদাহ ধুমোলার অক্লচি অনলমান্য ছিদি উদ্রাধ্যান,
এই সকল রেশ্য নাশ হয়।

বলভজম্ভ। গব্যম্ভ ৪ দের দৈল্পবল্বণ অর্চনের শুণ্ঠী চুর্ণ অর্চনের কল্কার্থ হরীভকীর কাথ হরীভকী ১২॥ পল জল ৬৪ দের শেষ ৪ দের স্বতেতে, দিয়া মন্দার্গিতে প্রাক করিবে নির্দ্ধান হইলে প্রাক্ষিদিন, ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান হথা, ইহাতে সালসার বিলম্ব গুলা শূল অম্লপিত অকচি অগ্নিশানা নট করে।

সৌজাগ্য শুণ্ঠ বিশু। শোধিত শুণ্ঠী চুর্ ১ সের চিন্
১ সের মর্ ১ পোরা ছত ১ পোরা ছক্ষ ৪ সের শতমূলি রস
৪ সের ধাত্রিক থ ৪ সের, এই সকল দ্বর পাক করিয়া ঘন
ছইলে ভাহাতে মেথি মৌরি চাঞি ধাতকীপুষ্প ধন্যা মুখা
যমানী পিপুল ত্রিকাতক রুফজীরা বন্যমানী ধারাশনি
যমানী মরীচ নাগেশ্বর জায়কল ভায়িত্রী জ্যেত্ঠমপু, এষাং
প্রতি ২ তোলা দিবে, ভক্ষণ ঘিসন্ত্র্যা ৮ মাবা পরিমাণে
অনুপান উষ্ণ জল অথবা থক্ষা, ইহাতে অফ্লাপিত শূল
পরিমাণ শূল সালসার দোষের পুমোলার বিলম্বি অনলমান্যা বমি মুছ্যি অক্লাচ সংগ্রহ গৃহিনী মৃতিকা এই সকল
পীড়া নাশ হয়।

শতাবরি মোদক শতমূলি ৪ সের চিনি ২ সের গব্য হক্ষ ৪ সের তিফলার ক্ষাথ ৪ সের এই সকল জব্য একত্র পাক করিরা পরে ধন্যা তিকটু যথা তিজাতক সৈল্পব জার-কল জয়ত্রী বালা জীরা ক্ষজীরা কাকডাশৃ ক্ষি বিজ্ঞজা মরামাৎসী মৌরি হরীতকী শুলকা তালিশপাতা চাঞি দেবদার প্রিয়ল লবল শৈলজ রক্তচন্দন এবাং প্রতি ২ ভোলা স্মত্র ইহাতে দিবেন পরে তাভ দারায়নাড়িতে ২ মিশ্রিত হইলে ১ তোলা পরিমাণ মোদক করিবেন, অনু-পান শতমূল রদ কাঁচাং ক্ষা, ইহাতে সকল শূল সংগ্রহ গহিণী নানাবর্ অভিনার অজ্জির্ স্তিকা ফ্লাই কণ্ঠদাই শিরোদাহ সক্ষাল দাহ জঠরদাহ অক্ষ্রি এই সকল রোগ নত্তী হয় আর ধাতু র্দ্ধি বল র্দ্ধি ও অগ্নি হল্ব।

লবঙ্গাদি বটি। লবঙ্গ জীরা তিকটু কপুর কৃষ্ণজীরা বন্যমানী যুমানী শুল্ফা শঠী হরীতকী বহেছা থাতি খন্যা সৈক্ষর ফটিকারী স্নায়কল জয়তী, এবাৎপ্রতি সমভাগী বিজয় রসে মর্দন করিয়া বদরান্থি পরিমাণ বটি করিবে । অনুপান জল।

শুঠামুত চূর্ব। ধন্যা তিকলা তিকট ফুমানী বিলয়মানী জীরা রক্ষণীরা আমুক্ষি যবক্ষার চিতামূল ফটিকারি ইসর মূল শুল্ফা সোমরাজ পঞ্চলবণ, এযা প্রতি ২ তোলা শুঠী ১সের সকল চূর্ব করিবে ভক্ষণ ৮ মাঘা অনুপান উষ্ণ দুগ্ধ ইহাতে সালসার বিলম্বি আমুল্লিন্ত এবংশূল সংগ্রহ গৃহিশী কৃমি অর্শ শোথ অনলমান্ত্য অজীব চুন্দি তৃঞা দাহ ইত্যাদি রোগ নাশ হয়।

সালদাচহারি মোদক। শুণী মেথি জীরা যমানী এষাংপ্রতি ১৬ তোলা গব্যংপ্র ১ দের, চিনি ১ দের শুলফা চিতাইল পিপুলইল ক্ষজারা ধন্যা মৌরি জটামাংসী ছিফলা বিল্যমানী যমানী কর্ফল কৃত কাকড়াশ্লি বিভ্লস জিলাকত কণ্র লবন্দ জিকট লৌহত্যম অভ্রত্যম গুলঞ্বের পাল বালা মুখা জায়ফল শান্ত জার্তী সৈল্পর তালিশপাতা লোধছাল রক্তছদেন, এষাংপ্রতি ৪ মাধা লকল চুর্ন করিবে পাকার্থ শতস্থার রস ১ দের ৬ প্রা১ দের চিনির সহিত ও তোলা পরিমান মোদক বাজিনে অনুপান এক কিয়াউ-কোর শ্রহাতে সালসার বিলম্বি সংগ্রহ গৃহিণী নানা প্র-কার শ্রম অনলমান্য এই সকল রোগ দূর হয়।

কামাগি সন্দিপনমোদক। তিকটু তিফলা কুড় কর্মপ নাকড় শৃষ্ট ইন্দ্রমন বিড়ঙ্গ ধন্যা মুখা মৌরি জীরা ক্লফ-জীরা তিজাতক বন্যমানী লবক চঞি নাগেশার বচ বাকস হল বেগুণাইল চিডাইল জারক্য ফটিকারি বামনহাটিইল বরাকান্তাইল যমানী অভ্রতম শঠি বালা সৈন্ধন বিটল-বণ হিন্দ, এবা প্রতি ২ তোলা লৌহভ্যম ৪ ভোলা ভেউড়ি চুর্ন সকলের অর্থেক শুণ্ডী চুর্ন ২ সের এই সকলের বিগুণ চিনি পাক করিয়া ২ ভোলা পরিমাণ মোদক করিবেন অনুপান ধ্রু জল ভক্ষণ দিনজ্যা, ইংগতে চতুর্বেধ অজীন

আই বিধ শূল সাল্সার বিলম্বি কোঠবজ গুলাল আধান পাণ্ডু অম্পিত এই সকল রোগ নাশ হয়, আর দেহকান্তি, ও বল রাজি হয়, এই উষধ সেবন করাইয়া রোগীকে ঘৃত মাংসাদি গুরুপাক অব্য ভোজন করাইবেন।

রহৎপিপুল থণ্ড। ধন্যা জিকলা ত্রিকটু কুলথ কলাই জীরা ক্ষজারা ত্রিজাতক বিমদ এষা প্রতিত্ত হ তোলা এই সকল অব্য প্রত্যেকে স্কাচন, পিপুল চ্ন, সমর গব্য ঘৃত ৪ সের চিনি ৪ সের শতগুলির রস ২ সের গব্য কা ২ সের ঘৃতাদি অব্য ঘনীভূত পাক ছইলে পুর্কোজ অব্যের চুন সকল ইছাতে দিরা তাজু দারায় নাজিতেই ঔষধের মত ইইলে উহাতে ১ সের মর্মান্তি ই এমরপে মি আত করিয়া ঘৃত ভাণ্ডে উন্ধর রাখিবেন ভক্ষণ ১ তোলা অনুপান কপুর জল অথবা হথা কিয়া কেলে জল, ইহাতে সালসার বিলম্বিক কণ্ডু ত্রিদোয শূল অনুলপিত অক্লচি ব্যি কাস শ্বান এই সকল রোগ নাই হয়।

স্রাপি থপ্ত। সালিশুবাক ১ সের শুণ্ঠী ১ সের পাকার্য জল ৪ সের পাকের দ্বারায় জল শুক্ত হইলে এই তায়
চুর্ন করিবে পরে ক্রিকটু ক্রিকলা ধন্যা চত্ঃজাত শ্বেতচন্দন
রক্তচন্দন পোরাল বীল রামা জীরা জায়কল জয়ত্রী বংশলোনচ লৌহতম্ম জুটামাংগী লবল মোরি বঙ্গতম্ম কফল
অন্তত্ম পার্কাণ্ঠ পানিফল মুখা লোধছাল লৈয়ন্তমধু
শতমূলি এষা প্রতি ২ তোলা চুর্ব চিনি সকলের দ্বিগুণ
চিনি আর হক্ষ ইত্রস জল প্রত্যেকে ১ সের পাকশেষ
ইইলে ২ তোলা পরিমাণ মোদক বাহ্নিবেন জন্মপণন প্রা
তঃকালে কাঁচাছক্ষ সারহে নারিকেল জল ইহাতে সালসার
বিলম্বি আম্বাত অম্পিত্ত অম্বাল এই সকল রোগ নতী
হয় এবং এই উবধ দেবনে অগ্ন রাজ্ব বল ও দেহপুতি হয়।

ইতি সারকৌয়ভাং নালনার বিলম্বি চিকিৎনা

ক্ষম চিকিৎসা।

হরীতকী বয়ড়া আমলকী গুলঞ্চ বাসকছাল কটকী চিরাতা নিম্নছাল এযাংপ্রতি ২ মাধা ২০রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ বিড়ঙ্গ চূর্ব ২০ রতি মধু ২০ রতি দিয়া দেবন ক্রিবেন ইহাতে ক্রমি রোগ নাশ হয়।

মুব্টিযোগ। পালিতাপত রস ২ তোলা তাহাতে মধূ -৪০ রতি প্রক্ষেপ দিয়া স্বেন ক্ষম নাশ হয়।

যৃষ্টিযোগ'। .কেঁউমূলের রস ২ তোলায় মধু ৪০ রতি প্রক্ষেপ দিয়া দেবন করিবেন।

মুষ্টিযোগ। শাঞ্চিরস ২ তোলা উষ্ণ করিয়া তাহাতে মধু ৪০ রতি অনুপান থাইবেন।

বিড়ঙ্গচূর্ব ২ তোঁলা মধুতে গুলিয়া থাইবেন।

ু যুক্তিযোগ। তিতলাউ বীজ ২ ভোলা তক্রের সহিত পেষ্ণ করিয়া সেবন করিবেন।

বিজ্ঞ্বনৃত। হরীতকী আমলকী বয়ড়া বিজ্ঞ্ল এবাৎ প্রতি ১৬ পল পিপুল মূল চঞি চিতামূল শুণ্ঠ ী এবাংপ্রতি ৬ পল ২ তোলা ৬ মাধা বেল হাল দোণাছাল গান্তারিছাল পাক্ললছাল গণিয়ারিছাল সালপানি চাকুল্যা কন্টকারি গোহ্বরি ব্যাকুড়। এঘাৎপ্রতি ১তোলা ৬ মাঘা জল ৬৪দের শোষ ১৬ দের মৃত ৬২ পল কল্কার্থ সৈন্ধর ১৬ পল পাক দিজি হইলে ৮ পল চিনি প্রক্ষেপ মৃত পাকের প্রকার ঐ শোষ ক্রাথ বস্তে ছাকিয়া পাক পাতে চড়াইবেন তাহাতে উক্ত পরিমাণ মৃত ও সৈন্ধর দিবেন, পরে মৃত নির্দ্ধল হ-ইলে তাহাতে ৮ পল চিনি দিয়া পুনর্ধার কিঞ্ছিৎকাল পাকের ঘারায় মৃত নির্দ্ধাল হেইলেই পাক সিজি জানিবেন দেবন অন্ধতোলা পরিমাণ ভোজনের প্রক্ষ ইহাতে শরীরে কৃমি থাকিতে পারে না।

ইভি সারকৌয়তা ক্রমি অধিকার সমাপ্তঃ।

দর্পাৎ। মুফিযোগ। খর্জুর পত্রস লবন প্রক্ষেপ্। দিরা খাইবেন। মন্তকাদি পাচন।

মুথা, মূষিকপত্র ত্রিফলা দেবদার সঙ্গিনামূল এবাং-প্রতি ৩ মাষা পাকার্থ জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ বি ডঙ্গবীজ পলাশবীজ চুর্ব উভয়োঃ প্রতি পরিমাণ ৪ মাষা ইহাতে চিরজাত ক্রমি নাশ হয়।।

লাক্ষাদি চুর । লাহা ভেলা বেলশুঠা শ্বেত অং রাজিতা মূল ঝিরুকভন্ম অর্জুনফল ও অর্জুনফুল, বিড়ঙ্গ ধূনা গুণ্-গুল এষা প্রতি সমচূর্ব ভক্ষণ ৪ মাথা অন্যপান উফজল। ইহাতে ক্রমি নাশ হর।

বিড়ঙ্গাদি অটক। পলাশবীজ যমানী বনযমানী তি-ফলা এষাং সমভাগে যত তাহার অর্দ্ধেক বিড়ঙ্গ রীজ এই সকল জব্য চূর্ণ করিয়া উঞ্জলে সেবন করিবেন।

পিপুলাদি চুর্। পিপুল পিপুলমূল নৈন্তাব কৃষ্ণীরা
বচ চিতামূল তালিশপত নাগেশর এষাংপ্রতি ১৮ তোলা
সচল লবন ৫ তোলা মরীচ সোমরাজ শুণ্ঠী এষাংপ্রতি ৮
তোলা দাড়িয়ছাল চুর্ অর্চনের অমূরতেন চুর্ব ১ পোয়া
এই সকল দ্বেরের চুর্ব একত করিয়া এক পাতে রাখিবেন
ভন্দ ৮ মাঘা অনুপান উষ্ণলল ইহাতে কৃষ্ণি অর্শ গুলা
গৃহিণী ভগনদর আমশূল পাগু এই সকল নাশ হয়।

বিভ্রু ঘৃত। গব্যস্থত ৪ সৈর তিফলা ১২ সের দশমূল ২ পাল জল ৬৪ সের শেষ ১৬ সের এই সকল ক্কাথ মৃতে দিয়া এবং ১ সের সৈক্ষার দিয়া পাক করিবে ভক্ষণ ৮ মাধা অনুপান চিনি ৪ মাধা ইহাতে ক্ষমি শুল নইট করে।

ধুন্ত রাদি তৈল। শার্ষপ তৈল ৪ সের ধৃন্ত রাপত রস ১৬ সের কল্ক ধুন্ত রবীজ চুর্ব সের তৈলের সহিত এক তে পাক করিবে নিজ্জল হইলে পাক সিদ্ধ হয়। কিঞ্জিৎ উষ্ণ করিবেন এই তৈল মর্দন মাতেই ক্রমিনাশ হয়।

্ইতি দর্পণে ক্রমি অধিকার সমাপ্তঃ।

পাও কামলা হলীমকাধিকার।

ফনতিকাদি পাঁচন। হ্রীতকী আমলকী বয়ড়া গুলঞ বাসকছাল। এবাংপ্রতি ২০ রতি জ্ল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্রেপ মধু ৪ মাষা।

নবাস লৌহ। শুণ্ঠী পিপুল মরীচ হ্রীতকী বয়ড়া আমলকী মুথা বিড়ঙ্গ চিতামূল এবা প্রতি ১ তোলা লৌহ জীরা ১ তোলা গুঞ্জা পরিমাণ বটি অনুপান মধু।

অঞ্জন। ঘল্যদিয়ার পাতার রস অঞ্জন করিয়া চক্ষে দিবেন ইহাতে প্রাপ্ত জন্য চক্ষের বৈবর্ণতা নম্ট করে

चक्षन हिन्छा शोदी जामनकी এই তিন छवा स्वा हुर्भ कित्रिया जक्षन किति प्रतेश हिन्स है कित्र कित्र

পান্তু কামলা হলীমক এই তিন রোগের বিশেষ নি-দান নিরুপণ বৃহৎ এন্থে আছে কিন্তু এই তিন রোগের প্রতিকার ভিন্ন > চিকিৎনা না জানিলেও এক প্রকার চি-কিৎনায় তিন প্রকার রোগেই শান্তি হয়, কারণ তিনেতেই এক একেতেই তিন অভএব পারস্পরের ঔষধ পারস্পরে যোগ করিলেই পারস্পর রোগ নিয়্তি হয়।

পুনর্বা মন্ত্র। পুনর্বা য়ুল তেউ ডিমূল শুগী পিপুল
মরীচ বিড়ক দেবদারু চিতামূল কুড় হরীতকী বর্ডা আম
লকী হরিদ্রা দারুহরিদ্রা দন্তিমূল চঞি ইন্দ্রয়ব কটকী পি
পুল মূল মুথা এ্যাংপ্রতি ২ তোলা মন্ত্র ৮ তোলা গামুত্র
১ সের পাকের প্রকার। এক পাত্রে গৌমূত্র চড়াইয়া তাহাতে পুনর্নবাদি জব্য সকল মুক্র চূর্ণ করিয়া ও বজে চাঁকিয়া দিবেন এবং মন্তুরও তাহাতে দিবেন পরে পাক
করিতে২ যথন তাল পাকিয়া উঠিবে তথন চূলা হইতে
নামাইবেন, উষ্ধধুনার মত হুইলে মন্ত হয় জানিবেন ১

তোলা অথবা অন্তোলা ইহাতে পাণ্ডু উদরী শোথ শূল অর্শ গুলা ইত্যাদি রোগ নাশ হয়।

বজুবট মণ্ডুর। পিপুলয়ল ও চঞ্চিতা ওঠী মরীচ দেবদার হরীতকী বয়ড়া আমলকী বিড়ল মুথা এই সকল ডবা সম্দায়ে ৩ তোলা মণ্ডুর ৬ তোলা পুনর্নবা মণ্ডুরের ন্যায় পাক করিবেন সেবনাদি পুরুবৎ।

তিকত্মাদি লৌহ। শুজ মণ্ডুর ১ পল শব্যঘৃত ১ পল চিনি ১ পল মধু ১ পল শুঠী পিপুল ম্রীচ হ্রীতকী আ মলকী বয়ড়া মথা বিড়ঙ্গ চিতামূল কান্তিলোহ, এবাংপ্রতি ১ ভোলা পাকের প্রকার ঘৃতচিনি মণ্ডুর লৌহ পাকপাতে চড়াইয়া চিনির পাক কিঞ্ছিৎ শক্ত হইলে চুলী হইতে নামাইয়া শুঠ্যাদি অব্যের মুন্দ্র্র তাহাতে দিবে পরে মধু দিবেন তৎপরে তাড়ু দ্বারার নাড়িতে২ সন্দেশের পাকের ন্যায় কিঞ্চিৎ শক্ত হইলেই ঔষধ সিদ্ধি হয় দেবন ১০ রতি অনুপান মধু ৪০ রতি পথ্য ল্যুপাক জব্য।

শোথ শার্দি তৈল। তৈল ১৬ দের বিলুছাল দোণ!-ছাল গান্তারছাল পারুলছাল গণিয়ারিছাল সালপানী চার্ল্যা কণ্টিকারী গোহুরী ব্যাকুড়ী পিপুলমূল পুনর্বা মূল এষাংপ্রতি ২৭ ভোলা পাকার্থ জল ৩২ সের শেষ স্কার্থ ৮ সের গোমুত্র ১৬ সের শুদ্ধমূলা গুলঞ্ শুগুী পটোলপত্র নিষ্মূল বহুলামূল বেণামূল माजना यन হরীতকী পিপুল শুঠি বয়ড়া কুড় মুথা রামা বিছঙ্গ চঞি হরিজ লাক্তরিজা ধন্যা যবকার সাচিকার সমুজকেণা তেজপত দেবদার কৃষ্টীরা গজপিপুল বেলওঠা এবাং-প্রতি ৪ ভোলা তৈল পাকের প্রকার। পাকপাতে তৈল চড়াইয়া তাহাতে উক্ত কএক প্রকার কাথ এবং গোর্জ ১৬ সের আর শুক্ষমূলাদি এবা সকল ছেকিয়া দিয়া পাক कांद्ररवन। পাও যদন রম।

इसक् क्रम्भावदीत छन्छन ध्राभ्था । छाना

জল দিয়া চারি প্রহর থলে মর্দন করিয়া গুঞা পরিমাণ কটি। করিবেন অনুপান নিম্বছালের রস মধু।

পুনন্বা ভৈল। পুনন্বা ১০ পল কটু তৈল ৪ সের জল ৬৪ সের হরীতকী বরড়া আমলকী শুণ্ঠী দেবদার রেণুকা কুড় পুনন্বা যমানী রুফজীরা এলাইচ দারুচিনি প্রাকাণ্ঠ ভেজপত নামেশ্বর শুল্কা শুদ্ধলা মঞ্জিণা লোধ রায়া মুখা চাঞি বালা পিপুলমূল এই সকল অব্য প্রভাবে ২ ভোলা পাকের প্রকার তৈল হুচ্ছনা করিয়া পুনর্বার রাথ এবং উক্ত জব্যাদি দিয়া পাক করিবেন নির্দ্ধল হইলেই পাক দিজি ইহাতে পাগু কামলা ঘটিত শোথ ন্ট হয়।

প্রাণবলভ রস। রসগন্ধক কড়িভন্ম লৌহ তুঁতে হিঙ্গ হরীতকী বয়ড়া আমলকী মনসানিজের মূল যক্ষার তামু জয়পাল সোহাগার থই ভেউড়িয়ল এই সকল তব্য সম-ভাগে জয়পালবীজ পূর্ব্বোক্ত ক্রমে শোধন করিবেন পরে সকল তব্য ছাগ হল্ম দিয়া থলে অই প্রহর মর্দন করিবেন ২ রতি পারমাণ বটি জন্মপান মধু প্রাভঃকালে সেবন ক-গুব্য ইহাতে পাগু কামলা হলীমক কামলা ঘটিত গ্রীহা উদ্বি এই সকল রোগ নাশ হয়।

> ইতি সারকৌমুল্লাং পাণ্ডু কামলা হলীমকাদি সমাপ্তঃ।

मर्भगः।

পুনর্নবা পাচন। শ্বেত পুনর্নবা নিম্নছাল পটোলপত শুণ্ঠী চিরাতা গুল্পু দেবদার হরীতকী এযা প্রতি ২ মাঘা পাকার্য জল ১ নের শেষ ১ছটাক প্রক্ষেপ যবকার ২ মাঘা ইহাতে শোথ উদরি কান শূল শ্বান পাঞ্জুর এই নক্ন। রোগ নট্ট করে। পালুবজু বটি।

লোহমগুর ৯ সের চূর্ন করিরে পাকার্থ গোহত ৭°সের হুশীভূত হুইলে পঞ্চকোল মরীচ দেবদার তিফ্লা বিজ্ঞ মুখা এবাংপ্রীত ২৪ তোলা সকল চুর্করিয়া উহাতে দিয়া, মর্দন করিয়া ৮ মাধা পরিমাণ বটি করিবেন অনুপান কেন্ডত্যেররস পথ্য ঘোল। ইহাতে পাণ্ডু মন্দায়ি অক্লচি অর্শ কামলা শোথ উক্লস্তম্ভ হলীমক ক্রমি গ্লীহা উদরী গল রোল, এই সকল রোগ উপসম হয়।

নবাস লৌহ। তিকটু ত্তিকলা মুখা চিড়ক চিতামূল এষাংপ্রতি সমভাগে যত লৌহ মপ্তুর্ভ্যা তত সকল একত হুর্ণ করিবে ভক্ষণ ৪ মাখা অনুপান ঘৃত মধু লৌহদণ্ড দারা মর্দন ইহাতে ক্রমি অন্তার মন্দাগ্রি অক্রচি পাপ্তুকামলা এই সকল রোগ্মন্ট করে।

শোথারি মপ্তর। পুননবা হরীতকী বয়ড়া আমলকী শুণী পিপুল মরীচ বিড়ঙ্গ দেবদারু চিতামূল হরিছা দারু হরিছা বিশুণ লোহমপ্তর সকলের অই শুণ গোহুত্র ছারা পাক করিয়া রিশ্ব পাতে রাখিবে। অন্ব-পান কুলেখাডার রম। ইহাতে পাপ্তর শোথ উদরাজান শূল অশ কমি গুলু কামলা কাম হুর অরুচি এই সকল রোগ নই হয়।

পঞ্চামৃত পর্নটা। শোধিত পারা শোধিত গদ্ধক তামু ভন্ম অভ্রতন গুগুল এবাংপ্রতি ১ তোলা জয়পাল বীজ ৫ মাঘা দকল মর্দ্ধন করিয়া স্থত দারা পর্নটা করিবেন ৫ রতি পরিমাণ দেবন অনুপান কুলেখাডার রন। ইহাতে শোধ পোও, জীর্ণ জ্বর রীহা অপনয় হয়।

ত্রিকতাদি লৌহ। লৌহম্পুর ভন্ম গব্য হত চিনি মধু এবাংপ্রতি ৮ তোলা কান্তিলৌহ ভন্ম ত্রিকটু ত্রিকলা ত্রিমদ এবাংপ্রতি তোলা সকল চুর্ণ করিয়া লৌহপাত্রে লৌহনপ্তে. মর্দ্দন রৌজে ও শিশিরে এক দিবস রাখিবে ভক্ষণ ৪ মান্যু অনুপান হল্প ভোজনের সহিত ঔষধ তিনবার সেবন করি-বেন ইছাতে কামলা পাও হলীসক অম্লুপিত শূল পার্ন- শাসাশূল পঞ্চির কাস জ্বর প্রীহা অগ্রিমান্দ্য অজীন শোথ এই সকল নাশ হয়।

্পুননবা তৈল। পুননবা ১২।। দের পাকার্থ জল ৬৪ সের শেষ ১৬ সের কটু তৈল ৪ সের কলক মঞ্জিছা তিফলা তিকটু কুড় কাঁকড়াশ্লি ধন্যা কফল শঠী দেবদার প্রিয়ল, কফলারা যমানী লোধছাল তিজাতক নাগেশ্বর বচ চঞি চিতাহল পিপুলমূল শুল্ফা মথা পুরাত্র মূলা মুরামাৎসী রায়া পিছটিপোক গজপিপুল বীজ তাড় কহল মালপানী হল চিরাতা বালা রজ্চন্দন কটকী এষাংপ্রতি ২ তোলা সকল তব্য চূর্ব করিয়া তৈলে দিয়া পাক করিবে, ইছাতে সকল প্রকার শোথ কামলা পাগু হলীমুক জ্বর কাম শাস এই সকল নট করে এবং ধাতু ও বল রিজ করে।

উদরারি বটি। যমানী বিলযমানী রুফজীরা জয়পাল এষাংপ্রতি সমভাগ মনসাক্ষীরে মর্দন করিয়া ওরতি পারি-মাণ বটি বাজিবেন অনুপান উফজল, ইহারে সকল উদরি রোগ নাশ হয়।

ধাতু উদরারি। তামূভন্ম কাংশ্র ভন্ম কজ্ঞলী জয়পাল এষাংপ্রতি সমচূর্ব তেউড়িম্ল রসে ৩ দিবসে ৩বার ভাবনা ২ রতি পরিমাণ বটি অনুপান ত্রিফলার জল,ইছাতে কো-টোদরি নাশ হয়।

ইতি দর্পণে পাওু কমলাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ হলীমুক চিকিৎসা। হলীমুক রোগে তক্র পথ্য অবশ্য কর্ত্তব্য।

অগ্নি মুখ মণ্ডুর। লোহমণ্ডুর ভন্ম ১:সর পাকার্ছ গোমূল ৮:সর,পঞ্জোল দেবদার সৈন্ধব সাচিক্ষার সোহাগা
লিকটু লিফলা লিমদ বালা এবা প্রতি ৪ তোলা চুর্ন করিবে, পাকের প্রকার গোমুলের স্টুহত মণ্ডুর পাক করিয়া
মূন হইতে ভাহাতে এই স্কল্ অব্যের চুর্ন দিয়া মর্দ্দ ক-

রিয়া ৮ মাষা পরিমাণ বটি অন্মপান বুলেখাড়াররস ঔষধ্ সেবন ছুই সন্ধ্যা করিবে।

অমৃতার্ব মন্ত্র। গুলঞ্চেরপাল দন্ডিমূল চুর্ব ভেউড়িয়ল
চুর্ব তামুভক্ষ শোধিত হুর্নমাক্ষি কান্তিলোহভক্ষ এষাংপ্রতি
লমভাগ যত তাহার দিগুণ মন্ত্র, এই সকল জব্য চুর্ব করিয়া কেন্ডভেয়ের রসে ভাবনা গদন দিবেন ৪মাঘা পরিমাণ
বিটি অনুপান পুরাতন গুড় পুনর্নবা কাপ দশমূল কাথ,
ইহাতে হলীযুক শোথ কামলা পাগু জ্বর এই সকল রোগ
নাশ হয়।

উদ্ধ্যল্যাদি তৈল।

ভিলতিল ৪ দের মুর্জার্থ ৮ তোলা মঞ্জি পুরাতন শুক্ষমূলা নিষিন্ধা এষা প্রতি ১ পোয়া পাকার্থ জল ৬৪ দের
শেষ ১৬ দেরকল্ক পুরাতনহলা তিকটু শ্বেতপুননবায়ল কুড়
চিছাল রায়া সজিনাছাল চিরাতা বাসকহল ধ্যুরী বীজ
রক্তচন্দন মুথা শ্বেতস্রিয়া লোগছাল শ্যামালতা কুড় কক্লিস ধন্যা প্রিক্ল হব্য বচ এষাংপ্রতি ২ ভোলা চুর্ব তৈলে
দিরা পাক করিবে, এই তৈল মর্দ্দনে পাঞ্গোথ কামলা
হলীয়ুক কফ কাস জ্রে দাহ এই সকল পীড়া নাশ হয়,
এবং বল ও দেহ পুর্ফি হয়।

পঞ্চামতাদি লোই। লোই ভন্ম অভ্ৰত্ম তানুভন্ম ষ্ণ্ভন্ম শোধিত গন্ধক পারা তিকটু তিফলা তিমদী যাতক নাগে-শ্বর জীরা ক্ষজীরা শঠী দেবদারু যমানী ইরিজা দারুই-রিজা পিপুলয়ল বংশলোচন লবক জয়িত্রী জায়কল পালাশ বীজ কুড় কফল জ্যেত্র মধু দারুচিনি বেণায়ল শ্বেত-চন্দন জটামাংসী গুল্কা সৈন্ধব চঞি কাকড়াশৃঙ্গী চিকুড়-য়ল বামনহাটিয়ল এবা প্রতি সমভাগে যত লৌই মপুর ভন্ম তত সকল চুর্ণ করিবে মপুর পাকার্থ গোরুত্র ৪ সের শেষত পূন্র্বা ২ সের পাকার্থ জল ১৬সের শেষ ৪ সর পরে ক্রাথ ঘনীভূত ইইলে তাইছাতে চুর্ণ সকল এবং মধুমৃত দিয়া মর্দনকরিবে ভক্ষণ৪মাধা অনুপান কুলিথাড়ার রস ইহাতে

শোথ পান্ত উদরি কামলা প্রীহা গুলা হলীমক কফ জীর্ণ-জার মন্দাগি এই সকল রোগ নই করে, এবং বল বর্ণ ও দেহ পুষ্টি হয়।

ভক্রামৃত। শুক্ষ খেত পুনর্বা যত যবক্ষার চুর্ন তত, এই ছই জব্য ভক্ষ করিবে ভক্ষ হুল্য জিকটু জিকলা জিমদ লক্ষ তুল্য লৌহ মণ্ডুর এই লকল একজ করিয়া কেন্তত্যের রলে ভাবনা দিবে, ভক্ষণ ৪ মাধা অন্ধুপান ভক্র, পাথ্যতক্র ফুল্ম পুরাভন তণ্ডু লের অন্ন মংস্যের যূষ, এই ঔষধ সেবন করিলে ৪৫ দিন মান করিবেন না, এবং লবণ জল থাইবে না হরিজা ভৈল মাথিবে;ইহাতে পাণ্ডু শোধ হলীমক কা-মলা এই সকল রোগ নিবারণ করে।

বারিশোষিক চুব। জিকট্ জিফলা বরাকান্তা মূল এলা-ইচ গুড় হক তেজপত নাগেশ্বর দৈল্লব, এষাংপ্রতি সমভাগে তত মরীচ যবক্ষার তত সকল চুব করিয়া ৪ মাবা ভক্ষণ করিবে অন্ধান শুদ্ধ মূলা পুনর্বা ক্ষাথ, ইহাতে উদরি শোথ কামলা পাণ্ডু প্লীহা গুল্ম জ্বর দাহ হলীমূক এই স-কল রোগ নট্ট করে।।

তক্র মপ্তর। লবঙ্গ কঁকড়াশ্নি দেবদার চিরাতা চঞি চিতাহল জিকটু জিফলা মুখা কুড়কফল কালমেঘ, এযাং-প্রতি ২ মাষা আফিঙ্গ ৬ মাষা সকলের ভুলা লোহ মপ্তর ডক্ম লোহ ভুলা ভাঙ্গ বীজ, সকল চুর্ন করিয়া কেন্ডতার রসে মর্দন করিবে বদারান্তি পরিমাণ বটি, অনুপান কেন্ড-তাের রস ও যবজার ২ মাষা গুলিয়া থাইবে, পথা নির্দ্রল তক্র লবণ জল থাইতে নিষেধ ক্রমে ৪২দিন এই রপ বা ব-হার করিবে, এবং তৈল হরিছা মাথিবে আর দশ দিবস শন্তরে এক এক দিবস স্নান করিবে, ইহাতে পাণ্ডু কফ কাস অজীর্ন অভিনার গৃহিনী বিকার কামলা এই সকল রোগ নাশ হয়।

বৈজনাথ রদ। শোধিত পারা গুতোলা পজক পঞ্প:-

পঁটা হরিছা হ্র্ গৃহধুম ইউক হুর্ব এবাংপ্রতি ১ ভোলা ভাবনা, ভীমরাজয়ন জয়ভী রস শ্বেত অপরাজিতা রস বেগুলা
পত্র রম এবাংপ্রত্যেকে ১ বার শোধিত হরিতাল বঙ্গত্য
শোধিত শুন্সিবিষ থাপুর ভন্ম শোধিত হ্র্বেরাক্ষ কান্তিলোহ ভন্ম শোধিত শিলাজ গুলোধিত আফিঙ্গ এবাংপ্রতি
৪ মাবা এই সকল জব্য হুর্ব করিয়া ভাবনা দিবে, গুন্ত, রার
মূল রম আদার রম উভয় প্রতি তিন বার একত্রে পিগু করিয়া মহাউমীতে জাগাইবে বিজয়াদশমীতে সর্বপ পরিমাণ বটি বান্ধিবে সেবন এক সন্ধ্যা একবিংশতি বটি অন্থপান কর্জ্জলি ৪মাবাপিপুল চুর্ব৪মাবা উন্থোদক অর্দ্ধপোয়া
পথ্য জীবিত মৎস্যের যূব পুরাতন তগুলের অয় নির্জ্জল
দধি সান দ্বিনন্ধ্যা কাঁচা জল ও লবন বার্বে এই প্রকার ক্রম
এক মাম করিবে,ইহাতে সকল প্রকার শোথ গহিনী পাগু
কামলা নানা প্রকার বিষ্ম জ্বর সমস্ত হলীমুক মন্দায়ি
রোগ নিবারণ করে।

কপে তরু রসায়ণ। পারা গলক হিন্দুল শশুবিষ শিলা
জতু আকিন্স পিপুল গরল লোহত্য অভত্য বন্ধ্য তামু
ভ্যা স্থাত্য বাপ্তাত্য কাংশ্তত্য হরিতাল্ভ্য গোদন্তা
দে হাগা থাপর ভ্যা, এষা প্রাক্তি সমভাগে চুর্ণ করিয়া ভাবনা বেগুণ্যল রস ধৃন্তারায়ল রস শেতআকল রস এষাংপ্রতি ৬ দিবস থলে শুদ্ধ করিয়া মহাউমীতে জাগাইবে
বিজয়া দশমীতে সর্বপ পরিমাণ বটি বাজিবে সেবন একবিংশতি বটি অমুপান কজ্জলি পিপুল চুর্ণ উভয়োঃপ্রতি ৪
মাষা উষ্ণজল অর্পান কজ্জলি পিপুল চুর্ণ উভয়োঃপ্রতি ৪
মাষা উষ্ণজল অর্পায়া পথ্য এক সন্ধ্যা, স্নান দিসন্ধ্যা
এক মাস কাঁচাজল ও লবণ ব্যবহার করিবে না, ইহাতে
শোধ উদ্বি পাণ্ডু কাম সা হ্রীয়ক অইবিধ জ্বর পঞ্বিধ
কাস ইত্যাদি রোগ নাশ হয়।

বিষয়াদি চুর্ব। ভুগী ১ পোয়া সিদ্ধিপত্র ১পোয়া শো-

নার্থ গোর্থা ১ সের মরীচ মুথা গুল্ফা মৌরি, এযাং প্রতি তোলা সকল চুর্ণ করিয়া ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান জল।

ইতি দর্পণে হলীমূক চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

র্জপিত রোগে রোগাকে অবশ্যই ভাবনা দিবেন এবং ভেদক ঔষধ ঘারায় ভেদ করাইবেন ইহা না করাইলে ছুই বুক্ত বন্ধ হইয়া কুণ্ঠ কোগ প্রকাশ হইতে পারে।

ভাবনা। নিষপত একটা হাঁড়িতে দিয়া তাহাতে অর্জ হাঁড়ি জল দিবেন, পরে ঐ হাঁড়িতে দরা চাপা দিয়া বজ্ব লেপ দিবেন এ ে ঐ দরাতে রজ অলু ছ প্রবেশ হয় এনত ছিত্র করিবেন আর ঐ ছিড়ে শোলার ছিপি দিবেন, পরে এক প্রহর কাল জাল দিবেন জাল সমাপ্ত হইলে রোগীকে উচ্চ স্থানে বসাইরা তাহার নিমে ঐ হাঁড়ি বসাইবেন, পরে বন্দ্র দ্বারা রোগীকে বেইন করিয়া নরার হথের শোলা খুলিয়া দিলেন তাহাতে অত্যন্ত হর্ম হইবে ঐ ঘর্ম গাতে ।

ভেদ করাইবার প্রকার। চিরাভা ২ তোলা জল ৪পল যেশ ১ পল অতি স্ক্র চিরাতা চুর্ব ৪০ রাজ প্রক্রেপ দিয়া উফ্ থাকিতে রোগাকে পান করাইবেন ইহাতে যদি ভেদ না হর তবে তেউডিমূল ২ তোলা জল ৪ পল শেষ ১ পাল ভাহাতে ভেউড়ি স্ক্র চুর্ব ৪০ ব্রতি প্রক্রেপ দিয়া রো-গীকে পান করাইবেন, অথবা তেউড়িমূল ১ ভোলা চি-রাভা ১ ভালা জল ৪পল শেষ ১পল প্রক্রেপ বিটলবেণ চুর্ব ৪০ রভি উফ থাফিতে দেবন করাইবেন।

পারা ১ তোলা গন্ধক ১ তোলা কাঁচা চিনের সোহাগা '১ তোলা জয়পালবীজ ১ তোলা পুর্বোক্ত প্রকারে শোধন করিয়া দন্তিমূলের ক্কাথে ৪ প্রহর খলে,'মর্দন করিয়া ৪ গুঞ্জা পরিমাণ বটি করিবে অনুপান নির্দ্রল আদাররস ২তোলা যদি অত্যন্ত মল বন্ধ থাকে তবে পূর্ব্বোক্ত চিরাতাদির কা-থের যে কোন কাথ ঔষধ সেবনের পার রোগীকে পান ক-রাইবেন। তাহাতে আমঘটিত অথবা কেবল শুদ্ধ মল:যদি উদরে বন্ধ থাকে তবে তাহাও নির্গত হইবে।

রক্তপিত রোণের পথা। রক্তবর্ণ লালধান্যের খই চুর্ব করিয়া মধু এবং মৃত দ্বারায় লাড় বৎ করিয়া থাইবেন আর মুগ মম্বর ইহার যুব ছোলার দাউলের যুব আর উড়িধা-ন্যের তপ্তুলের অল্ল এবং রক্তবর্ব ধান্যের চাউলের অল্ল বন্য মুগ যব তপ্তুলের অল্ল এবং কোন্দোর চাউলের অল্ল যুযু পাক্ষির মাংস কপোত মাৎস শশাক্ষ মাংস হরিণ মাংস।

মৃষ্টিযোগ। বাকসপত রস ২'তোলা চিনি দিয়া থাই-বেন যদি শ্লেকা রদ্ধি থাকে তবে ঐ রস মধুর সহিত থাই-বেন এবং পঞ্জ জুমুর চুর্ন করিয়া২ তোলা মধু ৪০ রভির সহিত অবলেহ করিয়া থাইবেন।

গান্তারি চুর্ব ২ তোলা মধু ৪০ রতির সহিত অবলেহ দেবন করিবেন।

হরীতকী চুর্ব ভোলা মধু ৪০ রতির সহিত অবলেহ খাইবেন।

পকৃ খর্জনুর চুর্ব ২ তোলা মধু ৪০ রতির সহিত অবলেহ মূথ হইতে রক্ত নির্গত হইলে এই সকল মফিযোগ উপ-কারী হইবে।

নাদিকা হট্তে রজ্ঞাব নিবারণের মুঁটিযোগ।

ঘৃত দিয়া আমলকী ভাজিয় একাতালুতে প্রলেপ দি-বেন আর চিনির জলে চন্দ্ন মিশ্রিত করিয়া নাসিকার দ্বারা পান করিবেন।

এব ও জাক্ষারন হক্ষা মৃত ইক্ষান দাড়িয় পুষ্পোর রস অ-থবা দুর্কার রস এই প্রত্যেক রস সকলের নশ্য করিবেন। তবং দুর্কার রস ও ঘৃত এই ছই জ্যাব মিশ্রিত করিয় গাতে মর্দন করিবেন অথবা স্থত শতবার থেতি করিয়া গাতে লেপন করিবেন,এবং স্থীতল বায় দেবন করিবেন।

এলাদি বটিকা । এলাইচ বীজ তেজপত দারুচিনি এই তিন অব্য ৩ তোলা পিপুল ৪ তোলা চিনি ৮ তোলা যফিমধু ৮ তোলা পিওথজ্জুর ৮ তোলা আক্ষা ৮ তোলা এই সকল অব্য চুর্ণ করিয়া মধুর সহিত উত্তমরূপে মর্দ্দি করিয়া ২ তোলা পরিমান বটী করিবেন অনুপান মধু।

বাগান্ত। স্থৃত.৪ সের বাসকমূল ও পত্র এবং শাথা আর পুষ্প এযাংপ্রতি ১ সের জ্বল ১৬ সের শেষ ৪ সের ক-নক বাসকমূল চুর্ন ৪ পাল সকল একত্রে পাক করিয়া নি-ক্রেল হইলে পাক সিদ্ধি। এক তোলা কিয়া ছই তোগা পা-রিমানে সেবন করি:বন।

বুষাপ্ত খণ্ড। চিনি ১০০ পাল শুণ্ঠী ১ পাল পিপুল ১ পাল জীরা তেজপত্ত দারুচিনি এলাইচ মরীচ ধন্যা এষাং প্রতি ৪ পাল বীধা রহিত পুরাতন কুষাপ্ত শশু ১০০ পাল পুলরাতন কুষাপ্ত শশু ১০০ পাল পুলরাতন কুষাপ্ত শশু বুরুণি দ্বারা কুরিয়া বস্তের দ্বারা জল নিক্ত্যু-রিয়া লইবেক পারে নূতন পাক পাত্তের ঘ্রত চড়াইয়া মৃত্ত মধুর বর্ণের মন্ত হইলে কুষাপ্ত শশু ও জল এবং উক্ত চিনিইছাতে পাক করিবেন পাক ঘন ইইলে অগ্নি ইইতে নামাইবেন পারে শুণ্ঠ্যাদি অব্যের চুর্ণ উহাতে দিয়া তাড় দ্বারায় নাড়িতেই শীতল হইলে ২ সের মধু দিয়া উত্তমকপে মি-জিত হইলে যত্ন কুর্মক রাখিবেন সেবন ১ তোলা অথবা ২ তোলা বল্কা হক্ষ কিঞ্ছিৎ উক্ত থাকিতে পান করিবেন অরুপান মধু।

मर्भगः।

মুখ হইতে রক্তস্তাবের মু**ক্তিযোগ।** শুভাবলেহ। ফুল হ্রীতকী চুণ করিয়া বাদকপ্ত রেসে সপ্তবার ভাবনা দিবেন পরে শুফ করিয়া ৪ মা্যা পরিমাণ দেবন করিবেন অনুপান মধু।

নীলোৎপলাদি চূর। খ্রি সালুকফুল পঞ্চ পর্বটি প্রি রঙ্গুলোধছাল অর্জ্জনছাল রসাঞ্জন পাত্তকশর এযাংপ্রতি সমচূর ভক্ষণ ৪ নাধা অনুপোন মধু ২ নাধা চিনি ২ নাধা বাসক্রল ছাল ২ তোলা পাকার্থ জ্বল ১ সের শেষ ১ছ-টাক সকল একজে গুলিয়া সেবন করিবেন।

বাসাভানিশ। বাসকপত রস ৪ ভোলা ভানিশ চুর্ন ৪ সাধা মধু ৪ মাধা নিশ্রিত করিয়া পান করিবে। ইহাতে: কক পিড় কান সরভেদ অক্লচি নই করেন।

বালাদি। বাসকপাত যুস্ভার ন্যায় দথা করিয়া তাহার রস ৪ তোলা মধু ৪ মাঘা চিনি ৪ মাঘা একতে পান করিবে।

নাসিকা হইতে রক্তস্রাবের মুর্ফিবোগ।
দাড়িম্ব ফুলের রস শ্বেত থুকার রস নতা দিবে।
তথ্য মুখ ইইতে রক্ত নিবারণ ঔষধ।

শৃঙ্গার ভ্র বটি। কর্ষণ কুড় কাঁকড়াশৃঙ্গি কপূর বংশো লোচন লবজ ত্রিকট্ জটাগাংসী ভালিশপত্র নাগেশ্বর এলা ইচ গুড়বক তেজপত্র ধাতকীপুষ্পা ত্রিকলা বচ জায়কল জ-বিত্রী জ্যেষ্ঠ মধু যুখা এবাংপ্রতি সমচ্ব করিবে সকলের জ্ব ক্রেক অভ্রত্থম অন্ত্রের অর্কেক কজ্জলি এই সকল দ্রব্য একত্র করিয়া ভাবনা দিবে যুখা, বেগুপাত্রের রস সন্ধিনারস বা-সনহাটি ফুল রস জ্বপাল পত্র রস। এবাংপ্রত্যেকে এক দিবস পারে শুক্ষ করিয়া ও রতি পরিমাণ বটি বান্ধিবে জ্বপান সাচিপাণ রস মধু ইহাতে রক্ষণিত্ত কাস জ্বর যক্মা শ্বাস কাস উরুক্ত জ্বর দাহ সন্দাগ্রি'জ্বজচি স্বন্দজ কাস নিবারণ ও রক্তপ্রাব নাশ হয়।

তালিশাদি চুণ। তালিশপত 6িতাহল তিকটু কর্ফন । কুড় বচ কাঁকড়াশ্ঙ্গি যমানী আকা হরী হকী বাসকহল ক- িটকারিমূল চিমুর্মূল বংশলোচন ক্লমজীরা কপূরি চতুঃজাত এষাংপ্রতি সমভাগ চুর্ন করিবে ভক্ষণ ৪ মাধা অন্যপান মধু আদার রস ইহাতে রক্তপিত কাস জ্বর দাহ অগ্রি
মান্দ্য ক্ষরকাস এই সকল রৌগ নিবারণ করে।

তালিশাদিমোদক। তালিশপত ে তোলা মরীচ হ তোলা শুণ্ঠী ও তোলা পিপুল ৪ তোলা গুড়ৰক ৪ মাধা লোইচ ৮ মাধা বংশলোচন ১২ মাধা বচ ২ তোলা চিনি অন্ধনের এই সকল জবা চুৰ্ব করিবে মগু দারায় মোদক বা-লিবে ৪ মাধা পরিমাণ জন্ধ প্রাতে এবং নায়াংকালে অনুপান পঞ্কোল ক্ষাথ। ইকাতে কাদ শ্বান অক্রচি অগ্নি-মানন্য পাপু গৃহিণী জ্বর ছদি শূল এই সকল রোগ নইট হয়।

পুরাতন কুমাণ্ডের শশু শুক্ করিরা চুর্ব ১০ পল ৪ সের ঘৃতে ভঞ্জন করিরা ভাছাতে চিনি ১০ পল কুমাণ্ড রম ১৬ সের। পিপুল পিপুলম্ল জীরা শুগু । এলাইচ গুড় ছক তে জপত্র ধন্যা মরীচ এষা শুতি ২ পল চুর্ব কুমাণ্ড জলের মহিত পক্ক কুমাণ্ড ও চিনি ইহাতে ঐ শকল অব্যের চুর্ব প্রেম্প দিয়া পুনকার পাক করিবে নিক্ফেণ হইলে তাহাতে মধু ১৬ পল পিপুল নিকড় গুড় ছক তেজপত্র এলাইচ। এষা শুতি ৪ ভোলা চুর্ব দিয়া মর্দ্দন করিবে। সেবন দিমন্ত্রা ৮ মাষা পরিমাণ অনুপান খাঁড় ১ তোলা ধাত্রী-ফল ৪ মাষা কুমাণ্ড জল ১ পোয়াতে পেষ্ণ করিরা ভক্ষণ করিবে এই বে অনুপান লিখিলাম ইহা প্রাভঃকালে জানি বেন সায়ত্রে কীর ইক্রম পঞ্কোল ক্রাথ ও মরীচ চুর্ব এই সকলের সমান ইংগতে রক্তাপত্ত জ্বর দাহ হচ্ছুল কাম শ্রাম ছিদি ইত্যাদি পীড়া নাশ হয়।

ইতি দর্পণে রক্ত চিকিৎসা নমাপ্তঃ।

যক্ষাধিকার।

বাসকলোই। বাসকছাল ১৬ পল চিনি ৮ পল মৃত ২ পল পিপুল ২ পল মধু ৮ পল পাকের প্রকার,পাকপাতে চিনি চড়াইয়া অবলেহের উপযুক্ত হইলে বাসক ছাল চুর্ন ও মৃত তাহাতে দিয়া তাড় দ্বারায় নাড়িতে২ শীতল হইলে তাহাতে উক্ত মধূ দিয়া অবলেহ করিবেন সেবন ১ তোলা প্রিমাণ।

हन्तर्भामि रेडन।

তিল তৈল ৪ দের দ্ধিরমাত ১৬ দের মুক্লিলাছা ১৬ পাল জল ১৬ দের শেষ ৪ সের কল্ক রক্তচন্দন বালা লথী তেজপত্র কুড় জ্যৈত মধু শৈলজ পালকান্ত মঞ্জিতা সরল দেবদার্র শতী এলাইচ খাটাশী নাগেশ্বর শিলারস মুরামাংসী জটামাংসী কাঁকলা প্রিয়ক্ত মুথা হয়িছা দারুহয়িছা অনন্তমূল আমালতা কটকী লবক্ত অগুরু কুদ্ধুম গুড় ছক্ দারুচিনি লালুক। এষাংপ্রতি ২ তোলা তৈল পাকের প্রকার প্রথমত তৈল মুক্তা করিয়া কল্ক জব্য দিবেন পরে লাহার ক্লাথের সহিত পাক করিবেন কিঞ্জিৎ শেষ থা-কিতে দ্ধিরমাত দিবেন পরে নির্দ্ধল ইলেই পাক সিদ্ধি খাটাসি দিবার প্রকার দোলা যন্ত্র করিয়া তৈল খাটাসি পাক করিবেন চন্দন কুদ্ধুম একাক্ষী শিলারস লখী কপুর কন্তরী লভাকস্ত্রী এই সকল জব্য মুক্ষচুর্ণ করিয়া হৈলে দিবেন আর এই রোগে চহুর্মুগ সেবন করাইবেন।

রহদাসবিলেই.। বাসক ছাল ২ সের জল ১৬ সের শেষ
৪ সের চিনি ২ সের নাগেশ্বর পিপুল মরীচ বচ মুথা তেজ
পত্র এলাইচ দারুচিনি সৈন্ধব। এযাংপ্রতি ২ তোলা মধ্
অর্চদের পাকের প্রকার ১৬ সের জলে বাসকছাল ২ সের
সিদ্ধ করিয়া শেষ ৪ সের থাকিতে উজপ্রিমান চিনি পাক
করিয়া অবলেহের উপযুক্ত হইলে নাগেশ্বর প্রভৃতি জব্যের
স্ক্রাচ্ব পাক নামাইয়া দিবেন তাড়ুদ্বারায় নাড়িতে২ শী-

তল ইইলে অন্ধিনের মধুর সহিত মিল্লিত করিয়া রাখিবেন ওব্ধ দেবনের পার কিঞ্ছিৎ উষ্ণ ফ্রমপান ক্রিবেন।

রারাদি লোহ। রায়া তালিশপত কপূর খুলকুড়ি ভাল মনছাল শুষ্ঠী পিপুল মরীচ হরীতকী বয়ড়া আমলকী চিতামূল বিড়ঙ্গ মুখা এই সকল জব্যের সমভাগে যত লৌহ তত জলের দার! চারি প্রহর খলে মর্দন করিয়া গুঞ্জা পরি-মাণ বটি করিবেন অনুপান মধু ও ত্রিকটু চূর্ণ।

শৃঙ্গারান্দ্র। রুফান্দ্র ১৬ তোলা কপূর জয়িন্দ্রী বালা গঙ্গপিপুল তেজপত লবক জটামাংসী তালিশ-পত্র দারুচিনি নাগেশ্বর কুড় ধাইকুল শুজগন্ধক এষাংপ্রতি ১ তোলা পারা ৪ মাষা এই সকল জব্য স্ক্রছর্ব করিয়া জ-লের দ্বারা খলে মর্দন করিবেন ২ গুঞ্জা পরিমাণ বটি অন্ধ-পান আন্তপাণ ও আদার সহিত চর্কণ করিয়া থাইবেন পরে কিঞ্ছিৎ জলপান করিবেন অথবা আদা ও পানের রুসে মর্দন করিয়া সেবন করিবেন পথ্য মাংসের যুষ গব্য ঘুত ইত্যাদি।

মৃদাঙ্গ রস। পারা ১ তোলা কজ্জনী দারা জীন স্বর্ণ ১ তোলা শুদ্ধ মুজা ২ তোলা গল্পক ২ তোলা দোহাগা ২ তোলা এই সকল অব্য কাঞ্জি দিয়া খলে অই প্রহর মর্দন করিয়া ছায়াতে শুক্ষ করিবেন, অথবা রৌডে শুক্ষ করিবেন, পরে এক হাঁড়ির অর্জেক পর্যন্ত দৈল্পব লবণ চুণ দারা পূর্ণ করিয়া এক মৃত্তিকার কোটার ভিতরে ঐ ঔষধ পুরিয়া কো টার মুখ অতি শক্ত করিয়া লেপন করিবেন, পরে রৌডে শুক্ষ করিবেন, তৎপরে ঐ ঔষধের কোটা হাড়ির লবণের উপর রাখিয়া ঐ হাঁডির মুখে সরা ঢাকা দিয়া উভ্তমকপে লেপন করিবেন, তদনভর সাবধান হইয়া চারি প্রহর জাল দিবেন, পরে হাঁডি নামাইয়া শীত্ল হইলে ঔষধ বাহির ক্রিবেন, এই ঔষধ চুণ হইবে জানিবেন প্রিমাণ ৪ র্ভি শব্দান মরীচ চূর্ব ১০ রতি ঔষ্ধ দেবন করিয়া এক গু-ডিকা মুথে রাখিবেন।

গুডিকা প্রকার। প্রকাশ ১০ তোলা আর্ছ ছেঁচা করিয়া এক সের জলে পাক করিয়া দশ পল থাকিতে দেই জলে ২৬০ রতি পিপুলচ্ব এবং ঐ পরিমাণ মরীচ চ্ব আর বামনহাটিরপত্র চ্ব ১০ তোলা নি জ্জিল মধু ১০ তোলা করিবেন পরে ছারাতে শুস্ক করিবন, পথ্য গবাস্থত হুন্ধ তক্র ছাগমাংস কুম্মাণ্ড ডুমূর প্রিটাল গুল মানকচু।

ইতি শারকৌমুভাং যক্ষাধিকার নমাপ্তঃ।

मर्भगः।

ত্রোদশাঙ্গ পাচন। ধন্যা পিপুল শুণ্ঠী দশমূল এষাং প্রতি ২ মাষা পাকার্থ জল ১ সের শেষ ১ ছটাক প্রক্রেপ মধু ৪ মাষা।

পঞ্চশাঙ্গ পাচন। দশ্ল বাট্যালামূল রায়া কুজ দেবদার শুগুী এষাংপ্রতি ২মাঘা পাকার্থ জল ১দের শেষ ১ ছটাক প্রফেপ মধু।

অবলেহ। পিপুলরোয়া দ্রাক্ষা চিনি এই তিন জব্য অব লেহ করিবে।

যভান্সাবলেহ। বাসকমূল অশ্বগন্ধামূল পিপুলমূল চিনি মধু ঘৃত এই সকল জব্য সমভাগে অবলেহ করিবে।

বাসাবলেই। বাসকপত্ত রস ৪ সের চিনি ১ সের পিপুল রোয়া চূর্ব ১৬ তোলা গবাঘৃত ১৬ তোলা এই কয় জবা
ঘন করিয়া পাক করিবে তদনত্তর তাহাতে এক সের মধু
একত করিয়া অবলেই, ভাগুে রাখিবে ভক্ষণ ৮ মাধা অন্তপান বাসকমূল ছাল ২ তোলা পাকার্য জল ১ সের শেষ ১

ছটাক ইহাতে বাত যক্ষা কাদ শ্বাদ পার্য শূল হচ্ছ লরজ প্রভার এই দকল নট করে।

ছাগলাত হত। নপূংসক ছাগমাৎস ১২॥॰ দের পা-কার্ম জল ৬3 সের শেষ ১৬ সের গব্য হত ৪ সের কল্ক জিব নীয়গণ ১৬ খান প্রতি ১৭॥০ মাষা চূর্ণ করিয়া ঘৃত দিয়া পাক করিবে। অনুপান ছাগত্ব ছফ্ল ১ তোলা ইহাতে কাস স্থাস যক্ষা পাশ্ব শূল হৃচ্ছূল রক্ত পিত হুর অতিসার শোখ এই সকল পীডা শান্তি হয়।

চন্দনাদি তৈলা। তিলতেল ১৬সের দধিরমাত ৬৪ সের কাঁচালাহা ৮ সের জল ৬৪ সের পাক শেষ জল ১৬ সের কক্ল রক্তদনন বালা লখী জ্যেষ্ঠমধু শৈলজ পদ্মকান্ঠ ম-জিন্তা সলকান্ঠ দেবদার শঠা এলাইচখোলা নাগেশ্বরতে-জপত্র শিলাজতু মুরামাৎসী কাকুলি প্রিয়ন্ত্র যথা হরিজা দারহার্ত্রা মালতা চিরাতা কটকী লতা কন্তুরি বিমুদ্মুল লবন্ধ পিপুল কুরুম গুড়ত্বক বেণুক লালুকা এঘাংপ্রতি ৪ ভোলা চুর্ব করিয়া তৈলের সহিত পাক করিবে। ইহাতে অপসার জ্বর যুক্তা বিভূ উরক্ষত এই সকল নন্ট করে আর ধাতু ও বল হজি করে।

ইতি দর্পণে যক্ষাধিকার স্মাপ্তঃ।

কান মাতের চিকিৎনা।

কণ্টকারি পাচন। কণ্টকারী ২ তোলা জল ৩২ তোলা পাক শেষ ৮তোলা প্রক্ষেপ নৈন্ধব চূর্ব ২মাষা হিঙ্গ ৫রতি কিন্তু হিঙ্গ স্থতে ভর্জন করিয়া চূর্ব দিবেন।

মুফ্টিযোগ। বাসকপত রস ২ তোলা সধু ৪ মাধা প্র=

. एकश मित्री थोहेरवन।

হরীতকী মোদক। হরীতকী শুণ্ডী পিপুল মরীচ এই চারি জবা স্থাছন করিয়া সুমভাগে যত ইইবে পুরাতন গুড় তাহার দ্বিশ্ব লইয়া পাক করিবেন যথন মোদকের উপবৃক্ত পাক হইবে তথন ঐ নকল চুর্ন ইহাতে দিয়া চুলা হইতে নামাইবেন পরে ডাড় দারায় নাড়িতে২ শীতল হ-ইলে ১তোলা পরিমাণ বটি বাজিবেন প্রত্যহ প্রাতঃকালে দেবন করিবেন।

নামান্য কান। কিঞ্ছিৎঅসাধ্য হইলেতাহার মুন্তিযোগ ননছাল হরিতাল জলের সহিত ঘর্ষণ করিয়া কুলের পঞ্জ-পজে মাথাইয়া রৌজে শুন্ত করিবে পরে সেই পজ নকল চুর্ন করিয়া স্কল বস্তে চাঁকিয়া ১০ রতি অনুপান চুর্ন সেবন করিয়া ভদনন্তর ঘুই বলকের ঘুন্তা এক পোয়া তাহাতে কি-ঞিৎ মধু দিয়া থাইবেন, তাহাতে স্ত ঘুন্তা মাৎসাদি গুরু-পাক জব্য থাইতে পারিবেন কাঁচাজল পান কর্তব্য নহে, এই উষধ অভি বালক ও রজের সেবন নহে।

সমশর্করাছ্র । লবক ২ তোলা জায়কল ২ তোলা পিপুল ২ ভোলা মরীচ ৪ ভোলা শুগুী ৪ ভোলা এই সকল
অব্যের ছুর্বে যত হইবে তাহার সমান চিনি সকল একত্তে
উত্তমরূপে মিশ্রিত করিয়া এক কাঁচেরপাতে অথবা বাঁদের
চোক্ষায় রাখিবে, সেবন ১০ রতি পরিমাণ পরে শুগুী সুক্ষ
ছুর্ব ক্রম্মৎ তপ্ত ছুক্ষের একত করিয়া থাইবে।

ব্যান্ত্রী হরীতকী। কণ্টকারি ১০পল জল ৬৪সের হরীভকী ১০০পল প্রক্ষেপ শুণ্ঠী পিপুল মরীচ এবাংপ্রতি ১৬
তোলা দারুচিনি তেজপত এলাইচ নাগেশ্বর, এবাংপ্রতি
২ তোলা মধু ৬ পল, পাকের প্রকার রহৎ পাকপাতে ৬৪
সের জল দিয়া ভাহাতে কন্টকারি কিঞ্ছিৎ ছেচিয়া পুটলি
করিয়া দিবেন আর হরীতকীর বীজ ত্যাগ করিয়া ১.০পল
তাহা এক পুটুলি বন্ধ করিয়া পাক করিবেন শোষ ১৬ সের
থাকিবে ঐ জলে ১০০ পল পুরাতন গুড় পাক করিয়া অবলেহের উপবুক্ত হইলে পাক পাত্র চুলা হইতে নামাইবেন
পারে উক্ত শুণ্ঠাদি প্রত্যের চুলি ইহাতে দিয়া উত্তমনপে

মিশ্রিত করিবেন। সেবন ১ তোলা পরিমাণ পরে শুগী চুর্নের সহিত উষ্ণ হক্ষ পান করিবেন।

ষ্পেরসেত্র গুড়িকা। শোধিত রস ২ তোলা তাহাতে জয়ন্তী পত্র রস ১তোলা নিজ্জল আদার রস ১তোলা দিরা মর্দন করিতে করিতে ঘন হইলে তাহাতে জলস্থ কাঁকড়ার রস ১ তোলা গুড়কামাযেরপাতার রস ১ তোলা দিরা ৪ প্রহর রৌদ্রেও ৪ প্রহর শিশিরে রাখিবেন, শোধিত গল্পক ১ পল ইহাতে ভাবনা ভুঙ্গরাজের রস ১ তোলা পরে খলে মর্দন্ করিতে করিতে, ভুঙ্গরাজের রস শুদ্ধ হইলে এবং পারা অতি পরিকার হইলে কজ্জলী করিবে সেই কজ্জনীতে ১ পল ছাগ্রন্ধ দিয়া খল করিতেই বটি পাক হইনার মতহইলে ইরতি পরিমাণ বটি বান্ধিবে অনুপান ছাগ্রন্থ উবধ পান করিয়ে খাইতে হইবে তদনত্তর শুঠী চুর্বের সহিত উষ্ণ হল্পান করিবে, পথ্য ঘৃত মাংসাদি। ইতি সারকৌম্নাং কালাধিকার সমাপ্তঃ।

দর্পাণ । । উরুক্ষত চিকিৎসা।

কানড়াদিচুর্। কানড়গুল মরীচ মুথ। বচ জাক্ষা শত-মুলি তালিশপা তিক টু চিনি, এবা প্রতি সমচুর্ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান তিকটু জল।

রহন্তালিশাদি মোদক। তালিশপত ২ তোলা অভ্রহ্ম
৪ তোলা সরীচ ৬তোলা শুণ্ঠী ৮ তোলা পিপুল ১০ তোলা
বচ কুড় তিজাতক তিমদ এবা প্রতি প্রত্যেকে ১ তোলা
এই সকল অব্য সমভাগে চুর্ব করিয়া সকলের সমান চিনি
এবং মধু দিয়া মর্দন করিবেন স্থন্দর রূপো মর্দিত হইলে ৮
মাষা পরিমান মোদক করিবেন অন্মপান জল এই ঔষধ
সেবন দিসন্ত্র্যা করিবেন, ইহাতে পঞ্চ প্রকার কাম স্থান
রাজ্যক্ষা উরুক্ষত জ্বর দাহ তৃঞ্চা ভ্রম ছর্দি অ্রুচি অম্লপিত্ত অগ্রিমানন্য সংগ্রহগৃহিণী এই স্কল রোগ নাশ হয়।

অশ্বণকাদি অবলেহ। নাগরী অশ্বণকা তিকটু বংশ-লোচন তিজাতক পিশু থব্জুর তালিশপত্র নাগেশর জায়-কল লবক জরতী পিপুলয়ল পদাবীজ জীয়া রুফজীরা বেলন্ডেঠা থাতকীপুষ্প তিকলা থদিরকাঠ মধুরি মহাবরি বচ বালা অভ্রতম জটামাংসী বক্ষতম জ্যেন্তমধু শতমূলি ব্যাকৃড্বীজ আলকুষি বীজ তিমদ শঠী কপুর কর্জ্জলী স্ববর্ণ তম্ম এষাংপ্রতি সমভাগে চুর্ন করিবে সকলের দিগুণ চিনি পাকার্থ মহিষ্কে ৪ সর গব্য স্থত।।০ সের পাক সমাপ্তি হইলে ।০ সের মধু দিয়া উত্তম রূপে তালু ছারা নাড়িতে নাড়িতে নিজ্রিত ইইলে ঔষধ ভাল হইবে দমাবা পরিমানে মোদক বান্তিবে অনুপান ছাগ্রেশ্ব পথ্য ছাগমাংস ইহাতে উক্লক্ত রাজ্যক্তা জ্বর দাহ কামলা রক্ত পিত্ত অর্শ অগ্নিমান্দ্য গৃহিনী অতিসার রক্তাতিসার রক্ত কাস ক্ষকাশ এই সকল রোগ নাশ হয়।

বাদাখণ্ড। বাদকন্থল ১২॥। সের পাকার্থ জল ৬৪ সের শেষ ১৬ সের চিনি এক সের এই ক্লাথে চিনি পাক কার্য়া ঘন হইলে পরে পুরাভন বুদ্ধাণ্ড শশু চুর্ব কেসের খৃতে ভ-জ্জন করিয়া লইবেন এবং রক্তচন্দন তালিষপত্র বচ কুড় কুল হরীতকী ত্রিকটু ত্রিফলা ত্রিনদ ত্রিজাতক ডাক্ষা জ্যেন্ত স্থাক করিবেন পরে দেড়পোয়া মধু দিরা তাড়ু ধারায় নাড়িতে নাড়িতে মিশ্রিত হইলে ঘৃতভাণ্ডে, রাখিবেন ভক্ষণ ৮ মাষা অনুপান কুদ্মাণ্ড জল, এই উষধ অ্যান্ত বলহীন ব্যক্তিও শুক্ত হীণ ব্যক্তি ভক্ষণ করিবে ইহাতে রাজ্যক্মা বিকার বক্ত পিত্ত উক্তক্ষত সকল প্রকার কান সক্ষ প্রকার শোথ জ্বর নানা প্রকার অভিনার গৃহিণী এই সকল রোগ নাশ করে।

ইতি দৰ্পণে ,উৰুক্ষত চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

কাস চিকিৎসা।

পঞ্চলাদি পাচন। শালপানি চাকুল্যা ব্যাকুড কণ্ট-কারি গোক্রি, এষাং প্রতি ৪ মাষা পাকার্থ জল ১ সের শেষ এক ছটাক প্রক্ষেপ মধু ২ রতি।

শঠ্যাদিচু । গৰাশঠী কাঁকড়।শ্লি পিপুল বামনহাটী হল পুরাতন গুড় বাদক ছাল এবাংপ্রতি সমভাগে চুর্ন করিবে ভক্ষণ ৪মাবা অনুপান তিল তৈলে গুলিনা থাইবে, ইহাতে বাত কাদ নট করে।

-- বলাদিপাচন। বাট্যালায়ত্র কণ্টীকারী ব্যাকুড় বাদক যুল ডাক্ষ এবা প্রতি ৪ মাঘা পাক শেষ পূর্ববৎ প্রক্ষেপ মধু ৪ মাঘা চিনি ৪ মাঘা, ইহাতে পিতকাদ নট্ট করে।

ডাক্ষাভাবলেই। জাক্ষা কামলা পিগুণজ্জুর পিপুল ময়ীচ, এষা প্রতি সমভাগে তুর্ণ করিয়া ঘৃত মধু দ্বারায় অবলেই করিবে, ইহাতে পিত্তকাম মন্ত করে।

পুদ্ধরাদি। কুড় কর্মন ভাগীয়ল হাণ্ডী পিপুল, এবাং-প্রতি ৫ মাষা পাক শেষ পূর্বেৎ প্রক্ষেপ উষ্ট্রের সক-লের চূর্ব করিয়া ৪ মাঝা দিবেন, ইহাতে কক কাস নষ্ট্র করে। দশমূলাদি।

দশহুলের পাচন পরিমাণ ক্কাথে পিপুল চুর্ব ৪ মাধা দিয়া নেবন করিবেন ইহাতে কফ কাস নম্ট করে।

কটফলাদি পাচন। কর্ফল বুশা কেশ্যা থাকডা শরব-রাটি বামনহাটী মূল মুখা ধন্যা বচ হরীতকী কাঁকডাশৃঙ্গী যব পর্পটি ভণ্ডী দেবদারু মৃত, এষা প্রতি ১॥• মাষা পাক শেব পুরুবৎ প্রকেপা মধু ৪ ম:যা হিঙ্গু ১ রতি, ইহাতে বাত ক্ষ জন্য কাদ কণ্ঠরোগ শূল খাস হিক্কা জ্বর এই স-কল প্রতি নাশ করে।

দশমূলাদি ঘৃত। ঘৃত ৪ দের পাকার্থ দশমূল প্রতি ৩ পোয়া পাকার্থ জ্বল ৬৪ দের শেষ ১৬ দের, কক্ল কুড় বামনহাটী মূল শঠী বেলমূল দেবদারু ত্রিকটু হিঙ্গু, এযাং প্রতি ৪:ভালা চূর্ণ করিয়া ইহার সহিত একৰ করিৰে অন্য-পান চুগ্ধ।

কণ্টকারি মৃত ৪ সের কণ্টকারি রস ১৬ সের দশমূল পাত্র শাখা একতে ৮ সের জল ৬৪ সের শেষ ১৬ সের কক্ল বাট্যালামূল তিক্ট বিভঙ্গ শঠী চিতামূল সচল লবে যব-ক্লার বেলশুঠা আমলা কুড় বিছটিমূল ব্যাকুড়মূল হরীতকী যসানী দাড়িষকল ডাক্ষা খেতপুনর্বা মূল চঞি হরালভা অম্লবেত্দ কাঁকড়াশ্লী তালিশপত্র বামনহাটী হল রামা গোক্ষরি, এষাংপ্রতি ২ তোলা চুর্ব ক্রিবে ঔষধ সেবন দ্বিসন্ত্র্যা পরিমাণ এক ভোলা, ইহাতে সকল কাদ শ্বাদ হিক্লা নাশ হয়।

রায়াদি লৌছ রায়। তালিশপত কপূর থুলকুড়িনূল শিলাজতু তিকটু তিকলা তিখদ, এষা প্রতি ৪ মাধা সর্ব তুল্য লৌহভন্ম নধুতে মর্দন করিয়া ১ মাধা পরিমাণ বটি বাজিবে অনুপান মধু। ইহাতে সকল উপত্রের সংযুক্ত কাস হারভঙ্গ কয়কাস ইত্যাদি সকল নাশ হয়।

া বাসাদি চুব। বাসকম্ল ছাল বালা মথা গুলঞ্চেরছাল শুগী ধাতকীপুষ্প আতইচ বেলগুঠা অভ্ৰত্ম ক্লফজীরা ক-কল কুড় জায়কল হিন্দ লবঙ্গ দোহাগা বচ গুড়ত্বক এলাইচ বীজ মরীচ বামনহাটীমূল, এষাংপ্রতি ১ তোলা সকল চুর্ব করিয়া একত্রে পোষণ করিবে ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান ছাগ হঠ্ম কুল্লাগুলল মধু, ইহাতে স্থাস কাস বিষম জ্বর পঞ্জ-কাস ইত্যাদি রোগ নট করে এবং আগ্রিজি হয় ও বল আর দেহ পৃষ্টি করে।

কককেশরি রস। কর্ফার কুড কাঁকডাশৃঙ্গী রস তালি-পত্র কজ্জলী এ সকলের সমান ত্রিকটু চুর্ন দকল চুর্ন একত্র করিয়া স্থবনি পত্র সরে ও দিবস ভাবনা দিবে মটরাক্তি বটি অমুপান আদার রস মধু।

কাসমংহার বটি। ভাষা কি পারা গলক জয়পাল রুমা-

জন দোহাগা আফিক শ্লি কুঁচিলা, এই সকল অব্য শো-ধন করিবে, বচ চিতামূল তালিশপত নিম্ববীল তিকটু তি ফলা এই সকল অব্য সমভাগে চুব করিয়া বেগুণা পত রুমে ভাবনা দিয়া গুঞ্জাক্তি বটি করিবেন অনুপান আদা ও পানের রুম, ইহাতে সকল প্রকার কাস বিকার স্থ প্রকার শূল সকল বাত নানা প্রকার অতিসার অম্ল পিত সকল স্থা প্রকার শোথ এই সকলরোগ নফ হয় এবং দেহ পুটি অগ্নি ইজি ও উত্তম রূপ অক্লিচি নফ হয়।

রুদেন্দ্রবিদা। পারা গল্পক অভিতম লোইভাম তমুভাম হরিতাল শৃক্ষি মনগোলা। ধৃত্রবীজ এই সকল শোধিত করিয়া সকল ভসা প্রতি ২ তোলাতে যত হইবে তাহার সমান মরীচচুর্ব, ভাবনা জায়কল রাথ জয়ন্তীপত রস চি-ভায়ল রস মানদণ্ড রস ঘঁটু পাতার রস নিদিক্ষিকা রস ঘোডাসিজ পত্র রস দন্তিমুল বেগুণাপত রস আদার রস সাচিপানের রস, এবাংপ্রতি এক দিবস, সার্হপ পারমান বটি অনুপান, মধু, ইহাতে সকল প্রকার কাস খাস কাস প্রক দন্ত কাস ঘোরজ্বর ভল্লা অগ্রিমান্দ্য ইত্যাদির রোগ নাশ হয়।

ইতি দৰ্পণে কাস চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

হিকা চিকিৎসা।

চন্দনাদি তৈল প্রভৃতি কাস রোগ উজ যে যে তৈল আছে তাহা শরীরে মর্দন করিয়া অগ্নির উত্তাপ গ্রহণ ক-রিলে এবংলবণের পুটলি করিয়া ব্রহ্মতালুতে তাপ দিলে আর নিশ্বাস কিঞ্ছিৎ কাল রোধ করিলে এবং কোন কপে রোগীকে চিন্তাযুক্ত করাইলে ও শীতল জল পান করাইলে এবং মনোহর বাক্য কহিলে আর যাহাতে শোকোৎপত্তি হয়, কিয়া প্রস্রাব অধিক হয় এনত কোন উধ্বাদি দিবেন অর্থাৎ বায়ু উর্জাত হইয়া হিক্কা হয়, অধোবায়ু হইলে প্রপ্রাব হয়, তাহাতে হিক্কা নট হয়, আর জ্যেষ্ঠ মধু চূর্ণ মধু সং--যোগ করিয়া নশু দিবেন, এবং শ্বেত সর্বপ পিপুল চূর্ণ ক-রিয়া নশু দিবেন, আর পিপুল চূর্ণ পুরাত্ম গুড়ের সহিত নশু দিবেন।

যুক্তিযোগ। পিপুল আমলকী শুণ্ঠী চূর্ব সমভাগ এবং স্থৃত মধু চিনি সমভাগ এই ছয় দ্রব্য মিলিত করিয়া মুখে রাখিলে হিকা নিবারণ হয়।

ইতি সারকৌমভাং হিক্কাধিকার সমাপ্তঃ।

শ্বাস রোগের চিকিৎনা।

চন্দনাদি তৈল মৰ্দ্দন করিয়া বড় লৌছ একথান অগ্রির ন্যায় উত্তপ্ত করিয়া উভয় কক্ষে উভয় ছত্তে এব করের উভয় পূর্চে তাপ দিবেন, আরু কন্ঠ কুপে লৌছ পালা উত্তপ্ত ক-রিয়া পুনঃ২ তাপ দিবেন।

য়ফিযোগ। পুরাতন গুড় সর্বপ তৈল সমভাগ মিশ্রিত করিয়া সেবন করিলে খান নত হয়।

পাচন। বিল্ছাল নোণাছাল গান্তারিছাল পারুলছাল গণিরারিছাল শালপানি চাকুল্যা কণ্টিকারি গোছরী ব্যাকুড, এযাংপ্রতি ১৬ রতি জ্বল ৪ পল শেষ ১ পল
কাপড়ে ছাঁকিয়া তাহাতে পুরাতন গুড় ৪ মাষা প্রক্ষেপ
দিয়া ঈষউফ সেবন করাইবেন, আর কুল্থা কলাই অগুরু
কণ্টকারি এযাংপ্রতি জ্বল ৪পল শেষ ১পল কাপড়ে ছাকিয়া কুড় স্ক্র চুর্ন করিয়া ৪রতি প্রক্ষেপ দিয়া দেবন করাইবেন, ইহাতে খাস হিক্কা নিবারণ হয়।

পুচ্ছাবলেই। ময়ূরপুচ্ছ ভক্ষ ৪০ রতি মধু ৪০ রতি মি-ব্রিত করিয়া দেবন করিলে খাল ন্ট-ইর কিন্ত বালকের প্রতি বিশেষ উপকার ইয়। ্ৰিশিপুচ্ছ ভন্ম করিবার বিধি, মৃত্তিকা পাতের মধ্যে দিয়া ভাষার মধ্য রুদ্ধ করিয়া জাল দিবেন, সেই পাত অগ্নি ভুল্য হইলেই ভন্ম হয়।

্ ভাগীগুড়। বামনহাটির হল ১০০ পল বিল্ছাল সোণার ছাল গাস্তারির ছাল পাক্ষলপাল গণিয়ারিছাল শালপানী চাকুল্যা কণ্টিকারি গোহ্মরী ব্যাকুড়, এষাংপ্রতি ১০ পল আন্ত হরীতকী ১০০ পল জল ১৪৪ দের শেষ ৩৬ দের পু-রাতন গুড় ১০০ প্রাল গুড় অবলেহের উপযুক্ত পাক হইলে শুগু পিপুল মরিচ দাক্ষচিনি তেজপত্র এলাইচ এই সকল ফুল্ম চুর্ণ করিয়া এবাংপ্রতি ১ পল যবক্ষার ৪ জোলা গুড় ৪ তোলা সেবন করিবেন কিন্তু হরীতকীচুর্ণ সম্ভব পরে সেবন করিয়া শশ্চাৎ গুড় ৪ তোলা ভক্ষণ করিতে হয়।

গুড় পাক করিবার বিধি। রুছৎ এক পাতে ১৪৪ সের জল দিয়া বামনহাটির মূল ১০০পল ছেটিয়া এবং বিলু ছালাদি ১০ জব্য ১০ পল করিয়া ছেটিয়া তাহাতে দিবেন আর আন্ত হরীতকী বত্রের পুটল করিয়া তাহাতে দিবেন, পরে জাল দিয়া ৩৬ সের জল থাকিতে বস্ত্রে ছাকিয়া জল পুনর্বার জালে চড়াইয়া ঐ শত পল গুড় তাহাতে দিয়া অবলেহের ন্যায় পাক ছইলে নামাইয়া গুঠী আদিচুর্ব সকল তাহাতে দিবেন এবং যবক্ষার চারি তোলা দিয়া ভাডু ছারা নাড়িতেই শীতল হইলে মধু ১৬ পল দিবেন, পথ্য থকা মাংসাদি মৎস্তের যূষ ঈষ্টক থাকিতে দেবন করিবে।

মুর্যাবর্ত্ত রস। পারা ২ তোলা গন্ধক ৪ তোলা ঘৃতকুমারীর রসে ১ প্রহর খলে মাড়িয়া তামুপাত্রে ঐ ২ তোলা
পারা গন্ধক মৃতকুর্মারীর রসে মাথিয়া শুক্ত হইলে মৃতিকার
কৌটাতে যন্ত্রপুর্বক রাথিয়া কোটা উত্তমনপে বন্ধ করিয়া
বালির হাঁড়ির মধ্যে রাথিয়া হাঁজির মুথ বন্ধ করিয়া চারি
প্রহর জাল দিয়া পরে হাঁড়ি শীতল হইলে কোটা বাহির
করিয়া সেই তামুপাতে চুর্ব দিয়া ২ রতি ম্ধুদিয়া মাড়িয়া

তাহাতে বাসকপতের রস সম্ভব পর দিয়া সেবন করিবেন পরে রাখালসশারমূল দেবদার শুণ্ঠী পিপুল মরীচ চূর্ সমভাগ এবং চিনি মিলিত করিয়া সাধ্যামুরপ সেবন ক-রিবেন। পথ্য স্থত ছক্ষ মাংসাদি এবং অতিশয় রিক বা রুক্ষ তব্য গ্রহণ করিবেন না।

ইতি সারকৌয়স্তাং শ্বাসাধিকার সমাপ্তঃ।

ষ্রভঙ্গ চিকিৎসা। ..

স্বরভঙ্গ তিন প্রকার হয় বাতজ পিত্ত কফণ।

বাতজে মুটিযোগ। সৈন্ধব চ্র্ন সংযুক্ত তিল তৈল হিত কারী হয়, পিতজ মধু যুক্ত ঘৃত উপকারী হয়, কফজে তেঁ-ভুল ছালাদি কার শুণ্ঠী পিপুল মরীচ এই সকল জব্য এ-ফুল করিয়া সেবন করিবেন।

কল্যাণ মৃত। হরিতা কুড় বচ পিপুল শুণী রুঞ্জীরা বন্যমানী জ্যেত্তমধু নৈজ্ব এই দক্ত জব্ব ফুল্ল চূর্ব করিয়া দমভাগে একত করিয়া ঘৃতের দহিত জবলেহ করিয়া থাই বেন, স্বরভঙ্গে তপ্তজল কিঞ্ছিফ লন্ন ব্যঞ্জনাদি ভোজন জার হিমকলে স্থান ও তাহা পান কর্ত্তব্য নহে।

ব্রহ্মীয়ত। ঘৃত ৪ সের ব্রহ্মীরস ১৬ সের কল্কার্থ হ-রিড়া জাতিপুপ্প রুড় রহতী হরীতকী এই সকল জব্য প্র-ভেকে ১ পল পিপুল বিড়ক্স সৈন্ধব চিনি বচ এই সকল প্রত্যেকে ২ তোলা ঘৃত পাকের প্রকার, উত্তম পাকপাতে ব্রহ্মীরস ১৬ সের দিরা তাহাতে হরিজাদি চারি জব্য ছে-চিয়া এবং জাতিপুপ্প না ছেচিয়া একত্রে এক পুটলি বাজিয়া পাক করিলে ৪ সের ব্রহ্মীরস থাকিতে পুটলি নিক্স-ডিয়া রস লইবেক পরে ঘৃতের সহিত পাক্ষের্বেন যথন রস নিঃশেষ প্রায় হইবে তথন পিপুলাদি জব্যের ক্ষর্রব্ ও সৈন্ধব এবং চিনি এই সকল জব্য প্রভেগ্নে ২ তোলা ক্ষতে দিরা নাজিতে ২ যথন শীতল হইবে তথন অন্য পাতে

রাখিবেন। সেবন ১ তোলা অন্তপান উষ্ণ হক্ষ এবং হার ভঙ্গে ৰক্ষান্তক লৌহ সেবন বিধি আছে এই উষধ স্থানান্তরে পাইবেন।

ইতি সারকৌমুভাং স্বরভঙ্গ চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

অলুচি চিকিৎসা।

मुखित्यां । मार्क्सानि मुथा अनाष्ट्रि धन्ता अहे नकन দ্রা ফুলচুর্ন করিয়া মুখে রাথিলে অরুচি নট হর এবং মুখা আমলকী দারুচিনি সমভাগে হুক্মচূর্ণ করিয়া সর্বাদা হথে রাখিবে আর, দারুচিনি দেবদারু আমলকী পিপুল চঞি এই করেক জব্যের স্থকাচুর্ব সমভাগে মুখে রাখিবে কফের ক্রতা ব্যতিরেকে অরুচি হয় না আর যদি চিকিৎ সার দৌষে নানা প্রকার বিরস সামগ্রী ভোজনদারা অরুচি জয়ে ভবে রোগীকে শীতল সামগ্রী ভোজন করাইবেন কিন্তু কফ জন্য অরুচিতে শীতল এব্য ভোজন নিষেধ, কফ স্বত্বে নানা প্রকার তিক্ত ক্যায় ঔষধ দারা যদ্যুগি হয় তবে কাট থোলার রক্তরর্ব ধানোর থই করিয়া তাহাকে চুর্ব করিকে সেই চুর্ণ মিছরির র**সে পাক করিয়া তাহাতে মরীচু**ধ-ন্যার চাউল এলাইচ কুন্ধুম নাগেশ্বর পুষ্প এই সকল ড-ব্যের চুৰ পিয়া সদ্যন্ত গ্রার্ড দ্বারায় লাজু বাল্ধিবেন পারে রোগীকে খাওয়াইবেন। ক্যায়ন অরুচিতে গৃহজাত উত্তম তক্র জীরার কোড়নে সম্ভন্ন করিয়া খাইবে আর মৌরলা মাছের ঘূষে আদার রদ এবং আমরুলের রদ দিয়া থাইবে ভো**জ**নান্তর কণ্ঠ রবাসিত জল পান করিবে।

মোদক। মবের হক্ষ চ্ব চিনি কিয়া মিছ্রির রসে পাক করিয়া তাহাতে লবক জায়ফল জয়িতী দারু চিনি কপুর শুগুী পিপুল মরীচ যমানী মহুরি ধন্যা এলাইচ অপ্প ভাজা মেথি জীরা এই সকল দ্রু চুর্ব করিয়া মোদক কুরিবেন মোদক পাকের প্রকার, শুজুবর্গ চিনি কিয়া মি- ছরি তাহাতে সম্ভব মত জল দিয়া নূতন পাতে পাক করিয়া জলের চতুথা শের একাংশ থাকিতে তাহাতে যব
চূর্ণ দিয়া মোদক পাকের মত হইলে পাক নামাইয়া উজ
অব্য সকলের চূর্ণ তাহাতে দিবেন চিনি কিয়া মিছরি ১°
শের কাঁচা যব চূর্ণ আধনের লবকাদি অব্যের প্রত্যেক ৫০০
রতি দিয়া তাডুর দারা নাড়িতে২ লাডু বান্ধিবারমত হইলে
বান্ধিবেন স্থ্নেব্য মত রোগীকে ভোজন করিতে দিবেন।

আমলকী চূর্ব। মটকা তেতুল চুর্ব সমভাগে মিলিত। করিয়া থাইবেন অথবা ঐ ছুই চুর্বের দহিত সৈন্ধ্রব চুর্ব মি-লিত করিয়া সেবন ক্রিবেন কিয়া মিছরি চুর্ব দিবেন।

ইতি অক্লচি চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

অথ ছৰ্দ্দি চিকিৎসা।

শেতচন্দন জল দিয়া ঘর্ষণ করিয়া ২ তোলা আমলকীর রস ৪ তোলা মধু ৪ মাষা মিলিত করিয়া খাইবেন খেতচন্দন বেণামূল বালা শুগুী বাসকছাল এই সকল অব্যের
স্কল্পচুর্ন সমভাগে চালুয়ানি এবং মধু দিরা খাইবেন অথবা
ঐ সকল জন্য চালুয়ানি দিরা বাটিয়া মধুর সহিত সেবন করিবেন, ভাজামুগ ২ তোলা জল ৪ পল শেষ ১ পল খই
চুর্ন ৪ মাষা দাজচিনি ৪ মাষা দিয়া খাইবে হরীতকী চুর্ন
২ তোলা মধুর সহিত মিল্লিত করিয়া খাইবেন ক্ষেত্রপাপড়া ২ তোলা ৪ পল জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া ১ পল
খাকিতে ৪ মাষা মধু প্রক্ষেপ দিয়া উফ থাকিতে খাইবে
আমন্ত্রা বেলশুঠা উভয়োঃ প্রতি ১ তোলা জ্বান্ত পল শেষ
১ পল মধু ৪ মাষা প্রক্ষেপ দিয়া খাইবেন।

এলাচাদি চূর্। এলাইচ লবক নাগেশ্বর ফুল কুলআন টিব্ল শ্ব্য খই প্রিয়ক্ষু মুখা রক্তচন্দন পিপুল এই সকল জব্য শুমভাগ স্কাচ্ব একতে ক্রিয়া মধু এবং চিনি তাংগতে দিয়া মাতগুড়ের মত চাটিয়া থাইবেন। স্থান্ধি ভব্যের ভ্রাণ লইবেন।

रें जिल्ला मार्थ । कि कि ना नमार्थः।

অথ তৃষ্ণ চিকিৎসা।

পদকার্থবলেই। ঘৃত ৪ সের কল্কার্থ পদ্মকার্থ গুল্পু নিম্বছাল ধন্যা রক্তচন্দ্র এই পাঁচ জব্য প্রত্যেকে ১ পল ৩ মাষা ২ রকি জল ১৬নের শেষ কল্কার্থ পলকার্ছ ১পল ২ তোলা ২ মাষা '২ রতি গুলঞ্চ পুল ২ তোলা ২ মাষা ২ রতিনিষ্**ছাল ১ পল ২** তোলা ২ মাষা ২ রতি ধন্যা ১ পল ২ তোলা ২ মাধা ২ রতি রক্তচন্দন ১ পল ২ তোলা ২ মাধা ২ রতি পাকের প্রকার ক্রাথ ডব্য ১৬ সের জল শেষ ৪ সের কল্ক জব্য সকল শেষ ৪ সের ক্রাথে সিদ্ধ ক-রিয়া শেষ ১ সের থাকিবে তাহা ৪:সর ঘতের সহিত পাক করিবে আর তৃঞা বিশেষে সুশীতল জল দারা থইমণ্ড ক-রিয়া মধুর সহিত থাইরে থই সিদ্ধ করিয়া মও থাইবে না আর তৃষ্টত মধু গণ্ড য ধারণ করিবে অর্থাৎ স্কৃত্তে মধু আর সমান শীতল জল একতে লইয়া খাইবে। খই চুর্ব ২ তোলা মধু ৪ মাবা পক্ত গাস্তারি ছাল চূর্ব ২:ভালা ৪ মাবা ক্ষাধুর সহিত থাইলে ভৃষ্ণা নিবারণ হয়। দাড়িয় রস কিয়া আমলকীর রূদ অথবা আমরুলের রূদ মুথের উপরে লে-পৰ করিলে পিপাসা দুর হয়।

ইতি সারকৌয়স্তাং ভৃষ্ণধিক্রি সমাপ্তঃ।

वश युक्ति थिकाता

মুচ্ছ হিইলে অত্যে নাড়ী পরীক্ষা করিয়া বোধ করি-বেন যদি বায় প্রবল থাকে ভবে বায় নিবারক বিষ্ণু ভৈ-ল্যুদি,মঝাকে মর্দন ক্রাইবেন তাঁহা করাইলে যদি শীগ্র মুচ্ছা না যায় তবে স্কাঙ্গে শীতল জল-দিবেন তাহাতে বায়ুদমন হইয়া মুচ্ছা দূর হয়।

প্রছাতে পিত প্রকোপ বোধ ছইলে পিত নিবারক গুড়চ্যাদি তৈল মর্দন করাইবেন অথবা গুলঞ্চের রস মর্দন কিয়া পটোলপত্র রস সর্বাঙ্গে মাথাইবেন অথবা রক্তচন্দন ঘর্ষণ করিয়া মর্দন করাইবেন মুচ্ছা কিঞ্চিত দূর ছইলে ঘন চন্দনাদির ক্রাথ খাইতে দিবেন এবং পটোলপত্রের রস সেবন করাইবেন এই সকল প্রকর্প করিলে পিত জন্য মুচ্ছা দূর হয়।

আর মৃষ্ট্ তে যদি ককের প্রবলতা বোধ হয় তবে কফ নিবারক দশযুলাদি তৈল মর্দন ও সিদ্ধিরপত্র ভালিয়া হুল চূর্ণ করিয়া সর্বাঙ্গে ঘর্যণ অথবা ভালা শঠির স্থল চূর্ণ কিয়া ভালা হরিতা স্থলচ্র্ণ সর্বাঙ্গে ঘর্ষণ এই সকল প্রকার করা-ইলে রোগীর কফ জন্য মুর্জ্বা নিবারণ হয়।

ুধুস্তুর ভক্কের হুর্ভাতে। ১% ক্রীটাল আদা আমরুলের বুদ এই দকল হিতকারী হয়।

ইতি সারকৌয়ভাৎ মূচ্ছাধিকারঃ সমাপ্তঃ।

অথ দাহ চিকিৎনা।

দাহ হইলে পিন্ত জ্বরের যে সকল পাচনাদি আছে, তাহা পান করাইবেন এবং রাঙ্গা নারিকেলরে মুখ কাটিয়া তাহার ভিতরে ইক্ গুড় পূর্ণ ক'রয়া খাইতে দিবেন এবং চিনির পানাতে ধন্যার চাউল বাটিয়া দিবেন আর গুলপ্পের ক্কাথ অথবা ক্ষেত্রপাবড়ার ক্কাথ মধু দিয়া পান করিবেন আর মুগের দাল ভিজা বাডাস্থার লহিত খাইবেন এই সকল প্রকার ক্রিয়াভে দাহ নি নরণ হয় রোগে অত্যন্ত শীতক্রিয়া উচিত নহে।

ইতি দারকৌয়ভাৎ দাহাধিকার সমগুঃ।

অথ উন্মাদাধিকার।

উন্মাদ হইলে শীতল অব্যু ভোজন ও ভেদক ঔষধ দ্বা-রায় ভেদ করাইবেন পথ্য যব চুর্ব ও গোধুম চুর্ব সিজ ক-রিয়া দিবেন আর গাভী দোহন করিবা মাত্র দেই হুগু ঈর্ষ ছফ থাকিতে পান, শত ধৌত ঘৃত এবং পুরাতন ঘৃত শ-রীরে মর্দন, ছাগমাংস কছপেমাৎস পটোল পুরাতন কু-আও বাস্ত্ৰকশাক পল্তা হিঞাশাক শুশুনি কলয়ী চাঁ-পানটিয়া হৃষ্টি জল উটের মূত্র এবং গর্দ্ধ সূত্র শীতল না-রিকেল জল শতমূলি রস মিছরির সহিত এই সকল জব্য পথ্য করাইবেন ঔষধ সোনাজারা চতুমূ্থ প্রভৃতি আতা আনারস কত্বেল দাড়িয় কাঁঠাল এই সকল অব্য ভোজন এবং কটু তৈল সর্বাঙ্গে মর্দ্দন করাইয়া বন্ধন করিয়া রৌজে শয়ন করাইয়া কট্ ভৈলের নশু দিবেন, শুগী পিপুল ম-तीर रिक्र रेमकार केर्हाक भित्रीयरीख एतकत्रक्षवीख स्थठ সর্বপ এই সকল দ্রব্য সমভাগে গোমূতে পেষণ করিয়া শ-রীরে মর্দন, আর দশবৎসরের ঘৃত মর্দন করাইয়া এবং ভোজন করাইয়া নির্জ্জন স্থানে শয়ন করাইবেন কিয়া কো-কিলের মাংস ভোজন ফরাইায়া নিব্বাত স্থানে শয়ন করা-ইবেন,মধু খেভ বাট্যালার রস সমভাগ একত করিয়া খা-ইবে, ব্ৰহ্মীরস ৪ মাধা কুড় চুর্ব ২ মাধা মধু ছই মাধা একত ুক্রিয়া পান করিবে, কুমাওরুস চিনি কিয়া মিছিরর সহিত अकल कब्रिया (मयन, वरहत्र काथ व्यथवा वालात्र काथ थाहरव এষাং কল্যাণ ইত মহাকল্যাণ হত চৈত্ৰ ঘৃত নারায়ণ তৈল মহা নারায়ণ তৈল আর ভূতাদি সঙ্গ হেতু যে উন্মাদ হয় তাহা নিবারণকরা ভূত বিস্তাবিদ্যুক্তি দ্বারায় কওব্য এবং · পিপুল মরীচু সৈত্মৰ মধু গোরোচনা এই স**ৰল** জব্য সম-ভাগে মধু দিবেন।

কল্যাণ ঘৃত্র রাখালস্পার মূল হরীতকী আমলকী ব-যুড়া রেণুকা দেবদার প্রলবালুক সালপানী মুখা হুরগ পারকা হরিতা দারুহরিতা অন্ত্রমূল ভামালতা পিয়ঙ্গু নীলেৎপল এলাইচ দন্তিমূল মঞ্জিগা দাড়িষ্বীন্ধ নাগেশ্বর ফুল তালিশপত -রহতী মালতীফুল বিড়ঙ্গ চাবুল্যা কুড় রক্তব্যুদ্দন পালকার্ছ, এই সকল কল্ক ভাব্য প্রত্যেকে ২ ভোলা মৃত ৬২ পাল জল ১৬ দের, ঘৃত পাকপ্রকার কল্ক ভাব্য সকল ছেঁচিয়া ১৬ দের জলে পাক করিয়া ৪ দের থা-কিতে ঘৃত্রের সহিত পাক করিয়া নির্দ্ধন করিবে।

ক্ষীরকল্যাণ ঘৃত। কল্যাণ মৃতের কল্ক এবা সকলে ১৬ সের জল দিয়া শেষ ৪ সের থাকে ইহাতে ৮ সের জ্বল দিয়া ৪ সের ক্কাথ থাকিবে এবং মৃতের সমান এক দিয়া ক্কাথের সহিত্মত পাক করিবেন, এই বিশেষ।

মহাকল্যাণ মৃত। ক্লাথার্থ শালপানি তুরগ পাতৃকা হরিদ্রা দারুহরিদ্রা অনস্তম্ন শ্রানালতা প্রিয়ঙ্গু নীলোৎপল
এলাইচ মঞ্জি দিন্ত দাড়িয় নাগেশ্বর তালিশপত রহতী
জাতিপুষ্প বিভঙ্গ চাকুল্যা কুড় রক্তচন্দন পালকাঠ এই স
কল প্রত্যেকে ৬ পল ৬ মাষা ম রতি জল ৬৪ দের মৃত ৩২
পল আর একবার প্রসব ইইয়াছে এমত সবং সাগালীর হক্ষ
১৬সের কল্কার্থ চাকুল্যা বনমায়কলাই বনমুগ কাকোলী
আলবুশীমূল ঋষিবক ঋজিভেদ এই সকল অব্য প্রত্যেক
১পল লইবেন পাকের প্রকার। রহৎ পাকণাত্রে ৬৪ দেরু
জল দ্রিয়া কাথ অব্য দিজ ইইলে ১৬ দের থাকিবে এ১৬দের
কৃথে কল ক জন্য দকল সিজ করিয়া শেষ্ম দের থাকিতে
মৃত্রে মহিত পাক করিয়া নির্দ্রেল হইলে পাক সিজ
হয় ব্রে রোগীকে থাইতে এবং মর্দ্রন করিতে দিবেন।

চৈত্ৰ ঘৃত। কাথাৰ্থ কণ্টিকারি রহছি সালপানি চা-কুল্যা গোহুরি শ্রীকলছাল নোনাছাল পার্কলছাল গণিয়ারি ছাব রামা এরগুমূল তেউড়ি বাট্যালা মূর্কা শতস্থলী এই দুকল দুবা প্রত্যেকে ২ পল স্থান, ৬৪ সের শেষ ১৬ সের রুত ৪ দের কল্কার্থ রাথালসনা রহতী বয়ড়া আমলকী রেণুকা দেবদার এলবালুকা সালপানী তুরগ পাওকা হ-রিদু দারুহরিদা অনন্তমূল আমালতা প্রিয়ঙ্গু নীলোৎপূল এলাইচ মিজিটা দন্তি দাড়িয় নাগেশ্বর তালিশ পত্র রহতী জাতিকুল বিড়ঙ্গ চাকুল্যা বুল রক্তচন্দন পদ্মকার্চ এই স-কল দুন্য ২ তোলা ২ মাবা ৪ রতি, মৃত্ত পাকের প্রকার, ১৬ সর ক্রাথে কলক দুব্য সকল ছেঁচিয়া দিয়া মধ্যম রপে জাল দিয়া শেষ ৪ সের থাকিবে তাহার সহিত মৃত্ত পাক করিয়া নিজ্জল হইলে পাক সিদ্ধ হয়।

শিব'ঘৃত। মৃত ৪ দের জ্ঞা ৮ দের সালপানী চাকুলা।
কণিটকারি গোক্ষরি ব্যাকুড় বেলছাল সোনাছাল গান্তারি
ছাল পারুলি ছাল গণিরারি ছাল, এযাংপ্রতি ৫ পল
কাথার্থ জল ৬৪দের শেষ ১৬ দের নগুংসক শৃগালের মাংস
৫০ পল জল ৬৪ সেরের সহিত ২২ দিনে ২২বার পাক করিরা ১৬ দের কাথ থাকিবে এই ছই কাথ একতা ঘৃতের মন
হিত পাক হইবে এবংরেশ ও কাথের সহিত পাক হইবে
জল নিঃশেষ হইলে পাক নিদ্ধ হয় এই মৃত থাইতে এবং
মর্দ্দন করিতে হয়।

শিবাঘৃত প্রাকের অন্য প্রকার। দশসুল এবং কল্ক ব্রার চৌষা উ দের জলে পাক করিয়া শেষ ১৬ দের এবং মাৎ দের কাথ ১৬ দের একত করিয়া ঘৃতের সহিত পাক করিতে হয়, কল্ক দুব্য জ্যেন্তমপু মজিকাকুড় রজ্চলন পদ্মকার্থ হরীতকী বয়ড়া আমলকী রহতী তুরগ পাদুকা বিভঙ্গ দাভিষ্ব ফল দন্তি দেবদারু রেণুকা ভালিশপত না-গেশ্বর আমালতা রাখালসদারমূল সালপানী প্রিয়ঙ্গ মাণ্ লভী পুল্প বিকলা নীলোইপল ইরিনা দারুহরিদা অনন্ত মূল মেদ এলাইচ এলবালুকা চাকুল্যা এই সকল দুব্য প্র-ত্যেকে ২ তোলা পাকের অন্য প্রকার মথা উক্ত মসলায় ১৬ সের কাথে মাংস পাক করিয়া ৪ সের যে কাথ থাকিবে তাহার সহিত মৃত পাকু করিবে।

ইতি দারকৌমুতাং উন্মাদাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ অপাত্মর চিকিৎসা।

মুক্তিযোগ। গোমূত রাইসর্যা সজিনা ছাল এই তিন দুবোর পুম দিবেন, বচচুর্ ১ তোলা ৪০ রতি মধুর সহিত খাইবে।

পুরাতন কুমাও রস ৮:তালা জ্যেষ্ঠ নধু ২:তালা ব্রহ্মী-রস ২ তোলা মধু ২তোলার সাহত মিল্লিত করিয়া খাইবে ব্রহ্মীয়ত, পুরাতন মৃত্ত গের ব্রহ্মীর রস ১ সের কল্কার্থ বচ ২পল ১ তোলা ২ মাধা ৭ রতি কুড ও বালা উক্ত পরি-মানে লইবেন,পাকের প্রকার সকল একত্রে পাক করিয়া ব্রহ্মীর রস নিংশেষ হইলে পাক সিদ্ধ হয় ইহাতে অপসার রোগ নই হয়।

ইতি দারকৌমুতাৎ অপন্মার চিকিৎনা সমাপ্তঃ।

অথ ছদিত বায় চিকিৎসা

বাট্যালা যুব। সালপানি চাবুল্যা কণ্ঠীকারি গোহুরি
ব্যাকুড বাট্যালা এই সকল দুব্য প্রত্যেকে.২ মাধা ৭ রতি
পাক প্রকার সালপান্যাদি ৬ দুব্য কুচা করিয়া ১পল হ ক্ষের সহিত পাক করিয়া চড়চড়ির ন্যায় ইইলে তাহাতে গুলের জল দিয়া পাক করিবেন মুখনেব্য মত জল থাকিতে নামাইয়া সেবন করিবেন এবং ঐ ৬ দুব্য বাটিয়া খাইবেন, কিঞ্ছিৎকাল বিল্যে নবনীতের সহিত্যাধকলাই বাটিয়া লাড়ুর মত করিয়া থাইবেন।

মুষ্টিযোগ। বিলুছাল নোনাছাল সান্তারি ছাল পারুল। ছাল গণিয়ারি ছাল সালপানি চাকুল্যা কণ্ঠীকারি গো-স্থারি ব্যাকুড়, এই সকল দুব্যর রুপ প্রত্যেকে ১০ ভোলা ওক ১..ভোলা এই ২০ ভোলা এক**ত্রে পাক করিয়া ১৫ ভোলা** থাকিতে দেবন করিবেন।

পাচন। সালপানি চাকুল্যা কণ্ঠীকারি গোল্ধরি ব্যা-কৃড় এবাংপ্রতি ৩২ রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ সিছরি কিয়া চিনি ৪০ রতি বেলছাল সোনাছাল গান্তারি ছাল পারুলছাল গণিয়ারি ছাল সালপানি চাকুল্যা কণ্ট-কারি গোল্থরি ব্যাক্ড এষাংপ্রতি ১৬ রতি জল ২পল শেষ ১ পাল প্রক্ষেপ ভিনি কিয়া মিছরি ৪০ রতি।

অথ গৃতিনি বায়ুর চিকিৎসা।

মাষকলাই বাট্যালা। আমলুকী মূল রায়া এরঙা হল অশ্বগদ্ধা এরগুভিদ এই সকল তাব্য প্রত্যেকে ২ মাষা ও রভি জল ৪পল শেষ ১ পল প্রক্রেপ হিঙ্গু চুর্ব এবং সৈল্পব চুর্ব ৪০ রভি এই ঐশব পক্ষাঘাতেও দেওয়া যায়।

বেলছাল সোণাছাল গাস্তারিছাল গণিয়ারিছাল পা-কলছাল সালপানি চাকুল্যা কণ্টকারি গোকুরি ব্যাকুড় এযাৎপ্রতি সর্বতি জল ৪পল শেষ ১পল ঈষত্ব্য থাকিতে ৪০ রতি এরগুংতৈল দিরা খাইবেন।

হরীতকী বচ রান্না সৈদ্ধব বন্যওল, এষাংপ্রতি ৬২ রতি জিল ৪ পাল শোষ ১ পাল প্রক্ষেপ ঘৃত ৪° রতি ভাপ্প উষণ শোষকিতে খাইবিন।

এই হ্দীতক্যাদি পঞ্চ জব্যের ঔষধ গৃহিনীবায়ু রোগে লিখিত হইয়াও অপতালক বায়ু রোগেও যোগ করিবেন।

বিলুছাল সোণাছাল গাস্তারি ছাল পারুলছাল গণিয়ারিছাল সালপানি চাকুল্যা কন্ট্কারি গোক্ষরি ব্যাকুড়
বাট্যালা রামা গুলঞ্চ, এবাংপ্রতি ১০ রতি জল ৪ পল
শেষ ১ পল প্রক্ষেপ সৈন্ধ্রব লবণ চুর্ন ৪ রতি জলপ তপ্ত
থাকতে থাইবেন।

(50)

ি বিলুছাল সোণাছাল গাস্তারিছাল পারুলছাল গণিরারিছাল সালপানি চাকুল্যা কন্টকারি গোছার ব্যাকুড়, এবাং প্রতি জল ৪ পল শেব ১ পল, অনুপান নির্দ্ধল দেক্যালকা পত্রস ২ তোলা ঈষহক থাকিতে থাইবেন, যদি কটিদেশ বেদনা থাকে তবে শুঠী ২তোলা জল ৪পল শেষ ১ পল ইহাতে এরগু তৈল ৪ মাষা দিয়া অপ্পত্রপ্ত থাকিতে থাইবে।

তিদোষরী গুণ্গুল। আতইচ অশ্বননা হবুৰ গুলঞ্জ শত-মূলি গোন্ধরিবীজ বীরভাক বীজ রামা সলুড়া শগুটি ঘমানী ভূগুটি এবাংপ্রতি ১ তোলা মহিষাক্ষি গুণ্গুল সকলের সমান মৃত্ত পল।

অথ গুণ্ল পাকের প্রকার।

গুণ্ণল গতোলা মিদ্ধ করিয়া পরে পৌত করিয়া লইবে
তদনত্তর রৌডে শুফ করিবে এই রূপে শোধন করিয়া পরে
লৌহ কড়াতে ঘৃতের সহিত পাক করিতে করিতে মোহনভোগের ন্যার হইলে শীঘ্র নামাইয়াঐ সকল জব্যের ফুল্
চুর্ণ তাহাতে দিয়া যে পর্যান্ত উত্তম রূপে মিশ্রিত না হয়
সেই পর্যান্ত ভাড়ু দিয়া নাড়িবে.নেবন ১০০রাত পরিমান
কিঞ্ছিৎকাল পরে জল্প উষ্ণ হয়া পান করিবে, পাথা হয়
মানকচু পটোল ছয়ুর ইত্যাদি, ইহাতে স্কল বাঙ্
নাই হয়।

ছাগলাদি ঘৃত।

নপুংসক ছাগমাংস বেলছাল সোণাছাল গান্তারিছাল গণিয়ারিছাল সালপানি চাকুল্যা কণ্ঠীকারি গোল্ছরি ব্যা-কুড় বাট্যালা, এষাংপ্রতি ১০০ পল এই সকল প্রভ্যেক বস্তুর প্রতি ক্রাথার্থ জল ৬৪ সর শেষ ১৮ সের মৃত ১৬ সের ডুক্স ১৬ সের শত্মলিরস ১৬ সের কল্কার্থ জীবন্তি জ্যেই-মধু দ্রাক্ষা কাকোলী ক্ষীরকাকে লী নীলোৎপল ম্থা রজ্চনদন রাম্য সালপানি চাকুল্যা আমালতা অনভন্তন মেদ মহামেদ কুড় জীবক ঋষিবক শঠী দারুহ্রিতা প্রি-রঙ্গ হরীতকী বর্ডা আমলকী তগর পাহকা তালিশপত পদ্মকাষ্ঠ এলাইচ তেজপত্ৰ শতমূলী নাগেশ্বর জাতিপুষ্প ধন্যা মঞ্জিষ্ঠা দাড়িয় দেবদারু এলবালুকা রেণুকা বিজ্ঞ জীরা এষাংপ্রতি ৪ তোলা প্রক্ষেপ চিনি ১৬ পল পাকের প্রকার, প্রথমত, মাংলের ক্কাথ করিয়া বেলছালের ক্কাথ ক রিবে পরে ঐ মাংদের ক্রাথের সহিত একতে পাক করিয়া কিঞিৎ শেষ থাকিতে দোণা ছালের ক্লাথ এইৰূপ পর পার ক্রমে দশম্লাদি ক্রাথ করিয়া মাংল ক্রাথের সহিত ক্রমে ক্রমে পাক করিয়া মাংস ক্কাথ ১৬ দেরের কিঞিৎ অধিক থাকিতে উক্ত পরিমাণ মৃত ১% ও শতমূলি রস এই চারি **দ্রব্য এক রহৎ পাকপা**ত্রে লইয়া পাক করাতে সকলরস নিঃশেষ হইলে ঘৃত না দাইয়া বস্তে চাঁকিবে পরে জীবন্ধি প্রভৃতি জব্যের ফুলচূৰ মৃতে দিয়া তাড় দারায় নাড়িতে নাড়িতে শীতল প্রায় হটলে ১৬ পল চিনি প্রফেপ দিয়া ঘুত যত্ন পূর্বেক রাখিবেন সেবন ৫ তেলা পরিমাণ এবং শ্রীরে মর্দন করিবেন, পাথ্য পূব্যবং কিন্তু গৃহিনী বাত ভিন্ন ব'য়ুরোগে যবছুর্ণ প্রকার ভেদ করিয়া পথ্য দিবেন আর পঙ্গাত ভিন্ন অন্য বায়ু রোগে রুক্ষ ভব্য পথ্য বিধি নহে, বাত্তন্ত বাতে ঐ শুন্তিত হত্তে ক্রুক স্বেদ করিবেন ोव ९ क्रक नस्य निरंदन बांत कलाग्रंग हुन शोहरू निरंदन এই ঘৃত পূর্ণ মাতা করিতে অশক্ত হইলে অর্ক কিয়া পাদ কি অটভাগের একভাগ করিলেও গুণের নূন্যতা হইবে না।

নকুলাদি ঘৃত। নকুল মাংস ১৬ সের কাথার্থ জল ৬৪ সের শেষ ৪:সর বেলছাল সোনাছাল গাস্তারিছাল গণিয়ারি ছাল পারুল ছাল সালপানি চাকুল্যা কণ্ঠীকারি গোকুরি ব্যাকুড়, এষাংপ্রতি ১ লপ ৪ তোলা ৭॥০ সাধা মাষকলাই ১৬ পল বাট্যালা ১৬ পল পাকার্থ জল প্রত্যেকে ১৬ সের শেষ ৪ সের মৃত ৪ সের হুগা ৪ সের শতমূলি রস ৪ সের ক- ল্কার্থ জীবক ঋষিবক মেদ মহামেদ ঋজির্জি বন্য কলাই বন্য মগ কাকোলী কীরকাকোলী কীরান্ত জ্যেন্ত মধু এলা-ইচ দারুচিনি তেজপত্র শুণ্ঠী পিপুল মরীচ হরীতকী ব্রড়া আমলকী মুখা অনন্ত মূল এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ২ তোলা, ঘৃত পাকের প্রকার, প্রথমতঃ ৬৪ দের জলে নকুলাংসাসজ করিয়া ৬৪সের শেষ থাকিতে নামাইবে পরে দশমূলাদির ক্রাথ করিয়ে পরে মাণ্লের ক্রাথে কিঞ্জিৎ শেষ থাকিতে মাবকলাই ও বাট্যালার ক্রাথ ক্রমে ক্রংথ ক্রিছেৎ শেষ থাকিতে মাবকলাই ও বাট্যালার ক্রাথ ক্রমে ক্রমে মাণ্লের ক্রাথের সহিত কিঞ্জিৎ অধিক থাকিতে ঘৃত ৮ক্ষ ও শতমূলির রস একত্রে পাক করিয়া সমুদায় রস নিঃশেষ ইইলে ঘৃত নামাইবে তদ্বতর জীবক আদি জ্বেরর স্ক্রাচুর্ব ইহাতে দিয়া নাভিতে নাড়িতে শীতল হইলে উত্বম পাতে যত্ন প্রক্রবং।

ষশপবিকু তৈল। তিল তৈল ৪ সের দ্বা ১৬ সের কল্কার্থ সালপানি চাকুল্যা বাট্যালা গোহুরি এরপ্তামূল রংভী কণ্ঠীকারি নাটা করঞ্জ শতমূলী শঠী, এযাংপ্রতি ১ পল এবং প্রাচীন বৈদ্যের মতে শতমূলীর রস সমান দেওয়া বিধি।

অথ পাকের প্রকার।

তৈল মূর্ছ্য করিয়া পারে কলক জব্য তদনন্তর ওক্ষ দিয়া পাক করিবেন। এই তৈল রোগীকে মাথাইবে এবং উষ্ণ ছক্ষের সহিত থাইতে দিবে, এই তৈলে শতমূলীর রস প্র-মাণ মত দিবে ইহা প্রাচীন মতে কথিত আছে।

মহাবিষ্ণু তৈল। তিল তৈল ১৬ সের শতমূলীর রস ১৬ সের গব্য এক ১৬সের কল্কার্থ,মুথা অশ্বগন্ধা জীবক ঋষি-বক শঠী কাকোলা জীরকাকোলা জীবন্তি জ্যেষ্ঠমধুম-ভূরি দেবদারু পদাকান্ঠ সৈন্ধব শৈলজ জটামাৎসী এলা- ইচ দারুচিনি কুড় রক্তচন্দন মঞ্জিপ্ঠা কস্তুরী চন্দন কুমকুম সালপাতি কুন্দরু শঠী গাটালা লখী, এবাংপ্রতি > পল খাটাসি কপুরাদি স্থান্ধ জব্য সকল দিবে, তৈল পাকের প্রকার পুরুষত সাবধান হইয়া পাক করিবেন, এই তৈল মদিন এবং উষ্ণ দ্বপের সহিত ভক্ষণ করিতে হয়,ইহাতে স্কল বায়ুরোগ এবং নানা প্রকার শল নিবারণ হয়।

মধ্যম নারায়ণ তৈল। তিল তৈল ১৬ সের, গব্যহ্থ অথবা ছাগহ্থা ১৬ সের শতমূলীরস ১৬ সের, ক্কাথার্থ বেল ছাল গাণরারি ছাল সোণাছাল পাক্লল ছাল তেপালতে ছাল গলভাদালী অশ্বগলা রুছতী কণ্ঠীকারি বাট্যালা গোরক্ষ চাকুল্যা গোক্ষ্রি, পুনন্বা,এষাংপ্রতি ১০ পাল ২৫৬ সের শেষ ৬৪ সের কল্কার্থ স্তলুফা দেবদারু জটামাংসী শৈলজ রুজচন্দন পুরগপাছকা ইহার অভাবে সেফালিকা ছাল কুছ এলাইচ নালপানি চাকুল্যা বন্যমুগ বন্যকলাই অশ্বগল্ধা রাম্লা সৈল্পর পুনন্বা, এবাৎপ্রতি ২ পাল, যথা শক্তি গল্প জব্য দিবেন।

বুজাপ্রসারণী তৈল। তিল তৈল ১৬ সের ওক্ষ ৩২ সের দিনিরমাত ১৬সের কাঁজি ১৬ সের,ক্ষাথার্থ গল্ধভাদালী ১০ পিল ৬৪ সের শৈষ ১৬ সের ক্ষাথার্থ চিতায়ল পিপুল জ্যেন্দ্র কাশ্বা গজপিপুল গক্ষান্দ্র লীম্ল জ্টামাৎগী রজ্চন্দ্র এষাৎপ্রতি ২ পল গল্প জ্ব্য দিবেন।

তৈল পাকের প্রকার। প্রথমতঃ মুচ্ছ। করিয়া পরে গহ্মভাদালীর রাথ তৈলের সহিত পাক করিয়া কিঞ্ছিৎ শেষ থাকিতে হুক্ষ দিবেন এই: ৰূপ স্নেহ দ্ব্যু সকল পর পর ক্রমে কিঞ্ছিৎশেষ থাকিতে দেওয়া বিধি তদনত্তর ক-লক দ্বেয়ের সহিত পাক সমাপ্তি করিবেন, এই তৈল স্কল বাতে উপকারী হয় কিন্তু বাত দারায়হন্ত পদাদির বক্তা- হইলে বিশেষ উপকারী হয়, তৈল মর্দন করিয়া অগ্নি উ-তাপ লইলে বিশেষ গুণ বোধ হয়।

ষশেষ হল। পরিজ্ত মাষকলাই ১৬ পল জল ১৬ নের শেষ ৪ সের তিল তৈল ৪ সের এক ১৬ সের, কল্কার্থ জীবক ঋষিবক মেদ মহামেদ ঋজি রাজি কাকোলী ক্ষীর-কাকোলী মলুফা সৈল্পর রাম্ন; আলকুষিরবীজ জ্যেত্তমধু বাট্যালা শুণী পিপুল মরীচ গোল্ফীবীজ। এষাংপ্রতি ২ তোলা পাকের প্রকার। তৈল মুক্তা করিয়া কলাইয়ের ক্লাথ এবং এক তৈলের সহিত পাক করিয়া কিঞ্ছিৎ শেষ থাকিতে কল্ক জব্য সকলের স্থলচ্ব তৈলে দিয়া চুলা হতিতে নামাইয়া তাড়রদারায় নাড়িতে ২ জুড়াইলে পাক সিজি হয় পরে গল্পজ্ব্য দিবেন।

ব্রহৎমাষ ভৈল। মাযকলাই ৪ংসর বেলছাল সোণাছাল গান্তারি ছাল পারুলছাল গণিয়ারিছাল দালপানি ছাল চাবুল্যা কণ্ঠীকারি গোহুরি ব্যাকুড়। এবাংপ্রতি ৫ পল ছাগমাংস ৩০ পল এই দ্বাদশ দ্রব্যে জল ৬৪ সের শেষ ১৬ সের তিল তৈল ৪/সের ১৯ সের কলকার্থ আলকুষি এর-ध्यून मन्का रेमकाव विष्नवर्ग महन नेवन सम मेहासम প্রাদ্ধি হাদ্ধি জীবক ঋষিবক কাকোলী ক্ষীরকাকোলী বন্য-কলাই বন্যুগ জীবন্তী জ্যেষ্ঠনপু মঞ্জিষ্ঠা চঞি চিতা ঘূল কটফল শুণ্ঠী পিপুলমরীচ পিপুলমূল রায়া দেবদারুগুলঞ্চ কুড় অশ্বগন্ধা বচ শঠী। এষা প্রতি ২তোলা ইহার মধ্যে জে গমধু এবৎ দৈল্লব প্রতি ৪ তোলা প্রাচীন বৈত্যেরমতে, যথা লাভ মুগন্ধি ডব্য, তৈল পাকের প্রকার প্রথমত তৈল মুচ্ছা করিয়া ক্রাথ এবং হক্ষ তৈলের সহিত প্রাক করিবে পারে তৈল নির্দ্ধান হইলে তাহাতে কল্ক দুব্যের স্থলচুৰ বস্ত্রে ছাঁকিয়া দিবামাতে চুলা হইতে নামাইয়া তাড়ুদ্বারা नाष्टि नाष्टि भी उन रहेल शांक शिक्ष इम्न, वहे रेउन ্মর্দ্ধন করিয়া অগ্নির উত্তাপ হইলে গুণাধিক্য হয়।

সপ্তপ্রসাধ তৈল। তিল তৈল ৪ সের ক্রাথার্থ সাধকলাই বাট্যালা রাম্না দশমূল কুলতাকলাই ছাগমাৎস এষাং
প্রভেতেক ৬ পল এবং ক্রাথের জল প্রত্যেকে ১৬ সের শেষ
৪ সের কলকার্থ রাম্না আলকাষ্যল সৈন্ধব সলকা এরগুমূল
মুথা জীবক ঋষিবক মেদ মহামেক ঋদ্ধির্দ্ধি কাকোলী
ক্ষীরকাকোলী বচ শুগু পিপুল মরীচ এষাৎপ্রতি ২
তোলা যথালাভ গ্রহ্মদুব্য।

পাকের প্রকার। তৈলমূচ্ছা করিয়া পর পর ক্রমে স-কল কাথের সহিত সহস্ধ এই ৰূপে কাথ খাওয়াইবে নি-ক্রেল হইলে তৈল নামাইয়া কল্ক অব্যের কাপড় ছাঁকা মুল্লচূর্ণ তৈলে দিয়া নাড়িভেছ শীতল হইলে পাক সিদ্ধি হয়। এই তৈলে সকল বাত নাশ হয়, পথ্য হক্ষ ঘৃত মাংস প্রভৃতি।

বাত রজ চিকিৎসা।

নানা প্রকার মুফিবোগ। বাত রজের বেদনাতে গম
চূর্ন এবং ছাগওক মিশিত করিয়া প্রলেপ দিবে বেদনা নিরতি হয় এবং শত ধৌত গব্যঘৃত মর্দ্দনে উপকার হয় আর
ক্লফতিল জলেতে পেয়ন করিয়া প্রদেপ উপকারি, কিন্তু
তিল ভাজিয়া লইবেন।

কাথার্থ জল ১৬ সের শেষ ৪ সের কল্কার্থ ঐ গুলঞ্চ ৪ সের কাথার্থ জল ১৬ সের শেষ ৪ সের কল্কার্থ ঐ গুলঞ্চ ৪ সের কাথার্থ জল ১৬ সের শেষ ৪ সের কল্কার্থ ঐ গুলঞ্চ ১ সের পাকের প্রকার পূর্ব্বাজ প্রকারে হুচ্ছা করিয়া কল্কার্থ গুলঞ্জ এবং কাথ এই ছই একতে তৈলের সহিত পাক করি বেন গল্পতার, যথালাভ ইহাতে বাতরজ জন্য শরীরে চুল কানির মত হইলে এবং কাটা হইয়া যে বিবর্ণ হয় ও স্থানেহ কুলিয়া উঠে পুনকার মিলিয়া যায় এই সকল প্রকার রোগ নাশ হয়।

্রহৎ গুড়চী তৈল। তিল তৈল ৮ সের কাথার্ওল্ঞ

১০০ পল পাকার্য জল ৬৪ সের শেষ ১৬ সের কল্কার্য সলুকা হরীতকী শুগী পিপুল মরীচ রায়া মুথা বন্যমানী
হরিজা দারুহরিজা কুড় ধন্যা পলকার্ছ বিড়ক্ত ভেলপত্ত
জ্বামাংসী রক্তচন্দন এযাংপ্রতি ৪ ভোলা পাকের প্রকার
মুচ্ছিত ভৈলে কল্ক জব্য সকল ছেঁচিয়া দিয়া ক্তাথের সহিত একত্তে পাক করিবে পরে গল্প জব্য দিবে। এই তৈল
মর্দনে বাতর্জ জন্য এবং পিত্তজন্য শ্রীরের নানাপ্রকার
চুলকানি ও জালা এবং ডুমাং বিবর্ণতা সকল দূর হয়।

কৈশোর গুণ্গুল। মাহিষা,ক গুণ্গুল ১৬ পল গুল্গু ১২ পল হরীতকী ১৬ পল আমলকী ১৬ পল পাকার্থ জল ১৬ সের শেষ ৪৮ সের ইলা গুড়ের ন্যায় পাক হইলে প্র-ক্ষেপ সিদ্ধিচুর্গ হরীতকী বর্ড়া আমলকা শুণ্ঠী পিপুল ম-রীচ বিড়ঙ্গ এবাৎপ্রতি ৪ তোলা গুল্গু ৮ তোলা তেউড়ি ২ তোলা দান্ত ২ তোলা ঘূত ১৬ পল পাকের প্রকার প-ক্রিফ্ত মহিষাক্ষি গুণ্গুল ছুক্ষে সিদ্ধ করিবে পরে ধৌত ক্রিয়া রৌজে কি করেবে পরে গুলগুদি তিন জন্য কি-গুলু ছেচিয়া মঙ্গের জলে সিদ্ধ করিয়া ৪৮ সের জ্বাথ পুনকার পাক করিয়া গুড়ের মত হইলে সিদ্ধি প্রভৃতি জ-ব্যের চুর্গ এবং ঘৃত ১৬ পল তাহাতে দিবেন সেবন অন্ধি ভোলা পরিমাণ অনুপান উষ্ণ হুক্ষ কেবল সেবন করিলে পরে কিঞ্ছিৎ বাস্ক্রল পান করিবেন।

বজ্গুণ্ডল। শুণ্ঠী পিপুল মরীচ হরীতকী বয়ড়া আন লকী দত্তী চিতাগুল তেউড়ি শাচ বিড়ঙ্গ মথা বাগুচি বীজ ইন্দ্রধব বচ আকল্মমূল কুড় সোজালি। এষাংপ্রতি ১ পল সকলের সমান গুণ্ডল ভেলার আটা ৬৪ সের শুজ হরিতাল ১ পল তাম ১ পল এই সকল দ্বা ঘৃতের সহিত পেষণ ক-রিয় পিশু ৎ করিবে ৪ মাবা পরিমাণে সেবন পথ্য একা ঘৃত মাংস ইহাতে বাত রক্ত মাতেই নাশ হয়।

खणुठापि लोह। धनदक्त भान मुठी भिभून मती ह

হরীতকী বয়ড়া আমলকী বিড়ঙ্গ চিতামূল মূথা এবাংপ্রতি ১ তোলা লৌহ ১০ তোলা এই সকল অব্যের বস্তে ছাকা হুজাচূর্ণ এবং লৌহ একত্রে খলে মর্দ্দন করিরা ৪ রতি পরি-মান বটি করিবেন, সেবন ঘৃতের সহিত। পথ্য পূর্ব্ধমত।

তালক। শুদ্ধ হরিতাল ৮ তোলা শুদ্ধ গল্পক ৮ তোলা তামু ১৬ তোলা এই তিন অব্য বালুকা যন্ত্রে একদিন পাক করিয়া ১ রতি পরিমাণ ঔবধ গুলঞ্চের পালোর সহিত অ-থবা নিম্নপাত্রের স্কাথের সহিত সেবন করিবেন ইহাতে উজ রোগ নাশ করে এবং কুপ্ঠ রোগেরও নাশ হয়।

হরিতাল শোখন ৷ লখনাহরিতাল দোয়াতের মধ্যে পুরিয়া এক হাঁড়িতে বুযুড়ার জল দিয়া দোলা যন্ত্রে পাক করিবেন পুনর্কার চুণের জলে দোলা যন্ত্রে পাক করিয়া পারে দধির সহিত কিঞ্ছিৎকাল মর্দান করিবেন ভদনন্তর পরিস্কার কারজলে হই প্রহর কাল মর্দ্দন করিলা ঘন হইলে ভাহাতে কিঞ্জিৎ দ্ধি দিয়া রাখিবে শক্ষ প্রায় উইলে পুন-বার ক্ষারের জলে মর্দন করিয়া হরিতাল শৃক্ষ করিয়া শক্ত হইলে চূর্ণ করিয়া পুনর্ফার পুরোক্ত প্রকারে চুনের জলে দোলাযন্ত করিয়া এক প্রান্থ বাকি করিবে আর কুমাও জলে এক প্রহর এবং ডিল তৈল এক প্রহর পরে শহর হ-हेल ज्ञाल प्राप्त हित्रों व छिला। थरल , शहर मर्फन क-রিতে২ শুক্ষ প্রার হইনে তাহাতে দধি এবং পুনর্নবা কা-রের জলে পূর্ব্বমত দোলাযন্ত্রে পাক করিলেই শোধন হয়। দোরাতের মধ্যে পুরিয়া যে দোলাযন্তে পাক লিখিত হ-ইল তাহাতে দোয়াতের মুখ খোলা রাখিবেন আর তীম-রাজের রসে গহাক শোধক I

এই ঔবধ পাকের প্রকার। উজ্প্রমাণ গল্পক তামু হ-রীতাল একতে মিশ্রিত করিয়া মৃত্তিকার মুচর ভিতর পু-রিয়া তাহার মুখ বদ্ধ করিবে তদনন্তর তাহাতে মৃত্তিকার লেপ দিয়া তালের ন্যায় করিয়া শুক্ষ করিবে পরে বালু- কাতে আৰ্দ্ধ পুরিত হাড়ির মধ্যে ঐ যন্ত্র রাথিবে তদনস্তর ঐ হাড়ির বালুকা দারা পূর্ণ করিয়া ভাহার মুখ সরা দিয়া হাড়ি আটিবে পরে এক দিবস জাল দিবে তদনস্তর শীতল হইলে ঔষধ হইবে।

ইতি সারকৌয়ভাং বাতরক্তাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ উরুস্তন্তা থিকার।

দশহল পাচনে ৪ মাষা শিলাজভু চূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিবে এবং ঐ পাচনে ৪ মাষা গুণ্গুল চূর্ণ আর ৪ মাষা শুষ্ঠী চূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিবে।

প্রলেপ। হরীতকী বয়ড়া আমলকা চঞি শুণী পিপুল মরীচ পিপুলয়ল সরিষা উইনাটী এই সকল অব্য সমভাগে লইয়া মধুর সহিত মর্দন করিয়া উক্তক্ষতে প্রলেপা দিবে।

আর সৈন্ধবাদি তৈল এবং গুগ্ওল উরুন্তন্তে প্রয়োগ করিবেন।

ইতি উরুদ্ভভাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ আমবাতাগিকারঃ।

রামাসপ্তক। রামা সোন্ধালি গুলঞ্চ দেবদারু গোহ্বার এরগু ভৈল পুনর্না। এষা প্রতি ৩২ রতি জ্বল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ এরগুতিল ৪ মাষা শুগী ১ তোলা গোহ্বার ১ তোলা পাক শেষ পূর্ববং প্রক্ষেপ এরগুতিল ৪ মাষা ঈষহুঞ্জ থাকিতে পান ক্রিবেন।

প্রক্ষেপ। কাঁচাগুড়কামাই কেঁউ সজিনাছাল উইমাটি এই চারি জব্য গোহতে পেষণ করিয়া প্রলেপ দিবে। বা-র্ত্তাকু ব্যাকুন্ডি কল সমভাগে কাঞ্জির সহিত পেষণ তপ্ত ক-রিয়া প্রলেপ দিবে বাস্তকশাক ভূমিকুমাণ্ডশাক এবং পুন-র্নবাশাক এই রোগে থাইবে।

েবোগরাজ গুণ্ওল। চিতামূল পিপুল যমানী রুক্ষজীরা

বিড়ঙ্গ বনযমানী জীরা দেবদার চঞি এলাইচ সৈত্রাব কুড় রারা গোক্ষার বীজ ধন্যা হরীতকী বয়ড়। জামলকী মুখা শুণ্ঠী পিপুল মরীচ দারু চিনি বেণায়ল যবক্ষার তালিশ পার তেজপত্র এই সকল জব্য সমভাগে যত গুগুল তত উপাবুজ্মত মৃত দারায় এই সকল জব্য মর্দ্দন করিয়া পিগু বৎ করিবে ভদনন্তর পূরাতন জলের হাড়ি কিয়া কল্সীর মধ্যে এক দিন রাখিয়া জাপনার সাধ্যমত মৃতের সহিত্
মর্দ্দন করিয়া খাইবেন।

অলমুবাদি চূণ। কুঁচুই আদতোলা গোক্ষরি ১ তোলা হয়ীতকী ২ তোলা বমুড়া ৪ তোলা আমলকী ৮ তোলা শুগুটী ১৬ তোলা গুনপ্ত ১২ তোলা প্রিফ্লু ৬৪ তোলা এই সকল অব্যের স্থাচুণ বস্তে ছাকিয়া উত্তপ্রপে মিাশ্রত করিবেন, দেবন হ্রাপ ব্যক্তির স্থার সহিত অন্য ব্যক্তির কাঞ্জি অথবা তপ্তসলের সহিত।

বাতশার্দ্দল গুণ্ডুল। হরীতকী ৮ পল বয়জা ৮ পল আমলকী ৮ পান গুণ্ডুল ২ পল কটু তৈল ২ পল জল ২৪ সের শেষ ৬ সের পাক সিদ্ধে প্রকেপ ভূপী মরীচ হরী-তকী বয়জা আমলকী মুখা বিজঙ্গ চিতামূল গুলঞ্চ বিছাজি যুল তেউজি দতি চঞি বনাওল নানরস গন্ধক এবাং প্রাত ১ তোলা শুদ্ধ জয়পালবীজ ২০০ টা, পাকের প্রকার, পুর্বোক্ত প্রকার গুণ্ডুল শোধন করিয়া ২৪ পল বিফলা ক্যাথ করিবার সময় জয়পাল তাছাতে দিয়া সিদ্ধ করিবে তদন্দ্দন্দ্দ ২ পল ভৈলে গুণ্ডুল সিদ্ধ করিয়া ঐ ক্লাথে পাক করিছেই গুড়বুল হইলে শুণ্ডী প্রভৃতি অব্যের কাপড় ছাকা স্কাত্রণ পাক নানাইয়া তাছাতে দেয়া নাড়িতেই শীতল হইলে পাক সিদ্ধি সেবন অন্ধিতালা পরিমাণ। অনুপান উষ্ণ হক্ষ ইছাতে আমবাত মাত্রেই ভাল হয় এবং পোয়ের গাটি যদি ফুলে তাছাও ভাল হয়।

হুহ্ৎ দৈহাবাদি তৈল। এরগুতৈল ৪ সের দধির মাত

৮ দের সল্কা ১৬ সের ক্ক.থার্থ জল ১৬ সের শেষ ৪ সের কল্কার্থ সৈত্বব হরিতকী বয়ড়া আমলকী রামা।পিপুল সাচিকার গজপিপুল মরীচ কৃড শুণ্ডী সচললবা বিটলবা যমানী বনযমানী ক্ষজীরা জ্যেপ্তমধু সল্কা এষা প্রতি ৪ তোলা পাকের প্রকার তৈল হুচ্ছা করিয়া কলক দুব্য সকল তাহাতে ছে চিরা দিয়া পরে দ্ধির মাত এবং সল্কা ক্রাথ দিয়া পাক করিয়া নিজ্জল হইলে পাক সিদ্ধ হয়।

আমবাতারি গুড়িকা। পারা গন্ধক লৌহ তামু তৃতিয়া দোহাগার থই দৈল্লব এষা প্রতিচ তোলা গৃগ গুল ১৪ তোলা হরীতকী বর্ডা আমলকী এষাংপ্রতি ৩। তোলা চিতাহল চুর্ব ৩ ভোলা এই সকলা দুব্য ঘৃত মর্দন করিয়া ২০ রভি পরিমান বটি করিবে অনুপান মৃত কিঞ্ছিৎ পরে সমতাগ তিফলাজলা ভপ্ত করিয়া খাইবেন এই উম্প যত সেবন করিবেন তত দিন দ্ধি মৎস্য গুড় ভোজন করি-বেন না।

ইতি সারকৌমুভাৎ আমবাতাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ শ্লচিকিৎসা।

লাজনে ব্যন ভাষদক্রিয়া শ্লারোগে নিবেধ কারণ শ্লা-রোগে বায়ু প্রধান হেতু উত্যক্রিয়া কর্ত্তিয়া নহে।

র্ফিযোগ। তেঁতুলছালের কার অপাক্ত কার জল দিয়া থাইবেন।

পাচন। শুণী ভেরেপ্তাস্থল উভয়োঃপ্রতি ১ তোলা জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ হিন্দ চুর্ন ২ রতি সচল-লব্য ৪ মাযা ঈষৎ উঞ্থাকিতে খাইবে।

প্রলেপ। মওলার ফল কঁজির ছারাৎপ্যণ করিয়া নাডিতে পুনঃ২ প্রলেপ-দিলে বেদনা ভাল হয়।

পাচন। শুঠী এরওয়ল যবের চাউল এষাংপ্রতি ৫০।। রুতি কল ৪ এল শেব ১ পল প্রক্রেপ সৈন্ধব চুর্ণ ৪০ রতি। শৃত্যুলী রস ৪ তোলা মধু ৪ মাষা মিছিত করিয়া খাইলে বেদনা নিবারণ হয়।

যমানী দৈল্লব হরীতকী শুণ্ঠী এষাংপ্রতি ৪০ রতি জল ৪ পাল শেষ ১ পাল প্রক্ষেপ মধু ৪০ রতি কিঞ্ছিৎ তপ্ত থাকিতে থাইবেন। গোমূত্র শুদ্ধ মণ্ডুর হরীতকী রর্জা আমলকী। এই সকল তব্য একত্রে চূর্ন করিয়া মৃত এবং মধুর সহিত মিশ্রিত করিয়া থাইলে ত্রিদোষজ্ব শূল নম্ভ হয়।

চতুঃসম লৌছ। অভ্ৰ তামু কলজী লৌহ এবাং প্র-ত্যেকে ১ পল মৃত ১২ পল হক্ষ ১২ পল ইহার সহিত পাক করিয়া সমাপ্তি হইলে বিড়ঙ্গ হরীতকী বয়ড়া আমলকী চি তামূল শুণ্ঠী পিপুল মরীচ। এবাং প্রত্যেকে ফুল্ম চুর্ন ১ পল মৃত ৪ মাবা ও মরু ৪ মাবা অনুপানে দেবন ১ মাবা পরিমাণ। ঔবধ পাকের প্রকার অভ্র তামু লৌহ এই তিন জব্য ২৪ পল মৃত হুক্ষের সহিত পাক করিয়া বিড়ঙ্গাদির ফুল্মচুর্ন এবং কর্জ্জলী ভাহাতে দিয়া তাজুরদ্বারা নাড়িতেই বাদ্যিবার মত ইইলে ঔবধ হয়।

উষধ সেবনের পার. উষ্ণ হক্ষ অথবা ঝুনা নারিকেল জল পান করিবে। শূলরোগে দ্রুতবে: গ গমন স্ত্রীসঙ্গ মন্তপান কাঁচা লবে লক্ষা মরীচ দাউল এই সকল অহিতকারী হয়। ইতি সারকৌমুন্তাং শ্লাধিকার সমাপ্তঃ।

পরিণাম শ্ল চিকিৎদা।

পরিণ'ন শুল বমন ক্রিয়া কত্তব্য এবং তিক্ত মধু ডব্য পথ্য আর রক্তমোর্কণ ও তেদ করাইবেন, যব গম কেদো এবং নরস চাউলের অন্ন পুরাতন মৃত্য মদিন ও ভক্ষণ বা-স্তুক ভূমি বুল্লাণ্ড পুনর্মবা পাঁচ অঙ্গুলে কাক্মাছি এই স-কল শাক থাইবে শুগী ১ তোলা গুড় ২ তোলা তিল ৪০ তোলা হক্ষের মহিত পাক করিয়া খাইবেন। বেদনা নিবারক মুক্তিযোগ। সামুক ভাষ ৪০ রতি আদি
পোয়া জলের সহিত তপ্ত করিয়া থাইবে জল থাকে এমত
বুন নারিকেলের ভিতরে সৈন্ধবলবণ চূর্ণ পুরিয়া তাহার
মুখ ঐ মুখীর দ্বারা বদ্ধ করিয়া তাহাতে মৃত্তিকা লেপা দিয়া
বিলম্টের অগ্নিতে দক্ষ করিয়া সেই লবণ কিঞ্ছিৎ ২ খাইবে
পারে কিঞ্ছিৎ বাসিজল পান করিবে এই ঔষধ পিত্তশলে
বিশেষ উপকারী হয়।

নারিকেল থণ্ড। বুনা নারিকেল শশু ৮পল মৃত ১ পল চিনি ৮ পল ডাব নারিকেলের জল ৪ সের পাক নিজে প্রক্রেপ ধন্যা পিপুল মুখা বংশলোচন জীরা রুফ্জীরা দারুচিনি তেজপত্র এলাইচ নাগের এই সকল জ্বা প্র-ভোকে ৪ মাষা ঔষধ পাকের প্রকার নারিকেল কোরা ধৌত উত্তমরূপে করিয়া প্রত্যুহ করিবে পরে মৃতভর্জন তদ-মন্তর শিলে পোষণ করিয়া পিগুরু হইলে এক পাত্রে চিনি নারিকেলজ্বল এবং ঐ পিগুরু নারিকেল মন্দ জ্বল ছারা পাক করিছেই সন্দেশ পাকের নাায় হইলে চুলা ইইতে নামাইয়া ধন্যা প্রভৃতি জ্বেরের মূল্য চুর্ন উহাতে দিয়া না-ভিত্তে জুড়াইলে উত্তম পাত্রে রাখিবে সেবন ১ তোলা জনুমান, অনুপান উফ্তুক্ষ অথবা ঔষধ সেবনের পর উম্থ-ধুক্ষ পান ইহাতে জন্মু জ্ব্যু গাইবে না।

আনলকী। পুরাতন ক্রাণ্ড শশু ৫০ পাল,ঘৃত ২ সের
চিনি ৫০ পল আমলকী ৪ সের তাহার অপ্রাপ্তি হইলে শুদ্ধ
আমলকী ২ সের জল ১৬ সের শেষ ৪ সের কুর্মাণ্ড রম ৪
সের পাক হইবার কিঞ্ছিৎকাল পূর্বে পিপুল ২ পল কৃষণ
জীরা ২ পল শুণ্ডী ২ পল মরীচ ১ পল তালিশপত ধন্যা
জীরা ২ পল শুণ্ডী ২ পল মরীচ ১ পল তালিশপত ধন্যা
জীরা ২ পল শুণ্ডী ২ পল মরীচ ১ পল তালিশপত ধন্যা
জীরা ২ পল শুণ্ডী ২ পল মরীচ ১ পল তালিশপত ধন্যা
জীরা ২ পল শুণ্ডী ২ পল মরীচ ১ পল তালিশপত ধন্যা
জারা ২ পল শুণ্ডী ২ পল মরীচ ১ পল তালিশপত ধন্যা
ভালি কিনির শিশু ধীত এবং শুক্ত করিয়া লইবে ঘৃত্তে
পাক করিয়া গিচনির শহিত এবং আমলকীর মধ্যে এবং কু-

ঘাও জলের পহিত একতে পাক করিবেন মৃৎজালে পাক করিয়া তাত্র দারা নাড়িতেই এইকপ সন্দেশের ন্যায় ই-ইলে মরীচাদি অব্যের স্থাচ্ন তাহাতে দিরা ভণ্ফণে না-মাইয়া তাতুর দারা নাড়িতেই তালের ন্যায় ইইলে তাহাতে মধু দিয়া পুনকার নাড়িতেই মিশ্রিত ইইলে পাক সিদ্ধি হয়। এই ঔষধ সেবন করিয়া শাক আয়ল ত্যাগ করিবে।

শতাবরী মন্তুর । গোমূত ১৬ তোলা ৫০। রতি একা এবং শতমূলীর রস ঐ পরিমাণ ছক্ষ ঘৃত দধি এবং প্রতি ৮ পাল শুদ্ধ মন্তুর ১৬ পাল যব ৪ পাল পাকার্থ জ্লা ১।। নের লইরা ।। নের ঔষধ পাকের প্রকার যবের ক্কারা।। নের লইরা ঘৃত ক্ষ করিরা শুদ্ধ মন্তুর ৬ পাল ঘৃতের সহিত মিলিত করিয়া পাক করিবেন তদনন্তর জীরকাদি অব্যের মুন্দুর্গ পাক নামাইয়া দিবেন ভদনন্তর নাড়িভেং বটিকার ন্যায় পাক হইলে পাক সিদ্ধি সেবন অর্ধ ভোলা অনুমান, অনুপান উফ ছক্ষ কিয়া ঔষধ দেবনের পার উফ ছক্ষ পান করি বেন।

শুণ । আমলকী ধন্যা মুথা কৃষ্ণ জীরা পিপাক সিদ্ধে প্রক্ষেপ। আমলকী ধন্যা মুথা কৃষ্ণজীরা পিপুল বংশলোচন দারুচিনি তেজপত্র এলাইচ শত্মলী হরী
তকী এবাংপ্রতি ।। তোলা মরীচ নাগেশ্বর এবাংপ্রতি
ত মাষা ৩ পল। পাক করিবার প্রকার, শুণ্ঠী ৪ পল চিনি
১৬ পল আর মৃত ৪ পল এবং হুক্ষ ৮ পলের সহিত পাক
করিয়া গুড়বং ইইলে তদনন্তর আমলকী প্রভৃতি জব্যের
মুক্ষচুর্ব পাক নামাইয়া তাহাতে দিয়া তাঁজুরহারা নাজিতে
নাজিতে পিগুবং ইইলে দেই পিশু শীতল ইইলে তাহাতে
মর্ তিন পল মিলিত করিলেই পাক সিদ্ধি হয় ঔবধ মেবন ১ তোলা পরিমান তপ্ত দুক্ষ অথবা ঔষধ সেবনের পর
উষ্পুক্ষ পান করিবেন শাক অম্বল খাইবে না।

इर् भीवकामि (मानक। स्रोता क्रम् कीता क्रम् कीता क्रम्

পিপুল মরীচ হরীতকী বয়ড়া আমলকী দাক্লচিনি ভেজপত্র এলাইচ নাগেশ্বর বংশলোচন লবঙ্গ শৈলজ রক্তচন্দন
কাকোলা ক্ষারকাকোলা জয়ত্র জায়ফল জ্যেষ্ঠ মধু মহুরী
জটামাংসী গাট্যালা লখী ধন্যা দেব দাক মুরামাংসী দ্রাক্ষা
স্থলকা পারকার্ড মেথি দেতাড়া বালা লালুকা সৈন্ধব সোহাগার খই কন্দরকুট প্রিয়ঙ্গ কপূর এষাংপ্রতি সমন্তাগে
যত জীরা তত্ত এবং জীবার সহিত ঐ কল্ক জব্য যত চিনি
তত্ত আর চিনির সহিত যত দুগ্ধ তত্ত, পাকের প্রকার।
জীরকাদি কপূর পর্যান্ত জব্যের স্থল্যুর্ণ বজ্রে ছাকিয়া সম,
ভাগে লইয়া তদনন্তর চিনি এবং দূই জন্য একত্রে পাক
করিলে সন্দেশ পাকের ন্যায় হইলে তাহাতে ঐ চুর্ণ সকল
দিয়া শীত্র পাক নামাইরা তাজুর দারা নাড়িতেং শীতল
হইলে লাডু করিয়া রাখিবেন।

বিভাধরাত্র। মুখা হরীতকী বয়ড়া আমলকী গুলঞ্চ দন্তী তেউড়ি চিতা শুগু পিপুলমরীচ এবাংপ্রতি ২:তালা মপ্তুর অথবা লৌহ ৪ পল চট্কা ৪ পল তামুজারা ১ পল পারা শোধন ১॥০ তোলা গন্ধক ২ তোলা এই সকল ড-ব্যের সমভাগ যত এবং মধু দিয়া চারি প্রহর মর্দন করি-বেন ঔষধ সেবনের বিধি,রোগন্যুনাতিরিক্ত বৃঝিয়া১ মাযা কিয়া ৩ মাবা অনুপান উষ্ণুক্ষ।

রফিযোঁগ। তেউড়ি ২ তোলা পিপুল ২ তোলা হরী। তকী ৫ তোলা এই সকল জব্য চূর্ণ করিয়া ইহার সমভাগ গুড় ভাহাতে মিশ্রিত করিয়া সেবন করিলে শুল নই হয়।

তেউড়ি ২ তোলা পিপুল ২ তোলা চূর্ণ করিয়া ভাল চিনি ২ পল মধু ২ তোলা ামশ্রিত করিয়া লেপন করিলে শুল নিধারণ হয়।

ময়নাফল ঝুল বিউলবে শুণ্ঠী পিপুল মরীচ এই ছয় জব্যের সমভাগ পুরাতন গুড় গোমুত্তের সহিত বাটিয়া উষ্ট ক্রিয়া থণ্ড বস্ত্রে মাথিয়া র্কাঙ্গু প্রমাণ দীপা ক্রিয়া কৃষদৃষ্ণ থাকিতে মলদারে প্রবিষ্ট করিয়া রাখিলে শ্ল কটিশ্ল মলদারে বেদনা তিনের নিবারণ হয়। ইতি সারকৌমুভাৎ শুলচিকিৎনা সমাপ্তঃ।

অথ গ্লা চিকিৎনা।

দন্তী হরীতকী। হরীতকী দন্তিয়ন চিতায়ন এবাংপুতি
২৫ পল জল ৬3 সের শেষ ৮ সের পুরাতন গুড় ২৫ পল
পাক হইলে পুক্রেপ তেউড়ি ৪ পল পিপুল ১ পল শুঠী
১ পল তিল তৈল ৪ পল উষধি শীভল হইলে মধু ৪ পল
দারুচিনি তেজপত এলাইচ নাগেশ্বর এবাৎপ্রতি ৮তোলা
হরীতকী ৪০ রতি প্রমাণ চুর্গ দিয়া সেবন করিবেন, পায়ে
উষ্দুক্ষ পান করিবেন ইচাতে গুলারোগ নিবারণ হয়।

পাক করিবার ক্রম। অথগুইরীতকী দন্তিমূল চিতা-মূল এবাংপ্রতি ২৫ পল লাইয়া বস্ত্রে বন্ধন করিয়া ৬৪ সের জলে পাক করিয়া ৮ সের থাকিতে ঐ অব্য সকল নিজ্জল করিবেন। ঐ অবশিষ্ট জলে পুরাতন গুড় ২৫ পল ভিলা তৈলা ৪ পল দিয়া পাফ করিবেন আর তৈউডি আদি ম-কল অব্য চুর্গ প্রমাণ মত দিয়া পাক নামাইবেন।

বিদ্যাপর রম। শুদ্ধ গন্ধক শুদ্ধ হরিতাল অর্থনাকিক মণ্ডুর তামু শুদ্ধরম এবাংপ্রতি ২ তোলা ৮ প্রহর মদিন করিয়া ২ মাবা প্রমাণ বটিকা উক্ত দুন্ধের সহিত সেবন ক-রিবেন ইহাতে গুলা রোগ নিবারণ হয়।

ইতি मात्र को प्रमार গুল্মাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ হৃদোগ চিকিৎমা।

হৃত্যোগে রক্ত মোক্ষণ কারি অবা ভোজ দাঁতন করা নদী জলে মানাদি করা এই সকল কর্ম করিতে নিষেধ আছে। মুন্ধিবোগ। ময়দা অ্র্জুন গাছের ছাল চূর্ব ছার্গ ছুক্তা ঘূত মধু চিনে এই সকল অব্যাসমভাগে মিশ্রিত করিয়া ভোজন করিলে হুডোগ নিবারণ হয় এবং গোরক চাকু-ল্যার মূল চূর্ব ২ ভোলা দুক্ষের সহিত মিশ্রিত করিয়া খাই বেন। অর্জুন ঘৃত।

গব্য ঘৃত ৪ সের অর্জ্রন গাছেন ছালের রস ৪ সের। কলকার্থ অর্জ্রন গাছের ছাল ১ সের আর ঐ গাছের ছা-লের রস ৪ সের একতে পাক করিয়া নিরস হইলে ১ ভোলা কিয়া ২ ভোলা পরিমাণ সেবন ক্রিবেন ইহাতে হডোগ বিনাশ হয়।

ইতি সারকৌমুদ্যাৎ হৃত্যোগ চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

অথ উরগ্রহ চিকিৎসা।

উরগ্রহরোগের লক্ষণ। বুক্কুরের জিল্পা যে প্রকার মুখ মধ্যে সর্ব্বদা থাকে না তদ্ধৎ জিল্পা হয়। এবং এই রোগে জ্বর এবং অক্লচি থাকে আর শোথ হয়।

রু ফিবোগ। জিয়াপুতার ফল শাখা পল্লব সজিনাছাল।
ছডছডিয়ার পাতা এই সকলের রস প্রত্যেকে ২ তোলা।
ছিল্পু পাঁচ রছি অথবা পঞ্চলবণ ৪ মাধা এই সকল মিলিত করিয়া সেবন করিলে উরগ্রহ রোগ ন্ট হয়।

তেউরি চূর্ব। ২ তোলা পুরাতন গৃত্ত ৪ মাবা একত । ক্রিয়া খাইবেন আর প্রীহাধিকারের ঔষধি দকল প্রয়োগ ক্রিলে উরগ্রহ রোগ বিনাশ হয়।

ইতি সারকৌমুদ্যাং উর্গ্রহাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ যুত্তকুচ্ছ । চিকিৎসা।

মুন্টিযোগ। হরীতকী গৌন্ধরি সোন্দালি কুলপ্রকলাই বিলুছাল দুরালভা এষাংপ্রতি ২৭ রতি এই সকল জব্য স্কল চুর্ল করিয়া ৪ পল জল মৃত্র অগ্নিতে পাক করিয়া ১ পল শেষ থাকিতে ছাঁকিয়া ঈ্ষর্ফ থারিতে ৪০ রতি মধু প্র-ক্ষেপ দিয়া পান করিবেন।

অথবা পুরাতন বুস্মাণ্ডের রস ২তোলা যবক্ষার ২সাধা চিনি ১তোলা মিলিত করিয়া সেবন করিলে এই রোগ বি-নাশ হয়, কিয়া যবক্ষার চিনি সমভাগে শীতল জলের স-হিছ পান করিলে উক্ত রোগের উপশ্য হয়।

তিকণ্ঠাদি মৃত। শত্মলির রস ১৩ পল ২তোলাও সাধা ৩ রতি, কাঁকুড়ের রস ১৩ পল ২ তোলাও মাধা ৩ রতি ঘৃত ৪ সের পাক সমাপন হইলে প্রক্ষেপ পুরাতন গুড় ২ সের, গোক্ষরি এরগুয়ল কুশার্ম্ল উল্রেম্ল রুফার্ব ইক্ষুর্মূল এই সকল জাব্য প্রত্যেক ১৪ পল ১৫ তোলা ৭ রতি জালা ৪৪ সের শেষ ১১ সের।

পাকের ক্রমঃ। ৪৪ সের জলে উক্ত তিন জব্যের রম দিয়া পাক করিবেন ১১ সের থাকিতে গোহুরি আদি ৭ জব্য আর মৃত নির্দ্ধান হইলে ছই সের পুরাতন গুড়ের সহিত মিলিত করিলে পাক সিদ্ধাহয়।

মৃত পানের প্রকার। এক তোলা প্রমাণ, এবং এই রোগে চন্দ্রপ্রভা বটিকা দেবন করাইবেন।

ইতি সারকৌমুভাং মূত্রক্ছুাথিকার সমাপ্তঃ।

অথ মূতাঘাত চিকিৎসা।

মুফিযোগ। স্পাবীজ ২ তোলা সৈন্ধব ৪ মাষা কাঁজি। দিয়া বাটিয়া স্বেন করিলে স্থাঘাত নই ছয়।

গোন্ধরি ঘৃত। ঘৃত ৪ সের কল্কার্থ ধন্যা ২ সের গো-ক্লার ২ সের জল ১৬ সের শেষ ৪ সের কল্কার্থ ধন্যা ৪ পূল . গোক্রি ১৬ সের জলের সহিত মিদ্ধ করিয়া ৪ সের থাকিতে ছাঁকিয়া সূত্রের সহিত পাক নির্দ্ধল হইলে ৪ পল ধন্যা ৪ পল গোক্ষার হুন্মচূর্ব করিয়া তাহাতে দিয়া শীত্র নামা-ইবেন।

ইতি সারকৌমভাং মুত্রবাতাধিকার সমাপ্ত।

অথ বহুমুত্র চিকিৎসা i

মুর্ফীঘোগ। ধুপক্ত চাটিমরন্তা ভূমিকু আণ্ডের মূল চূর্ন শতাবরী চূর্ন পাক করা ১% সমভাগে লইয়া মিলিত ক-রিয়া খাইলে উক্ত রোগ বিনাশ হয়।

ক্লণ্ড তিল ভাজা এ ৭ পুরাতন গুড় এই গুই অব্য প্রতি দিন ভোজন করিলে বহুমূত ভাল হয়।

ধাতীঘৃত। আমলকীর রল ঘৃত ভূমি কুমাণ্ডের রল এষাংপ্রতি ৪ সের মধু ৮ পল শতমূলীর রম ৪ সের হন্ধ ৪ সের কুশারমূল কেশেরমূল মবেরমূল উলারমূল রুক্ট ইক্র মূল এষাংপ্রতি ৬পল ৩ তোলা ৩ সাবা জল ১৬ সের শেষ ৪ সের শীতল হইলে প্রক্ষেপ জ্যেষ্ঠ মবু তেউড়ি যবক্ষার এই সকল চুর্ব প্রত্যেকে ১ পল চিনি ৮ পল ঘৃত ৪ সের দিরা পাক করিবে মৃত্ত পাকের প্রকার, কুশাদি পঞ্চ্ছল প্রমা-পার্মারে লইরা ১৬ সের জন দিরা মিজ করিয়া ৪ সের জল থাকিতে জব্য সকল জাকিয়া ঐ জলে আমলকীর রুমাদি হক্ষ পর্যন্ত সকল জার আ পঞ্চাণের ক্ক. থ ৪ সের মৃত ৪ সের পাক করিয়া নির্জ্জল হইলে পাক সিজ হয়, মৃত শীতল হইলে জ্যেষ্ঠমবু আদি ৩ জন্য চুর্ব করিয়া দিবেন ১ তোলা কিয়া ২ তোলা সেবন করিবেন।

য় ফিযোগ। মাষকলাই ছুর্গ জোর মধু সম ভাগে লইরা থাইলে বহুঁ ছুজ নিবারণ হয়, যজ্জভুগুরু ছুর্গ আর মধু সমভাগ লইয়া লেপন করিলে উক্ত রোগে বি- নাশ হয়, আর আহির পাতের রস আর মধু সমভাগে মি-আিত করিয়া লেপন করিলে এই বোগ নট হয়। ইতি সারকৌমুগ্যাং বছমূত চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

অথ পাথরী রোগ্যে চিকিৎনা। বাতপিত কফোজ তিন প্রকার পাথরী হয়। চতুর্গ প্র-কার শুক্র বন্ধ হইয়া হয়, কিন্তু এই রোগের আ্রান্ত্র কফ হয়েন।

মুক্তিযোগ। বরুণ হক্ষের ছাল ছই ভোলা ৪ পল জল দিয়া সিজ করিয়া এক পল থাকিতে ছাঁকিয়ায়মাযা পুরাভ্তন গুড প্রক্ষেপ দিয়া ঈষ্তৃঞ্জ থারিতে পান করিলে উক্তরোগ নই হয়, অথবা বরুণ ছাল ছেন ২ ভোলা আর পুরাভন গুড় ২ ভোলা মিলিত করিয়া থাইলে পাথরীভাল হয়, সজিনার ছাল ছই ভোলা ছূন পুরাতন গুড়ের সহিত সেবন করিলে এই রোগ বিনাশ হয়, গোহ্মার ভেরেগুপিত শুঙা বরুণছাল এযাংপ্রতি ৪০ রতি ৪ পল জল দিয়া মুরুজালে সিজ করিয়া ১ পল জল থাকিতে ছাঁকিয়া তাহাতে শত্মুলির রম দিয়া ছই তোলা পান করিবেন, অথবা রাখাল সনার রম ২ ভোলা মিলিত করিয়া ঐ ৪ অব্যের কাথের সহিত পান করিলে উক্ত রাগ নিবারণ হয়।

বুল থাদি ঘৃত। ঘৃত ৪ দের বরুণ ছাল ৪ দের জাল ১৬ দের শেষ ৪ দের কল কার্থ কুল থাকলাই দৈলার বিড়ঙ্গ চিনি দিউলিছাল যবকার কুমড়ার বিচি এই দকল অব্য প্রস্তুত প্রত্যেকে ৮ তোলা, ঘৃত পাক করিবার ক্রমণ ছাল ৪ দের ছেঁচিয়া ১৬দের জলের সহিত দিজ করিবা ৪:দর জল থাকিতে বস্ত্রেণ্ড গৈকিয়া ৪ দের ঘৃতের সহিত পাক করিয়া নির্দ্ধান ইইলে পাক নামাইরা কল্কার্থ কুল থাকলাই আদি চুর্ব করিয়া মৃত্রের সহিত মিলিভ করিলে পাক সমাপন হয় ঘৃত দেবনের ক্রম ১ ভোলা কিয়া ২ তোলা।

বরুণ গুড়। বরুণ ছাল ১০০ পল জল ৬৪ সের শেষ ১৬ সের পুরাতন গুড় ১০০ পল প্রক্ষেপ কুমড়ার সসার গু কারুড়েরবিচি মনছাল সজিনাছাল কুলথাকলাই কিন্মিস এলাইচ শিলাজতু হরীতকী পিপুল বিড়ঙ্গ বেতোশাকের বিচিগোক্রবীজ সিউলি ছোপ এই সকল দুব্য প্রত্যেকে ১ পল, গুড় পাক করিবার ক্রম, ঐ বরুণ ছাল একশত শল চৌষ উসের জলের সহিত পাক করিয়া বোল সের থাকিতে ছাঁকিয়া ১০০ পল পুরাতন গুড়ের সহিত পাক করিয়া জল শূন্য হইলে কুম্মাণ্ডের বীজাদি সিউলি ছোল পর্যান্ত সকল অব্য ছব্ এক পল প্রমাণ গুড়নামাইয়া তাহাতে দিবেন, ভক্ষণ করিবার ক্রম ৪ তোলা।

ইতি সারকৌমুভাও পাথরী চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

অথ প্রনেহ চিকিৎসা।

মুক্টিযোগ। আমলকী রস ২ তোলা হরিছা চূর্ব ২ মাধা মধু ২ মাধা মিলিত করিয়া অবলেহ করিলে প্রেমেহ ভাল হয়। দাড়িয়্যাদি ঘৃত।

হরীতকী বয়ড়া আমলকী দারুহরিতা মুথা এবাংপ্রতি ৩২ রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু ৪ মাধা মৃত ৪ দের কলকার্থ দাড়িয় বীজ বিড্লুল্ল হরিডা চঞ্জি ক্লুজারা শুণী হরীতকা বয়ড়া আমলকী পিপুল গোক্রবিজ যমানী ধন্যা ময়দা কুল সৈন্ধব বন্যওল কিস্নিস জ্লোন্তমধু কুড় দারুহরিজা দারুচিনি শিলাজ হু নীলোৎপল রসাঞ্জন এবাংপ্রতি ২ তোলা পাকার্থ জল ১৬ সের পাকের প্রকার, গব্যম্ভ ৪ সের ১৬ সের জলে পাক করিয়া ৪সের থাকিতে দাড়িয় বীজাদি ২৫ জব্য মুক্তর্ব প্রত্যেকে ১ পল ঘৃতের সহিত মিলিত করিলে পাক দিছি হয়, এই ঘৃত অয়ের সহিত জন্বা শুদ্ধ দেবন করিলে প্রমেহ নিবারণ হয়।

দন্তিঘৃত ও দের দন্তিমুল ৮পল চিতামূল ৮ পল হরী-

তক্নী ২০ পাল দেবদার ৬ পাল কেলীকদম্ব বরুণ সোনদানি পুননবা বিল্ এই সকল অব্যের ছাল প্রভ্যেকে ৬ পাল সোণাছাল পারুলছাল গণিয়ারিছাল সালপানি চাকুল্যা কণ্টকারি গোল্থরি ব্যাকুড, এষা প্রতি ৬ পাল জাল ৩২ সের শেব ৮ সের কল্কার্থ পঞ্চলবণ পিপুলমূল চঞি চিতা মূল গুণ্ঠী এষাংপ্রতি ২ তোলা পাক করিবার ক্রম, স্ত-দি মূলাদি সপ্তদশ অব্যাসেই সেই প্রমাণান্তলারে ছেচিয়া দাজিংসের জ্বলের সহিত সাক্ষ করিয়া৮ সের থাকিতে ছাঁকিয়া ঘুত ছয় সেবের সহিত পাক নিজ্লল হইলে পঞ্চলবণাদি ও জ্বা স্ক্রছণ উক্ত প্রমাণ মত ঘৃতে দিরা মিলিত করিলে পাক সিদ্ধা হয়, ভক্ষণ কে তোলা প্রমাণ করিবেন, ইহাতে প্রমেহ নট্ট হয়।

পারামতরাঙ্গ অর্জ্জুন ছাল চিনি এই ৪ জব্য ২ তোলা শাল্মলির রস আটতোলা সভিত ৮ প্রহর মর্দন কার্য়া ৪ রতি প্রমাণ বটি করিবেন, গুল্পের পালো ১ ভোলা মধু এক তোলা দিয়া মর্দন করিয়া লেপন করিবেন। ইতি সারকৌমুল্যাং পুমহাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ শরীর হুর্গন্তা চিকিৎসা।।

বিভ্লাদি লৌহ। বিভ্ল শুগী যবকার এষাৎপুতি ২ ভোলা লোহ ওঁতোলা এই সকল দুব্য ৪ পুহর মদিন করিয়া ৪ রতি পুমান বটিকা মধু দিয়া সেবন করিলে রোগ নি-বারণ হয়।

মুফিযোগ। মধু ৪ তোলা জল ৪ তোলা পুতি দিন প্রাতে পান করিলে চুর্গন্ধ ভাল হর, অথবা নাগেশ্বর গল্পক বেণারগুল লাগেছাল শিরিষছাল এই চারি দুব্য সমভাগে লইয়া জলের সহিত মদ্দিন করিয়া গাতে লেপন করিলে দুর্গন্ধন্ট য়হ।

হতি সারকে। যুক্তাং শরীর দুর্গলাধিকার সমাপ্তঃ।

व्यथ छेपती हिकि थमा।

মুষ্টিযোগ। গান্তারি সচল দৈরব বনযমানী ষবকার বিজ্ঞাহিন্স পিপুল চিতান্থল শুণ্ঠী এই নকল দুব্য সমভাগে চুর্ব করিয়া ১ তোলা পুমার ঘৃতের সহিত ভক্ষণ করিলে উ-দ্রী মায়ত্রই মুক্ত হয়।

সামূদ্যদিচ্ব। শুণ্ঠী পিপুলমরীচ হয়ীতকী বয়ড়া আমলকী দন্তিমুলতেউড়ি তেলা তেলার আটা এই দকল দুব্য
প্রত্যেকে ২ তোলা দৈয়াব ১৮ তোলা পাক করিবার ক্রম,
শুণ্ঠী আদি দকল দুব্য চ্ব করিয়া ভেলার আটার দহিত
কিঞ্ছিৎকাল থলে মর্দন করিয়া ছাতিমের আটার ভাবনা
দিয়া পরদিন মর্দন করিয়া কর্দমের ন্যায় হইলে মৃত্তিকা
ভাগু মধ্যে ঐ দলা দিয়া ছাতিমের আটায় ঐ দলা জুবাইয়া ভাগ্ডের মুখ উত্তমক্রপে বদ্ধ করিয়া ঘুটের পোড়ে
পোড়াইবেন ঔষধ না দক্ষ হয়, বিংশতি রভি উষ্জলের
সহিত পান করিলে উক্ত রোগ হইতে মুক্ত হয়।

পুনর্বা অটম পুনর্বা নিষ্টালপটলপত শুণী হরীতকী গুলঞ্চ দেবদারু দারুহরিদা এষাংপুতি ২০ রতি লইয়া ৪ পল জলের সহিত মৃদু অগ্রিতে সিদ্ধ করিয়া ১ পল
থাকিতে ছাকিয়া পুক্ষেপ ৪ মাঘা দৈয়েব দিয়া উষ্ণ থাকিতে পান করিবেন।

নারাচচূর্ব।শুদ্ধ পারা কাঁচা সোহাগা মরীচ এবাংপুতি তেলা গন্ধক শুঠী পিপুল এবাৎপুতি ২ তোলা দন্ধি-বীজ ৮ তোলা জল দিরা থলে মর্দ্দন করিয়া ২ রতি পু-মাণ উষ্ণ জলের সহিত ভক্ষণ করিবেন ইহাতে অতান্ত ভেদ হয় আর আমোদরী শোথ যুজোদরীর প্রতিকার হয়।

য়ক্তিযোগ। মানকুল চ্ব ১ পল তগুল চ্ব ২ পল চুকা ৬পল জল ছয় পলের সহিত পাক করিবেন আর ২তোলা পুনাণ সেব্ন করিবেন ইহার পথ্য শুদ্ধ পারস হইতে শোথ যুক্তোদরী মুক্ত, হয়।

অথ যক্ত প্লীহা চিকিৎসা।

মান ওড়িকা। মানকচুর শিক্ত আপাঞ্চ গুলঞ্চ বাক্ষ ছাল সালপানী চিতায়ল সৈন্ধব শুগুী তালজটার ক্ষার এষাংপ্রতি ৬ তোলা বিটলবণ যবক্ষার লবণ পিপুল এষাং প্রতি ২ তোলা সকল চূর্ব করিয়া গোয়ত ১৬ সেরের সহিত পাক করিয়া শীতল হইলে মধু ৩ পল প্রক্ষেপ দিয়া ৩ রতি প্রমাণ সেবন করিবেন।

অথ যক্তারি লৌহ। লৌহ ৪ তোলা অভ ৪ তোলা তামু ২ তোলা পাতিলেবুর ছাল ৮ তোলা হরিণ চর্ম ভস্ম ৮ তোলা এই সকল ডাঞা জলের সহিত খলে মর্দন করিয়া ৯ রতি প্রমাণ বটিকা তপ্ত জলের সহিত পান করিবে য-কৃত প্লীহা নটা হরা।

অভ্যালবণ। পালিতামাদারের ছাল পলাশছাল আ
কল্ছাল মনসাসিজ আপাঙ্গ চিত বরুণ গণিরারী রহৎ
গোল্ধরি রহতি কণ্টকারি যাটায়ল গল্ধভাদালী কানচটা
হাপরমালী কুরচিছাল ঘোষালফল পুনর্নবা এবাংপ্রতি সম
ভাগ ছেঁচিয়া হাঁড়ির ভিতর পুরিয়া উত্তমকপে বদ্ধ করিয়া
জাল দিয়া ভত্ম হইলে তাহার ১৬ পল ভত্ম লইয়া ৬৪ সের
জলের সহিত জাল দিয়া ১৬ সের থাকিতে তাহাতে ১৬
সের গোমূল বিটলবন্ ৪ সের হরীভকী ৯ পল চুর্ব করিয়া
মকল ডব্যের সহিত পাক করিয়া। আনা অংশ থাকিতে
প্রক্রেপ রুফজীরা ভ্ঠী পিপুল মরীচ হিন্ন য্যানী কুড়
শির্ম এবাৎপ্রতি মুক্ষ চুর্ব দিয়া গুঞ্জের ন্যার হইলে ১ তোলা
প্রমাণ ভক্ষণ করিলে যক্তৎ প্রীহা নই হয়্ন।

লোকনাথ রস। পারা গন্ধক অভ্র এষাংপ্রতি ২ তোলা লৌহ ৬ তোলা তাম ৪ তোলা কড়িভন্ম ৬ তোলা এই সকল ভব্য পাণের রনের সহিত্ত মর্দন করিয়া পিগুাক্কত হইলে মৃত্তিকা যন্তে রাখিয়া তাহার মুগ বন্ধ করিয়া ২ হস্ত প্রি- মিত গর্ভের মধ্যে ঐ যন্ত্র রাখিরা ঘূট্যা দিয়া গর্ভ পরিপূর্ণ করিরা অলি দিবেন পরে নির্বাণ হইলে পাক সিদ্ধ ইর ব্যক্তি বিশেষে ৪রতি ২ রভি ১ রতি প্রমাণ দেবন করাইলে যুক্তং গ্রীহা হইতে মুক্ত হয়।

ইতি সারকৌয়দ্যাৎ যক্ত্র প্লীহাধিকার সম.প্রঃ।

অথ শোগ চিকিৎসা।

কংশ্রুরীত্রনী। বিলুছাল দোণাছাল গান্তারিছাল প্রাক্তাল সালপানী চাকুল্যা কণ্টকারি গোন্থরি ব্যাকুড় এবাংপ্রতি ৬ পল ৬ ভোলা সাত মাঘা জল ৬৪ দের শেষা ১৬ দের আন্ত হরীত্রনী ১০০ পল পুরাত্র গুড় ১০০ পল শুগুণী পিপুল মরীত প্রত্যেকে ১ পল দক্ষিচিনি এলাইত ভেজপত্র প্রত্যেকে ২ ভোলা প্রক্রেপ মধু ৬ পাল, পাকের ক্রুম। পাকপাত্রে ৬৪ দের জল দিয়া বিলুভার্চাদি ৯ অব্য ক্রুল এমাণ সত দিয়া সিদ্ধ করিবেন সেই সমর হরীত্রী দিবেন ১৬ দের থাকিতে ছেকিয়া পুরাত্র গুড় ২০০ পল ঐ ক্রো দিয়া গুড়েরমত পাক হইলে নামাইয়া পিপুলাদি ৩ শুলা দিয়া গুড়েরমত পাক হইলে নামাইয়া পিপুলাদি ৩ শুলা দিয়া গুড়েরমত করিয়া শীত্রল হইলে মধু ১৬ পল দি-থেন ১ ভোলা অথবা ২ ভোলা দেবন করিবেন।

শুষ্ল্যাদি তৈল। তিল তৈল ৪ সের কল্কার্থ শুদ্র হলা পুননবা দেবদার রামাশুণী এবাংপ্রতি ৫ তোলা ৬॥ সাবা পাকার্থ জল ১৬ সের পাকের ক্রম, পাকপাতে ৪ সের তৈবাদি পাক করিতে২ ফেণা খুন্য হইলে শুদ্ধ হলা আদি তাব্য সকল ছেচিয়া ১৬ সের জলের সহিত পাক করিয়া জল খুন্য হইলে পাক সিদ্ধ হয়।

ইতি সাইকৌম্ভাং শোধাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ কোযুর্জি চিকিৎসা।

শতপুষ্পা ঘৃত। মৃত্রাসক পত্রের রস নিষিত্রা রস নিম্নপত্রের রস কণ্টকারির রস ধ্বে এবাং প্রতি ৪ শের ক-ল্কার্থ শুল্ফা গুলঞ্জ জটামাং সী কুড় তেজপত্র এলাইচ এষাং প্রতি ২ তোলা পাক করিবার ক্রম, পাকপাতে ঘৃত আদি ৬ দ্ব্য পাক করিয়া ৪ সের থাকিতে শুল্ফাদি ৬ দ্ব্য দিরা মিলিত হইলে পাক সিদ্ধ হয় নেব্যমত সেবন করিবেন। ইহাতে উক্ত রোগ নটি হয়।

অথ নিত্যানন্দ রস। হিন্দ পারা জরিত্তামু জরিত কাসা জরিতরাঙ্গ শোধিত হরিতাল শুদ্ধ ভূঁতে শশু ভন্ম শুষ্ঠী পিপুল মরীচ হরীতকী বয়ড়া আমলকী লৌহ বিড়ঙ্গ পঞ্চলবণ চঞি পিপুলমূল হ্বুম রাম্না শঠি আক্লাদি দে-বদারু এলাইচ বিচতাড়ক এঘা প্রতি ২ তোলা এই সকল দ্রম্য হরীতকী রসে মর্দন করিয়া নির্দাল হইলে পাঁচ রভি করিয়া বটিকা করিবেন এবং হরীতকী রস. দিয়া উন্ধ নে-বন করিবেন ইহাতে কোষ রাদ্ধ নইট হয়।

ইতি সারকৌয়দ্যাং কোষরজ্যা^fধকার সমাপ্তঃ।

অথ গলগগু চিকিৎদা।

ু জিভিল। তৈল ৪ দের তিতলাউরের রস ১৬ দের কল্কার্থ বিড্জ ষবক্ষার সৈদ্ধ্য বচ শুণ্ঠী পিপুল মরীচ দেবদার এষাংপ্রতি ৮ তোলা পাক করিবার ক্রম। রাই-সরিষের তৈল ৪ সের ফেণা রহিত হইলে কল্কার্থ অবা স-কল দিয়া পাক নিরস হইলে তিতলাউয়ের রস ১৬ সের দিয়া নিরস হইলে সেই তৈল মর্দন করিয়া অগ্রির উত্তাপা দলে গলগঞ নিবারণ হয়।

ইতি সারকৌমুদ্যাৎ গলগগু চিক্ৎিসা সমাপ্তঃ।

व्यथ भिन्निम हिकिएमा।

মুন্টিযোগ। কনকধুন্ড রারমূল ভেরাপ্তারমূল নিষিক। মূল পুনর্নবা হল সজিনামূলের ছাল রাইসরিষা এই সকল তার্য সমভাগে লইয়া জল দিয়া মৰ্দ্দন করিয়া প্রলেপ দি-বেন ইহাতে উজ্বোগ শাস্তি হয়।

অথ সৌরেশ্বর ঘৃত। ঘৃত ৪ দের বিলু সোণা গান্তারি পারুল গণিয়ারি এবাং ছাল সালপানি চাবুল্যা কন্টকারি ব্যাকুড় এবাংপ্রতি ১২ তোলা ৬।।• মায়া জল ১৬ সের কাঁজি ৪ সের কল্কার্থ নিষিন্দা দেবদারু শুণ্ডী পিপুল মরীচ হরিতকী বয়ড়া আমলকী পঞ্চলবগ বিড্স্প চিতা চঞ্চি পিপুলমূল গুণ্ডল হবুষ বচ যবক্ষার আলকুশিমূল শঠি এলাইচ বিচতাড়ক এবাংপ্রতি ২ তোলা ১৬ সের জলের সহিত বিলুছালাদি সিদ্ধ করিয়া ৪ সের থাকিতে কাঁজি ৪ সের মৃত ৪ সের দিয়া নির্দ্ধল হইলে পাক নামাইয়া নিষিশ্বাদি জব্য সকল ফুল্র্ড করিয়া তাহার সহিত মিলিত ইইলে পাক সিদ্ধ হয় ভক্ষণ ২ তোলা মাত্র ইহাতে উজ্বোগ বিনাশ হয়।

ইতি সারকৌমুন্তাং শিম্পদাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ বিভাবণাধিকার।

ব্রণাদি দ্বারার খ্যাত হইলে নিজায়ণ কহা যায় শ্বেত পুনর্নবায়ল ২ তোলা জল ৪ পালের সহিত সিদ্ধ করিয়া ১ পাল থাকিতে ৪ মাযা বঙ্গণছাল চুর্ন প্রক্ষেপ দিয়া ঈ্রথ উফ পান করিষেন ইহাতে উজ রোগ নট হয়।

ইতি সারকৌমভাং বিজাবণাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ ত্রণ চিকিৎসা।

য় আহিযোগ। তাণ হবার সময় ধুস্তুরা পতের বেঁটো। ল্বণ সংযুক্ত করিয়া লেপ্ন করিলে তাণ নাট হয়। তৃণভৈল। তিল তৈল ৪ সের কল্কার্থ বাট্যালামূল ৪ তোলা আপাক্ষ ৪ তোলা জল ১৬ সের একতে পাক ক-রিয়া জল বন্য হইলে পাক সিদ্ধ হয় ইহাতে ক্ষত নিবারণ হয়।

ইতি সারকৌমুদ্যাং ত্রণ চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

অথ অন্তর্ত্ত প চিকিৎসা।

হরীতকী বয়ড়া আমলকী শুণ্ঠী পিপুল মরীচ এযাৎ-প্রতি ৪ তোলা গুগ্গুল ২৪ তোলা সম্ভব মত ঘৃতের সহিত মর্দন ক্রিয়া সেবনে উক্ত রোগ বিনাশ হয়।

ইাত সারকৌমুল্লাং অন্তর্ত্রণাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ ভগন্দর চিকিৎস।।

মুক্টিযোগ। মনসাসিক্ষের আঠা শ্বেত আকলের আঠা দাক্ষ হরিদ্রা তিন অব্যা সমভাগ ছিন্ন বস্ত্রে লেপন করিয়া বাতি দিবে তিল হরী ওঁকী নিষপত্র হরিদ্রা দাক্ষহরিদ্রা বচ ঝুল এই সকল দুব্য সমভাগ বাটিয়া প্রলেপ দিলে উজ রোগ নক্ট হয়।

তথী পিপুল মরীচ হরীতকী বয়তা আমলকী মুথা বিজন্ধ গুলঞ্চ চিতামূল শঠি এলাইচ পিপুলমূল হবুমা দেব-দারু ধন্যা কুড় চঞি রাখালসমার মূল হরিদা বিটলবন্দ সচললবণ যবক্ষার সৈন্ধব গজপিপুল এযাংপ্রতি ১ তোলা গুন্গুল ৫৪ তোলা এই সকল দুব্য মধু দিয়া মর্দন করিয়া ১ তোলা প্রমান সেবন করিলে ২১ দিবসে শান্তি হয়।

অথ বিশ্বানন্দ তৈল।

তিল তৈল ৪ সের জল ১৬ সের কল্কার্থ চিতায়ল আকন্দ্রল তেউড়িয়ল কাঁকরোলেয়ল কেতৃকীরমূল ভুষুর স্লু খেডকরবীর পত্রের রসু মন্সাসিজের আঠা বচ বিষ অঙ্গলিরা হরীতাল গাজিমাটি নাফটিকিমূল এযাংপ্রতি ও মাধা ৬রতি।

পাকের প্রকার। ৪ সের তৈলে ১৬ সের জল দিয়া কল্কার্থ দুব্য সকল ভাহাতে দিয়া পাক করিবেন নির্দ্ধল
হইলে পাক মিদ্ধ হয়।

এই তৈল ক্ষতদেশে পুরাতন তুলার সহিত দিবেন। তথ তগন্দর্হর রস। ·

পারা ২ তোলা গন্ধক ৪ তোলা ঘৃতকুমারির রনে ৩ দিবদ খলে মর্দন হইলে ৬ তোলা ভামুচুর্ব একতে করিয়া একটা ইাড়িতে পালাশের ছাই অর্চ্চেক পুরিয়া ভাষার মধ্যে ঐ ঔষধু রাখিয়া মুখ বদ্ধ করিয়া পালাশকার্ষ্ঠের জাল হই প্রহর দিবেন পরে নিষ্টালের রনের সহিত ঐ প্রকার পাক করিবেন আর পুনঃ২ খলে মর্দন করিয়া গুলীর ন্যায় হইলে পাক দিদ্ধ হয়। এক রতি প্রমাণ নিষ্টালের রনের লাহিত মধু দিয়া দেবন করিলে উজাময় নইট হয়।

ইতি সারকৌমুদ্যাৎ ভগন্দরাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ উপদংশ চিকিৎসা।

য়য়িযোগ। কুলপতের কুঁড়ি ১ তোলা আকলপতের বন ১ তোলা আপাঙ্গপতের রম বামনয়াীর রম হিন্দুল এই সকল দুব্য ১ তোলা প্রমাণে বাটিয়া ছিন্ন বস্ত্রে লেপন করিয়া বাতি করিবেন সেই বাতি জালিয়া রোগীকে ভাবনা দিলে উপদ্শেরোগ শান্তি হয়। আর ত্রণাধিকারে যে যে ঔষধি উজ আছে তাহা এ রোগে প্রয়োগ করিলে শান্তি হয়।

ইতি সারকৌয়ভাং উপদংশ চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

অথ কুণ্ঠাদিকার চিকিৎনা। ম্বিযোগ। হরিতা চিতামূল বুল মরীচ বালা হকা শাকন্দখাঠা মনসাসিজের খাঠা এষা প্রতি সমভাগে খলে । মর্দ্দন করিয়া গাতে লেপন করিলে সামান্য কূর্ছ নম্ট হয়।

অথ পঞ্তিজ মৃত।

নিষ্ছাল পটোলপত কণ্টকারি গুলঞ্চ বাসকছাল এষাংপ্রতি১ পল জল ৬৪ সের শেব ১৬ সের ঘৃত ৪ সের কল্কার্থ হ্রীতকী বয়ড়া আমন্কী এষাংপ্রতি ২ প্রত তোলা ২ মাষা ৭ রতি।

পাকের প্রকার। নিম্বছালাদি ৫ এবা ৬৪ সের জ্বলের সহিত সৈদ্ধ করিয়া ১৬ সের থাকিতে মৃত দিয়া নির্দ্ধেল হ-ইলে কল্কার্থ হরীতকী বয়ড়া আমলকী কুঠী চূর্ন উক্ত প্রমাণ মত ঘৃতে দিয়া শীভ্র নামাইবেন, ২তোলা পরিমিত সেবন করিবেন।

পঞ্জিত গুণ্ডল। মৃত ৪ সের নিষ্ঠাল গুলঞ্ বাদক ছাল পটোলপত কণ্টকারি এষাংপ্রতি ১ পল জল৬৪সের শেষ ৮ সের, কল্কার্থ আলকাদি মূল বিড়ঙ্গ দেবদারু গজ-পিপুলী যবক্ষার সাজিমাটি শঠী হরিতা মৌরি গুলফা চঞি কুড় নক্টকী মরীচ বুজাচিখাল জীরা চিতায়ল কণ্টকি ভেলা বচ পিপুলয়ল মঞ্জিঠা এলাইচ বন্যমানী এষাংপ্রতি ই তোলা গুণ্ডল ও পল, পাকের প্রকার, ৬৪ সের জলে সির্ছাদিও জব্য এবং গুণ্ডল পুটলি করিয়া দিয়া পাক করিবেন ৮ সের থাকিতে ছাঁকিয়া ঐ গুণ্ডল এবং ৪ সের মৃত কল্কার্থ জব্যাদি ছেচিয়া দিয়া পাক জল শ্ন্য হইলে ছাঁকিয়া ১ ভোলা প্রমাণ ভোক্ষণ করিবেন।

অমৃত ভলাতক। ভলা ১৬ সের ৬৪ সের জলের সহিত পাক হইলে ১৬ সের জল থাকিতে ছাঁকিয়া হৃত ৪ সের হুন্ধ ১৬সের চিনি ১৬পল দিয়া পাক গুড়ের ন্যায় হৃইলে সিদ্ধ হুর, ৬ ভোলা প্রমাণ ভক্ষণ করিবেন।

্দিন্রাদি তৈল। রাইসরিষার তৈল ৮ পল কল্কার্থ

ক্ষজীরা ৮ ভোলা সিন্দুর ৪ তোলা জল ৪ সেরের সহিত পাক করিয়া নির্দ্ধল হইলে পাক সিদ্ধ হয়।

রহৎমরীচাদি তৈল। মরীচ তেউড়ি দন্তিমূল আকল্ আঠা গোময়ের রস দেবদারু হরিজা দারুহরিজা জ্ঞ টামাংসী কুড় রক্তচন্দন রাখাল সসারমূল করবীরপত্ত হরিভাল মন-ছাল চিতামূল বিষলাঙ্গলা বিড়চাকুন্দা শিরীষ্ছাল কুরুচি-ছাল নিম্বছাল ছা।তমছাল মনসাদিজ গুলগু সোন্দালি ছাল হাপরমালী মুথা খাদরকাণ্ঠ পিপুল বচ নফ্টকী এ-যাংপ্রতি ৮ তোলা বিষ ২ পল- সার্মপ্রতল ১৬ সের গোমুত্র ৬৪ সের।

পাকের প্রকার। তিল নিম্ফেণ হইলে মরীচাদি বিষ পর্যান্ত ভ্রম্য সকল কুটিয়া গোসুত্তের সহিত পাক করিয়া নামাইবেন। ইহাতে ৮০ প্রকার বুণ্ঠ শান্তি হয়।

কন্দর্পদার তৈল।

ছাতিমছাল ক্ষণাড়া গুল্ঞ নিম্বছাল শিরীষ্ছাল ঘোড়ানিম জয়ন্তী ভিতলাউ রাখালসদার হুল হরিছা এযাংপ্রতি ১০ পল ৬৪ সের শেষ ১৬ দের সোন্দালি ছাল ভীমরাজ জয়ন্তীপত ধুন্তুরারপত আমলকী সিদ্ধিপত থক্তার
পত্র গোময় আকন্দপত্র শিজপাতা এই সকল ডব্যের রস্প্রত্যকে ৪ সের, কল্কার্থ মাকালফল বচ ব্রন্ধী তিতলাউ
চিতানুল গোয়ালিয়ালতা কুড়ালি মনছাল আমলকী চাকুল্যা নাটা গাঁট্যালা সোনালি আকন্দআঠা কালকেম্বন্দ্যা
ইসেরহুল মঞ্জিটা ঘোড়ানিম্ব রাখালসদার হুল বিছটি গল্পভাদালী হাপরমালা মুরা ছাতিমছাল শিরীষ্টাল কুড়চিছাল নিম্বছাল গুল্ঞ হাকুচবীল ধন্যা দারুচিনি জ্যেষ্ঠ
মধু কন্দর কুট কট্কি শঠী দারুহরিছা তেউড়ি পদ্মকার্থ
পত্র এলাইচ গুয়া হরীজনী বয়ড়া,এষাংপ্রতি হতোলা, পাকের কুন, ছাতিম ছালাদি হরিছা প্র্যিন্ত জন্য ক্ল কুটিয়া

১০ পাল প্রমাণান্মগারে ৬৪ সের জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া ১৬ সের থাকিতে ছাঁকিয়া৪:সর তৈলের সহিত পাক হইলে কিঞ্চিৎ ক্কাথ থাকিতে গোস্ত্র উক্ত প্রমাণমত দিবেন'ক-ল্কার্থ মাকালফলাদি বয়ড়া পাইয়ন্ত কুটিয়া দিয়া আর আ-কন্দআঠা সোন্দালি আদি ১০ দুব্যের সহিত পাক করিলে সিদ্ধ হয়, এই তৈল গাত্রে মর্দ্দন করিলে কুন্ত শান্তি হয় এবং কন্দর্পের ন্যায় কলেবর হয়, য়নিবাক্য।

অমৃতাক্ষর লোই। পারা গল্পক ভামু লোই অন্দ্র গুল্ল থবাংপ্রতি ৮ ভোলা হরীতকী বয়ড়া আমলকী এবংপ্রতি পল- হ্বালা ৫ মাবা ৩ রতি পাকার্থ জল ১৬ সের শেব ৪ সের মৃত ১৬ পল প্রক্ষেপ হরীতকী বয়ড়া ৫ ভোলা আমলকী ১২ ভোলা, পাকের প্রক্রার গুর্গুল তু-প্রের মহিত মৃত্র আগ্রেড সিদ্ধ হইলে জলে ধৌত করিয়া শুকাইবেন আর হরীতকী আদি ৩ দুব্য চুর্ণ করিবেন ভেলা জলে সিদ্ধ করিয়া শুকাইলে হুর্য করিয়া আঠা লইবেন, পাকের মৃত্র চড়াইয়া কেণা রহিত হইলে তামুাদি ৫ দুব্য দিয়া মিলিভ হইলে হুরীতক্যাদির ক্রাথ ৪ সেরের সহিত্র পাক করিবেন গুড়ের ন্যায় হইলে প্রক্রেন গায় হইলে পাক সিদ্ধ হয় ৬ ভোলা লোই ঘূত মধুর সহিত্যা- ড়িয়া লেপন করিলে বুর্গুরোগ নইট হয়।

ইতি সারকৌরতাৎ কুণ্ঠাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ শিভপিত চিকিৎনা।

মুফীযোগ। হরিতা চাকুল্যাবীশ কৃষ্ণতিল সমভাগ জল দিয়া বাটিয়া পত্তে লেপন করিলে উজ রোগ নই হয়, য-মানী ২ তোলা পুরাতন গুড় ২ তোলা মিলিভ করিয়া খা-ইলে উক্ত রোগ শান্তি হয়।

ইতি নারকৌমুন্তাং শিতপিত চিকিৎমা নমাপ্তঃ।.

অথ অমূলাপত চিকিৎসা।

যুষ্টিযোগ। আমলকী রস ১ তোলা মধু ১ তোলা নি-লিত করিয়া পান করিলে অমলপিত নট হয়। অথ নারিকেলামত।

নারিকেল শশু ৬ পল মৃত ৬২ পল শুণ্ডী চুর্ব ১৬ পল নারিকেল জল ৬২ সের হক্ষ ৬২ সের আমলকী রস ৪ সের চিনি ২। সের শুণ্ডী পিপুল মরীচ দারুচিনি এলাইচবীল ভেজপত্র নাগেশ্বর এবাৎপ্রতি ১ তোলা চুর্ল প্রক্রেপ আন্মলা জীরা ধন্যা কৃষ্ণজীরা গাঁট্যালা বংশলোচন মুথা এ-বাংপ্রতি ৬ তোলা মধু ৪ তোলা, পাক করিবার প্রকার, নারিকেলের কোরা জলে ধৌত করিয়া নির্দ্ধল করিয়া রৌত্রে শুদ্ধ হইলে ৬২ পল ঘৃতে ভাজিয়া তাহাতে শুণ্ডী চুর্ল ডাব নারিকেল জল আদি ৬ তার্য শক্ত প্রমাণান্ত্রনারে মৃত্ব অগ্নিতে পাক করিয়া সন্দেশের পাকের ন্যায় হইলে নামাইয়া প্রক্রেপ আমলাদী অব্যের সহিত সিলিত করিয়া শীতল হইলে মধু ৪ পাল দিবেন, ভক্ষণ ১ তোলা কিয়া ২

অধিপিত চূর্। হ্রীতকী বর্ণ আসলকী শুণ্ঠী পি পুল মরীচ মুথা ইন্দ্রয়ৰ বিভঙ্গ এলাইচ তেজপত এষাংপ্রতি যত লবঙ্গ চূর্ণ তাহার সমভাগ,উভর চূর্ণ যত হইবেক তা-হার দ্বিণ তেউড়িয়ল সকল চুর্বের সমভাগ চিনি সকল দুব্য মিলিত করিয়া নারিকেল জল দিয়া খাইবেন ১তোলা প্রমাণ।

শিভামগুর।

মণ্ডুর ১২ তোলা চিনি পাঁচ পল ঘৃত আট পল হক্ষ ১৬ পল শুগী পিপুল মরীচ জ্যেন্ঠমগু এলাইচ হরালভা বিড়ঙ্গ হরীতকী বয়ড়া আমলকী কুড় এযাংপ্রতি ২ তোলা মধু ২ পল, পাকের ক্রম, ঘৃতের মণ্ডুর চুর্ন দিয়া মনদমনদ জালে জিলিত হইলে তাহাতে চিনি হক্ষ দিয়া পাক ক- রিবেন গুড়ের ন্যায় হইলে শুণ্ডী আদি ১>দুব্য দিরা পাক নামাইয়া অর্দ্ধ তোলা প্রমাণ সেবন করিবেন।

· ইতি সারকৌমুভাং অনুলপিতাধিকার সমাপ্তঃ।

অ্থ বিবৰ্ষ চিকিৎসা।

ক্ষত দোষে তলে সংযোগ ইলে বিষয় হয়। শিরীষ্ ছাল গুড়কামাই সমভাগে বাঁটিয়া প্রলেপ দিলে উজ্বোগ বিনাশ হয়,গুলঞ্ বানকতাল মুখা তাতিমতাল থদি-রক্তি কাল্যলভাশিশ্বপত্র হরিছা এষা প্রতি - ০ পল জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রজেপ মধু ৪০ রতি।

ইতি দারকৌমুতাং বিষধাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ বিস্ফোটক চিকিৎসা।

শিরীষছাল বেণারহল নাগেশ্বর এই ৪'জার বাঁটিয়া প্র-

ইতি সারকৌয়ত্তাং বিজ্ফোটকাধিকার সমাপ্তঃ।

ज्य अन्छ किंकिएना।

্ কাঞ্নকুলের গাছের ছাল ৪ ভোলা **ষ**্মাকি প্রলেপ দিয়া কিঞ্ফ থাইবেন।

র্ঘিষোগ। সোহাগা হাপরমালির ন্ল ২ ভব্য সম-ভাগে লইরা বাটিয়া প্রলেপ দিবেন ইহাতে উজ রোগ বি-নাশ হয়

ইতি লারকৌয়ভা ৭ গুলভা চিকিৎ লা নমাপ্তঃ।

অথ টাক'রোগ চিকিৎসা।

মালতী তৈল। কটুতৈল ৪সের মালতীপত করবীরপত ভাকরমচাফল চিতামূল এবাংপ্রতি ২তোলা জল ১৬ নের গোয়ত ৪ সের পাক করিয়া ৪ সের থাকিতে পাক লিছ হয় ইহাতে টাক রোগ বিনাশ হয়।

ু কুণ্ঠাদি তৈল। কটু তৈল ৪ সের গোমূত ৮ সের ছাগ
যুত্ত ৮ সের কলকার্থ সিজ আটা আকন্দ আটা ভীমরাজের
রস বিষ্লাঙ্গলা এষাংপ্রতি ১২ পল ৬ মাষা পাক করিয়া
৪ সের থাকিতে নামাইবেন, এই তৈল মর্দ্দন করিলে উক্ত রোগ বিনাশ হয়।

ইতি সারকৌয়তা টাকাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ দন্তরোগ চিকিৎসাল-

য়ফিংযোগ। কুত দারুহরিদ্রা লোধ মুথা আকনাদিয়ল চঞি নফটকি হরিদ্রা হুঁতিয়াভন্ম গৃত পিপুল এবাংপ্রতি সমভাগ ঘৃতের সহিত মুখে রাখিলে দন্তধ্যোগ শান্তি হয়।

খদিরবটিকা। খদিরকার্চ চূর্ ১০ পাল জল ৬৪. সেরের সহিত পাক করিরা ৮ সের গাকিতে ছাঁকিয়া তাহাতে জয়ত্রী কপূর গুরাক জায়কল চূর্ব এবাংপ্রতি ৮ তোলা খদির ৮ তোলার সহিত পাক করিয়া মুখে রাখিলে এবং দুস্তে দিলে উক্ত রোগ নাশ হয়।

ইতি সারকৌমুভাৎ দন্তরোগ চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

वश कर्न हिकि भा।

যুষ্টিযোগ। রম্বের রস আদার রস, সজিনাছালের রস রঙ্গ মূলার ছালের রস কদলীমলের রস ইহার মধ্যে যে রস ইচ্ছা তাহার সমভাগ, মনসাপত্তের রস মিলিড করিয়া কর্মধ্যে দিবেন তাহাতে নানা প্রকার কর্মল নিবারণ হয়।

মূলারকার বিঙ্গ শঠী শুলুকা বচ কুড় দেবদার সজি-নাছাল রসাঞ্জন সচল যবকার সাকিমৃতিকা সৈন্ধব ভূর্জ্জ-প্রক বিটলবণ মুখা এবাংপ্রতি ৪ তোলা ভিল তৈল ৪ সের টা নালেবুররস ৪ সের কলার এটের রস ৪ সের পুিপুল মূল চূর্ণ আদুসের মধু ১ সের গোঁড়ালের রস ৪ সের পাক করি । বার ক্রম, ছলার ক্ষারাদি মুথাচুর্গ পর্যন্ত তৈলে দিয়া পাক কিঞ্ছিৎকাল হইলে টাবালেবুর রস প্রভৃতি সকল রস দিয়া ৪ সের থাকিতে পাক সিদ্ধ হয়। তৈলভাও ধান্য মধ্যে রাখিবেন প্রতি দিন ১ সাধা প্রমাণ ঈষ্পুষ্ঠ করিয়া কর্ণে দিবেন ইহাতে কর্ণপীড়া সকল নিবারণ হয়।

দশমূলী তৈক। তিল তৈল ৪ সের বিল্ছাল ৬২ ভোলা সোণাছাল গান্তারিছাল কণ্টকারি পারুল গণিয়ারিছাল সালপানী চাকুল্যা-গ্রেক্রি ব্যাক্ষ্ড, এষাংপ্রতি ৩২ ভোলা জল ১৬ সের শেষ ৪ সের কল্কার্থ ঐ সকল ছালাদি প্র-ত্যেকে ৬৪ ভোলা পাকের প্রকার, তৈল ৪ সের ফেণা শ্ন্য হইলে বিল্ছালাদি ১০ অব্য ছেচিয়া ১৬ সের জলের সহিত পাক করিয়া ৪ সের থাকিতে কল্কার্থ ঐ সকল অব্য ৬৪ ভোলা দিয়া পাক নির্দ্ধল হইলে সিদ্ধ হয় এই তৈল কর্ণে

জাতিমৃত। মৃত ৪ সের জাতিপুপের পাতের রস ১৬ সের কল্কার্থ জাতিপত্র ১ সের পাকের প্রকার, ৪ সের মৃতে ১৬ সের রস দিয়া কিঞ্ছিৎকাল পাক হইলে ৪ সের থাকিতে পাক সমাপন হয়।

ইতি শারকৌমুত্তাৎ কর্ণাধিকার সমাপ্তঃ।

. অথ নাসিকা চিকিৎসা।

চিত্রহরীতকী। চিতা আমলকী গুর্ঞ বিল্ছাল নো-ণাছাল গাস্তারিছাল পারুলছাল মালপানী চারুল্যা কণ্ট-কারি গোছরি ব্যাবুড় এষা প্রতি ১০ পল চিতামূল ৫০ পল জল ৫০ সের শেষ ১২॥০ সের এবং আমলকী ৫০ পল ০জল ৫০ সের শেষ ১২॥০ সের গুরু ৫০ পল পুরাতন গুড় তিং পল হরীতকী চুর্ব ৬৪ ভোলা প্রকেপ মধু শুণ্ঠী পিপুল মরীচ দাঙ্গটিনি তেজপত্র এলাইচ এষাংপ্রতি ১৬
ভোলা যবক্ষার ৫ ভোলা মধু ২ সের পাকের প্রকার।
ভিতামূল ৪০ পল চিতাদি ১২ জব্য উজ প্রমাণ মৃত লইয়া
৫০ সের জলের সহিত পাক করিয়া ১২॥ সের থাকিতে
ভাকিয়া এবং আমলকী ৫০ পল ৫০ সের জলের সহিত পাক
করিয়া ১২॥০ সের থাকিতে ছাকিয়া ছই জল, গুলপ্প ৫০
পলের সহিত পাক করিয়া ১২॥০ সের থাকিতে ছাকিয়া
ভাহাতে পুরাতন গুড় ১০০ পল হরীতকী চুর্ব ৬৪ ভোলা
দিয়া গুড়ের ন্যায় পাক হইলে শুণ্ঠী আদি মধু পর্যার
প্রমাণানুসারে দিবেন ভক্ষণশক্তি অনুসারে করিবেন। ইভাতে নাদিকা রোগ শান্তি হয়।

য়ফিবোগ। গুণ্গুল মম সমভাগে বাতি করিয়া গাতে এবং নাসিকারস্বে, ধুম লাগাইবেন।

গৃহধুমাদি তৈল। ঝুল পিপুল দারুহরিজা যবক্ষার ভারকর্মচারবিচি সৈন্ধব বামনহাটি বিচি, এযাংপ্রতি ২ তোলা ৪ মাধা ৬ রতি তিল তৈল ১ দের পাকের ক্রম, তৈল্ অগ্রিত্লা হইলে ঝুলাদি অবা সকল দিয়া পাক ক-রিতে২ রুফবর্ণ হইলে পাক সমাপ্ত হয় তৈল ভুলার সহিত নাসিকার ভিতর দিবেন।

ইতি সারকৌমতা । নাসিকা রোগাধিকার সমাপ্তঃ। .

प्य क्रम्रतांश किकिश्मा।

যুক্টিযোগ। হরীতকী ঘৃতে তাজিয়া জলের সহিত বা-টিয়া চক্ষের পাশ্বে প্রজেপ দিলে পীড়া শান্তি হয় গেরি-মানী রক্তচন্দন শুগুী থড়ি বচ এয়াৎপ্রতি সমভাগ জলের সহিত ঘুর্বণ করিয়া চক্ষ্ উঠিলে প্রলেপ দিবেন।

इस्थानकाणि পাছন। বাসকছাল মুখা নিষ্টাল প-

টোলপত কট্কী গুলঞ্ রক্তচন্দন বুরুচিছাল ইন্দ্রবর্তি দীরুহরিতা চিতামূল শুণ্ঠী চিরাতা আমলকী বয়ড়া যব এবাংপ্রতি ন রতি, ৪ পল ফলের সহিত মৃত্ত অগ্রিমে পাক করিবেন ১ পল থাকিতে প্রক্রেপ মধু ৪ রতি দিয়া পান করিলে উক্ত রোগ শান্তি হয়।

চল্ডোদর বটি। হরীতকী বচ মরীচ বয়ড়া পিপুল নাভিশন্থ মনছাল এবাংপ্রতি সমতাগ হক্ষের সহিত থলে মর্দ্ধন করিয়া বটিস্ইলৈ মধুর সহিত নয়নে দিবেন।

ত্রিকলামত। ঘৃত ৩২ পাল হারীতকী বয়ড়া আমলকী এষাংপ্রতি ৫ সের-২-পাল ৫ মাষা ৩ রতি জল ৬৪ সের শেষ ১৬ সের হক্ষা ৪ সের কল্কার্থ হ্রীতকী বয়ড়া আম-লকী এষাংপতি ৮ পাল

পাকের প্রাকার। হরীতৃকী আদি ৩ দ্রব্য উক্ত পরি-মাণ ৬৪ দের জলের সহিত পাক করিয়া ১৬ দের থাকিতে ছাঁকিয়া ঘৃতে দিবেন পরে নির্দ্ধান হইলে কলকার্থ দ্রব্য সকল স্কাচ্ন করিয়া তাহাতে দিলে পাক সিদ্ধ হয়, সেব্য মত দেবন করিবেন।

ইতি স্থারকৌমুভাং নেত্ররোগ চিকিৎসা সমাপ্তঃ ১

অথ শিররোগ চিকিৎসা।

দশমুল তৈল। বিলুছাল, সোণাছাল, গাস্তারিছাল, পারুলছাল, গণিয়ারি ছাল, সালপানী চাকুল্যা কর্থ-কারি গোছরি ব্যাকুড় নাটামূল নিষিন্দা জয়ন্তী খুঁই রা এষাংপ্রতি ৬ পল জল ৬৪ সের শের ১৬ সের সার্থ তৈল ৪ সের কল্কার্থ দশমূল নাটা জয়ন্তী খুন্ত, রা এষা ১-প্রতি ৬ ভোলা।

রহদশন্ত তৈল। সার্থপ তৈল ১৬ সের বিলুছাল দোণাছাল গান্তারিছাল পারুছাল গণিয়ারি দালপানী চাকুল্যাদ কণ্ঠকারি গোহুরি একাংপ্রতি ১০ পল জল্ভে লের শেষ ১৬ সের গোঁড়ালেবুর রস ধৃন্তুরারস আদার রস এষাংপ্রতি ১৬ সের কলকার্থ পিপুল গুলঞ্চ শুলকা পুননবা সজিনা ছাল পিপুলমূল নাটারুফজীরা রাইন-রিফাবচ শুঠী চিতামূল শঠী দেবদারু বাট্যালা রামা ছড়্ছড়ে কট্ফল নিবিন্দা চঞি গেরি শুদ্ধরলা যমানী-বীজ দড়ক এষাংপ্রতি ৮ পল, পাকের প্রকার, প্রথমত মূর্ছা করিয়া পরে দশমূল ১০০ পল ৬৪ সের জ্বলের সহিত সিদ্ধ করিয়া ১৬ সের আফিতে সেই কার্থ তৈলে দিয়া কল-কার্থ দ্ব্য সকলের সহিত পাক করিবেন, নির্দ্ধল হল্ন

ষড়বিন্দ্র তৈল। তিল্তৈল ৪ সের ভীমরাজ রম ১৬ সের ছাগছন্ধ ৪ সের কলকার্থ ভেরেগুামুল তুরগ পাছকা শুলকা জীবন্তি রাম্লা সৈন্ধব দারুচিনি বিড়ঙ্গ জ্যেগুমধু শুণ্ঠী এষা পাত ৭ তোলা ম রতি, পাকের প্রকার, তৈল মুছ্ছি। করিয়া ভাছাতে কলক ভাব্যাদি সকল দিয়া পাক করিলে ৪ সের থাকিতে নামাইবেন।

ইতি সারকৌমুভাৎ শিররোগ চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

অথ প্রদর চিকিৎসা।

শিতকল্যাণ স্ত। বাট্যালায়ল গোরক চাকুল্যা উৎপল তালেরমাতি তুমিরুমাণ্ড দশয়ল নালপানী জীরা রক্তোৎপল পদ্মল বেশমুল গম ধন্যা বনমুগ ক্ষীরকা-কোলী গাস্তারিছাল জ্যেষ্ঠমধু হরীতকী বয়ড়া আমলকী সমবীজ কাঁচাকলা, এষাংপ্রতি ৪ তোলা হক্ষ ১৬ দের স্ত ৪ দের জল ৮ দের, পাকের প্রকার, স্ত অগ্রিবৎ করিয়া তাছাতে বাট্যালাদি নকল অব্য ছেঁচিয়া দিয়া ঐ প্রমাণ মত জল ছক্ষের সহিত পাক করিয়া ৪ দের থাকিতে পাক সমাপ্তি হয়, মৃত শক্তি মত তক্ষণ করিবেন ইহাতে প্রদর শান্তি হয়। ে আশোকঘৃত। ঘৃত ৪ সের আশোকছাল ১৬ পল জল । ১৬ সের শেষ ৪ সের কল্কার্থ পেরালকার্গ জীবন্তি জ্যেষ্ঠ-মধু বনমুগ বনকলাই সালপানী চাকুল্যা কাকোলী ক্লী-রকাকোলী মেধ মহামেধ জীবক ঋষিবক রজি পর্ম-কল রসাঞ্জন জ্যেষ্ঠমধু আশোকমূল ভাক্ষা শতন্ত্রী চাঁপ-নট্যার মূল এষাংপ্রতি ৪ তোলা প্রক্ষেপ চিনি ৮ পল, পাক করিবার ক্রম, ঘৃতাদি জল পর্যান্ত একত্রে পাক করিয়া নিরস হইলে কল্কার্থ অব্যাসকল স্কাচ্ব ভাহার সহিত মিলিত করিয়া ঈ্ষতৃঞ্চ থাকিতে, চিনি দিবেন।

ইতি দারকৌমুদ্যাং প্রদরাধি দমাপ্তঃ।

ত্ৰথ যোনি চিকিৎসা।

মুষিক তৈল। তিলতৈল ৪ সের মুষিক মাংস ১ সের তৈলের সহিত পাক করিয়া মিলিত হইলে পাক সিদ্ধ হয় এই তৈল যোনিতে লেপন করিলে যোনির কঠি-নতা হয়।

ফলতৃত। যে গাভির বাছ্র না মরিয়া থাকে এমন একবর্ণা গাভির ঘৃত ৪ সের শতম্বলির রস ১৬ সের, কল্-কার্থ মঞ্জিগা জ্যেন্ত্রস্থু কুড় হরীতকী বয়ড়া আমলকী চিনি বচ কণ্ঠকারি শুদ্ধভূমিবুলাগু কাকলা অশ্বন্তরামূল বন্যমানী হরিছা দারুহরিছা হিন্দ কট্কী শুঁদিপুষ্প ছাক্ষা ক্ষীরকাকোলী চন্দন এষাংপ্রতি ২ তোলা, পাঁকের প্রকার, এই সকল জব্যের সহিত্মত পাক করিয়া প্রফোপ লক্ষ্ণায়ূল ২ তোলা দিবেন, ভক্ষণ ২ মাষা ই-হাতে সন্তান অ্বশ্য হয়।

নোমঘৃত। উজ মত গব্য ঘৃত ৮ দের কল্কার্থ রাইপরিষা বচ কণ্ঠকারি খেত পুনর্বা ভূমিকুমাল হরীতকী
বয়ড়া শুমলকী কুড় কট্কী অন্তহল আমালতা জ্যেষ্ঠ-

মধু জাতিপুষ্প বাসকপুষ্প মঞ্জিত। দেবদার শুণ্ডী পিপুল ভীমরাজ হরিছা বীজদড়ক বিল্ছাল সোণাছাল পারুল ছাল গণিয়ারিছাল সালপানী চাকুল্যা কণ্ঠকারি গোছরি ব্যাকুড় আপাঙ্গ অশ্বগন্ধা শতমূলী এষা প্রতি ২ পল পা-কার্থ জল ৬৪ দের শেষ ১৬ দের, পাকের প্রকার, ঘুঁটের জালে ঘৃত অগ্নি হুল্য করিয়া তাহাতে রাইসরিষা আদি ৬৪ ঘব্য উক্ত প্রমাণ ঘৃতের সহিত পাক নির্দ্ধল হইলে পাক সিদ্ধ হয়, ভঙ্গণের ক্রম, এই ছই ঘৃতে খাতুর স্নানের প্র দিন অব্ধি অন্টাহ প্রস্ত ভক্ষণ করিলে সন্তান হয়, আর, স্ত্রীপুরুষে সদাচাহর থাকিবেন গর্ত্ত হইলে উদরে বেদনাদির প্রতিকার চন্দন পালেরমূণাল সমভাগ জলের সহিত বাটিয়া থাইলে বেদনা নিবা-রণ হয়।

ইতি সারকৌমুত্তাৎ গর্ৱ চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

ব্যথ স্থতিকা চিকিৎসা।

পঞ্কুল মিশ্রিত দশমূল পাচন দিবেন, অথবা কে-বন্ধ দশমূল পাচন, আর আমশূল হইলে ধনা পঞ্জ লংযুক্ত দশমূলের ক্কাথ প্রক্রেপ পিপুল চূর্ব রতি দিয়া লেবন করিবেন, আর এই রোগ গৃহিণী অধিকারের নারিকাচ্ব লাভিফলাভা মহাজবটিকা মহাগন্ধ প্রয়োগ করিবেন।

ইতি সারকৌমুভাং স্থতিকাধিকার সম: ৪ঃ।

व्यथ वालाकत हिकि भा।

যুক্তিযোগ। কুড় আতইচ কাঁকড়াশৃঙ্গি গুরালভা পি-পুল এবা প্রতি সমভাগে স্থলচ্ব মধুর সহিত মিলিত করিয়া বালকের জিহ্বায় দিবেন তাহাতে কানি নিবা-রণ হয়। হরিজা লোথছাল প্রিয়সু জ্যেষ্ঠ মধু এবাৎপ্রতি সম- -ভাগ তৈলের সহিত পাক করিয়া নাভিদেশে দিলে শুক্ত হয়।।

অথ চত্তত্ত অবলেহ। মুথা পিপুল আতইচ শৃঞ্চি এ-বাংপ্রতি সমভাগ মধু দিয়া অবলেহ করিলে, জ্বর অতি-সার শান্তি হয়।

হরীত্কী বচ কুঁড় ৩ জব্য চূর্ব মধুর সহিত ভক্ষণ করা। ইলে বালকের ধ্রু তোলা ভাল হয়।

অথ অন্টমঙ্গল ঘৃত। স্বৃত ৪ দের জল ১৬ সের কল্কার্থ বচ বুড় ভ্রন্ধী রাইন িধা অনন্তমূল সৈন্ধব পিপুল এষাং-প্রতি ৯ তোলা ১' মাধা এই সকল অব্য ছেঁচিয়া ঘৃতের সহিত্ত পাক নির্দ্ধল হইলে পাক সিদ্ধ হয়, সেব্য মত সেবন করাইলে দড়কাদি সকল রোগ শান্তি হয়।

ইতি সারকৌমুভাং বালক চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

সারকৌম্দী মামক গ্রন্থ **সমাপ্তঃ**।